माध्यमिक शिक्षा परिषद्

उत्तर प्रदेश

(बोर्ड आफ हाई स्कूल एण्ड इण्टरमीडिएट एजूकेशन)

की

हाई स्कूल परीक्षा

(कक्षा नौ तथा दस)

की

विवरण–पत्रिका

(कक्षा नौ वर्ष 2003 तथा कक्षा दस वर्ष 2004 हेतु)

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद के प्राधिकार

के अधीन प्रकाशित

अनुक्रमणिका

विवरण		पृष्ठ संख्या
1—अध्याय बारह—परीक्षा सम्बन्धी सामान्य विनियम	..	1–16
2—अध्याय तेरह—हाई स्कूल परीक्षा	..	16–19
3—अनिवार्य हिन्दी से छूट सम्बन्धी नियम	..	19–20

(पाठ्यक्रम तथा पाठ्य पुस्तकें)

[कक्षा IX के लिये]

4—हिन्दी	..	20–23
5—प्रारम्भिक हिन्दी	..	23–24
6—गुजराती	..	24–25
7—उर्दू	..	26–27
8—पंजाबी	..	27
9—बंगला	..	28–29
10—मराठी	..	29–30
11—असामी	..	30–31
12—नेपाली	..	31–32
13—उड़िया	..	32–33
14—कन्नड़	..	33–34
15—कश्मीरी	..	34–35
16—सिन्धी	..	35–36
17—तमिल	..	37
18—तेलुगु	..	38
19—मलयालम	..	38–39
20—अंग्रेजी	..	39–42
21—फ्रांसीसी	..	42
22—जर्मन	..	43
23—रूसी	..	43
24—तिब्बती	..	43–44
25—चीनी	..	44–45
26—संस्कृत	..	45–47
27—पालि	..	47–49
28—अरबी	..	49–50
29—फारसी	..	50
30—लैटिन	..	51
31—गणित	..	51–55
32—प्रारम्भिक गणित	..	55–56
33—गृह विज्ञान	..	56–57
34—विज्ञान	..	58–60

विवरण		पृष्ठ संख्या
35—सामाजिक विज्ञान	..	60–68
36—भाषायें	..	68
37—गृह विज्ञान	..	68
38—संगीत (गायन)	..	68–69
39—संगीत (वादन)	..	69
40—वाणिज्य	..	69–70
41—चित्रकला	..	70
42—कृषि	..	70–72
43—सिलाई	..	72
44—रंजनकला	..	72–73
45—कम्प्यूटर	..	73–75
46—नैतिक, शारीरिक, समाजोपयोगी उत्पादक एवं समाज सेवा कार्य	..	75–87
47—पूर्व व्यावसायिक शिक्षा	..	87–125

(पाठ्यक्रम तथा पाठ्य पुस्तकें)

[कक्षा X के लिये]

48—हिन्दी	..	125–129
49—प्रारम्भिक हिन्दी	..	129–130
50—गुजराती	..	130–131
51—उर्दू	..	132
52—पंजाबी	..	133
53—बंगला	..	133–134
54—मराठी	..	134–136
55—असामी	..	136–137
56—उड़िया	..	137
57—कन्नड़	..	138–139
58—कश्मीरी	..	139–140
59—सिन्धी	..	140–141
60—तमिल	..	141–142
61—तेलुगु	..	143–144
62—मलयालम	..	144
63—नेपाली	..	145
64—अंग्रेजी	..	146–148
65—फ्रांसीसी	..	148
66—जर्मन	..	148–149
67—रूसी	..	149
68—तिब्बती	..	149–150
69—चीनी	..	150
70—संस्कृत	..	151–153
71—पालि	..	153–155
72—अरबी	..	155–156
73—फारसी	..	156–157

विवरण		पृष्ठ संख्या
74--लैटिन	..	157–158
75--गणित	..	158–162
76--प्रारम्भिक गणित	..	162–163
77--गृह विज्ञान	..	163–165
78--विज्ञान	..	165–169
79--सामाजिक विज्ञान	..	169–174
80--भाषायें	..	174
81--गृह विज्ञान	..	174
82--संगीत (गायन)	..	174–175
83--संगीत (वादन)	..	175
84--वाणिज्य	..	176
85--चित्रकला	..	176–177
86--कृषि	..	177–178
87--सिलाई	..	178–179
88--रंजन कला	..	179
89--कम्प्यूटर	..	180–182
90--नैतिक, शारीरिक, समाजोपयोगी उत्पादक एवं समाज सेवा कार्य	..	182–192
91--पूर्व व्यावसायिक शिक्षा	..	193–228

हाई स्कूल परीक्षा

अध्याय—बारह

परीक्षाओं सम्बन्धी सामान्य विनियम

1—परिषद् निम्नलिखित परीक्षायें संचालित करेगी—

(क) हाई स्कूल परीक्षा,

(ख) इण्टरमीडिएट परीक्षा,

*(ग) विखण्डित,

(घ) इण्टरमीडिएट व्यावसायिक शिक्षा परीक्षा ।

2—परिषद् की परीक्षा ऐसे केन्द्रों पर तथा उन तिथियों पर तथा ऐसे समय पर होंगी जो परिषद् समय-समय पर निश्चित करेगी ।

**2—(क) निरस्त ।

3—परिषद् की परीक्षाओं के परीक्षण अंशतः मौखिक एवं क्रियात्मक तथा अंशतः लिखित होंगे । मौखिक तथा क्रियात्मक परीक्षण परीक्षा समिति द्वारा समय-समय पर निर्धारित ढंग से परिषद् द्वारा नियुक्त परीक्षकों द्वारा संचालित किये जायेंगे । लिखित परीक्षा प्रश्न-पत्रों द्वारा होगी तथा प्रश्न-पत्र प्रत्येक केन्द्र पर, जहाँ परीक्षा हो रही हो, एक साथ दिये जायेंगे ।

3—(क)-परिषद् द्वारा संचालित किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र अथवा डिप्लोमा परीक्षार्थी को उस समय तक नहीं दिया जायेगा जब तक कि वह उक्त परीक्षा के लिए उनसे सम्बन्धित विनियमों के अनुसार प्रत्येक विषय में योग्यता न प्राप्त कर ले :

प्रतिबन्ध यह है कि यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा में प्रवेश पाने के पश्चात् अपात्र समझा जायेगा/जायेगी उसकी अभ्यर्थिता/परीक्षा रद्द कर दी जायेगी और/या उसका परीक्षा उत्तीर्ण करने का प्रमाण-पत्र भी वापस ले लिया जायेगा/रद्द कर दिया जायेगा ।

3—(ख) परिषद् की हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट परीक्षाओं में संस्थागत अभ्यर्थी के रूप में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों को मान्यता प्राप्त संस्थाओं में कक्षा 9 तथा 11 में प्रवेश लेते समय विहित प्रपत्र पर अपना पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा । ऐसे अभ्यर्थी अपनी पात्रता तथा जन्म-तिथि से सम्बन्धित वैध एवं प्रमाणित साक्ष्य संस्था के प्रधान को तत्समय उपलब्ध करायेंगे । संस्था के प्रधान सन्तुष्ट होने पर ही अभ्यर्थी का पंजीकरण अपने विद्यालय पर करेंगे । प्रत्येक अभ्यर्थी को पंजीकरण शुल्क के रूप में रु0 10.00 (दस रुपया) संस्था के प्रधान को देना होगा ।

टिप्पणी—पंजीकरण फार्म के साथ ही पंजीकरण शुल्क लिया जायेगा एवं राजकीय कोष में जमा किया जायेगा ।

---

* राजाज्ञा संख्या 2063/15-7-1 (243)/91 टी0 सी0, दिनांक 27 अगस्त, 2002 द्वारा विखण्डित ।
(दिनांक 21-9-2002 के राजकीय गजट में प्रकाशित विज्ञप्ति सं0 परिषद् 9/335, दिनांक 12-9-2002) ।

** राजाज्ञा संख्या 4131/15-7-2002-1 (4)/99, दिनांक 6 मार्च, 2003 द्वारा निरस्त ।
(दिनांक 29-3-2003 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति सं0 परिषद्-9/795, दिनांक 25-3-2003) ।

3--(ग) संस्थाओं के प्रधान विद्यालय की निर्धारित क्षमता (मान्य कक्षाओं) के अनुरूप दिनांक 30 सितम्बर तक पंजीकृत अभ्यर्थियों से भराये गये प्रपत्र की एक प्रति जिला विद्यालय निरीक्षक के माध्यम से विलम्बतम् 10 अक्तुबर तक परिषद् के सम्बन्धित क्षेत्रीय कार्यालय को प्रेषित करेंगे ।

3--(घ) परिषद् कक्षा 9 तथा 11 में पंजीकृत समस्त अभ्यर्थियों के विवरणों की सम्यक् जाँच करेगी तथा यथावांछित संशोधन, यदि कोई हो, करेगी तथा इन विवरणों के आधार पर अभ्यर्थियों को पंजीकरण संख्या अनुदानित कर सम्बन्धित संस्था को जिला विद्यालय निरीक्षक के माध्यम से प्रत्येक दशा में आगामी 28 फरवरी तक उपलब्ध करायेगी, तदनुसार संस्था के प्रधान अपने विद्यालय के प्रत्येक अभ्यर्थी को उसकी पंजीकरण संख्या से अवगत करायेंगे । पंजीकरण संख्या अभ्यर्थी का स्थायी अभिलेख होगा तथा आवश्यकतानुसार पंजीकरण संख्या से ही पत्र-व्यवहार किया जायेगा ।

3--(ङ) कक्षा 10 तथा 12 की संस्थागत परीक्षा में वही अभ्यर्थी बैठने के पात्र होंगे जिन्होंने सम्बन्धित संस्था में यथास्थिति कक्षा 9 तथा 11 में अपना पंजीकरण कराया हो । संस्था के प्रधान अपंजीकृत अभ्यर्थियों के आवेदन-पत्र किसी भी दशा में अग्रसारित नहीं करेंगे ।

प्रतिबन्ध यह है कि अन्य परिषदों से कक्षा 10 या 12 में स्थानान्तरित अभ्यर्थी का कक्षा 10 तथा 12 में ही पंजीकरण होगा ।

संस्थागत परीक्षार्थियों के प्रवेश के लिये नियम

4--(एक) परिषद् द्वारा संचालित किसी भी परीक्षा में प्रवेश हेतु प्रस्तुत किये जाने वाले मान्यता प्राप्त संस्था के परीक्षार्थी जिसमें पत्राचार शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित पत्राचार शिक्षा सतत् अध्ययन सम्पर्क योजना के छात्र भी सम्मिलित माने जायेंगे । संस्था के प्रधान को अधिक से अधिक प्रत्येक वर्ष की 31 जुलाई तक परीक्षा के लिए निर्धारित शुल्क देंगे तथा विषय अथवा विषयों को, जो वह परीक्षा के लिए ले रहे हैं, व्यक्त करते हुए सचिव द्वारा विहित प्रपत्र पर तथा विनिर्दिष्ट प्रक्रिया के अनुसार परीक्षा का आवेदन-पत्र भरेंगे । निर्धारित अवधि में शुल्क जमा न करने पर संस्था के प्रधान को सम्बन्धित छात्र का नाम संस्था से काटने का अधिकार होगा । किसी संस्था से अपना आवेदन-पत्र भरने के पश्चात् किसी संस्थागत छात्र को केवल उस दशा को छोड़कर जब कि जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा उसे उसके अभिभावक के उस स्थान से जहाँ वह शिक्षा ग्रहण कर रहा था किसी दूसरे स्थान को किये गये स्थानान्तरण के सम्बन्ध में प्रस्तुत किये गये तथ्यों पर प्रमाण-पत्र पर अपनी सन्तुष्टि के उपरान्त ऐसा करने की अनुमति दी गयी हो, विद्यालय परिवर्तन का अधिकार न होगा ।

(दो) संस्था का प्रधान परीक्षार्थियों का आवेदन-पत्र शुल्क ट्रेजरी चालान सहित अधिक से अधिक 14 अगस्त तक सचिव को भेजेगा । 14 अगस्त के बाद आवेदन-पत्र भेजने पर संस्था का प्रधान 20.00 रु० प्रति आवेदन-पत्र की दर से विलम्ब शुल्क देगा ।

संस्था का प्रधान विलम्ब शुल्क के साथ अधिक से अधिक 31 अगस्त तक आवेदन-पत्र भेजेगा ।

(तीन) ऐसे छात्र, जो इस परिषद् की पूरक परीक्षा उत्तीर्ण कर उसी वर्ष की मुख्य परीक्षा में प्रवेश चाहते हैं, आवेदन-पत्र पूरक परीक्षाफल घोषित होने की तिथि से 10 दिनों की अवधि के अन्दर भरेंगे ।

संस्था का प्रधान ऐसे समस्त आवेदन-पत्र पूरक परीक्षा का परीक्षाफल घोषित होने की तिथि से तीन सप्ताह की अवधि के अन्दर सचिव को भेजेगा :

प्रतिबन्ध यह है कि उत्तर प्रदेश से बाहर के राज्यों से अपने अभिभावकों के स्थानान्तरण के कारण वर्ष के 15 अगस्त के पश्चात् आने वाले परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में परिषद् की परीक्षाओं में संस्थागत परीक्षार्थियों के रूप में प्रवेश पाने की अन्तिम तिथि परीक्षाओं की तिथि से पूर्व 31 दिसम्बर होगी ।

(चार) परिषद्, संस्थागत परीक्षार्थियों के उपयोग हेतु आवेदन-पत्र उपलब्ध कराने की व्यवस्था करेगा तथा सामान्य प्रक्रिया से विलम्ब होने की स्थिति में वह ऐसी कार्यवाही करेगा, जो तात्कालिक आवश्यकता को देखते हुए उचित समझे ।

(पांच) संस्था के प्रधान आवेदन-पत्रों एवं सचिव द्वारा विनिर्दिष्ट प्रपत्रों के साथ सचिव को वह दिखाते हुए निम्नलिखित प्रमाण-पत्र भेजें गा--

(क) कि संस्था में बालक/बालिका का प्रवेश शिक्षा संहिता के नियमों तथा परिषद् के विनियमों के अनुसार है,

(ख) कि उसने एक मान्यता प्राप्त संस्था में अध्ययन का एक नियमित पाठ्यक्रम पूर्ण किया है,

(ग) कि उसने पाठ्य विवरण में निर्धारित प्रयोग वास्तविक रूप से किये हैं ।

(छः) ऐसे छात्रों को, जो किसी मान्यता प्राप्त संस्था में संस्थागत परीक्षार्थी के रूप में दो बार अनुत्तीर्ण हो जाते हैं, पुनः किसी संस्था में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जायेगी ।

उपस्थिति

5--(1) मान्यता प्राप्त संस्था, प्रत्येक शैक्षिक वर्ष में कम से कम 220 कार्य दिवसों में खुली रहेगी, जिनमें परीक्षाओं तथा पाठ्यानुवर्ती कार्य-कलाप के दिवस भी सम्मिलित हैं, प्रतिबन्ध यह है कि पत्राचार शिक्षा सतत् अध्ययन सम्पर्क योजना के अन्तर्गत पंजीकृत छात्र के सम्बन्ध में कार्य दिवसों की उपर्युक्त संख्या 75 कार्य दिवस होंगी तथा इसके साथ सम्बन्धित छात्र को पत्राचार शिक्षा संस्थान द्वारा प्रेषित पाठ्य सामग्री को निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार अध्ययन करना होगा ।

(2) किसी भी मान्यता प्राप्त संस्था द्वारा कोई छात्र हाई स्कूल परीक्षा के लिए प्रस्तुत नहीं किया जायेगा जब तक वह दो शैक्षिक वर्षों के दरम्यान प्रत्येक विषय में, जिसमें उसे परीक्षा में सम्मिलित होना है, वादनों की निर्धारित/आवंटित कुल संख्या के, जिसमें क्रियात्मक कार्य के वादन भी सम्मिलित होंगे, कम से कम 75 प्रतिशत वादनों में उपस्थित न रहा हो ।

पुनश्च--आंग्ल भारतीय विद्यालयों से आने वाले छात्रों के सम्बन्ध में 75 प्रतिशत उपस्थिति परीक्षा से पूर्व वर्ष की प्रथम जनवरी से परिगणित की जायेगी ।

(3) मान्यता प्राप्त संस्था द्वारा कोई भी छात्र इण्टरमीडिएट परीक्षा के लिए प्रस्तुत नहीं किया जायेगा । जब तक कि वह दो शैक्षिक वर्षों में प्रत्येक विषय में जिसमें उसको परीक्षा होनी है, दिये जाने वाले व्याख्यानों में से (जिसमें क्रियात्मक कार्य, यदि कोई हो, के घण्टे भी सम्मिलित हैं) कम से कम 75 प्रतिशत में सम्मिलित न हुआ हो ।

कृषि वर्ग के साथ इण्टरमीडिएट परीक्षा के परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में उपस्थिति का प्रतिशत भाग एक तथा दो के लिए अलग-अलग परिगणित किया जायेगा ।

टिप्पणी--काउन्सिल फार दि इण्डियन स्कूल सर्टीफिकेट इक्जामिनेशन, नई दिल्ली द्वारा संचालित इण्डियन सर्टीफिकेट आफ सेकेण्डरी एजूकेशन परीक्षा उत्तीर्ण छात्रों की उपस्थिति की गणना परीक्षा के पूर्व के वर्ष की पहली जनवरी से परिगणित की जायेगी ।

(4) परिगणन के लिए एक घन्टे के व्याख्यान को एक व्याख्यान, दो घण्टे व्याख्यान को दो व्याख्यान और इसी प्रकार परिगणित किया जायेगा । क्रियात्मक कार्य में लगा एक घंटा एक व्याख्यान के रूप में परिगणित होगा । घंटे का तात्पर्य स्कूल अथवा कालेज के समय चक्र में शिक्षण के घंटे से है ।

(5) ऊपर के खण्ड (2) और (3) में संदर्भित दो शैक्षिक वर्षों का क्रमिक होना आवश्यक नहीं है यह संस्थाओं के प्रधानों के विवेकाधिकार पर छोड़ा जाता है कि वे उन छात्रों की उपस्थिति, जिन्होंने कक्षा 9 अथवा 11 में एक से अधिक वर्ष पढ़ा है, कक्षा 10 अथवा 12 की उपस्थिति के साथ किसी एक वर्ष की उपस्थिति को परिगणित कर लें । उन छात्रों को जिन्हें एन० सी० सी०, पी० एस० डी० अथवा प्रादेशिक सेना के शिक्षा अथवा क्रीड़ा दल, बालचर रैलियां अथवा सेन्ट जान एम्बुलेन्स शिविर और प्रतियोगितायें अथवा ग्रामों में कृषि विस्तार सेवा अथवा शैक्षिक परिभ्रमण में जाने की अनुमति दी जाती है, कक्षा में उपस्थिति के लिए यथोचित लाभ दिया जायेगा ।

पुनश्च--[1] इस विनियम के अन्तर्गत कक्षा में उपस्थिति का समस्त लाभ उपस्थिति अथवा व्याख्यान पंजिका में इस सम्बन्ध की टिप्पणी सहित दिखाना चाहिए । इस प्रकार के लाभ से समस्त लेख भली-भांति रखे जाने चाहिए ।

[2] चुने हुये छात्रों के वर्ग के लिये तथा पूरी कक्षा के लिये सही लगायी गई विशेष कक्षा की उपस्थिति के लाभ की अनुमति न होगी ।

(6) परिषद् की हाई स्कूल अथवा इण्टरमीडिएट परीक्षा में अनुत्तीर्ण अथवा निरुद्ध छात्रों के सम्बन्ध में केवल एक शैक्षिक वर्ष का प्रतिशत परिगणित किया जायेगा । उस शैक्षिक वर्ष की उपस्थिति, जिसके अन्त में छात्र परीक्षा में बैठना चाहता है, परिगणित की जायेगी ।

परन्तु प्रतिबन्ध यह है कि उन छात्रों की दशा में जिन्होंने परिषद् की हाई स्कूल अथवा इण्टरमीडिएट परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति के लिए आवेदन न किया हो, परन्तु उनके नाम संस्था की उपस्थिति पंजी में हों अथवा आवेदन-पत्रों को प्रस्तुत कर दिये के पश्चात् भी परिषद् की परीक्षा में सम्मिलित न हुये हों, दो शैक्षिक वर्षों का प्रतिशत परिगणित किया जायेगा ।

"निरुद्ध" का तात्पर्य किसी भी कारण से हाई स्कूल अथवा इण्टरमीडिएट परीक्षा में रोके जाने से है ।

(7) छात्र द्वारा इस परिषद् के अधिक्षेत्र के बाहर किसी संस्था में परिषद् की हाई स्कूल की परीक्षा के समकक्ष मान्यता प्राप्त परीक्षा की तैयारी में अर्जित उपस्थिति हाई स्कूल परीक्षा के लिए उपस्थिति के प्रतिशत की गणना परिगणित कर ली जायेगी ।

(8) हाई स्कूल परीक्षा में अंकों की जाँचरीक्षा के फलस्वरूप सफल घोषित छात्र के सम्बन्ध में प्रथम शैक्षिक व वर्षारोक्षा का परिणाम सूचित किये जाने के दस दिन पश्चात् प्रारम्भ हुआ समझा जायेगा ।

(9) (विखण्डित) ।

[क] (विखण्डित) ।

[ख] (विखण्डित) ।

टिप्पणी--इस परिषद् अथवा अन्य किसी समकक्ष परीक्षा निकाय के रुके हुए परीक्षाफल घोषित होने के बाद किसी मान्यता प्राप्त संस्था के कक्षा ग्यारह में प्रवेश पाने वाले छात्र की उपस्थिति की गणना भी परीक्षाफल घोषित होने के दसवें दिन से होगी ।

(10) कोई छात्र, जो विनियम 4, अध्याय-चौदह में उल्लिखित किसी संस्था द्वारा मान्यता प्राप्त अथवा सम्बद्ध कालेज में सत्र के किसी भाग में रहा है, परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त कालेज में प्रविष्ट हो सकता है और उस कालेज में उनकी उपस्थिति के व्याख्यान इण्टरमीडिएट परीक्षा में वांछित उपस्थिति के प्रतिशत के लिए परिगणित कर लिए जायेंगे ।

(11) मान्यता प्राप्त संस्थाओं के प्रधानों को नितान्त असन्तोषजनक कार्य करने वालों को छोड़कर परीक्षार्थियों को रोकने की अनुमति नहीं है, जिन्होंने परिषद् की किसी परीक्षा में प्रवेश की शर्तों को पूरा कर लिया है :

प्रतिबन्ध यह है कि इस विनियम के अन्तर्गत कक्षा के पूरी संस्था के 10 प्रतिशत से अधिक छात्र नहीं रोके जायेंगे । मान्यता प्राप्त संस्थाओं के प्रधान छात्रों को रोकने के अधिकार का प्रयोग लिखित परीक्षा प्रारम्भ होने के तीन सप्ताह पूर्व तक कर सकते हैं और उनके इस निर्णय के विरुद्ध कोई अपील नहीं हो सकेगी । मान्यता प्राप्त संस्थाओं के प्रधान, सचिव को एक बार स्थिति की सूचना देने के पश्चात् अपने निर्णय को संशोधित नहीं करेंगे ।

(12) ऊपर के खण्ड (1) में सम्मिलित शर्तों के होते हुए भी मान्यता प्राप्त संस्थाओं के प्रधान ऐसे छात्रों को परिषद् की होने वाली परीक्षा में बैठने से रोक सकते हैं, जो शरीर शिक्षा, एन0 सी0 सी0 अथवा पी0 एस0 डी0 के लिए दिये हुये समस्त सामान तथा वर्दियाँ नहीं लौटाते हैं अथवा उनके खो जाने पर परिषद् की परीक्षा से पूर्व 15 फरवरी तक उनका मूल्य नहीं दे देते हैं ।

(13) न्यूनतम उपस्थिति के नियम का कड़ाई से पालनकिया जायेगा, किसी मान्यता प्राप्त संस्था का प्रधान उपस्थिति की कमी का मर्षण अधिकतम--

[क] हाई स्कूल परीक्षा के परीक्षार्थियों के लिए 10 दिन का और [ख] इण्टरमीडिएट परीक्षा के परीक्षार्थियों के लिए प्रत्येक विषय में दिये गये 10 व्याख्यान (क्रियात्मक कार्य के घंटों सहित यदि हो) कर सकता है, ऐसे समस्त मामलों की सूचना जिसमें इस विशेषाधिकार का प्रयोग किया जाता है, शिक्षा निदेशक (माध्यमिक) को परिषद् के सभापति के रूप में दी जायेगी ।

तथापि उन परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में जिनकी केवल एक वर्ष की उपस्थिति ही परिगणित होती है, मर्षण की यह सीमा केवल आधी अर्थात् पांच दिन अथवा पांच व्याख्यान, जैसी स्थिति हो रह जायेगी ।

पुनश्च--(क) 75 प्रतिशत दिन अथवा व्याख्यान जिसमें एक परीक्षार्थी की उपस्थिति रहना है अथवा (ख) उसकी उपस्थिति में कमी परिगणित करने में एक दिन अथवा व्याख्यान की भिन्न पर ध्यान दिया जाना चाहिए ।

विषय परिवर्तन

6--मान्यता प्राप्त संस्थाओं के प्रधान कक्षा 9 में विषय/विषयों में परिवर्तन की तथा कक्षा 11 में एक ही वर्ग में अथवा एक वर्ग से दूसरे वर्ग में विषय परिवर्तन की अनुमति दे सकते हैं । कक्षा 10 में एक ही विषय/विषयों तथा कक्षा 12 में एक ही वर्ग में विषय अथवा विषयों के अथवा एक वर्ग से दूसरे वर्ग में परिवर्तन की साधारणतः अनुमति नहीं दी जाती है, परन्तु विशेष परिस्थितियों में मुख्य रूप से अनुत्तीर्ण अथवा रोके गये परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में परिवर्तन की आज्ञा दी जा सकती है और इस प्रकार ऐसे मामलों की सूचना परिषद् को कारणों सहित दी जानी चाहिये । एक से अधिक विषय परिवर्तित करने की आज्ञा बहुत ही कम दी जानी चाहिये । परीक्षार्थी के एक विषय की उपस्थिति, जिसे वह बाद में संस्था के प्रधान की अनुमति से परिवर्तित करता है । नये विषयों की उपस्थिति के साथ नये विषय में इसकी उपस्थिति का प्रतिशत परिगणित करने के लिए परिगणित की जायेगी । परीक्षा में बैठने का आवेदन-पत्र सचिव के पास अग्रसारित कर देने के पश्चात् विषय में परिवर्तन की अनुमति कदापि नहीं दी जायेगी ।

छात्रों का प्रवेश एवं प्रोन्नति

7--कोई छात्र जिसने कभी किसी मान्यता प्राप्त संस्था में शिक्षा नहीं पायी है अथवा जिसने कक्षा 10 में प्रोन्नति होने से पूर्व मान्यता प्राप्त संस्था को छोड़ दिया परन्तु जिसे व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में हाई स्कूल

परीक्षा में बैठने की अनुमति प्राप्त हो गयी है और उसमें बैठ नहीं सका, कक्षा-10 में प्रवेश का पात्र नहीं होगा। इसी प्रकार कोई छात्र जिसने हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् मान्यता प्राप्त संस्था में अध्ययन नहीं किया अथवा कक्षा 12 में प्रोन्नत होने से पूर्व जिसने मान्यता प्राप्त संस्था को छोड़ दिया परन्तु जिसे व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में इण्टरमीडिएट परीक्षा में बैठने की अनुमति प्राप्त हो गयी और उसमें बैठ नहीं सका, कक्षा 12 में प्रवेश का पात्र नहीं होगा।

7—(क) मान्यता प्राप्त संस्था के प्रधान का छात्रों का कक्षा 9 से 10 अथवा 11 से 12 में प्रोन्नत करने का निर्णय प्रत्येक वर्ष के जून के अन्त तक अन्तिम रूप से हो जायेगा।

व्यक्तिगत परीक्षार्थी

प्रवेश के नियम

8—व्यक्तिगत परीक्षार्थी अर्थात् परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त संस्था में निर्धारित और अपेक्षित उपस्थिति के बिना परीक्षा में प्रवेश चाहने वाले व्यक्ति निम्नलिखित शर्तों पर परिषद् की परीक्षा में बैठने के पात्र होंगे :

(1) कोई व्यक्ति जो व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में परीक्षा में बैठना चाहता है, आगामी परीक्षा के लिए निर्धारित तिथि से पूर्व 15 अगस्त तक एक आवेदन-पत्र परीक्षा के लिए निर्धारित शुल्क सहित उस संस्था के प्रधान द्वारा, जो परीक्षा का पंजीकरण केन्द्र है, सचिव के पास प्रेषित करेगा। आवेदन-पत्र निर्धारित प्रपत्र पर परीक्षार्थी द्वारा विधिवत् भरा जाना चाहिए, जिसमें उनके द्वारा लिए जाने वाले विषयों का स्पष्ट उल्लेख हो। आवेदन-पत्र निम्नलिखित के साथ सचिव को उनके द्वारा विनिर्दिष्ट रीति में प्रेषित किया जायेगा :

*(क) इण्टरमीडिएट परीक्षा के लिए विनियम-2 अध्याय चौदह में वर्णित अथवा हाई स्कूल परीक्षा के लिए विनियम-10 (1) अध्याय-बारह में वर्णित परीक्षा में उत्तीर्ण होने के प्रमाण-पत्र की यथार्थ प्रतिलिपि।

(ख) परीक्षार्थी की अंतिम संस्था यदि कोई हो, द्वारा ली गई छात्र पंजी की मूल प्रति।

(ग) जिस श्रेणी के परीक्षार्थियों के लिए शिक्षा विभाग/या पत्राचार शिक्षा संस्थान द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम संचालित हो, उनकी पत्राचार पाठ्यक्रम के अनुसरण के सम्बन्ध में संस्थान द्वारा दिये गये प्रमाण-पत्र की यथार्थ प्रतिलिपि (जो परीक्षा की तिथि पर वैध और मान्य हो।)।

उन संस्थाओं के प्रधान जो परिषद् की परीक्षाओं के पंजीकरण केन्द्र हैं ऐसे व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के आवेदन-पत्र, जो पात्र हैं, जांच करने तथा सचिव द्वारा विहित प्रश्नों की पूर्ति करके उनके द्वारा विनिर्दिष्ट रीति से अग्रसारित करेंगे। अपूर्ण अथवा अशुद्ध अथवा अनर्ह अभ्यर्थियों के आवेदन-पत्रों को अग्रसारण अधिकारी द्वारा अस्वीकृत कर दिया जायेगा तथा इसकी सूचना परिषद् को दी जायेगी, अग्रसारण अधिकारी परीक्षा में बैठने वाले पात्र अभ्यर्थियों के आवेदन-पत्र इस प्रकार अग्रसारित करेंगे कि परीक्षाओं की तिथि से पूर्व प्रत्येक दशा में अधिक से अधिक 14 सितम्बर तक पहुंच जाये। इसके पश्चात् प्राप्त आवेदन-पत्रों पर किसी दशा में विचार नहीं किया जायगा। अपूर्ण एवं अशुद्ध तथा विलम्ब से आवेदन-पत्र तथा अन्य निर्दिष्ट पत्रजात प्रेषित करने वाले अग्रसारण अधिकारियों के विरुद्ध परिषद् को जैसा कि वह निर्णय करे, कार्यवाही (जिनमें अग्रसारण पारिश्रमिक में कटौती भी सम्मिलित है) करने का अधिकार होगा, अभिप्रेत व्यक्तिगत परीक्षार्थी जो कहीं सेवा में हैं, अग्रसारित कराने के पूर्व अपने अधिकारियों से उन्हें प्रमाणित करायेंगे। तथ्यों को छिपाना अपराध होगा और इससे परीक्षाफल निरस्त किया जा सकता है।

व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के लिए निर्धारित आवेदन-पत्र प्राप्त करने की विधि

(1) व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के लिए परिषद् की किसी परीक्षा में बैठने की अनुमति हेतु निर्धारित आवेदन-पत्रों की प्रतियां नियत मूल्य देकर सीधे उत्तर प्रदेश के उस जिले के जिला विद्यालय निरीक्षक से प्राप्त करना चाहिये, जिसमें परीक्षार्थी परीक्षा में बैठना चाहता है।

(2) विशेष दशाओं में अग्रसारण अधिकारी 25.00 रु० विलम्ब शुल्क के रूप में लेकर 31 अगस्त तक आवेदन-पत्र ले सकते हैं, परन्तु उनके द्वारा यथाविधि परीक्षित तथा हस्ताक्षरित होकर आवेदन-पत्र सचिव के पास अधिक से अधिक 14 सितम्बर तक अवश्य पहुंच जाने चाहिए।

(3) व्यक्तिगत परीक्षार्थी किसी भी दशा में आवेदन-पत्र सचिव को सीधे नहीं भेजेंगे। सचिव द्वारा सीधे प्राप्त समस्त आवेदन-पत्र रद्द समझे जायेंगे।

अग्रसारण अधिकारियों का पारिश्रमिक

9—ऐसे संस्था के प्रधान, जो परिषद् की परीक्षा का पंजीकरण केन्द्र है, अथवा ऐसे अन्य व्यक्ति को इस प्रयोजन हेतु सक्षम प्राधिकारी द्वारा नियुक्त किये जायें इस अध्याय के विनियम 8 में विहित विधि से आवेदन-पत्र की समय से प्राप्ति, विहित अर्हताओं तथा विनिर्दिष्ट प्रपत्र आदि की जांच तथा समय से प्रेषण के लिए व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होंगे। इस हेतु उन्हें पांच रुपये प्रति परीक्षार्थी की दर से पारिश्रमिक देय होगा जिसमें से वे दो रुपये प्रति परीक्षार्थी की दर से उपर्युक्त कार्य में अपनी सहायता करने वाले व्यक्ति को देंगे।

---

*राजाज्ञा संख्या-4131/15-7-2002—1 (4)/99, दिनांक 6 मार्च 2003 द्वारा संशोधित।
(दिनांक 29-3-2003 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/795, दिनांक 25-3-2003)।

अग्रसारण अधिकारी आवेदन-पत्र सचिव को भेजने के पश्चात् पारिश्रमिक पावना-पत्र सचिव को भेजेंगे। ऊपर निर्दिष्ट कार्य में अशुद्धता अथवा विलम्ब आदि के लिए अग्रसारण अधिकारी के पारिश्रमिक में कटौती अथवा उनके विरुद्ध अन्य दण्डात्मक कार्यवाही परिषद् द्वारा की जा सकेगी।

अग्रसारण अधिकारी परीक्षार्थी से किसी प्रकार का अग्रसारण शुल्क नकद नहीं लेंगे। परीक्षार्थियों से परिषद् द्वारा निर्धारित शुल्क के अतिरिक्त कोई अन्य शुल्क, चन्दा अथवा दान नहीं लिया जायेगा।

व्यक्तिगत परीक्षार्थियों की पात्रता

*10 (1) परिषद् अथवा शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा मान्यता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की कक्षा-9 की परीक्षा अथवा अन्य राज्यों के शिक्षा विभाग द्वारा संचालित या मान्यता प्राप्त कोई समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण परीक्षार्थी ही हाई स्कूल में व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में बैठने के लिए पात्र होंगे।

* (2) कोई परीक्षार्थी जिस वर्ष की परीक्षा में सम्मिलित होना चाहता है यदि उससे पूर्व के वर्ष की 31 जुलाई के पश्चात् उसने किसी मान्यता प्राप्त संस्था में (आंग्ल भारतीय विद्यालय को छोड़कर) अध्ययन किया है तो वह व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में हाई स्कूल परीक्षा में सम्मिलित होने का पात्र नहीं होगा।

*(3) आगामी होने वाली हाई स्कूल परीक्षा में व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के रूप में प्रविष्ट होने की अनुमति उन परीक्षार्थियों को नहीं दी जायगी, जिन्हें कक्षा-10 के लिए प्रोन्नति प्राप्त होने में सफलता नहीं मिली है।

आंग्ल-भारतीय विद्यालय

11--किसी आंग्ल-भारतीय विद्यालय को छोड़ने वाला परीक्षार्थी हाई स्कूल परीक्षा में उस शैक्षिक वर्ष के पूर्व तक प्रविष्ट न हो सकेगा, जिसमें कि वह कैम्ब्रिज स्कूल सार्टीफिकेट परीक्षा में प्रवेश का पात्र होता, यदि वह आंग्ल-भारतीय विद्यालय में अध्ययन करता रहता। आंग्ल-भारतीय विद्यालय में संस्थागत छात्र के रूप में अध्ययन करने वाले अथवा किसी ऐसे छात्र का आवेदन-पत्र, जिसका अंतिम विद्यालय आंग्ल-भारतीय विद्यालय था। आंग्ल-भारतीय विद्यालयों के निरीक्षक द्वारा उस संस्था के आचार्य के लिए अग्रसारित होना चाहिए, जिसे परीक्षार्थी अपने केन्द्र के रूप में चुनता है।

राज्य से बाहर के परीक्षार्थी

12--ऊपर के विनियम 10, अध्याय बारह के अधीन परिषद् के प्रादेशिक अधिक्षेत्रों के बाहर रहने वाले परीक्षार्थियों को परिषद् की परीक्षाओं में व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के रूप में प्रविष्ट होने की अनुमति दी जा सकती है, प्रतिबन्ध यह है कि वे अब भी उत्तर प्रदेश के स्थायी निवासी हों तथा कुछ पर्याप्त कारणों से अन्य राज्यों में अस्थायी रूप से प्रव्रजित हो गये हों। ऐसे परीक्षार्थियों के आवेदन-पत्र उन सम्बन्धित राज्यों के मण्डलीय विद्यालय निरीक्षकों द्वारा अग्रसारित होने चाहिए, जिन्हें परीक्षार्थियों के उत्तर प्रदेश में वास्तविक निवास को प्रमाणित करना चाहिए। पचास पैसे के निबन्धन शुल्क के साथ आवेदन-पत्र तथा परीक्षा का निर्धारित शुल्क 1 सितम्बर तक सीधे सचिव के पास न भेज कर उस संस्था के प्रधान को अग्रसारित होना चाहिए, जिसे परीक्षार्थी अपने केन्द्र के रूप में चुनता है।

केन्द्र परिवर्तन और विषय परिवर्तन

13--साधारणतः व्यक्तिगत परीक्षार्थी को आवेदन-पत्र प्रस्तुत करने के पश्चात् विषय अथवा केन्द्र परिवर्तित करने की आज्ञा न दी जायेगी।

किसी समकक्ष परीक्षा में एक साथ बैठना

14--किसी परीक्षार्थी को जो व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में परिषद् की किसी परीक्षा तथा अन्य निकाय द्वारा संचालित समकक्ष परीक्षा में बैठना चाहता है, परिषद् की परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

व्यक्तिगत परीक्षार्थियों द्वारा क्रियात्मक कार्य पूरा करने का प्रमाण-पत्र

15--इन विनियमों के शर्तों के होते हुए भी कोई व्यक्तिगत परीक्षार्थी परिषद् की किसी परीक्षा के लिए क्रियात्मक कार्य अथवा क्रियात्मक परीक्षा वाले विषय को ले सकता है, प्रतिबन्ध यह है कि यदि चुना हुआ विषय भौतिक विज्ञान अथवा रसायन विज्ञान अथवा जीव विज्ञान अथवा औद्योगिक रसायन अथवा कुलाल विज्ञान अथवा कृषि विज्ञान अथवा चित्रकला और मूर्ति कला अथवा सैन्य विज्ञान अथवा भू-गर्भ विज्ञान है तो उसे परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त एक संस्था में परीक्षा के लिए, उस विषय में निर्धारित समस्त क्रियात्मक एवं लिखित कार्य उसी सत्र में जिसमें वह परीक्षा में बैठना चाहता है, पूरा करना चाहिए और इस सम्बन्ध में संस्था के प्रधान का एक प्रमाण-पत्र परीक्षा

---

*राजाज्ञा संख्या 4131/15-7-2002--1 (4)/99, दिनांक 6 मार्च 2003 द्वारा संशोधित।

(दिनांक 29-3-2003 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद्-9/795, दिनांक 25-3-2003।

का साथ से पूर्व की जानकारी के अन्त तक प्रस्तुत करना चाहिए । किसी परीक्षार्थी को जो एक बार परीक्षा में बैठ चुका है तथा अनुत्तीर्ण हो चुका है, उस विषय के क्रियात्मक कार्य अथवा क्रियात्मक परीक्षा के सम्बन्धों में जिसमें वह पहले ही परीक्षा दे चुका है, प्रमाण-पत्र प्रस्तुत नहीं करना पड़ेगा ।

व्यक्तिगत परीक्षार्थी समिति

16--अभिप्रेत व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के आवेदन-पत्र जो अग्रसारण अधिकारियों से यथाविधि परीक्षित तथा हस्ताक्षरित होकर प्राप्त हुए हों, विनियम 3 अध्याय छः के अधीन नियुक्त उप समिति के पास संनिरीक्षा के लिए भेजे जावेंगे । संनिरीक्षा के पश्चात् उप समिति द्वारा ये आवेदन-पत्र स्वीकृत या अस्वीकृत किये जावेंगे ।

अतिरिक्त विषयों में प्रवेश की पात्रता

*17--इन विनियमों की शर्तों के होते हुए भी निम्नलिखित श्रेणी के परीक्षार्थी भी व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में प्रविष्ट हो सकते हैं :

1--कोई परीक्षार्थी जिसने हाई स्कूल परीक्षा अथवा उसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की है, बाद की हाई स्कूल परीक्षा में एक अथवा अधिकतम पांच विषयों में (कम्प्यूटर विषय छोड़कर) प्रविष्ट हो सकता है और ऐसा परीक्षार्थी यदि सफल हो जाय तो वह अतिरिक्त लिए गये उत्तीर्ण विषय अथवा विषयों में परीक्षा उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र पाने का अधिकारी होगा और उसे कोई श्रेणी नहीं दी जायेगी ।

2- कोई परीक्षार्थी जिसने इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष कोई परीक्षा उत्तीर्ण की है, बाद की इण्टर-मीडिएट परीक्षा में एक अथवा अधिकतम चार विषयों (कम्प्यूटर, कृषि वर्ग तथा व्यावसायिक वर्ग के विषयों को छोड़कर) बैठ सकता है और वह परीक्षार्थी यदि सफल हो जाय तो उसके द्वारा अपहृत किये गये विषय अथवा विषयों में उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र पाने का अधिकारी होगा और उसे कोई श्रेणी नहीं दी जायेगी । प्रतिबन्ध यह है कि विषय अथवा विषयों का चुनाव केवल एक वर्ग तक ही सीमित हो ।

3--इस विनियम के अन्तर्गत सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थी उन विषय अथवा विषयों का चयन नहीं कर सकेंगे, जो उनके द्वारा पूर्व की हाई स्कूल तथा इण्टरमीडिएट परीक्षा में, जिसमें वह उत्तीर्ण हुए थे, लिए गये थे। साथ ही परीक्षार्थी आधुनिक भारतीय, विदेशी तथा शास्त्रीय भाषा समूहों के प्रत्येक समूह में से केवल एक ही भाषा का चयन कर सकेंगे ।

4--परीक्षार्थी, इस विनियम के अन्तर्गत एक बार में केवल एक ही परीक्षा (हाई स्कूल अथवा इण्टर-मीडिएट) में प्रविष्ट हो सकेंगे ।

5--हाई स्कूल तथा इण्टरमीडिएट की सम्पूर्ण परीक्षा में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थी इस विनियम के अन्तर्गत परीक्षा में बैठने के पात्र नहीं होंगे ।

6--इस विनियम के अन्तर्गत परीक्षार्थी के किसी विषय अथवा विषयों में अनुत्तीर्ण होने पर कोई अनुग्रहांक (ग्रेस) देय नहीं होगा ।

7--निम्नलिखित परीक्षाओं को परिषद् की इण्टरमीडिएट परीक्षा के समकक्ष मान्यता प्राप्त है :--

(क) विश्वविद्यालयों तथा भारत में विधिवत स्थापित शिक्षा परिषदों की इण्टरमीडिएट परीक्षा ।

(ख) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा वर्ष 2001 तक संचालित उत्तर मध्यमा परीक्षा । वर्ष 2002 से माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित उत्तर मध्यमा परीक्षा ।

(ग) एम0 एस0 विश्वविद्यालय, बड़ोदा द्वारा संचालित एफ0 वाई0 बी0 ए0, एफ0 वाई0 बी काम0 तथा एफ0 वाई0 बी0 एस0 सी0 परीक्षाएं ।

(घ) पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा संचालित एक अतिरिक्त विषय के साथ उत्तीर्ण प्री-इंजीनियरिंग, प्री-मेडिकल परीक्षा ।

(ङ) काउन्सिल फार दी इंडियन स्कूल सर्टीफिकेट इक्जामिनेशन, नई दिल्ली द्वारा संचालित इंडियन स्कूल सर्टीफिकेट (12 वर्षीय पाठ्यक्रम) परीक्षा ।

(च) भारत में विधिवत् स्थापित विश्वविद्यालयों को प्रथम डिग्री से पूर्व की सार्वजनिक अथवा अनुरूप परीक्षा, यह अनुरूपता, छात्र द्वारा उस विश्वविद्यालय की स्नातक परीक्षा के लिए आवश्यक बाद के अध्ययन के वर्षों की संख्या से अवधारित होगी ।

---

*दिनांक 30 नवम्बर, 2002 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद-9, ए94, दिनांक 12-11-2002 द्वारा संशोधित ।

(छ) केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम की प्री-डिग्री साहित्यिक तथा वैज्ञानिक वर्ग की परीक्षा ।

(ज) कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र हरियाणा की परीक्षाओं को उनके समक्ष अंकित विवरण के अनुसार :—

(1) प्री-मेडिकल परीक्षा—विज्ञान समूह जीव विज्ञान के साथ ।

(2) प्री-इंजीनियरिंग परीक्षा—विज्ञान एवं गणित समूह के साथ ।

(3) बी० ए०/बी० एस -सी०, बी० कॉम० भाग-1 ।

परीक्षा क्रमशः साहित्यिक, वैज्ञानिक एवं वाणिज्य वर्ग के समकक्ष

(झ) सेन्ट्रल बोर्ड आफ सेकेन्ड्री एजूकेशन, नई दिल्ली द्वारा संचालित सीनियर स्कूल सर्टीफिकेट परीक्षा ।

(ञ) बोर्ड आफ सेकेन्डरी एजूकेशन, मणिपुर, इम्फाल द्वारा संचालित स्पेशल हायर सेकेन्ड्री (बारह वर्षीय) पाठ्यक्रम परीक्षा ।

(ट) त्रिपुरा बोर्ड आफ सेकेन्डरी एजूकेशन, अगरतला द्वारा संचालित हायर सेकेन्डरी (बारह वर्षीय) परीक्षा ।

(ठ) राष्ट्रीय ओपेन स्कूल, नई दिल्ली, द्वारा संचालित सीनियर सेकेन्डरी (उच्च माध्यमिक) परीक्षा इस प्रतिबन्ध के साथ कि यह परीक्षा कम से कम पांच विषयों में उत्तीर्ण की गई हो ।

(ड) रजिस्ट्रार, अरबी फारसी परीक्षाएं, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद द्वारा संचालित आलिम परीक्षा ।

श्रेणियां

18—इन विनियमों, में जहां इससे प्रतिकूल प्रावधान हो, उसे छोड़कर परिषद् की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों के नाम तीन श्रेणियों में रखे जायेंगे । कोई परीक्षार्थी जो सम्पूर्ण योगांक के 75 प्रतिशत अथवा अधिक अंकों से उत्तीर्ण होता है, सम्मान सहित उत्तीर्ण हुआ भी दिखाया जायेगा ।

19—जो परीक्षार्थी एक परीक्षा में उत्तर्ण हो गया है, बाद की एक अथवा अधिक परीक्षाओं में संस्थागत अथवा व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में प्रविष्ट हो सकता है, इस प्रतिबन्ध के साथ की उसे ऐसे प्रत्येक अवसर पर सचिव को आश्वस्त करना होगा कि उसने परिषद् की परीक्षाओं में परीक्षार्थियों के प्रवेश के लिए निर्धारित शर्तों को पूर्ति कर दी है ।

19—(क)—हाई स्कूल (कक्षा 9 एवं 10) तथा इण्टरमीडिएट परीक्षा में अभ्यर्थी केवल एक ही माध्यम (संस्थागत अथवा व्यक्तिगत) से आवेदन-पत्र भर कर परीक्षा में सम्मिलित हो सकता है । किसी भी दशा में अभ्यर्थी को एक परीक्षा वर्ष में एक से अधिक संस्था/संस्थाओं से संस्थागत अथवा व्यक्तिगत अथवा दोनों प्रकार से आवेदन-पत्र भरने अथवा परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं होगी । तथ्यों को छिपाना अपराध होगा। अस विनियम के उल्लंघन का दोषी पाये जाने वाले अभ्यर्थियों को अभ्यर्थिता निरस्त कर दी जायेगी तथा उनके विवरण यदि परिषदीय अभिलेखों में अंकित हो गये हैं, तो उन्हें विलुप्त कर दिया जायेगा अथवा अभ्यर्थी के परीक्षा में अनियमित रूप से सम्मलित होने की दशा में परीक्षाफल निरस्त कर दिया जायेगा, जिसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व अभ्यर्थी का होगा ।

**20—परिषदीय परीक्षाओं में अभ्यर्थियों को निम्न व्यवस्थाओं के अनुसार अनुग्रहांक देय होगा ।

**(क) हाई स्कूल परीक्षा के संदर्भ में—

परिषद् की हाई स्कूल परीक्षा में प्रविष्ट परीक्षार्थी यदि किन्हीं दो विषयों में अनुत्तीर्ण, रहे और अनुत्तीर्ण हुए दोनों विषयों में उसे पृथक्-पृथक् 25 प्रतिशत या अधिक अंक मिले हों तो उसे उन अनुत्तीर्ण हुए विषयों में पाठ्यक्रम समिति द्वारा निर्धारित न्यूनतम उत्तीर्णांक तक पाने के लिये उसके सम्पूर्ण योग के आधार पर परीक्षा समिति द्वारा समय-समय पर निर्धारित नियमों के अनुसार आवश्यक अंक अनुग्रहांक के रूप में देकर उत्तीर्ण घोषित किया जायेगा और श्रेणी दी जायेगी ।

प्रतिबन्ध यह है कि अभ्यर्थियों को एक अथवा दोनों विषयों में केवल आठ अंक की अधिकतम सीमा तक ही अनुग्रहांक देय होगा जिसका विवरण उनको अर्हतानुसार एक अथवा दोनों विषयों में आवश्यकतानुसार किया जायेगा ।

(ख) इण्टरमीडिएट परीक्षा (सामान्य व्यावसायिक) के सन्दर्भ में—

(1) परिषद् की इण्टरमीडिएट परीक्षा में प्रविष्ट परीक्षार्थी यदि केवल एक विषय जिसमें प्रयोगात्मक परीक्षा नहीं होती है में अनुत्तीर्ण रहे और उस विषय में उसे 25 प्रतिशत या अधिक अंक मिले हों तो उसे अनुत्तीर्ण हुए विषय में पाठ्यक्रम समिति द्वारा निर्धारित उत्तीर्णांक तक अंक पाने के लिये उसके सम्पूर्ण योग के आधार पर परीक्षा समिति द्वारा समय-समय पर निर्धारित नियमों के अनुसार अंक अनुग्रहांक के रूप में देकर उत्तीर्ण घोषित किया जायेगा और श्रेणी दी जायेगी ।

**दिनांक 24-5-2003 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद् 9/55, दिनांक 20-5-2003 द्वारा संशोधित वर्ष 2003 की परीक्षा से प्रभावी ।

(2) परिषद् की परीक्षा में प्रविष्ट किसी परीक्षार्थी को ऐसे विषयों का चयन करता है। जिसमें लिखित के साथ-साथ प्रयोगात्मक परीक्षा भी होती है को अनुग्रहांक हेतु प्रयोगात्मक वाले केवल एक विषय जिसमें वह अनुत्तीर्ण रहता है, में लिखित तथा प्रयोगात्मक परीक्षा में अलग-अलग 25 प्रतिशत या अधिक अंक पाना अनिवार्य होगा। इस प्रकार प्रयोगात्मक वाले विषयों में परीक्षार्थी द्वारा लिखित तथा प्रयोगात्मक दोनों खण्डों में अलग-अलग 25 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर ही अनुग्रहांक पाने के लिये हकदार होगा। प्रतिबन्ध यह है कि परीक्षार्थी को एक खण्ड लिखित अथवा प्रयोगात्मक खण्ड में से किसी एक ही खण्ड में अनुग्रहांक देय होगा। किसी भी दशा में परीक्षार्थी को दोनों खण्डों (लिखित तथा प्रयोगात्मक) में अनुत्तीर्ण होने पर अनुग्रहांक देय नहीं होगा। ऐसे परीक्षार्थी को अनुत्तीर्ण हुए विषय में पाठ्यक्रम समिति द्वारा निर्धारित उत्तीर्णांक तक अंक पाने के लिये उसके सम्पूर्ण योग के आधार पर परीक्षा समिति द्वारा समय-समय पर निर्धारित नियमों के अनुसार आवश्यक अंक अनुग्रहांक के रूप में देकर उत्तीर्ण घोषित किया जायेगा और श्रेणी दी जायेगी प्रयोगात्मक खण्डों हेतु पाठ्यक्रम समिति द्वारा निर्धारित पृथक-पृथक पूर्णांक के आधार पर 25 प्रतिशत अंकों का निर्धारण किया जायेगा।

(3) अभ्यर्थी को केवल एक विषय में आठ अंक की सीमा तक ही अनुग्रहांक उनकी अर्हतानुसार देय होगा।

(ग) परिषद् की हाई स्कूल तथा इण्टरमीडिएट परीक्षा में श्रेणी प्रदान की योजना निम्नवत् होगी—

सम्मान सहित उत्तीर्ण होने के लिए वांछित न्यूनतम अंक	..	सम्पूर्ण योग का 75 प्रतिशत या अधिक
प्रथम श्रेणी के लिए वांछित न्यूनतम अंक	..	योगांक का 60 प्रतिशत
द्वितीय श्रेणी के लिए वांछित न्यूनतम अंक	..	योगांक का 45 प्रतिशत
तृतीय श्रेणी के लिए वांछित न्यूनतम अंक	..	योगांक का 33 प्रतिशत जहां इसके प्रति कुल उल्लेख न हो।

नोट--1--एक विषय में योगांक का 75 प्रतिशत होने पर विषय में विशेष योग्यता प्रदान की जाती है।

2--इण्टरमीडिएट कृषि तथा व्यावसायिक वर्ग की परीक्षा के लिये विस्तृत योजना पूर्णांक तथा न्यूनतम उत्तीर्णांक विवरण पत्रिका में पृथक् से दिये गये हैं।

सन्निरीक्षा-उसकी कार्य-विधि

11--हाई स्कूल तथा इण्टरमीडिएट के परीक्षार्थी जो अपनी उत्तर-पुस्तकें सन्निरीक्षित कराना चाहते हैं, निम्नलिखित नियमों के अनुसार करा सकते हैं--

(क) कोई परीक्षार्थी जो परिषद् द्वारा संचालित परीक्षा में प्रविष्ट हुआ है, विषयों के अपने अंकों की सन्निरीक्षा के लिए आवेदन-पत्र दे सकता है।

(ख) ऐसे समस्त आवेदन-पत्रों के साथ कोष पत्र की एक प्रतिलिपि यह दिखाते हुए कि 40.00 रु0 विषय के प्रति प्रश्न-पत्र की दर से निर्धारित शुल्क दे दिया गया है अवश्य ही संलग्न होनी चाहिये। प्रयोगात्मक की सन्निरीक्षा हेतु 40.00 रु0 का शुल्क प्रति प्रयोगात्मक विषय पृथक् से देय होगा। उ0 प्र0 के बाहर के स्थान से आवेदन-पत्र भेजने वाले परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में यह शुल्क सचिव के कार्यालय में रेखित पोस्टल आर्डर अथवा स्टेट बैंक आफ इण्डिया की इलाहाबाद शाखा पर रेखित बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजा जाना चाहिये।

(ग) ऐसे आवेदन-पत्र के साथ एक सादा लिफाफा पते सहित [जिस पते पर परीक्षार्थी सन्निरीक्षा परिणाम की सूचना चाहता है] संलग्न करना अनिवार्य होगा, जिस पर रजिस्ट्री हेतु निर्धारित शुल्क का डाक टिकट लगा हो। समस्त आवेदन-पत्र परीक्षाफल घोषणा की तिथि से तीस दिन की अवधि के अन्दर अवश्य दिये जाने चाहिये।

(घ) सन्निरीक्षा हेतु आवेदित समस्त मामलों का निस्तारण परीक्षा वर्ष की 31 दिसम्बर, तक सम्पन्न कर दिया जायेगा। सन्निरीक्षा की समाप्ति पर परीक्षार्थियों को उनके द्वारा आवेदन-पत्र में उल्लिखित पते पर सन्निरीक्षा परिणाम की सूचना दी जायेगी।

(ङ) सन्निरीक्षा का तात्पर्य उत्तर-पुस्तकों का पुनर्मूल्यांकन नहीं है सन्निरीक्षा कार्य में परीक्षार्थियों की उत्तर-पुस्तकों में यह देखा जायेगा कि परीक्षार्थी की उत्तर-पुस्तक में क्या अलग-अलग प्रश्नों में दिये गये अंकों का योग करने, उन्हें अग्रेनीत करने अथवा किसी प्रश्न अथवा उसके भाग पर अंक देना छूटने की कोई त्रुटि तो नहीं हुई है। सन्निरीक्षा कार्य में परीक्षार्थियों की उत्तर-पुस्तकों में परीक्षक द्वारा मूल्यांकित प्रश्नों के उत्तरों का पुनर्मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।

शुल्क

12--परिषद द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं के सम्बन्ध में निम्नलिखित शुल्क लिये जायेंगे--

1--हाई स्कूल परीक्षा .. (क) किसी मान्यता प्राप्त संस्था के प्रत्येक परीक्षार्थी से 150 रुपये
(ख) प्रत्येक व्यक्तिगत परीक्षार्थी से 500 रुपये।

2--विखण्डित

**दिनांक 24-5-2003 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति से सं परीषद् 9/55, दिनांक 20-5-200 द्वारा संशोधित वर्ष 2003 की परीक्षा से प्रभावी।

3—इंटरमीडिएट परीक्षा ..	(क) किसी मान्यता प्राप्त संस्था के प्रत्येक परीक्षार्थी से 300 रुपये । (ख) प्रत्येक व्यक्तिगत परीक्षार्थी से 600 रुपये ।
4—*(क) इंटरमीडिएट प्राविधिक परीक्षा	(क) विखण्डित
*(ख) इंटरमीडिएट प्राविधिक परीक्षा	(ख) विखण्डित
(ग) इंटरमीडिएट कृषि (भाग–1) परीक्षा	किसी मान्यता प्राप्त संस्था के प्रत्येक परीक्षार्थी से 300 रुपये ।
(घ) इंटरमीडिएट कृषि (भाग–1) परीक्षा	प्रत्येक व्यक्तिगत परीक्षार्थी से 600 रुपये ।
(ङ) इंटरमीडिएट कृषि (भाग–2) परीक्षा	किसी मान्यता प्राप्त संस्था के प्रत्येक परीक्षार्थी से 300 रुपये
(च) इंटरमीडिएट कृषि (भाग–2) परीक्षा	प्रत्येक व्यक्तिगत परीक्षार्थी से 600 रुपये ।
(छ) विनियम 9 (क), अध्याय चौदह के अन्तर्गत	केवल अंग्रेजी में इंटरमीडिएट परीक्षा 120 रुपये ।
(ज) विनियम 9 (क) अध्याय चौदह के अन्तर्गत	शेष विषयों में इंटरमीडिएट परीक्षा 250 रुपये ।
5—विखण्डित	
6—विखण्डित	
**7—मार्च/अप्रैल की मुख्य परीक्षा में एक अथवा अधिक विषयों की परीक्षा ..	200 रुपये प्रति विषय ।
8—परीक्षार्थियों के परीक्षाफल की सन्निरीक्षा का शुल्क ..	40 रुपये विषय के प्रति प्रश्न-पत्र प्रयोगात्मक की सन्निरीक्षा हेतु 40 रु० का शुल्क पृथक से देय होगा
9—(क) किसी संस्थागत परीक्षार्थी द्वारा किसी परीक्षा में प्राप्त ब्योरेवार अंकों के प्रेषण का अनिवार्य शुल्क ..	1 रुपये । इस शुल्क का आधा सम्बन्धित संस्था के प्रधान द्वारा रख लिया जायेगा, जो परिषद् से सुसंगत सूचना प्राप्त होने के पश्चात् प्रत्येक परीक्षार्थी को उसके ब्योरेवार अंक ठीक ढंग से मुद्रित प्रपत्र में प्रेषित करेंगे । संस्था के प्रधान द्वारा रखे गये शुल्क का विवरण निम्नवत् होगा : (क) नामावली बनाने हेतु $12\frac{1}{2}$ प्रतिशत । (ख) संख्या सूचक चक्र निर्माण हेतु $12\frac{1}{2}$ प्रतिशत । (ग) प्राप्तांक पत्रों को तैयार करने तथा उनकी जाँच हेतु 50 प्रतिशत । (घ) प्राप्तांक प्रदान करने की प्रक्रिया में डाक टिकट तथा लेखन–सामग्री इत्यादि की मदों में व्यय हेतु 25 प्रतिशत ।

संयोजन वाले संस्थाओं की स्थिति में शुल्क को केवल 25 प्रतिशत धनराशि संस्था के प्रधान अथवा केन्द्र के अधीक्षक द्वारा जैसी स्थिति हो, रोक ली जायेगी, जिसका प्रयोग प्राप्तांक प्रदान करने की प्रक्रिया में डाक व्यय तथा लेखन–सामग्री आदि की मदों में व्यय हेतु किया जायेगा ।

(ख) किसी संस्थागत परीक्षार्थी के अंक–पत्र की द्वितीय प्रतिलिपि का शुल्क .. 20 रुपये ।

---

*राजाज्ञा संख्या 2063/15–7–1 (243)'91 टी० सी०, दिनांक 27 अगस्त, 2002 द्वारा दिनांक 21–9–02 के राजकीय गजट में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परिषद् 9/335, दिनांक 12–9–2002 द्वारा विखण्डित ।

**दिनांक 30 नवम्बर, 2002 के राजपत्र में प्रकाशित विज्ञप्ति संख्या परीक्षा 9/494, दिनांक 12–11–2002 द्वारा संशोधित (वर्ष 2004 की परीक्षा से प्रभावी)

10—(क) किसी व्यक्तिगत परीक्षार्थी द्वारा प्राप्त व्योरेवार अंकों के प्रेषण का शुल्क — 2 रुपये । इस शुल्क का आधा सम्बन्धित केन्द्र अधीक्षक द्वारा रख लिया जायेगा, जो परिषद् के सचिव से सुसंगत सूचना प्राप्त होने के पश्चात् प्रत्येक व्यक्तिगत परीक्षार्थी को उसके व्योरेवार अंक ठीक ढंग से मुद्रित पत्र में प्रेषित करेंगे । केन्द्र अधीक्षक द्वारा रखे गये शुल्क की धनराशि का विवरण निम्नवत् होगा :

(क) नामावली बनाने हेतु $12\frac{1}{2}$ प्रतिशत ।

(ख) संख्या सूचक चक्र के निर्माण हेतु $12\frac{1}{2}$ प्रतिशत ।

(ग) प्राप्तांक पत्रों को तैयार करने तथा उसको जांच हेतु 50 प्रतिशत ।

(घ) प्राप्तांक प्रदान करने की प्रक्रिया में डाक टिकट तथा लेखन सामग्री आदि की मदों में व्यय हेतु 25 प्रतिशत ।

यंत्रीकरण वाले संस्थाओं की स्थिति में शुल्क की केवल 25 प्रतिशत धनराशि संस्था के प्रधान अथवा केन्द्र के अधीक्षक द्वारा, जैसी स्थिति हो, रोक ली जायेगी जिसका प्रयोग प्राप्तांक प्रदान करने की प्रक्रिया में डाक व्यय तथा लेखन-सामग्री आदि की मदों में व्यय हेतु किया जायेगा ।

(ख) किसी व्यक्तिगत परीक्षार्थी के अंक-पत्र की द्वितीय प्रतिलिपि का शुल्क .. 20 रुपये

(अंक-पत्रों की द्वितीय प्रतिलिपि सचिव के कार्यालय से प्रेषित की जायेगी जिसके लिए आवेदन-पत्र दिया जाना चाहिए ।)

(ग) विखण्डित ।

11—विलम्ब शुल्क .. 25 रुपये (किसी व्यक्तिगत परीक्षार्थी द्वारा देय जो परिषद् की किसी परीक्षा में प्रविष्ट होने की अनुमति का अपना आवेदन-पत्र विनियमों में निर्धारित तिथि के पश्चात् परन्तु अधिकतम 31 अगस्त तक देता है ।)

12—प्रवेश-पत्र की द्वितीय प्रतिलिपि का शुल्क .. 2 रुपये ।

13—परिषद् द्वारा एक परीक्षा के लिए परीक्षार्थी को निर्गत प्रमाण-पत्र में नाम परिवर्तन कराने का शुल्क .. 20 रुपये ।

14—इस अध्याय के विनियम 28 के अन्तर्गत निर्गत प्रमाण-पत्र की द्वितीय प्रतिलिपि का शुल्क .. 50 रुपये प्रत्येक परीक्षा के लिए ।

15—जिस वर्ष में परीक्षा हुई थी उसकी 31 मार्च से 5 वर्ष के अन्दर न लिए गए प्रमाण-पत्र का शुल्क .. 20 रुपये ।

16—किसी व्यक्तिगत परीक्षार्थी के लिए प्रव्रजन प्रमाण-पत्र निर्गत होने का शुल्क .. 20 रुपये ।

17—संस्था के प्रधानों को परीक्षाफल पत्रों की द्वितीय प्रतिलिपियां प्रेषित करने का शुल्क .. 10 रुपये प्रथम 100 परीक्षार्थियों अथवा उसके अंश के लिए और बाद के 100 परीक्षार्थियों अथवा उसके अंश के लिए 5 रुपये ।

18—व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के आवेदन-पत्र अग्रसारण हेतु शुल्क .. 5 रुपये ।

शुल्क की वापसी

23--किसी परीक्षा में प्रविष्ट होने की अनुमति के लिए एक बार दिया हुआ शुल्क निम्नलिखित दशाओं को छोड़कर वापस न होगा :

(क) दशायें, जिसमें पूरे शुल्क की वापसी हो जायेगी--

[एक] परीक्षा से पूर्व परीक्षार्थी की मृत्यु ।

[दो] कोई परीक्षार्थी, जो आगे होने वाली परीक्षा के लिए निर्धारित शुल्क देने के पश्चात् सन्निरोधा के फलस्वरूप अथवा अपने रोके हुए परीक्षाफल के मुक्त होने पर सफल घोषित कर दिया जाता है ।

[तीन] कोई परीक्षार्थी, जो पूर्व परीक्षा के लिए दिए गए शुल्क, जिसमें वह अस्वस्थता के कारण प्रविष्ट न हो सका, के रोके जाने की समय से सूचना प्राप्त न होने के कारण नया शुल्क जमा कर देता है ।

(ख) दशायें जिसमें एक रुपया कम करके शुल्क की वापसी होगी :

[एक] जब कोई परीक्षार्थी भूल से शुल्क का "0202-शिक्षा खेल-कला और 01-संस्कृति, सामान्य शिक्षा, 202-माध्यमिक शिक्षा, 02-बोर्ड की परीक्षाओं का शुल्क" शीर्षक में जमा कर दे यद्यपि वह किसी अन्य निकाय द्वारा संचालित परीक्षा में प्रविष्ट होना चाहता/चाहती है ।

[दो] ऐसे परीक्षार्थी के सम्बन्ध में, जिनका आवेदन-पत्र परिषद् अथवा अपसारण प्राधिकारी द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया हो ।

[तीन] जब कोई परीक्षार्थी परिषद् को किसी परीक्षा के लिए विहित शुल्क से अधिक जमा कर दे ।

[चार] जब परिषद् को किसी परीक्षा के लिए परीक्षार्थी की ओर से किसी अन्य व्यक्ति द्वारा गलती से शुल्क जमा कर दिया जाय ।

पुनश्च--(क) "शुल्क" का तात्पर्य केवल परीक्षा शुल्क से है और उसमें अंक शुल्क अथवा विलम्ब शुल्क सम्मिलित नहीं है ।

(ख) शुल्क की वापसी का आवेदन-पत्र शुल्क को कोषागार में जमा करने के दो वर्ष के भीतर ही प्रस्तुत हो सकेगा ।

(ग) शुल्क की वापसी के लिए उस अभ्यर्थी के सम्बन्ध में किसी आवेदन-पत्र की आवश्यकता नहीं है, जिसका आवेदन-पत्र परिषद् द्वारा रद्द कर दिया गया है ।

शुल्क-स्थगन

24--आवेदन-पत्र देने पर परिषद् किसी परीक्षार्थी को, जो किसी परीक्षा में प्रविष्ट होने से असमर्थ रहा, आगामी होने वाली परीक्षा में प्रवेश की अनुमति उसके शुल्क को स्थगित रखकर निम्नलिखित दशाओं में दे सकता है :

(एक) विखण्डित ।

(दो) विखण्डित ।

(तीन) परीक्षार्थी परीक्षा के समय भयंकर रूप से रुग्ण था और उसकी समर्थ चिकित्सा प्राधिकारी ने यथाविधि प्रमाणित किया है । परीक्षार्थियों के परीक्षा शुल्क स्थगित रखने के आवेदन-पत्र संस्था के प्रधान अथवा सम्बन्धित केन्द्र अधीक्षक द्वारा परिषद् के सचिव कार्यालय में परीक्षा वर्ष की 1 मई तक पहुंच जाने चाहिए ।

पुनश्च--(क) एक बार स्थगित किया गया शुल्क पुनः स्थगित नहीं हो सकेगा ।

(ख) मुख्य परीक्षा के तुरन्त बाद में होने वाली पूरक परीक्षा का शुल्क स्थगित करने का आवेदन-पत्र प्राप्त होने की अन्तिम तिथि 15 सितम्बर होगी । अधिक जमा किये शुल्क की वापसी न होगी ।

प्रवेश-पत्र तथा उन्हें प्राप्त करने की विधि

25--सचिव अपने को आश्वस्त करने के उपरान्त कि परीक्षार्थी ने परिषद् की परीक्षा में प्रवेश हेतु समस्त अपेक्षाओं को पूर्ति कर दी है, उसे प्रवेश-पत्र देगा जिसे परीक्षा केन्द्र के अधीक्षक को प्रस्तुत करके परीक्षार्थी को परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जायेगी ।

व्यक्तिगत परीक्षार्थी अपने प्रवेश-पत्र परीक्षा केन्द्रों के प्रयोजनों से लिखित परीक्षा प्रारम्भ होने के प्रथम दिवस से 48 घण्टे पूर्व प्राप्त कर लेंगे, ऐसा न करने पर उन्हें प्रतिदिन अथवा उसके अंश पर 1 रुपये अर्थदण्ड देना होगा ।

यदि सचिव आश्वस्त हो कि किसी परीक्षार्थी का प्रवेश-पत्र खो गया अथवा नष्ट हो गया है तो निर्धारित शुल्क दिये जाने पर उसकी द्वितीय प्रतिलिपि दे सकते हैं ।

बहिष्करण एवं निष्कासन

26--इन विनियमों की शर्तों के होते हुए भी--

(एक) कोई परीक्षार्थी जो एक शैक्षिक वर्ष के भीतर किसी समय बहिष्कृत कर दिया गया है, उस शैक्षिक वर्ष में होने वाली परीक्षा में प्रवेश नहीं पा सकेगा ।

(दो) किसी ऐसे परीक्षार्थी को, जिसको परिषद् की किसी परीक्षा में प्रवेश के लिए उसका प्रार्थना-पत्र भेज दिए जाने के पश्चात् संस्था से निष्काशित कर दिया गया है और जिसका किसी मान्यता प्राप्त संस्था में प्रवेश नहीं हुआ है, परीक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं दी जायेगी ।

ज्ञातव्य--(क) यदि उपयुक्त दण्ड उसे परीक्षाकाल में अथवा उसके पश्चात् परन्तु उस शैक्षिक वर्ष की समाप्ति से पूर्व दिया जाता है जिसमें परीक्षा होती है, तो उसकी परीक्षा निरस्त कर दी जायेगी ।

(ख) किसी परीक्षार्थी को जो परिषद् द्वारा अन्य किसी परीक्षा निकाय से पारित है, किसी परीक्षा में उस अवधि की समाप्ति से पूर्व, जिसके लिए वह दण्डित है, प्रवेश नहीं मिल सकेगा ।

27--विखण्डित ।

प्रमाण-पत्र की दूसरी प्रति

28--परिषद्, आवेदन-पत्र देने पर तथा इस अध्याय के विनियम 23 (14) के अनुसार निर्धारित शुल्क देने पर किसी परीक्षार्थी को प्रमाण-पत्र की दूसरी प्रति निम्नलिखित दशाओं में दे सकता है--

(एक) प्रमाण-पत्र खो जाने अथवा नष्ट हो जाने की दशा में ।

(दो) प्रमाण-पत्र के खराब हो जाने, विरूपित होने अथवा फट-फट जाने की दशा में परिषद् को अवरुद्ध किये जाने हेतु प्रस्तुत कर दिया जाता है ।

(तीन) प्रमाण-पत्र की प्रविष्टियां धूमिल हो जाने की दशा में जो अन्य प्रकार से मजबूत हैं और परिषद् को निरस्त किये जाने के लिए प्रस्तुत किया जाता है ।

(चार) आगामी विनियम 32 के प्रावधान के अनुसार अस्वाभिक प्रमाण-पत्र नष्ट कर दिये जाने की दशा में ।

प्रतिबन्ध यह है कि वर्ग (एक) एवं (दो) और (चार) में परीक्षार्थी अपने आवेदन-पत्रों के साथ शपथ-पत्र में प्रस्तुत करेंगे । यदि परीक्षार्थी की आयु 20 वर्ष या इससे कम है तो शपथ-पत्र उसके पिता (यदि वह जीवित है) के द्वारा अथवा उसके अभिभावक द्वारा (यदि पिता जीवित नहीं है) निष्पादित किया जायेगा । दोनों ही दशाओं में परीक्षार्थी को शपथ-पत्र की यथा विधि अभिपुष्टि करनी होगी ।

यह भी प्रतिबन्ध है कि वर्ग (एक) के सम्बन्ध में परीक्षार्थियों के द्वारा इस तथ्य को इसी राज्य के एक दैनिक समाचार-पत्र के एक संस्करण में विज्ञप्ति कराना होगा और इसे समाचार-पत्र के संस्करण की प्रति जिसमें विज्ञप्ति निकली है परिषद् के कार्यालय को पूर्व प्रतिबन्ध में अपेक्षित शपथ-पत्र के साथ प्रेषित करनी होगी ।

प्रव्रजन प्रमाण-पत्र

29--व्यक्तिगत परीक्षार्थियों को निर्धारित शुल्क देने पर निम्नलिखित प्रपत्र में सचिव द्वारा प्रव्रजन प्रमाण-पत्र निर्गत किए जायेंगे ।

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश

प्रव्रजन प्रमाण-पत्र

व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के रूप में परिषद् की परीक्षाएं उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों के लिए :

यह प्रमाणित किया जाता है कि----------पुत्र/पुत्री----------अनुक्रमांक----------ने 19--में हाई स्कूल/इण्टरमीडिएट परीक्षा----------केन्द्र से व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में उत्तीर्ण की ।

परिषद् को उसके उत्तर प्रवेश से बाहर किसी विश्वविद्यालय अथवा संस्था में प्रविष्ट होने में कोई आपत्ति नहीं है ।

इलाहाबाद———————— सचिव ।

टिप्पणी——व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के रूप में प्रविष्ट होने वाले परीक्षार्थियों के लिए प्रव्रजन प्रमाण-पत्र नहीं दिया जाता है । जिस संस्था में परीक्षार्थी ने अध्ययन किया उसका जिला विद्यालय निरीक्षक से प्रतिहस्ताक्षरित स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र प्रव्रजन प्रमाण-पत्र का कार्य करता है ।

30——इस अध्याय के विनियम 28 के होते हुए भी परीक्षार्थी द्वारा प्रमाण-पत्र की दूसरी प्रतिलिपि प्राप्त करने के लिए जमा किया हुआ शुल्क वापस नहीं किया जायेगा ।

प्रमाण-पत्रों का वितरण

31——प्रमाण-पत्रों का वितरण——परिषद् की परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी का प्रमाण-पत्र आचार्य अथवा केन्द्र जैसी स्थिति हो, को भेजा जायेगा, जो परीक्षार्थी को देंगे । जो परीक्षार्थी डाक से अपना प्रमाण-पत्र चाहते हैं वे आचार्य/केन्द्र अधीक्षक को रजिस्टर्ड डाक टिकट तथा लिफाफा भेज कर अथवा निर्धारित प्रावधानानुसार प्राप्त कर सकेंगे ।

अस्वामिक प्रमाण-पत्र

32——आवेदन-पत्र तथा इस अध्याय के विनियम 22 (15) के अन्तर्गत निर्धारित शुल्क देने पर परिषद् किसी परीक्षार्थी को जिसने उस वर्ष की 31 मार्च से जिसमें कि परीक्षा हुई थी पांच वर्ष के भीतर न लिए गये मूल प्रमाण-पत्र को निर्गत कर सकती है । इसके लिए आवेदन सचिव के यहाँ से प्राप्त निर्धारित प्रपत्र पर संस्थागत परीक्षार्थी के सम्बन्ध में संस्था के प्रधान द्वारा तथा व्यक्तिगत परीक्षार्थी के सम्बन्ध में केन्द्र के अधीक्षक द्वारा एक शपथ-पत्र सहित जिसमें यह उल्लेख हो कि उसने प्रमाण-पत्र की मूल प्रति अथवा दूसरी प्रतिलिपि नहीं प्राप्त की है, दिया जाना चाहिए ।

यदि परीक्षार्थी 20 वर्ष अथवा उससे कम आयु का है तो शपथ-पत्र उसके पिता (यदि जीवित हों) के द्वारा अथवा उसके अभिभावक द्वारा (यदि पिता जीवित न हो) निष्पादित किया जायेगा । दोनों दशाओं में परीक्षार्थी को शपथ-पत्र को यथाविधि अभिपुष्टि करनी होगी :

प्रतिबन्ध यह है कि यदि किसी परीक्षार्थी ने निर्धारित अवधि के भीतर अथवा प्रमाण-पत्र सम्बन्धित संस्था के प्रधान अथवा केन्द्र के अधीक्षक से प्राप्त नहीं किया है वह उसे 5 वर्ष की अवधि के बीतने के पश्चात् तुरन्त परिषद् कार्यालय में वापस भेज दें । छात्र को परिषद् द्वारा निर्धारित प्रक्रिया पूर्ण करने के पश्चात् उसे प्रमाण-पत्र दिया जायेगा । परिषद् द्वारा ऐसे समस्त अस्वामिक प्रमाण-पत्रों को परिषद् कार्यालय से उनके निर्गत होने की तिथि से 20 वर्ष बीतने के पश्चात् नष्ट कर दिया जायेगा । तत्पश्चात् यदि कोई परीक्षार्थी अपना प्रमाण-पत्र चाहता है तो उसे उक्त प्रमाण-पत्र की द्वितीय प्रतिलिपि के लिए नियमानुसार प्रार्थना-पत्र देना होगा ।

न्यूनतम आयु

*33——यदि किसी परीक्षार्थी की आयु उस वर्ष की प्रथम जुलाई को जिसमें वह परीक्षा में सम्मिलित होना चाहे 14 वर्ष अथवा उससे अधिक नहीं हो तो वह 1971 तथा उसके आगे की हाई स्कूल परीक्षा में प्रवेश पाने का पात्र नहीं होगा ।

34——[निरस्त]

पत्राचार-शिक्षा

35——विभाग द्वारा स्थापित पत्राचार शिक्षा संस्थान द्वारा माध्यमिक शिक्षा के स्तर के उन्नयन और परिषद् की परीक्षाओं में व्यक्तिगत रूप से प्रवेश चाहने वाले व्यक्तियों को अध्ययन में सुविधा देने के लिए पत्राचार के माध्यम से शिक्षा देने की व्यवस्था की जायेगी ।

पत्राचार शिक्षा संस्थान का प्रमुख दायित्व

पत्राचार शिक्षण हेतु अभ्यर्थियों के पंजीकरण की व्यवस्था करना, पाठ लेखन, परिमार्जन, मुद्रण एवं आवश्यकतानुसार आवृत्तियों में मुद्रित पाठों के प्रेषण की व्यवस्था करना, अभ्यर्थियों को निदेशन प्रदान करने की व्यवस्था करना, पत्राचार पाठ्यक्रम का अनुसरण करने वाले अभ्यर्थियों को परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए आवश्यक उपयुक्त प्रमाण-पत्र देना तथा समय-समय पर निदेशक/शासन द्वारा अधिसूचित अन्य कार्यों का सम्पादन करना होगा ।

---

*राजाज्ञा संख्या मा0-630/15 (7)——1608 (56)-72, दिनांक 29 दिसम्बर, 1972 ई0 द्वारा अन्य आदेश जारी होने तक विलम्बित है ।

36--(1) परिषद् परीक्षाओं की, जिस परीक्षा की जिस वर्ग के, जिस श्रेणी के, व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के लिए जिन विषयों में पत्राचार शिक्षा व्यवस्था किये जाने की अधिसूचना शिक्षा निदेशक उत्तर प्रदेश द्वारा की जाय, उस परीक्षा के, उस वर्ग के, उस श्रेणी के ऐसे व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के लिए जो विनियम 37 के अन्तर्गत नहीं आते हैं, पत्राचार शिक्षा हेतु अपना पंजीकरण कराकर पत्राचार शिक्षण के अन्तर्गत दिये गये पाठों का अनुसरण करना अनिवार्य होगा।

(2) उपर्युक्त श्रेणी के व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के लिये संस्थान द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम पूरा करने हेतु पंजीकरण की व्यवस्था की जायेगी। पत्राचार पाठ्यक्रम अनुसरण की अवधि सामान्यतः दो शैक्षिक-सत्र होगी। अपर शिक्षा निदेशक (पत्राचार शिक्षा) आवश्यकतानुसार इसमें परिवर्तन कर सकते हैं।

37--(1) पत्राचार शिक्षण की अनिवार्यता से निम्नांकित श्रेणी के व्यक्तिगत परीक्षार्थी मुक्त रहेंगे--

क--हाई स्कूल परीक्षा के सम्बन्ध में :

(1) विगत वर्षों की हाई स्कूल परीक्षा में अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी।

(2) विनियम 17 तथा विनियम 20 अध्याय 12 के अन्तर्गत अतिरिक्त विषय/विषयों के परीक्षार्थी अथवा आंशिक परीक्षार्थी।

(3) अध्याय 12 के विनियम 10 (1) (अ) (चार) के अन्तर्गत आने वाले परीक्षार्थी।

(4) ऐसे परीक्षार्थी जिन्होंने किसी मान्यता प्राप्त संस्था में कक्षा 9 तथा 10 में नियमित छात्र के रूप में अध्ययन का नियमित पाठ्यक्रम पूर्ण कर लिया हो किन्तु परिषद् की हाई स्कूल परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए आवेदन न किये हों (किन्तु संस्था की उपस्थिति पंजी में नाम हो) अथवा आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर दिये जाने के पश्चात् भी परीक्षा में सम्मिलित न हुए हों।

(5) किसी मान्यताप्राप्त संस्था से कक्षा 9 अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण परीक्षार्थी।

(6) हिन्दी से भिन्न किसी अन्य माध्यम से परीक्षा देने वाले परीक्षार्थी।

(7) नेत्रहीन (अन्धे) तथा चलने-फिरने में शारीरिक रूप से अक्षम परीक्षार्थी।

(8) भारतीय सेना में नियमित रूप से कार्यरत परीक्षार्थी।

ख--इण्टरमीडिएट परीक्षा के सम्बन्ध में :

(1) विगत वर्षों की इंटरमीडिएट परीक्षा में अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी।

(2) विनियम 17 तथा विनियम 20 अध्याय 12 के अन्तर्गत अतिरिक्त विषय/विषयों के परीक्षार्थी अथवा आंशिक परीक्षार्थी।

(3) अध्याय 14 के विनियम 3 के प्रतिबन्धात्मक खंड तथा विनियम 3 (ख) के अन्तर्गत आने वाले परीक्षार्थी।

(4) विखण्डित

(5) विखण्डित

(6) हिन्दी से भिन्न किसी अन्य माध्यम से परीक्षा देने वाले परीक्षार्थी।

(7) नेत्रहीन (अन्धे) तथा चलने-फिरने में शारीरिक रूप से अक्षम परीक्षार्थी।

(8) भारतीय सेना में नियमित रूप से कार्यरत परीक्षार्थी।

प्रतिबन्ध यह है कि पत्राचार शिक्षण व्यवस्था की अनिवार्यता से मुक्ति प्राप्त उपर्युक्त (क) और (ख) के अभ्यर्थी चाहें तो निर्दिष्ट विधि से निर्धारित शुल्क जमा करके पत्राचार के अन्तर्गत लिये गये विषयों में पाठ प्राप्त कर सकते हैं।

(2) इंटरमीडिएट परीक्षा में व्यक्तिगत रूप से सम्मिलित होने के इच्छुक ऐसे परीक्षार्थियों के लिए, जिन्होंने किसी मान्यता प्राप्त संस्था में कक्षा 11 अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की है, पत्राचार शिक्षा हेतु अपना पंजीकरण कराके पत्राचार शिक्षा के पाठ्यक्रम का अनुसरण करना तथा तत्सम्बन्धी अनुसरण प्रमाण-पत्र परीक्षा आवेदन-पत्र के साथ संलग्न करना अनिवार्य होगा। प्रतिबन्ध यह है कि ऐसे परीक्षार्थियों के लिए पत्राचार शिक्षण की अवधि एक शैक्षिक सत्र से अधिक न होगी।

38--(1) पत्राचार शिक्षण हेतु शासन द्वारा स्वीकृत दरों पर पंजीकरण पत्राचार शिक्षण तथा अन्य शुल्क वसूल किया जायेगा।

(2) पत्राचार शिक्षा संस्थान के विभिन्न पारिश्रमिक कार्यों के लिये मानदेय तथा पारिश्रमिक का भुगतान शासन द्वारा स्वीकृत दरों पर किया जायेगा।

39--पत्राचार शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित पत्राचार शिक्षा सतत् अध्ययन सम्पर्क योजना के अन्तर्गत राज्य के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पंजीकृत छात्रों को नियमित संस्थागत छात्र के रूप में माना जायेगा।

प्रमाण-पत्र में नाम परिवर्तन

40—परिषद् सफल उम्मीदवारों द्वारा विहित प्रक्रियानुसार आवेदन-पत्र देने तथा इस अध्याय के विनियम 12 (11) में निर्धारित शुल्क देने पर प्रमाण-पत्र में निम्नांकित प्रतिबन्धों के अधीन नाम परिवर्तन कर सकता है—

(क) आवेदन-पत्र उचित माध्यम द्वारा दिया जायेगा तथा जिस वर्ष में परीक्षा हुई थी, उसकी 31 मार्च से तीन वर्ष के भीतर परिषद् के सचिव के कार्यालय में पहुंच जाना चाहिए। आवेदक को एक टिकट लगे हुए कागज पर शपथ-पत्र देना होगा, जो प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट अथवा नोटरी द्वारा यथाविधि प्रमाणित होना चाहिए, जिसमें नाम में परिवर्तन के वैध कारण दिये होंगे तथा जो एक राजपत्रित अधिकारी द्वारा यथा विधि प्रमाणित होगा और परीक्षार्थी जहां वह निवास करता है, वहां के स्थानीय दैनिक पत्र की तीन विभिन्न तिथियों के संस्करणों में अपने नाम के परिवर्तन को विज्ञापित करेगा, इससे पूर्व कि उसे परिवर्तित नाम का नया प्रमाण-पत्र प्राप्त हो सम्बन्धित तिथियों के समाचार-पत्रों की प्रतियां आवेदन-पत्र के साथ संलग्न करना अनिवार्य है।

(ख) परिषद् द्वारा नाम परिवर्तन के आवेदन-पत्र निम्नलिखित को छोड़कर अन्य किन्हीं कारणों से स्वीकार नहीं किये जायेंगे—

नाम में भद्दापन हो अथवा नाम से अपशब्द की ध्वनि निकलती हो अथवा नाम असम्मानजनक प्रतीत होता हो अथवा अन्य ऐसी स्थिति होने पर।

(ग) परीक्षार्थियों द्वारा नाम के पहले या बाद में उपनाम जोड़ने, धर्म अथवा जाति सूचक शब्दों के जोड़ने अथवा सम्मान जनक शब्द या उपाधि जोड़ने जैसे किसी भी प्रकार के आवेदन-पत्रों को स्वीकार नहीं किया जायेगा। इसी प्रकार धर्म अथवा जाति परिवर्तन के आधार पर अथवा विवाहित छात्र/छात्राओं के नाम में भी विवाह के फलस्वरूप नाम परिवर्तित हो जाने पर परिषद् द्वारा नाम में परिवर्तन नहीं किया जायेगा।

(घ) उत्तर प्रदेश शासन से कर्मचारियों की नाम परिवर्तन के आवेदन-पत्र सम्बन्धित विभाग के अध्यक्ष द्वारा सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के पास भेजा जाना चाहिए।

(ङ) भारतीय संघ के राज्य (उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त) सरकारी कर्मचारियों के नाम में परिवर्तन आवेदन-पत्र पर किया जायगा, यदि सम्बन्धित राज्य सरकार द्वारा इसी प्रकार का परिवर्तन कर दिया गया है और उसकी सूचना परिषद् को सम्बन्धित विभाग के राज्य सचिव अथवा विभाग के अध्यक्ष द्वारा दे दी जाती है।

(च) केन्द्रीय शासन के कर्मचारी के आवेदन-पत्र देने पर नाम में परिवर्तन कर दिया जायेगा यदि इसी प्रकार का परिवर्तन केन्द्रीय शासन द्वारा कर दिया गया है और उसकी सूचना परिषद् को सम्बन्धित मंत्रालय के राज्य सचिव अथवा गृह विभाग के मंत्रालय द्वारा दे दी जाती है।

(छ) यदि किसी परीक्षा के लिए नाम में परिवर्तन कर दिया जाता है तो अन्य परीक्षाओं के प्रमाण-पत्र में जो परीक्षार्थी को पहले अथवा बाद में निर्गत हुए हों, बिना नये शपथ-पत्र के परन्तु प्रति प्रमाण-पत्र के लिए 20 रुपये शुल्क देने पर नाम परिवर्तन कर दिया जायेगा।

(ज) शपथ-पत्र तथा नाम में परिवर्तन का प्रार्थना-पत्र परीक्षार्थी के पिता अथवा यदि उनकी मृत्यु हो गयी हो, अभिभावक द्वारा प्रमाणित किया जाना चाहिए।

अध्याय तेरह

हाई स्कूल परीक्षा

(प्रथम दो वर्षीय पाठ्यक्रम कक्षा 9 तथा 10)

[1] हाई स्कूल परीक्षा के लिए प्रत्येक परीक्षार्थी को नीचे दिये हुए अनुसार सात विषयों में पर जायेंगी—

(एक) हिन्दी अथवा प्रारम्भिक हिन्दी (हिन्दी से छूट पाने वाले छात्रों के लिए)।

(दो) एक आधुनिक भारतीय भाषा (गुजराती, उर्दू, पंजाबी, बंगला, मराठी, आसामी, उड़िया, कन्नड़, कश्मीरी, सिन्धी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, नेपाली)।

अथवा

एक आधुनिक विदेशी भाषा (अंग्रेजी, फांसीसी, जर्मन, रूसी, तिब्बती, चीनी)।

अथवा

एक शास्त्रीय भाषा (संस्कृत, पालि, अरबी, फारसी, लैटिन)।

(तीन) गणित अथवा प्रारम्भिक गणित अथवा गृह विज्ञान (केवल बालिकाओं के लिए)।

टिप्पणी--

(क) वे छात्र/छात्रायें जो किसी विकलांगता, पूर्ण नेत्रहीनता अथवा विकलांग हाथ से पीड़ित हों जिससे वे अनिवार्य विषयों गणित में ज्यामिती आकृतियां न खींच पाते हों अथवा विज्ञान/गृह विज्ञान में क्रियात्मक कार्य नहीं कर पाते हैं, इन विषयों के स्थान पर छठे विषय के रूप में निर्धारित अतिरिक्त विषयों की सूची में से अन्य अतिरिक्त विषय चयन करने की सुविधा इस प्रतिबन्ध के साथ प्रदान की है कि ऐसे छात्र/छात्रा अपनी विकलांगता के समर्थन में मुख्य चिकित्साधिकारी का चिकित्सा प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करते हैं तथा साथ ही यदि अग्रधारण अधिकारी स्वयं व्यक्तिगत रूप से ऐसी विकलांगता से पूर्णतया सन्तुष्ट हों।

(ख) नेत्रहीन परीक्षार्थियों के लिए प्रत्येक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे के स्थान पर साढ़े तीन घण्टे का होगा।

(ग) सह शिक्षा वाले विद्यालयों की बालिकाओं के लिए कक्षा 9 में गृह विज्ञान विषय के शिक्षण का प्राविधान करना चाहिए। यदि ऐसा प्राविधान करना शीघ्र संभव न हो तो ऐसी बालिकाओं को यह विषय घर पर व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करने की आज्ञा केवल 2004 की हाई स्कूल परीक्षा तक दी जा सकती है।

(घ) मूक बधिर छात्र दूसरी अनिवार्य भाषा के स्थान पर एक अन्य विषय वैकल्पिक विषयों की सूची में से उपहृत कर सकते हैं।

[चार]--विज्ञान

[पांच]--सामाजिक विज्ञान

[छ]--निम्नलिखित विषयों में से कोई एक अतिरिक्त विषय--

(क) एक शास्त्रीय भाषा--(यदि इसे अनिवार्य विषय के रूप के क्रम संख्या दो पर नहीं लिया गया है।)

(संस्कृत, पालि, अरबी, फारसी, लैटिन)

अथवा

एक आधुनिक भारतीय भाषा--(यदि इसे अनिवार्य विषय के रूप में क्रम संख्या दो पर नहीं लिया गया है।)

(गुजराती, उर्दू, पंजाबी, बंगला, मराठी, आसामी, उड़िया, कन्नड़, कश्मीरी, सिन्धी, तामिल, तेलुगु, मलयालम, नेपाली।)

अथवा

एक आधुनिक विदेशी भाषा--(यदि इसे अनिवार्य विषय के रूप में क्रम संख्या दो पर नहीं लिया गया है।)

(अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, रूसी, तिब्बती, चीनी)

(ख) संगीत गायन
(ग) संगीत वादन
(घ) वाणिज्य
(ङ) चित्रकला
(च) कृषि
(छ) गृह विज्ञान (बालकों के लिए तथा उन बालिकाओं से लिए जिन्होंने इसे अनिवार्य विषय के रूप में नहीं लिया है।)
(ज) सिलाई
(झ) रंजन कला
(ञ) कम्प्यूटर

सात]--नैतिक, शारीरिक, समाजोपयोगी, उत्पादक एवं समाज सेवा कार्य तथा पूर्व व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत निर्धारित निम्नलिखित ट्रेड्स में से कोई एक--

1--टेक्सटाइल डिजाइन
2--पुस्तकालय विज्ञान
3--पाक शास्त्र
4--फोटोग्राफी
5--बैंकिंग एवं कन्फेक्शनरी
6--मधुमक्खी पालन

7—पौधशाला

9—आटोमोबाइल

9—धुलाई-रंगाई

10—परिधान रचना

11—खाद्य संरक्षण

12—एकाउन्टेन्सी एवं अंकेक्षण

13—आशुलिपि एवं टंकण

14—बैंकिंग

15—टंकण

16—फल संरक्षण

17—फसल सुरक्षा

18—रेडियो एवं टेलीविजन

19—मुद्रण

20—बुनाई तकनीक

नोट—(1) क्रमांक सात के विषय/ट्रेड में विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । इस विषय/ट्रेड की बाह्य परीक्षा नहीं होगी । इस विषय में ग्रेड प्रदान किया जायेगा, जिसका उल्लेख अंक-पत्र/प्रमाण-पत्र में होगा ।

(2) व्यक्तिगत परीक्षार्थियों को नैतिक, शारीरिक, समाजोपयोगी, उत्पादक एवं समाज सेवा कार्य तथा पूर्व व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत निर्धारित ट्रेड्स/विषय में उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र अग्रसारित कराते समय आवेदन-पत्र के साथ संलग्न करना अथवा प्रवेश-पत्र प्राप्त करते समय सम्बन्धित पंजीकरण केन्द्र पर जमा करना आवश्यक नहीं होगा ।

(3) क्रमांक एक (हिन्दी अथवा प्रारम्भिक हिन्दी), तीन (गणित अथवा प्रारम्भिक गणित) (गृह विज्ञान छोड़कर) तथा पांच (सामाजिक विज्ञान) में दो प्रश्न-पत्र 50-50 अंकों के तथा क्रम चार (विज्ञान) में 35-30-35 अंकों के तीन प्रश्न-पत्र एवं क्रम दो (अंग्रेजी) में 50-50 अंकों के दो प्रश्न-पत्र होंगे । शेष अन्य विषयों में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र होगा ।

*[2] उपर्युक्त पाठ्यक्रमों के अनुसार कक्षा-9 तथा कक्षा-10 का पाठ्यक्रम पृथक-पृथक निर्धारित है । कक्षा-9 के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर विद्यालय स्तर पर आंतरिक परीक्षा ली जायेगी । कक्षा-10 के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर हाई स्कूल की सार्वजनिक परीक्षा परिषद् द्वारा आयोजित होगी ।

[3] कक्षा 9 तथा कक्षा 10 स्तर पर विज्ञान एवं गृह विज्ञान विषयों की प्रयोगात्मक विषयक-कार्य केवल विद्यालय स्तर पर होगा तथा इसका आन्तरिक मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर होगा, जिसका विधिवत् उल्लेख अंक-पत्र में होगा । परिषद् द्वारा इन विषयों की प्रयोगात्मक परीक्षायें सम्पादित नहीं होगी ।

[4] नैतिक, शारीरिक, समाजोपयोगी उत्पादक एवं समाज सेवा कार्य तथा पूर्व व्यावसायिक शिक्षा में विद्यालय स्तर पर ग्रेड प्रदान किया जायेगा जिसका उल्लेख अंक-पत्र / प्रमाण-पत्र में होगा ।

[5] समस्त अध्यापकों के द्वारा जो हाई स्कूल परीक्षा के लिए तैयार कराने वाली कक्षाओं के शिक्षण में नियुक्त हैं, डायरियां रखी जायेंगी, जिनमें उनके द्वारा पढ़ाये गये प्रत्येक विषय में हुआ कार्य दिखाया जायेगा और इन डायरियों का मौखिक अथवा क्रियात्मक परीक्षकों अथवा ऐसे अन्य प्राधिकारियों द्वारा, जो परिषद् द्वारा प्रतिनियुक्त किये जायें, निरीक्षण किया जायेगा ।

[6] उप सात्रिक परीक्षाओं के लिये बनाये गये प्रश्न-पत्रों तथा समस्त परीक्षार्थियों की लिखित उत्तर पुस्तकों का भी परीक्षण इस ढंग से तथा ऐसे प्राधिकारियों द्वारा किया जा सकता है, जैसा कि परिषद निर्देश दे ।

---

*राजाज्ञा संख्या : 4131/15-7-2002-1 (4)/99, दिनांक 6 मार्च, 2003 द्वारा संशोधित ।

(विज्ञप्ति सं0 परिषद् 9/795, दिनांक 25 मार्च, 2003 राजकीय गजट, दिनांक 29-3-2003 में प्रकाशित)

[7] समस्त मान्यता प्राप्त संस्थाओं में भाषाओं के अतिरिक्त समस्त विषयों के शिक्षण का माध्यम हिन्दी होगा। हाई स्कूल परीक्षा के समस्त परीक्षार्थी भाषाओं के अतिरिक्त समस्त विषयों के प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में देंगे। इस प्रतिबन्ध के साथ कि परिषद् के सभापति तथा विभाग के ऐसे अन्य अधिकारी, जिन्हें वह इस सम्बन्ध में अधिकार दे दें, स्वमति से उन परीक्षार्थियों को, जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है अंग्रेजी अथवा उर्दू में प्रश्नों के उत्तर देने की अनुमति दे सकते हैं। भाषाओं को छोड़कर समस्त विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी में बनाये जायेंगे।

प्रतिबन्ध यह होगा कि परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त तथा उत्तर प्रदेश के आंग्ल भारतीय विद्यालयों के नियम संहिता द्वारा अनुशासित संस्थाओं को शिक्षण में अंग्रेजी माध्यम का प्रयोग करने की अनुमति परिषद् दे सकती है। आवेदन-पत्र देते समय संस्थाओं के प्रधानों द्वारा सचिव से प्रार्थना करने पर ऐसे परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न-पत्रों के अंग्रेजी रूपान्तर की व्यवस्था की जा सकती है :

प्रतिबन्ध यह भी है कि परिषद् द्वारा दृष्टिबधित परीक्षार्थियों को ब्रेल लिपि में प्रश्नों के उत्तर देने की अनुमति दी जा सकती है।

टिप्पणी—(1) भाषाओं में परीक्षार्थी प्रश्नों का उत्तर भाषाओं तथा तत्सम्बन्धी लिपि में देंगे जिससे प्रश्न का सम्बन्ध है, जब तक कि प्रश्न-पत्र में ही उसके प्रतिकूल उल्लेख न हो।

(2) परिषद् के सभापति ने विनियम 7, अध्याय तेरह के अनुसरण में संस्थाओं के प्रधानों तथा केन्द्र अधीक्षकों को निम्नलिखित वर्गों के परीक्षार्थियों की परीक्षाओं में भाषाओं के अतिरिक्त समस्त विषयों में अंग्रेजी में प्रश्न-पत्रों का उत्तर देने की अनुमति देने का अधिकार दे दिया है :

[एक] परीक्षार्थी जिनकी मातृ-भाषा हिन्दी न होकर एक अन्य भाषा है।

[दो] परीक्षार्थी, जिन्होंने वैज्ञानिक तथा प्राविधिक विषय (गणित सहित) लिए हैं।

[तीन] आंग्ल भारतीय संस्थाओं से आने वाले परीक्षार्थी।

[चार] परीक्षार्थी, जिन्हें परिषद् के विनियमों के विनियम 8, अध्याय तेरह के अन्तर्गत परिषद् की परीक्षाओं में अनिवार्य हिन्दी लेने से छूट मिल गई है।

(3) परिषद् के सभापति ने ऊपर के नियम के अधीन जिला विद्यालय निरीक्षक, उत्तर प्रदेश को ऐसे परीक्षार्थियों को जिनकी मातृ-भाषा उर्दू है, परिषद् की परीक्षाओं में उर्दू माध्यम का प्रयोग करने की अनुमति देने का अधिकार प्रतिनिहित कर दिया है।

(4) परिषद् के सभापति ने ऊपर के विनियमों के अधीन जिला विद्यालय निरीक्षक, उ० प्र० को दृष्टि-बाधित परीक्षार्थियों को ब्रेल लिपि में प्रश्नों का उत्तर देने की अनुमति प्रदान करने का अधिकार प्रतिनिहित कर दिया है।

(5) ऐसे समस्त मामले, जिनमें संस्थाओं के प्रधानों अथवा केन्द्र अधीक्षकों अथवा जिला विद्यालय निरीक्षकों द्वारा अनुमति दी जानी है, परिषद् को सूचित किया जाना अनिवार्य होगा।

[8] इन विनियमों की शर्तों के होते हुये भी हाई स्कूल परीक्षा में निम्नलिखित वर्गों के परीक्षार्थियों को परिषद् द्वारा निर्धारित नियमानुसार अनिवार्य हिन्दी से छूट दी जा सकती है :

(1) विदेशी राष्ट्रिक को, तथा

(2) भारतीय राष्ट्रिक को जो पूर्व शिक्षण तथा/अथवा निवास के कारण हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ नहीं थे, जिससे कि वे हाई स्कूल परीक्षा में अनिवार्य हिन्दी को ले सके।

प्रतिबन्ध यह है कि ऐसे परीक्षार्थियों को हिन्दी का निम्न स्तरीय पाठ्यक्रम प्रारम्भिक हिन्दी अथवा अन्य वैकल्पिक विषय, जो नियमानुकूल हो, अनिवार्य हिन्दी के स्थान पर लेना चाहिये।

ज्ञातव्य—

(1) इस विनियम में उल्लिखित छूट परिषद् के सभापति द्वारा अथवा विभाग के ऐसे अन्य अधिकारियों द्वारा दी जा सकती है जिसे वह इस सम्बन्ध में अधिकार दें।

अनिवार्य हिन्दी से छूट सम्बन्धी नियम

परिषद् की परीक्षाओं के अनिवार्य हिन्दी से छूट के नियम अध्याय तेरह विनियम 8 में दिये हुए हैं। उपर्युक्त विनियमों के अन्तर्गत परिषद् ने अनिवार्य हिन्दी के छूट सम्बन्धी निम्नांकित नियम बनाये हैं—

1—परीक्षार्थी, जिन्होंने एक आंग्ल भारतीय अथवा पब्लिक स्कूल में कम से कम 3 वर्ष का अध्ययन किया हो तथा स्तर आठ अर्थात् कैम्ब्रिज सर्टीफिकेट परीक्षा अथवा इण्डियन स्कूल सर्टीफिकेट परीक्षा परिषद्, नई दिल्ली द्वारा संचालित इण्डियन स्कूल सर्टीफिकेट परीक्षा जिस वर्ष में होता है, उससे चार वर्ष पूर्व का स्तर उत्तीर्ण कर लिया है।

2—परीक्षार्थी, जो एक ऐसे राज्य के स्थायी निवासी हैं, जहां हिन्दी प्रादेशिक भाषा नहीं है तथा जिनके अभिभावक हाई स्कूल परीक्षा के सम्बन्ध में परीक्षा वर्ष से पहले की वर्ष के 1 सितम्बर को कम से कम 5 वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश का प्रव्रजन कर चुके हैं।

3—परीक्षार्थी, जो उत्तर प्रदेश के स्थायी निवासी हैं, परन्तु जिन्होंने अस्थायी रूप से अन्य राज्यों को प्रव्रजन किया है और वहां निवास किया है, यदि वे किसी मान्यता प्राप्त विद्यालय में कम से कम 3 वर्ष तक अध्ययन करने तथा उस विद्यालय में उच्च हिन्दी न लेने का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करते हैं।

अनिवार्य हिन्दी से छूट प्रदान करने के लिये अधिकृत अधिकारी

1—सन्दर्भित विनियमों के पुनश्च : (1) के अनुसरण में परिषद् के सभापति ने निम्नलिखित अधिकारियों को प्रत्येक के नाम के सामने लिखित राष्ट्रिकों को अनिवार्य हिन्दी से छूट देने का अधिकार दे दिया है :

(क) जिला विद्यालय निरीक्षक, उत्तर प्रदेश—भारतीय राष्ट्रिक (व्यक्तिगत तथा संस्थागत दोनों प्रकार परीक्षार्थी)।

(ख) मान्यता प्राप्त संस्थाओं के प्रधान—विदेशी राष्ट्रिक, जो उनकी संस्थाओं में अध्ययन कर रहे हैं।

(ग) उन संस्थाओं के प्रधान, जो परीक्षा केन्द्र हैं—विदेशी राष्ट्रिक, जो उस केन्द्र से व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में प्रविष्ट हो रहे हैं।

2—संस्थागत परीक्षार्थियों को, जो अनिवार्य हिन्दी से छूट पाने के अधिकारी हों, यथोचित प्राधिकारी से कक्षा में प्रवेश के समय आवेदन करना चाहिए।

3—व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में छूट के लिए प्रार्थना तथा आदेशों की प्राप्ति परीक्षा में प्रविष्ट होने के आवेदन-पत्र भरने से पूर्व ही प्राप्त करनी चाहिये।

विभिन्न प्रकार की हिन्दी लेने के सम्बन्ध में निर्देश

1—प्रारम्भिक हिन्दी (कक्षा 8 के स्तर की) लेकर हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को इण्टरमीडिएट परीक्षा में निर्धारित हिन्दी अथवा सामान्य हिन्दी लेनी होगी।

2—उत्तर प्रदेश से हिन्दी के साथ कक्षा 8 उत्तीर्ण करने के पश्चात् उत्तर प्रदेश के बाहर के किसी देश से बिना हिन्दी के अथवा कम अंकों वाली निम्न स्तर की हिन्दी के साथ हाई स्कूल या हायर सेकेण्डरी या मैट्रीकुलेशन परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों को इण्टरमीडिएट परीक्षा में निर्धारित हिन्दी अथवा सामान्य हिन्दी लेनी होगी।

इसका अर्थ हुआ कि पंजाब की मैट्रीकुलेशन परीक्षा की 150 अंकों की हिन्दी, सेन्ट्रल बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजूकेशन, नई दिल्ली की आल इण्डिया हायर सेकेण्डरी परीक्षा की 150 अंकों की हिन्दी (एम० एल०) अथवा उस बोर्ड की हायर सेकेण्डरी परीक्षा की अधिक अंकों वाली हिन्दी आदि लेकर उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को इण्टरमीडिएट के लिए निर्धारित हिन्दी अथवा सामान्य हिन्दी का पाठ्यक्रम लेना होगा।

3—इण्टरमीडिएट परीक्षा में अनिवार्य हिन्दी से छूट नहीं दी जावेगी।

हिन्दी

(कक्षा-9)

इस विषय में 50-50 अंकों के दो प्रश्न-पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्न-पत्र [illegible] घंटे का होगा।

प्रथम प्रश्न-पत्र—पूर्णांक 50

1—हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय
भारतेन्दु काल, द्विवेदी काल

2—पद्य साहित्य का संक्षिप्त इतिहास—आदि काल एवं भक्ति काल

3—गद्य संकलन (पाठ—बात, कर्तव्य और सत्यता, मंत्र, विश्व मंदिर, चिर तारुण्य की साधना, गुरु नामक देव, गिल्लू, नींव की ईंट, स्मृति, निष्ठामूर्ति कस्तूरबा, दक्षिण भारत की एक झलक)

(क) सन्दर्भ

(ख) व्याख्या

(ग) साहित्यिक सौन्दर्य

4--लेखक परिचय (साहित्यिक परिचय, जीवनी एवं भाषा शैली)

5--काव्य संकलन (पाठ--कबीरदास, मीराबाई, नरोत्तम दास, रहीम, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, श्रीधर पाठक, अयोध्या सिंह उपाध्याय, मैथिलीशरण गुप्त, जय शंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सोहन लाल द्विवेदी, शिव मंगल सिंह 'सुमन') 10

(क) संदर्भ . 2

(ख) व्याख्या . 6

(ग) काव्यगत विशेषताएं . 2

6--पठित काव्यांशों के केन्द्रीय भाव पर आधारित प्रश्न

7--कवि परिचय (साहित्यिक सेवायें, जीवनी, रचनाएं तथा भाषा शैली) 4

8--काव्य सौन्दर्य के तत्व 6

(क) रस, शृंगार एवं वीर रस (परिभाषा एवं उदाहरण) .2

(ख) छन्द, चौपाई के लक्षण तथा उदाहरण .2

(ग) अलंकार (शब्दालंकार) यमक, अनुप्रास, श्लेष .2
(परिभाषा तथा उदाहरण)

9--शब्द रचना के तत्व 5

(क) सन्धि तथा समास .3

(ख) लोकोक्ति एवं मुहावरे .2

द्वितीय प्रश्न-पत्र--पूर्णांक-50

1--संस्कृत परिचायिका का हिन्दी में सन्दर्भ सहित अनुवाद 7

2--पठित पाठों पर आधारित संस्कृत में लघु उत्तरीय [प्रश्न] 3

3--संस्कृत व्याकरण--

(क) सन्धि--दीर्घ, गुण प्रत्येक की परिभाषा, उदाहरण एवं शब्दों में पहचान 2

(ख) समास--द्वन्द्व, लक्षण तथा उदाहरण 2

(ग) शब्द रूप सभी वचनों एवं विभक्तियों में संज्ञा--राम, हरि, वारि, भानु
सर्वनाम--तद् 2

(घ) धातुरूप--निम्नांकित के लट्, लोट, विधिलिंग, लङ् तथा लृट लकारों के रूप
गम्, भू, कृ 2

(ङ) कारक--निम्नांकित सूत्रों के आधार पर कारकों की सामान्य परिभाषा एवं उदाहरण 2
कर्त्ता--स्वतन्त्रः कर्त्ता ।
कर्म--कर्तुरीप्सिततमं कर्म ।
कारण--साधकतमं करणम् ।

4--हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद--हिन्दी के वाक्यों का सरल संस्कृत में अनुवाद 6

5--संस्कृत में पर्यायवाची शब्द--वृक्ष, सूर्य, कमल, जल, पृथ्वी, अग्नि इत्यादि 2

6--पठित पाठों में से कोई श्लोक, जो प्रश्न-पत्र में न दिया गया हो 2

7--रंगभारती--कथानक, चरित्र-चित्रण, तथ्याधारित प्रश्न 5

8--निबन्ध--हिन्दी में मौलिक अभिव्यक्ति 10

9--पत्र लेखन--पारिवारिक एवं सामाजिक 5

जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं ट्राफिक कंट्रोल की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे ।

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें—

निम्नलिखित पाठ्य पुस्तकों के सम्मुख अंकित पाठ्य वस्तु (मा० शि० प० द्वारा निर्धारित अंश) का अध्ययन करना होगा —

पुस्तक का नाम	पाठ	लेखक का नाम
1	2	3
1—गद्य संकलन (भाग—एक) (कक्षा 9 के लिए)	1—बात	प्रताप नारायण मिश्र
	2—कर्त्तव्य और सत्यता	श्याम सुन्दर दास
	3—मंत्र	प्रेमचन्द
	4—विश्व—मंदिर	वियोगी हरि
	5—बिर तारुण्य की साधना	विनोबा भावे
	6—गुरु नानकदेव	हजारी प्रसाद द्विवेदी
	7—गिल्लू	महादेवी वर्मा
	8—नींव की ईंट	रामवृक्ष बेनीपुरी
	9—स्मृति	श्रीराम शर्मा
	10—निष्ठा मूर्ति कस्तूरबा	काका कालेलकर
	11—दक्षिण भारत की एक झलक	विनयमोहन शर्मा
2—काव्य संकलन (भाग—एक) (कक्षा 9 के लिए)	1—साखी, सबद	कबीरदास
	2—पदावली	मीराबाई
	3—सुदामा—चरित्र	नरोत्तमदास
	4—दोहा, सोरठा, बरवै	रहीम
	5—प्रेम—माधुरी, मातृ—भाषा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
	6—कश्मीर—सुषमा, प्रकृति वर्णन	श्रीधर पाठक
	7—श्रीकृष्ण—सौन्दर्य	अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध"
	8—अयोध्या की नरसत्ता	मैथलीशरण गुप्त
	9—आह्वान—गीत, बसन्त की प्रतीक्षा, पुनर्मिलन	जयशंकर 'प्रसाद'
	10—भारति बन्दना, वान तोड़ती पत्थर	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
	11—जय जय निर्भय हे। उन्हें प्रणाम	सोहनलाल द्विवेदी
	12—युगवाणी	शिवमंगल सिंह 'सुमन'
3—रंगभारती (कक्षा 9 के लिए)	1—दीपदान	रामकुमार वर्मा
	2—नये मेहमान	उदयशंकर भट्ट
	3—सच्चा धर्म	सेठ गोविन्ददास
	4—लक्ष्मी का स्वागत	उपेन्द्रनाथ अश्क
	5—रोढ़ की हड्डी	जगदीशचन्द्र माथुर
	6—सीमारेखा	विष्णु प्रभाकर
	7—बहू की विदा	विनोद रस्तोगी

1	2	3
4--संस्कृत परिचायिका (कक्षा 9 के लिए)	वन्दना 1--सदाचार: 2--पुरुषोत्तम: राम: 3--बालहठ: 4--सिद्धि मन्त्र: 5--सुभाषि तानि 6--परमहंस: रामकृष्ण: 7--बयालू: विक्रम: 8--प्रश्नोत्तर विनोद: 9--कस्तस्या: पति: 10--कृष्ण: गोपालनन्दन: व्याकरण	

प्रारम्भिक हिन्दी

(कक्षा–9)

[हिन्दी से छूट पाने वाले छात्रों के लिए]

इस विषय में दो प्रश्न–पत्र होंगे । प्रत्येक प्रश्न–पत्र 50–50 अंकों का तथा तीन घंटों का होगा :

प्रथम प्रश्न–पत्र--50 अंक

प्रकरण		पूर्णांक
1	--हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय (भारतेन्दु काल व द्विवेदी काल–लेखकों एवं रचनाओं के नाम)	05
2	--पद्य साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (आदि काल एवं भक्ति काल--काल विभाजन, प्रमुख कवि एवं उनके काव्य)	05
3	--गद्य संकलन--संदर्भ सहित अर्थ (बात, कर्तव्य और सत्यता, मंत्र, विश्व मन्दिर, गुरु नानक देव, गिल्लू एवं स्मृति)	10
4	--गद्य संकलन के लेखकों के परिचय (जीवनी एवं रचनायें)	05
5	--काव्य संकलन--संदर्भ सहित अर्थ (कबीरदास, मीराबाई, नरोत्तमदास, रहीम, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ओमर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त)	10
6	--कवि परिचय, जीवनी एवं रचनाएं	05
7	--काव्य सौन्दर्य के तत्व (अलंकार एवं रस) (क) अलंकार--यमक, अनुप्रास, श्लेष (परिभाषा एवं उदाहरण) (ख) रस--शृंगार एवं वीर (परिभाषा एवं उदाहरण)	02 02
8	--अपठित गद्य और पद्य (सारांश एवं सम्बन्धित प्रश्न)	06

द्वितीय प्रश्न–पत्र--50 अंक

1	--संस्कृत गद्य तथा पद्य का हिन्दी में अनुवाद (सदाचार:, पुरुषोत्तम: राम:, सिद्धिमन्त्र: सुभाषितानि, परमहंस रामकृष्ण:)	07
2	--पठित पाठों पर आधारित संस्कृत में लघु उत्तरीय प्रश्न	03

3—हिन्दी के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद	03
4—सूक्तियों की व्याख्या (हिन्दी में)	02
5—संस्कृत व्याकरण (6 अंक)	
(क) स्वर सन्धि—भेद एवं उदाहरण (दीर्घ एवं गुण)	02
(ख) शब्द रूप—बालक, नदी, वधू, आत्मन्	02
(ग) धातु रूप—गम्, पठ्, भू, पा	02
6—हिन्दी व्याकरण (14 अंक)	
(क) समास (तत्पुरुष, द्वन्द्व, द्विगु) परिभाषा एवं उदाहरण	03
(ख) मुहावरों तथा लोकोक्तियों का अर्थ एवं वाक्यों में प्रयोग	04
(ग) पर्यायवाची शब्द	02
(घ) विलोम शब्द	02
(ङ) तद्भव, तत्सम, विदेशी, ब्रज व अवधी शब्दों की पहचान	02
(च) वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द का निर्माण	02
7—निबन्ध (वर्णनात्मक, विचारात्मक व भावात्मक)	15

निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें—

(1) गद्य संकलन (कक्षा 9 के लिए)
(भाग-एक)

(2) काव्य संकलन (कक्षा 9 के लिए)
(भाग—एक)

(3) संस्कृत परिचायिका (कक्षा 9 के लिए)
(भाग—एक)

(4) सामान्य हिन्दी (कक्षा 6, 7, 8 के लिए निर्धारित)
राजकीय प्रकाशन)

जन संख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं ट्राफिक रूल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे।

गुजराती

(कक्षा—9)

इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न—पत्र तीन घन्टे का होगा।

भाग-(अ)

	पूर्णांक 50 अंक	
1—व्याकरण—	18	
(क) शब्द भेद की पहचान	6	
(ख) शब्द का पर्याय एवं विपरीत अर्थ	6	
(ग) सन्धि	6	
2—रचना—	20 अंक	
(अ) दिये हुए विषय पर एक वाक्य खण्ड का लेखन या		12
दिये हुए बिन्दुओं से एक कहानी निरूपित करना		08
(ब) पत्र-लेखन (व्यक्तिगत)		
3—अपठित गद्य खंड का ज्ञान (विवरणात्मक और वर्णनात्मक)		12

भाग-(ब)

	पूर्णांक 50 अंक
1--गद्य (पाठ्य पुस्तक पर आधारित लघु प्रश्न)	20
2--पद्य संदर्भ सहित (व्याख्या तथा कविता का भाव)	15
3--सहायक पुस्तक (स्वाध्ययन) (सामान्य प्रकार के प्रश्न पूछे जायेंगे)	15

निर्धारित पुस्तक

(1) गुजराती वाचन माला स्टैन्डर्ड IX, 1992 संस्करण, प्रकाशक--गुजराती राज्यशाला पाठ्य-पुस्तक मण्डल, पुराना विधान सभा गृह, सेक्टर 17, गांधीनगर, गुजरात।

गद्य--निम्नांकित पाठ पढ़ने होंगे--

पाठ संख्या :

2--कुण्डो--जी0 ब्रेकर

4--पुवर्मापूनों अतिथि--जी0 त्रिपाठी

6--आवा रे अमे आवा--ठाकुर त्रिवेदी

10--प्रिटोरिया जतन--गांधी जी

14--वचन--मणी लाल द्विवेदी

16--स्वर्ग अने पृथ्वी--स्नेह रश्मी

18--नाना भाई--दर्शक

22--अखा न उन्डन--आर0 बी0 देसाई

23--खातू बोधी--दिलीप रनपुरा

25--अविरम युद्ध--धमकेतु

पद्य--निम्नांकित पाठ पढ़ने होंगे--

1--प्रथम परनाम मोरा--आर0 बी0 पाठक

5--नानुन सरखुम गोकालियम--नारिंग्ह मेहता

7--अटारिया--बाल मुकुन्द देव

9--वंशीवाला/भाणो मारा देश--मीराबाई

15--वनो फोटोग्राफ--सुन्दरम्

19--प्यारी बाला--हरिन्द दुबे

31--तुही मुकतक हंकू--दलपत राय इत्यादि

सहायक पुस्तक (स्वाध्ययन)--

4--आहू चाचा (गद्य)--माधव रामानुज

11--धुवांधार (गद्य)--काका कालेलकर

12--स्वतंत्रता (पद्य)--हरिश बच

उर्दू

(कक्षा–9)

इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा ।

खंड (अ) पूर्णांक 50

1—व्याकरण और प्रयोग— 10 अंक

व्याकरण के केवल वही तत्व पर बल दिया जायेगा जो भाषा के प्रयोगात्मक ज्ञान और उसके सम्भाषण एवं लेखन में प्रयोग हो । व्याकरण का अध्ययन एक विषय के रूप में अनिवार्य नहीं है परन्तु छात्रों को कक्षा में पाठों को पढ़ाते समय भाषा में व्याकरण के महत्व तथा उसके सही प्रयोग का ज्ञान साथ ही छात्रों का इसके अनुवाद तथा उसके संगठन का सही अध्ययन कराना चाहिये ।

2—पद्य— 10 अंक

(गजल, मसनवी, रुबाई)

3—रचना—

(अ) निबन्ध लेखन 10 अंक
(सामान्य रुचि के विषयों पर)

(ब) पत्र लेखन 10 अंक
(व्यक्तिगत और आवेदन-पत्र 150 शब्दों तक)

4—अपठित ज्ञान—

(150 शब्द) 10 अंक

खंड (ब) पूर्णांक 50

1—गद्य :

(अ) उर्दू की नई किताब 25 अंक
(नवीं जमात के लिए) प्रकाशक एम० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली
निर्धारित पुस्तक से निम्नांकित लेखकों तथा उनके कृतियों का अध्ययन किया जाना है—

(1) मीर अम्मान—शायर चौथे दरवेश की 20 अंक
(2) गालिब (खुतूत)—[1] मिर्जा अलाउद्दीन अहमद खान (अलाई) के नाम ।
[2] मीर मेंहदी मजरूह के नाम
[3] मुंशीवर गोपाल तफ्ता के नाम
(3) सर सैय्यद—बहस-ओ-तकरार
(4) मोहम्मद हुसैन आजाद—[1] मिर्जा मजहर जान-ए-जनाना
[2] सैय्यद मोहम्मद मीर शोज
(5) नजीर अहमद—फहमीदा और दादी बेटी नसीमा की लड़ाई
(6) अल्फ हुसैन हाली—मिर्जा गालिब के हालात
(7) रतननाथ सरशार—[1] मेहरी का सरापा
[2] रेल का सफर

(ब) निर्धारित गद्य पुस्तक के लेखकों की जीवनी तथा साहित्य में उनके योगदान के बारे में ज्ञान 5 अंक

2—पद्य— 25 अंक

(अ) उर्दू की नई किताब (नवीं जमात के लिए) प्रकाशक—एम० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली
निर्धारित पुस्तक से निम्नांकित कवियों एवं उनकी कृतियों का अध्ययन किया जाना है । 20 अंक

(अ) गज़ल—

(1) वाली—आज दिखता है हाल कुछ का कुछ

(2) सौदा—जो गुजरी मुझपे मत उससे कहो हुआ सो हुआ

(3) मीर—[1] उल्टी हो गई सब तदबीरे कुछ न दवा ने काम किया।
[2] हस्ती अपनी हबाब की सी है

(4) ख्वाजा मीर दर्द—[1] जो मैं हूँ शायर-ए-अबन कीजिएगा
[2] तु अपने दिल से घर की उल्फत न खो सका

(5) आतिश—बड़ा सा शहर नहीं दिल सा बादशाह नहीं

(6) जौक—उसे हमने बहुत ढूँढ़ा न पाया

(7) गालिब—[1] यह न थी हमारी किस्मत की विसा-ए-याद होता।
[2] हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पर दम निकले।

(8) मोमिन—वह जो हममें तुममें करार था तुम्हें याद हो कि न याद हो

(9) दाग—खातिर से या लिहाज से मैं मैं तो गया

[अ] मीर हसन अंक—मसनवी

[ब] अमीर हाली—रुबाई

(ब) निर्धारित पद्य पुस्तक के कवियों की जीवनी तथा साहित्य में उनके योगदान के बारे में ज्ञान — 5 अंक

निर्धारित पुस्तकें—

उर्दू अदब की तारीख—ले० अजीम-उल-हक जुनेदी, प्रकाशक—एजूकेशन बुक हाउस, मुस्लिम युनिवर्सिटी मार्केट, अलीगढ़—202002।

पंजाबी (कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग (एक) — 50 अंक

पद्य पाठ— 25 अंक

1—प्रसंग-अर्थ एवं भाव अर्थ

2—कविता का सारांश

3—किसी कवि से सम्बन्धित प्रश्न

गद्य पाठ— 25 अंक

1—कहानी, एकांकी, जीवनी, सफरनामा, निबन्ध

2—विषय वस्तु, प्रश्न

भाग (दो) — 50 अंक

व्याकरण—1—मुहावरे और लोकोक्तियां — 5

2—शुद्ध-अशुद्ध — 3

3—वाक्य बन्ध — 4

4—समानार्थक शब्द — 3

5—विलोम शब्द — 3

6—विराम चिन्ह — 3

7—अनुवाद—(क) हिन्दी से पंजाबी — 3

(ख) पंजाबी से हिन्दी — 3

8—निबन्ध, प्रचलित विषयों पर — 15

9—पत्र लेखन (व्यक्तिगत-पत्र, आवेदन-पत्र एवं प्रार्थना-पत्र) — 8

निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें—

1—गद्य-पद्य (भाग-एक)	..	गुरबचन सिंह
2—कहानी (एकांकी)	..	हरिचरण कौर
3—पंजाबी व्याकरण लेख रचना	..	ज्ञानी लाल सिंह

बंगला

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

भाग (अ) — 50 अंक

1—व्याकरण — 30 अंक

बंगला भाषा का स्पष्ट उच्चारण—स्वर एवं उसके प्रकार, मुख्य शब्दों के भेद, स्वर संधि, समास (तत्पुरुष, द्वन्द्व और द्विग, कृत प्रत्यय, मुहावरे तथा लोकोक्ति) सरल, वाक्य परिवर्तन (स्वीकारात्मक, नकारात्मक, प्रश्नवाचक, विधिसूचक वाक्य आदि) ।

2—रचना— 20 अंक

(1) विभिन्न प्रकार के पत्र लेखन—औपचारिक तथा अनौपचारिक रूप में 10 अंक

(2) विचारों का संक्षिप्तीकरण अथवा विस्तार 10 अंक

भाग (ब) 50 अंक

1—गद्य—(विस्तृत अध्ययन) 25 अंक

(क) पठित खण्ड पर सामान्य प्रश्न 15 अंक

(ख) दिए गए खण्ड की व्याख्या 5 अंक

(ग) संक्षिप्त विवरण (उद्देश्य एवं लाक्षणिक, तकनीकी और भाव के सन्दर्भ में) 5 अंक

निर्धारित पुस्तकें—

पाठ संकलन (गद्य भाग केवल) संस्करण, 1987; प्रकाशक—बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजूकेशन, वेस्ट बंगाल, कलकत्ता ।

निम्नांकित पाठ पढ़ने होंगे :

(1) भरत और दुष्यन्त मिलन
(2) पालमोर पाटे
(3) राज सिंह और मानिक लाल
(4) विद्यासागर
(5) बल्ली समाज
(6) अपूर्व कल्पना
(7) यात्रा पाठे
(8) भारत वर्तमान और भविष्यत

2—उपन्यास (संक्षिप्त अध्ययन के लिए) 10 अंक

अम अन्तोर भेम्पू (1979) —ले० विभूतिभूषण बनर्जी, प्रकाशक—सिगनेटा प्रेस, 4/4 एकबालपुर कलकत्ता-23 ।

नोट—(1) सम्पूर्ण पुस्तक निर्धारित है ।

(2) प्रश्न सामान्य प्रकार के पूछे जायेंगे । उदाहरण, उद्देश्य एवं चरित्र आदि ।

3—पद्य— 15 अंक

(क) सामान्य प्रश्न 06 अंक

(ख) व्याख्या 06 अंक

(ग) संक्षिप्त विवरण 03 अंक

जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं ट्राफिक रूल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जावेंगे ।

निर्धारित पुस्तकें—

पाठ संकलन—1987 संस्करण (पद्य भाग केवल), प्रकाशक—बोर्ड आफ सेकेन्डरी एजूकेशन, वेस्ट बंगाल, कलकत्ता ।

निम्नलिखित सात पद्य का अध्ययन करना है—

(1) रामेर विलाप
(2) दिनावन
(3) छात्र दलेर गान
(4) भोरई
(5) छात्र धारा
(6) नवशा कम्बर मठ
(7) लोहार व्यथा

मराठी

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा।

भाग (अ)	50 अंक
1—व्याकरण	15 अंक
(क) शब्द भेद का ज्ञान	09 अंक
(ख) पर्यायवाची तथा विपरीतार्थक	06 अंक
2—रचना	25 अंक
(क) सामान्य विषयों पर पैराग्राफ लेखन	15 अंक
(ख) सामान्य विषयों पर पत्र लेखन	10 अंक
3—अपठित गद्य खंड का ज्ञान	10 अंक
भाग (ब)	50 अंक
1—पद्य	20 अंक
(क) पाठ्य-पुस्तक पर आधारित संक्षिप्त प्रश्न	12 अंक
(ख) व्याख्या	8 अंक

निर्धारित पुस्तकें

कुमार भारती 1994

निम्नलिखित पाठों का अध्ययन करना होगा—

पाठ	लेखक का नाम
(2) सेतो साथी पानी	महात्मा फुले
(4) कालिकेश	एन0 एस0 फडके
(5) एक अपूर्ण संध्या	एन0 वी0 गाडगिल
(6) एक एकचावेश	पी0 के0 अत्रे
(9) निरवार	कुसमावती देश पाण्डेय
(11) कर्मवीररांच्या अठवानो	पी0 जी0 पाटिल
(13) मशी वेडमेनटेन्चो साधना	नन्दू नाटेकर
(14) बगाला	प्रकाश गोरे
(17) सौर ऊर्जा	निरन्जन घाटे

2—पद्य	15 अंक
(क) सन्दर्भ व्याख्या	08 अंक
(ख) पद्य का भाव	07 अंक

पाठ्य पुस्तक

: भारती (1994) में से निम्नलिखित कविताओं का अध्ययन करना है—

पाठ	कवि का नाम
1—नमदेवाचे अभंगवाणी	नामदेव
4—तुकारामची अभंग	तुकाराम
5—वाचित गौरव	रामदास
8—वात चक्र	केशवसुत
9—निजाल्या तीन ह्यावरी	बी0 आर0 ताम्बे दत्ता
10—प्रतिमाविहंग	

3—लघु कहानियां 15 अंक

(निर्धारित कहानी में से पांच लघुउत्तरीय प्रश्न का उत्तर)

निम्नलिखित कहानी का अध्ययन करना है—

कहानी	कवि का नाम
7—जिव्यातिल जुन्जा	बाबू बोन्ने
15—धूने	आर0 आर0 बोराउ
16—सताराची प्रति सरकार	कुमार केतकर

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक गद्य, पद्य और कहानियाँ

कुमार भारती (कक्षा 9 के लिए) 1994 संस्करण

प्रकाशक—महाराष्ट्र स्टेट सेकेण्डरी एजुकेशन बोर्ड, पुणे।

असामी

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा।

भाग (अ) 50 अंक

1—व्याकरण— 20 अंक

(क) मुख्य शब्द भेद

(ख) वाक्य संरचना में प्रयुक्त अशुद्धियों को चिन्हांकित करना

(ग) लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग

(घ) विराम चिन्हों का प्रयोग

2—रचना— 30 अंक

(क) सामान्य विषयों पर निबन्ध लेखन 20 अंक

(ख) सामान्य विषयों पर पत्र लेखन 10 अंक

सन्दर्भ पुस्तक—

(1) बहल व्याकरण—ले0 सत्यनाथ बोरा, बरुआ एजेन्सी, गुवाहाटी—78100।

(2) असमिया भाषा बोधिका—ले0 प्रियदास तालुकदार, प्रकाशक—एल0 बी0 एस0 प्रकाशन, अम्बारी, गुवाहाटी—78100।

(3) असमिया रचना विधि—ले0 प्रधानाचार्य गिरधर शर्मा, प्राप्ति स्थान आसाम बुक डिपो, गुवाहाटी—1

भाग (ब) 50 अंक

1—पद्य 20 अंक

(क) निर्धारित खण्ड की व्याख्या 8 अंक

(ख) निर्धारित पुस्तक से सामान्य प्रश्न 12 अंक

गद्य एवं पद्य के लिए निर्धारित पुस्तक

माध्यमिक साहित्य चयन—प्रकाशक—आसाम स्टेट टेक्स्ट बुक, प्रोडक्शन एन्ड पब्लिकेशन कारपोरेशन लिमिटेड, गुवाहाटी—78002 ।

निम्नलिखित पद्य का अध्ययन करना होगा—

(1) ककुती, (2) बाबाजुग, (3) मंगलारगीत, (4) ज्ञिकिर अहजारी ।

2—गद्य— 20 अंक

(1) पठित खण्ड की व्याख्या 8 अंक

(2) संक्षिप्त विवरण (निर्धारित पुस्तक से पौराणिक, ऐतिहासिक, लाक्षणिक, तकनीकी या भावात्मक सन्दर्भों में) 4 अंक

(3) पठित खण्ड से सामान्य प्रश्न

निम्नलिखित गद्य पाठों का अध्ययन करना होगा— 8 अंक

(1) मोकेन्द्र बरुआ

(2) वैज्ञानिक दृष्टिभंगी और जन संयोग

(3) असामारा जानाजातिर गहानी और संस्कृति

(4) गौरव

3—अविस्तृत अध्ययन 10 अंक

निर्धारित पुस्तकें—

पारिजात हरन और श्रीरघरा, पिन्धारा गोछवा भट द्वारा संकलित श्री जोगेशदास (लायर्स बुक स्टोर, गुवाहाटी) । केवल पारिजात हरन द्वारा श्री शंकर देव का अध्ययन किया जाना है ।

नेपाली

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा ।

भाग (अ) 50 अंक

(1) व्याकरण 20 अंक

[क] शब्द उच्चारण और ध्वनि के अनुरूप परिवर्तन (स्वर, लय आदि)

[ख] शब्द भेद (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय)

[ग] सरल वाक्यों की रचना ।

सन्दर्भ पुस्तक

सरल नेपाली व्याकरण—ले० राज नारायण प्रधान और जगत क्षेत्रीय, प्रकाशक श्याम ब्रदर्स, चौक बाजार, दार्जलिंग ।

(2) अपठित गद्यांश का ज्ञान जो खलकूद, सामाजिक घटनाओं और पारिवारिक वातावरण पर आधारित होंगे । 10 अंक

(3) रचना— 20 अंक

[क] पत्र लेखन 10 अंक

(1) मित्र/सम्बन्धी को पारिवारिक विषय पर ।

(2) अवकाश प्रार्थना-पत्र, शुल्क मुक्ति प्रार्थना-पत्र तथा निर्धन छात्रवृत्ति के सम्बन्ध में ।

[ख] निबन्ध लेखन 10 अंक

सामाजिक समस्याएं, खेलकूद, पारिवारिक वातावरण, राष्ट्रीय एकता, नैतिकता और वार्षिकोत्सव आदि के सन्दर्भ में ।

भाग (ब) 50 अंक

(1) गद्य 20 अंक

नेपाली साहित्य सौरभ--प्रकाशक शिक्षा निदेशालय, पाठ्य-पुस्तक अनुभाग, सिक्किम गंगटोक ।

निम्नलिखित पाठ का अध्ययन किया जाना है :

(1) अभागी--गुरु प्रसाद मैनाली
(2) बीबी चश्मा--वी0 पी0 कोइराला
(3) फ्रान्टियर--शिव कुमार राय
(4) चिटठी--बद्री नाथ भट्टराई
(5) म्यांगा को बिहान--लैनसिंग बन्गडेल
(6) चामू थापा--सोमनिधि तिवारी

(2) पद्य 15 अंक

नेपाली साहित्य सौरभ--प्रकाशक शिक्षा निदेशालय, पाठ्य-पुस्तक अनुभाग, सिक्किम, गंगटोक ।

निम्नलिखित पाठों का अध्ययन किया जाना है :

(1) बसन्त कोकिल--लेखनाथ पौडियाल
(2) सदीक्षा--धरनीधर शर्मा
(3) कर्म--बाल कृष्ण साय
(4) ओहेवर्षा--माधव प्रसाद घिमरी
(5) यो जिन्दगी खोके जिन्दगी--कोतुवाल
(6) कटाई यो शिर झुकच्छा भाने--सोहन ठाकुरी

(3) रैपिड रीडिंग 15 अंक

कथा बिम्ब-प्रकाशक--शिक्षा निदेशालय, गंगटोक (सिक्किम)

निम्नलिखित पाठों का अध्ययन किया जाना है :

(1) निर्णय--पूर्णराय
(2) जादूगर--एनटोलीफांस
(3) जीवन यात्राया--एम0 एन0 गुरुग
(4) नूर आलम--शिव कुमार राय

नोट--निर्धारित पाठ्य-पुस्तक से लघु स्तरीय एवं निबन्धात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे ।

उड़िया

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

भाग (अ) 50 अंक

1--व्याकरण 30 अंक

(क) उड़िया भाषा का स्पष्ट उच्चारण--स्वर और उसके वर्गीकरण ।

(ख) मुख्य शब्द भेद, स्वर, सन्धि, समास (तत्पुरुष, द्वन्द्व, और द्विग) कृदन्त ।

(ग) वाक्य परिवर्तन (स्वीकारात्मक, प्रश्नवाचक, नकारात्मक) ।

2--रचना 20 अंक

(क) पत्र लेखन (औपचारिक एवं अनौपचारिक) 10 अंक

(ख) अपठित गद्य खण्ड का संक्षिप्त लेखन

भाग (ब) 50 अंक

1--गद्य (विस्तृत अध्ययन हेतु) 25 अंक

(क) पाठ्य-पुस्तक पर सामान्य प्रश्न 15 अंक

(ख) निर्धारित पाठ्य से चुने हुए खण्डों की व्याख्या 5 अंक

(ग) संक्षिप्त विवरण (उद्देश्य, लाक्षणिक, तकनीकी और भाव के सन्दर्भ में) 5 अंक

निर्धारित पुस्तक--

साहित्य (1992 संस्करण) प्रकाशक--उड़ीसा बोर्ड आफ सेकेन्डरी एजूकेशन, उड़ीसा ।

नोट--सभी पाठों का अध्ययन करना है ।

2--संक्षिप्त कहानी और एकांकी (अविस्तृत अध्ययन हेतु) 10 अंक

त्रिधारा--1992 संस्करण, प्रकाशक--उड़ीसा बोर्ड आफ सेकेन्डरी एजूकेशन, उड़ीसा ।

नोट--कक्षा 9 के लिए निर्धारित पुस्तक में विभाजित पाठों को पढ़ना होगा ।

3--पद्य-- 15 अंक

(क) निर्धारित पद्य पर सामान्य प्रश्न 10 अंक

(ख) व्याख्या 5 अंक

निर्धारित पुस्तक--

'साहित्य' (1992 संस्करण) [प्रकाशक -उड़ीसा बोर्ड आफ सेकेन्डरी एजूकेशन, उड़ीसा ।

नोट--सभी पद्य का अध्ययन करना है ।

कन्नड़

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

भाग (अ) 50 अंक

1--व्याकरण-- 25 अंक

(क) निर्धारित पुस्तक के आधार पर वाक्य परिवर्तन

(ख) विराम चिह्नों का संशोधन ।

(ग) पर्यायवाची तथा विपरीतार्थक ।

व्याकरण का औपचारिक ज्ञान देते समय व्याकरण के कार्यकारी प्रयोग पर विशेष बल दिया जाना चाहिए ताकि छात्रों में भाषा व्याकरण की उपयोगिता का ज्ञान हो सके तथा भाषायी चातुर्य को बढ़ावा मिल सके ।

2--रचना-- 12 अंक

(क) व्यावहारिक एवं दैनिक जीवन एवं व्यावहारिक अनुभवों से सम्बन्धित टापिक पर पैराग्राफ लेखन 5 अंक

(ख) पत्र लेखन (व्यक्तिगत, व्यापारिक तथा कार्यालयीय सम्बन्ध में दैनिक जीवन के सन्दर्भ में) [15 पंक्ति से अधिक न हो] । 7 अंक

3--संक्षिप्त लेखन 7 अंक

4--लोकोक्तियां एवं मुहावरे 6 अंकक

भाग (ब) 50 अं

निर्धारित पुस्तक--

कन्नड़ भारती-9, प्रकाशक--राव कर्नाटक पब्लिकेशन, पी० ओ० बाक्स 5159, बंगलोर-1

(अ) गद्य (विस्तृत अध्ययन)--

निम्नलिखित पाठ पढ़ना होगा-- 20 अंक

(1) पाण्डुमलमाली

(2) श्रीकृष्ण साधना

(3) आइंस्टीन चित्र गलु

(4) माग् कलोसिदा पाठा

(5) कोडइया विचार

(6) बूट पालिश

(7) बन्दुरीना हुबलादा उम्बेगलु

(8) बेली युवा श्री मोलाकेयाली

(9) माया

(10) मरियाला गादा साम्राज्य

(11) वन्या जीवीगालू मट्टू परिसारा

(12) महारात्रि

(13) मंजारा पारोक्शी

(14) गम्भीरे

(ब) पद्य-- 20 अंक

निम्नलिखित पाठों का अध्ययन किया जाना होगा--

(1) हुचेबू कन्नडया दीपा

(2) चूटुकागलु

(3) नन्नाहाडू

(4) बोडो बह् मे

(5) काला

(6) नम्ना ह्राअमेय

(7) बचनगालू

(8) डोन्कू वलाबा नायकारे

(9) बीसतु सुखस्प्रू सत्वम्

(10) नूनाक्षरावलेख

(स) अविस्तृत के अध्ययन--

श्री शंकराचायारू-प्रकाशक--नेशनल बूक ट्रस्ट, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली।

निम्न अध्याय का अध्ययन किया जाना है-- 10 अंक

(1) जनाना माट्टू बलया

(2) कलातियन्डा काशीगे

(3) विजययात्रे

कश्मीरी

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग--(अ) 50 अंक

1--व्याकरण--

निम्नलिखित का अध्ययन किया जाना है-- 25 अंक

(1) वचन, (2) लिंग, (3) समानार्थक एवं विपरीतार्थक, (4) पाठ्य पुस्तक में वर्णित शब्दों का प्रयोग, (5) काल } प्रत्येक 5 अंक

2--पैराग्राफ लेखन-- 10 अंक

दिये हुए तीन विषयों पर 50 शब्दों का पैराग्राफ लेखन

3--लिपि और वर्तनी-- 15 अंक

दिये हुये लगभग तीस शब्दों के पाठ्यांश में अन्तर्लिखित विशिष्ट चिन्हों वाले शब्दों तथा वर्तनी को शुद्ध करना

भाग--(ब) 50 अंक

1--गद्य-- 30 अंक

निम्नांकित पाठ पढ़ने होंगे--

(1) काशीर, (2) काशीर-जुबान व अदब,

(3) बादशाह, (4) काशीर तालमी

निम्नांकित प्रकार से प्रश्न पूछे जायेंगे ।

(क) पाठ्यपुस्तक से दिये गये पाठ्यांश का अंग्रेजी/उर्दू/हिन्दी में अनुवाद 10 अंक

(ख) गद्य पाठ का संक्षिप्तीकरण 10 अंक

(ग) पाठ्य पुस्तक से प्रश्न 10 अंक

2--पद्य-- 20 अंक

निम्नलिखित पद्यों का अध्ययन किया जाता है :

(1) बल-त-सुरकी, (2) पम्पेरोनामा,

(3) बाहर आओ, (4) काशीर जुबान,

(5) इसान कम, (6) रुबाई (जी० आर० नजस्की)

निम्नांकित प्रकार से प्रश्न पूछे जायेंगे :

(अ) दिये हुये पद्यांश को गद्यांश में बदलना । 10 अंक

(ब) पद्य का संक्षिप्तीकरण 10 अंक

निर्धारित पाठ्य पुस्तक--

कशूर निसाब (कक्षा 9 तथा 10 के लिये)

प्रकाशक-जे एण्ड के स्टेट बोर्ड आफ हाई स्कूल एजूकेशन (1982)

सिन्धी

(कक्षा--9)

इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

भाग (अ) 50 अंक

(1) व्याकरण-- 18 अंक

(क) काल और उसके प्रकार

(ख) वचन

(ग) लिंग

(2) कहावतें, पदबन्ध एवं मुहावरे 10 अंक

(3) निबन्ध--निम्नलिखित विषयों में से 450 शब्दों तक एक निबन्ध 12 अंक

(1) राष्ट्रीय पर्व

(2) सिन्धी त्योहार

(3) सिन्धी महापुरुष

(4) सिन्धी साहित्यकार

(4) पत्रलेखन--दैनिक जीवन पर आधारित 15 से 20 पंक्तियों का एक पत्र 10 अंक

भाग-(ब) 50 अंक

(1) गद्य--

(क) निर्धारित पाठ्यपुस्तक के निर्धारित पाठों में से एक प्रश्न 10

(ख) निर्धारित पाठ्यपुस्तक के निर्धारित पाठों में से एक गद्यांश का प्रसंग सन्दर्भ, साहित्यिक सौन्दर्य सहित व्याख्या । 10

(2) पद्य--

(क) निर्धारित पाठ्यपुस्तक के निर्धारित पाठों पर आधारित एक प्रश्न 10

(ख) निर्धारित पाठ्यपुस्तक के निर्धारित पाठों में से एक पद्यांश का सन्दर्भ काव्यगत सौन्दर्य सहित व्याख्या । 10

(3) आत्मकथा— 5+5=10

आत्मकथा की विशेषता तथा उसके तत्व , तथ्य तथा घटनायें, चरित्र चित्रण भाषा तथा आत्मकथा की दृष्टि से समीक्षा व सारांश पर आधारित प्रश्न एवं लघु उत्तरीय प्रश्न ।

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें—

(1) व्याकरण, कहावतें, पदबन्ध, मुहावरे निबन्ध तथा पत्रलेखन के लिये

मध्यो सिन्धी व्याकरण (देवनागरी) ले० दयाराम वसणमल मीरचन्दानी, प्रकाशक सिन्धू बह्मू शिक्षा सम्मेलन एवं देवनागरी सिन्धी सभा, मुम्बई ।

प्राप्ति स्थान—(1) कमला हाई स्कूल-खार-मुम्बई--400052

(2) हिन्दुस्तान किताबघर--19-21 हनाम स्ट्रीट, मुम्बई

मध्यो सिन्धी व्याकरण पुस्तक से फहाका 1 से 20 तक इस्तलाह एक से 20 तक तथा अदबीगुलदस्तों के पाठों के अन्त में अभ्यास के लिये दिये अंशों का अध्ययन भी किया जाना होगा ।

(2) सहायक पुस्तक--सन्दर्भ के लिये—

सिन्धी भाषा (व्याकरण एवं प्रयोग) लेखक, प्रकाशक, विक्रेता--डा० मुरलीधर जेतली, डी० 127 विवेक विहार, नई दिल्ली-95 ।

(3) गद्य एवं पद्य के लिये--

अदबी गुलदस्तो--लेखक डा० कन्हैया लाल लेखवाणी ।

प्रकाशक एवं विक्रेता--निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान मानस गंगोत्री, विनोबा रोड, मैसूर ।

"अदबी गुलदस्तो" के गद्य भाग में 1 से 10 तक के पाठ एवं पद्य भाग 1 से 5 तक के पाठों का अध्ययन किया जाना होगा ।

(4) आत्मकथा के लिये--

साधु हीरानन्द (देवनागरी) ।

प्राप्ति स्थान--कमला हाई स्कूल, खार, बम्बई--400052

तमिल

(कक्षा--9)

इस विषय से 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

भाग--(अ) 50 अंक

1--व्याकरण-- 20 अंक

निम्नलिखित क्षेत्रों के पहचान हेतु प्रारम्भिक ज्ञान--

(i) EZHUTHU , mathal and saarbu, Chuttu and Vinnaamaatirai, Ezluthu Poli.

(ii) PADAM , Pabupadam, Pahaappadam and pabupede Urruppuhal Iyarsol Tririsol and Tisaiohol.

(iii) PUNARCHI , Vetrumai and Alvazhi Punsrchi, Chuttu and Vina Punarchi, Achsara Punarchi and Kutriyaluhare Punarchi.

2--मुहावरे और लोकोक्तियां--

परिभाषा एवं प्रयोग-- 5 अंक

(निम्नलिखित पुस्तक के पृष्ठ 135 से 154 तक में उल्लिखित मुहावरों का अध्ययन किया जाना है) उपर्युक्त क्रम 1 और 2 हेतु सन्दर्भ पुस्तक--

तमिल इलाक्का नाम Tamil (Ilakkaram) कक्षा 9 के लिये (संशोधित संस्करण 1992) प्रकाशक तमिलनाडु टेक्स्ट बुक सोसाइटी, मद्रास-6 ।

3--रचना-- 15 अंक

निबन्ध लेखन--दिये हुये बिन्दुओं पर (लगभग 100 शब्दों में)

या

दिये हुये विषय पर स्वतन्त्र रचना ।

4--अपठित गद्य खण्ड का ज्ञान । 10 अंक

भाग--(ब) 50 अंक

1--पद्य-- 20 अंक

तमिल टेक्स्ट बुक --कक्षा 10 के लिये (1994 संस्करण) प्रकाशक तमिलनाडु टेक्स्ट बुक सोसाइटी, मद्रास-6 ।

निम्नलिखित पद्य पढ़ना है--

Sec. I. —, Irai Vaszhthu

Sec. II —1. Thirnkkural

2. Pazhamozhi

Sec. III—1. Silppathika aram.

Sec. VI—Marumalarchi Paadalgal.

2--गद्य-- 20 अंक

तमिल टेक्स्ट बुक कक्षा 10 के लिये (गद्य भाग) (1994 संस्करण) प्रकाशक--तामिलनाडु टेक्स्ट बुक सोसाइटी, मद्रास-6 ।

(पाठ 1 से 7 तक केवल पढ़ना है)

3--विस्तृत अध्ययन--

Thiru. VI—KA, Vuzhuvm Theudum (1994 संस्करण) ।

ले० शक्ति वासन सुब्रामणियम, प्रकाशक मेसर्स पारीनिलयम, 184 ब्रडवे, मद्रास-60000 ।

(1 से 10 पाठ कक्षा-9 में अध्ययन करना है) ।

पुस्तक की विषय वस्तु से प्रश्न पूछे जायेंगे--

(1) निबन्धात्मक 6 अंक

(2) दो लघुस्तरीय 2+2--4

तेलुगु

(कक्षा—9)

इस विषय में 100 अंकों के केवल एक प्रश्न-पत्र होगा तथा समयावधि तीन घन्टे होगी।

भाग (अ) 50 अंक

(1) व्याकरण— 24 अंक

निम्नलिखित का विस्तृ अध्ययन—

(क) समसकृता सनधुलू, स्वर्ण दीर्घ, सन्धि-गुण सन्धि, वृद्धि सन्धि, यनादेश सन्धि 6 अंक

(ख) तेलुगु सन्धुलू अकारा, उकारा सन्धुलू 4 अंक

(ग) Nanaar Dhaiu; Pakritivikriti, Vyutpatyardhaltu, Earyayapagalu, Vyatreka phadhalu) 14 अंक

(2) लोकोक्ति और मुहावरे और उनका प्रयोग-(अत्यधिक प्रचलित) 8 अंक

(3) अपठित गद्य खण्ड (लगभग 100 शब्द) का ज्ञान 10 अंक

(4) निबन्ध-पैराग्राफ लेखन—100 शब्द 8 अंक

भाग (ब) 50 अंक

(1) गद्य— 25 अंक

तेलुगु वाचाकामू (Telugu Vachakammu) (कक्षा 9) प्रकाशक आन्ध्र प्रदेश सरकार (नया संस्करण 1987)।

निम्नलिखित का अध्ययन करना होगा—

(2) स्वमाषा (3) सोमानाद्री, (5) शकुना पारीवानानाम, (6) समसकृति, (7) गुरुदेवडडू, रवीन्द्रडू, (9) जनपद गयाकुलू (10) वेतालपालू (12) इवारू गोप्पा।

(2) पद्य— 16 अंक

व तेलुगु वाचकामू (The Telugu Vachaka)mmu(कक्षा 9) प्रशासक-आन्ध्र प्रदेश सरकार (नया संस्करण 1987)।

निम्नांकित पाठों का अध्ययन किया जाना है—

(1) राजाधर्मम्, (2) पार्वतीतपासू, (4) इन्द्रो व्यारचतमुतो वृत्तान्तम्, (5) भास्करा, (7) शिवाजी सौशल्यामू, (10) वृद्ध देवूनी पुनराहवानामू, (11) समुद्र मन्थानाम्र।

(3) अविस्तृत अध्ययन हेतु— 10 अंक

तेलुगु उपवाचकामू (Teluugu Upavachakammu) (कक्षा 9) आन्ध्र केशरी-आन्ध्र प्रदेश सरकार (नयी संस्करण 1987)।

दो निबन्धात्मक प्रश्न पाठ्य-पुस्तक से पूछे जायेंगे।

मलयालम

(कक्षा—9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा।

भाग—(अ) 50 अंक

(1) व्याकरण— 25 अंक

(1) कर्तवाच्य और कर्मवाच्य परिवर्तन
(2) वाक्य संशोधन
(3) शब्द अध्ययन
(4) विपरीतार्थक और पर्यायवाची शब्द

व्याकरण का औपचारिक ज्ञान देते समय व्याकरण के कार्यकारी प्रयोग पर विशेष बल दिया जाना चाहिये ताकि छात्रों में भाषा व्याकरण की उपयोगिता का ज्ञान हो सके तथा भाषा की चातुर्य को बढ़ावा मिल सके ।

(2) रचना-- 25 अंक

(क) मुहावरे तथा लोकोक्तियां 05 अंक

(ख) पत्रलेखन 07 अंक
((दैनिक जीवन से सम्बन्धित व्यक्तिगत तथा कार्यालयीय प्रकरणों पर)

(ग) पैराग्राफ राइटिंग (दैनिक जीवन से सम्बन्धित) 08 अंक

(घ) सार लेखन 05 अंक

भाग--(ब) 50 अंक

(1) गद्य-- 20 अंक

केरला पाठावली--वाल्यूम सं0 IX (1992 संस्करण) (केवल गद्य भाग) प्रकाशक--शिक्षा विभाग, केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम ।

निम्नांकित पांच पाठों का अध्ययन करना--

(1) मधुक देवो भव
(2) पाटाचोनची चोह
(3) इका लोकम
(4) यशुदेवन
(5) स्वातिपुत सन्निधोइल

(2) पद्य-- 20 अंक

'केरल पाठावली' वाल्यूम मं0 IX (1992 संस्करण) (केवल पद्य भाग)
प्रकाशक--शिक्षा विभाग, केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम ।
निम्नांकित 05 पद्यों का अध्ययन किया जाना है--

(1) काव्यवाणिकी
(2) शिव्यानम मकनम
(3) अवानोपद्यम
(4) अपहृत्यात्या सुयोधनम
(5) वालूपवानम

(3) अविस्तृत अध्ययन हेतु (संक्षिप्त कहानियों का संकलन) 10 अंक

निर्धारित पुस्तक--

उर्मिला (1987 संस्करण) प्रकाशक--शिक्षा विभाग, केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम ।

अंग्रेजी

(कक्षा --9)

इस विषय में 50-50 अंकों के दो प्रश्न-पत्र तीन घण्टे के होंगे ।

प्रथम प्रश्न-पत्र--50 अंक

(A) PROSE-25 MARKS

(1) Two out of three Prose passages from English Reader--1 +5--10 Marks

(2) One out of two long answer question of about 100 words 6 Marks

(3) Two out of three short answer type questions in 25 words — 3+3=6 Marks

(4) One question to test vocabulary — 1/2X6=3 Marks

(B) POETRY—10 Marks

(1) Two out of three poetry Passages from Reader—1 — 3+3—6 Marks

(2) Central Idea of one out of two poems from the prescribed text — 4 Marks

OR

Reproduction of eight lines of any poems from Reader Part—1. Except the poem given in the question paper.

(C) SUPPLEMENTRY READER—15 MARKS

(1) One out of two long answer type questions in about 100 words from Supplementary Reader Part—1 — 6 Marks

(2) Two out of three short answer type questions in about 25 words each. — 2+2—4 Marks

(3) Objective type True-False statement type question — 1/2x6)=3 Mark

(4) Two very short multiple choice question — 1+1=2 Marks

द्वितीय प्रश्न-पत्र—50 अंक

GRAMMAR TRANSLATION, WRITING SKILL AND UNSEEN PROSE

(A)GRAMMAR-16 MARKS

(1) Filling the gap closed type — 1/2x4=2 Marks

(2) Sentence completion — 1/2x4=2 Marks

(3) Sentence formation by reordering given words — 1/2x4=2 Marks

(4) Conversion of Sentences — 1/2x4=2 Marks

(5) Narration from Direct to Indirect — 1x3=3 Marks

(6) Spelling test two words — 1/2+1/2=1 Marks

(7) Punctuation — 2 Marks

(8) Testing ability to use tenses and other words/verb forms — 1/2x4=2 Marks

(B) TRANSLATION—8 MARKS

(9) Hindi to English ,8 Sentences in Hindi requiring Translation into day to day spoken English from including conversational English. — 8 Marks

(C) WRITING SKILL—18 MARKS

(10) Letter writing/Application Writing etc. — 6 Marks

(11) Short writing task. story completion — 4 Marks

(12) Long composition (Essay writing on one out of 5/6 given topics in about 150 words questions regarding Populantion, Invironment health in Education and Traffic Rules shall be owned in form of Essay — 8 Marks

(D) UNSEEN PROSE—8 MARKS

(13)—(1) Title — 1 Marks

(2) 4 Comprehension questions — 6 Marks

(3) Meaning of the words under lined — 1/2x2=1 Marks

पाठ्य पुस्तकें—

पुस्तक का नाम	Title and Author	पाठ्यवस्तु Language Items
(1) English Reader (Part I) (For Class IX)	(1) Tom saw yer Mark Twain :	Have to/had to (necessity)
	(2) Marco Polo ;	Introductory It, when, As soon as, Until/Till.
	(i) The Mountain and the Squirrel : Ralph Walto Emerson.	
	(3) Oil : G. C. Thornley	Passive Voice (i)
	(4) Playing the Game by Aouthor Mil.	
	(ii) Sympathy : Charles Mackay.	
	(5) The Happy Prince Ossar Wilde :	Reported Speech : (a) Reporting commands and requests. (b) Reporting yes/no question Revision.
	(6) The Man in the Train : Frank Candlin.	
	(7) A Golden Bowl :	SV what/how/when to.....
	(iii) Faithful Friend (8 lines only) by William Shakespeare.	
	(8) Plants also Breathe and Feel:	Relative clauses who, which that.
	(9) The Rule of the Road :	(a) If simple present + simple/ future. (b) Why, What.
	(iv) Indian Weavers: Sarojini Naidu.	
	(v) I vow to my country by Sir C. Spring Rice.	
(2) Supplementary Reader (Part I) (For Class IX)	1. Gandhiji and the Coffee Drinker.	G. Ram Chandran (adapted)
	2. The Swan and the Princes:	(a play)
	3. Caged: L. E. Greeve	
	4. Letter to the Children of India.	(Chacha Nehru)
	5. A Narrow Escape :	Charles Reads
	6. On a Winter's Night :	(based on Prem Chand's story पूस की रात)
	7. The Dilemma :	(a play)
	8. The Gift of the Magi :	by O. Henry.

NOTE—Worksheet of every lesson is attached with the lesson in English Reader.

English Grammar

I. English Grammar—

1. Parts of the Sentence
2. The Sentences ; Types
3. The Verbs
4. Primary Auxiliaries (Be, Have, Do)
5. Model Auxiliaries
6. Negative Sentences
7. Interrogative Sentences
8. Tenses ; Form and Use
9. The Passive Voice
10. The parts of Speech
11. Indirect (or Reported) Speech
12. Word Formation
13. Punctuation and Spelling

II. (a) Translation—English to Hindi
(b) Translation—Hindi to English

III. Composition—

1. Controlled Composition
2. Short Composition
3. Letter Writing
4. Story Completion
5. Long Composition

IV. Comprehension—

Appendices

(1) Words often confused
(2) Synonyms and Antonyms
(3) Cries of some birds and animals
(4) Glossary

NOTE—English Grammar, Translation and Composition include grammar, letter writing, writing of applications, translation and composition.

[विशेष—माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा निर्धारित अंश]

फ्रांसीसी

(कक्षा—9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा ।

(1) व्याकरण — 50 अंक

(पाठ 1 से 31 तक)

(2) अनुवाद — 30 अंक

(क) दिये गये पाठ्यांश का फ्रांसीसी से हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद

(ख) एक अपठित गद्य पाठ्यांश का फ्रांसीसी से हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद

(3) पाठ्य-पुस्तक से सामान्य प्रश्न — 20 अंक

निर्धारित पुस्तक—

Course do Langueet do civilisation Franaisis Vol. I. G. Marger, Librairie Hachette. French Lesson to be studied—

Lesson 1 to 31

जर्मन

(कक्षा–9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न–पत्र तीन घंटे का होगा। इस प्रश्न–पत्र में व्याकरण सम्बन्धित प्रश्नों में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का भी समावेश होगा।

1—व्याकरण—(वस्तुनिष्ठ)	30 अंक
(निर्धारित पाठ्य–पुस्तक में दिये गये अभ्यास के आधार पर)।	
2—अनुवाद—जर्मन से अंग्रेजी अथवा हिन्दी में (निर्धारित पाठ्य–पुस्तक से)।	30 अंक
3—जर्मन अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों का जर्मन में उत्तर।	15 अंक
4—जर्मन में पूछे गये सामान्य प्रश्नों का जर्मन में उत्तर देना।	15 अंक
5—दिये गये विषयों में से किसी एक पर पांच वाक्य जर्मन में लिखना।	10 अंक

निर्धारित पाठ्य–पुस्तक—

1. Deutsch sprach libre fuer Auslaender 'Do. schulz and Heing Gries back (Grudstufe in einom Band) Lesson 1 to 5.
2. Deutso farEuch Teils I.

रूसी

(कक्षा–9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न–पत्र तीन घंटे का होगा।

(1) व्याकरण	50 अंक
(निर्धारित पाठ्य–पुस्तक के आधार पर) 'My Third Russian Book by V. D. Arakin and D, Damoylova (1978).	
(2) अनुवाद	30 अंक
(क) निर्धारित पाठ्य–पुस्तक में दिये गये पाठ्यांश का रूसी से हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद	15 अंक
(ख) अपठित गद्यांश का रूसी से हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद	15 अंक
(3) निर्धारित पाठ्य–पुस्तक में दिये गये प्रश्नों का लघु उत्तर रूसी में	20 अंक

निर्धारित पाठ्य–पुस्तक—

My Third Russian Book by V. D. Arakin and D. Damoylava (1978) vailable at the peoples Publishing House, Rani Jhansi Road, New Delhi—55.

Lesson too be studied—(Lesson 1-11).

तिब्बती

(कक्षा–9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न–पत्र तीन घंटे का होगा।

भाग (अ)

(60 अंक)

1—व्याकरण — 28 अंक

(क) शब्द उच्चारण और ध्वनि के अनुरूप परिवर्तन

(ख) शब्द निर्माण और उनके आकार का अध्ययन

(ग) शब्द भेद का अध्ययन

(घ) सरल वाक्यों की रचना

संदर्भ पुस्तकें—

तिब्बतन ग्रामर ले० KHECHOG NYUKHA YAB-SEY (SUNCHA-PA-SECTION) प्रकाशक—तिब्बतन कल्चरल प्रिंटिंग प्रेस, धर्मशाला, जिला कांगड़ (एच० पी०)

2--अपठित गद्यांश का ज्ञान जो निम्नलिखित पर आधारित होगा-- 12 अंक
खेलकूद, सामाजिक घटनायें तथा पारिवारिक घटनाओं
अथवा
एक अपठित गद्यांश का अंग्रेजी अथवा हिन्दी से तिब्बती में अनुवाद

3--रचना 20 अंक
(क) पत्र-लेखन 10 अंक
(1) मित्र/सम्बन्धी को पारिवारिक विषय पर
(2) अवकाश प्रार्थना-पत्र, शुल्क मुक्ति प्रार्थना-पत्र तथा निर्धन छात्रवृत्ति के सम्बन्ध में
(ख) निबन्ध लेखन 10 अंक

भाग (ब)
(40 अंक)

1--गद्य-- 18 अंक
(1) निर्धारित पाठ्य-पुस्तक के गद्यांश पर प्रश्न
(2) निर्धारित पाठ्य-पुस्तक से सामान्य प्रश्न का उत्तर तिब्बती भाषा में

निर्धारित पुस्तक--

Lakshe Losar Mig Ji H. H. the Dalai Lama, published by Tibetan Cultural Printing Press Dharamshala, Distt. Kangra (H. P.) (Edition 1982).

Lessons 1 to 6 are to be studied.

2--पद्य-- 10 अंक
(क) तिब्बती भाषा में दिये गये पद्यांश की व्याख्या तथा विस्तार करना अथवा सारांश लेखन
(ख) दिये गये पद्यांश का भाव और उससे सम्बन्धित प्रश्न

निर्धारित पुस्तक--

'Sakya Lgake' by Sakya Panchen, Published by Freedom Press, Darjeeling (W. B.). (Chapters 1 and 2).

NOTE—Both short answer type and essay type questions will be asked on the text Passages from texts will also be set for transformation into English/Hindi.

3--रैपिड रीडिंग-- 12 अंक
(1) कहानी तथा प्रसंग का सार लेखन
(2) विभिन्न घटनाओं पर आधारित लघु प्रश्न
(3) चरित्र चित्रण

निर्धारित पुस्तक--

'My Land and My People's H. H. the Dalai Lama, Ngos Kyi Yul Danganges kyiaimang, published by Freedom Press, Darjeeling (Pages 1 to 31 introduction and Chapter 1).

चीनी

(कक्षा-9)

पूर्णांक--100 समय--तीन घन्टा
इसमें एक प्रश्न-पत्र होगा ।

1--इसमें नियत पाठ्य-पुस्तक से चीनी से अंग्रेजी अथवा हिन्दी और अंग्रेजी अथवा हिन्दी से चीनी भाषा में अनुवाद के अंश दिये जायेंगे । नियत पाठ्य-पुस्तक पर प्रश्न और चीनी व्याकरण तथा मुहावरे पर भी सरल प्रश्न-पत्र होंगे । 50 अंक

2--इसमें नियत पाठ्य-पुस्तकों में चीनी से हिन्दी अथवा अंग्रेजी अथवा हिन्दी से चीनी भाषा में अनुवाद करने के सिलसिले में आये वर्णों पर बनाये गये चीनी भाषा के अपठित गद्यांश होंगे । अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषा के ऐसे सरल वाक्य भी होंगे, जिनका चीनी में अनुवाद करने के लिए उन चीनी वर्णों का जानने की आवश्यकता नहीं होगी, जो नियत पाठ्य-पुस्तकों में प्रयुक्त न हुये हों । 50 अंक

संस्तुत पुस्तकें--

(1) कनवरसेशनल चाइनीज, प्रथम से पचासवं पाठ तक, ले0-- तंग सू यू ।
(2) इन्ट्रोडक्शन टू स्पोकेन चायनीज (लेख, कहानी तथा कविता पर 25 पाठ पृष्ठ 107 से 227 तक) लेखक--जे0 जे0 आउन्ड, प्र0 येले विश्व-विद्यालय प्रेस ।

टिप्पणी--उक्त पुस्तकें आक्सफोर्ड बुक कम्पनी, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता से प्राप्त की जा सकती हैं ।

संस्कृत

(कक्षा-9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटों का होगा । सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के आधार पर प्रश्न-पत्र में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का भी उल्लेख होगा तथा उसके उत्तर के रूप में तीन या चार उत्तर प्रश्न-पत्र में अंकित होंगे । उनमें से एक शुद्ध उत्तर होगा । उसका उल्लेख उत्तर-पुस्तिका में छात्र को अंकित करना होगा तथा उनका अंक विभाजन निम्नवत् होगा--

1--आशुपाठ	4 अंक
2--शब्द रूप	2 अंक
3--धातु रूप	2 अंक
4--समास	1 अंक
5--कारक	2 अंक
6--उपसर्ग का सामान्य परिचय	1 अंक
	12 अंक

खण्ड (क)--[गद्य, पद्य तथा आशुपाठ]--50 अंक

गद्य--

(1) गद्य का हिन्दी में ससन्दर्भ अनुवाद	10 अंक
(2) पाठ सारांश	6 अंक

पद्य--

(1) पद्यांश की हिन्दी में ससन्दर्भ व्याख्या	10 अंक
(2) सूक्तियों की व्याख्या	5 अंक
(3) श्लोक का संस्कृत में अर्थ	5 अंक

आशुपाठ--

(1) पात्रों का चरित्र चित्रण हिन्दी में	6 अंक
(2) लघुउत्तरीय प्रश्न संस्कृत में	8 अंक

खण्ड (ख)--[व्याकरण, अनुवाद एवं रचना]--50 अंक

व्याकरण--

1--माहेश्वर सूत्रों के आधार पर स्वर एवं व्यंजन का सामान्य ज्ञान तथा स्वर व्यंजन एवं विसर्ग सन्धियों का सामान्य परिचय — 5 अंक

2--शब्द रूप-- — 4 अंक

पु0--राम, हरि, गुरु
स्त्री0--रमा, मति, वाच्
नपु0--सर्व, तद्, युष्मद, अस्मद्
1 से 10 तक के संख्या शब्दों का ज्ञान

3--धातु रूप-लट् लुट, लोट्, लङ्, एवं विधि लिङ — 4 अंक

(1) परस्मैपद-पठ गम्, अस्, शक्, प्रच्छ ।
(2) आत्मनेपद--लभ् ।
(3) उभयपद--याच, गृह, कथ ।

4--समास--समास की सामान्य परिभाषा एवं विग्रह सहित उदाहरण--तत्पुरुष, द्वन्द्व, कर्मधारय — 4 अंक

5--कारक--समस्त कारकों एवं विभक्तियों का सामान्य परिचय । — 4 अंक

6--उपसर्गों का सामान्य परिचय — 4 अंक

अनुवाद--

हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद — 10 अंक

रचना--

(1) पत्र लेखन — 7 अंक

(2) संस्कृत शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग — 8 अंक

जनसंख्या, पर्यावरण स्वास्थ्य शिक्षा एवं ट्राफिक रूल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे ।

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें

निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों के सम्मुख अंकित पाठ्यवस्तु (मा० शि० प० द्वारा निर्धारित अंश) का अध्ययन करना होगा :--

पुस्तक का नाम	निर्धारित पाठ
	संस्कृत गद्य का विकास
(1) संस्कृत गद्य भारती-- भाग--एक (कक्षा 9 के लिये)	1--माङ्गलिकम् 2--अस्माकं राष्ट्रिय प्रतीकानि 3--आदिकविः वाल्मीकिः 4--राष्ट्रपिता महात्मा गांधी 5--गुणाढ्यवृत्तान्तः 6--श्रम एवं विजयते 7--गणतन्त्र-दिवसः 8--बन्धुत्वस्य सन्देष्टा रविदासः 9--आजादः चन्द्रशेखर : 10--भारतवर्षम् 11--परमवीरः अब्दुल हमीदः 12--प्राचीना भारतीय शिक्षा व्यवस्था 13--महात्मा बुद्धः 14--पुण्यसलिला गंगा 15--पर्यावरण शुद्धिः 16--अन्तरिक्ष विज्ञानम्
(2) संस्कृत पद्य पीयूषम् (भाग-एक) (कक्षा 9 के लिए)	1--मंगलाचरणम् 2- रामस्य पितृभक्तिः 3--सुभाषितानि 4--दीतयन्धुगान्धी 5--अन्योक्ति-मौक्तिकानि 6--कपिलोपाख्यानम् 7--भारत देशः 8--नारी-महिमा 9--पण्डितमूढ़योर्लक्षणम् 10--क्रियाकारक-कुतूहलम् 11--नीति-नवनीतम् 12--यक्ष-युधिष्ठर संलापः 13--आरोग्य-साधनानि
	परिशिष्ट (टिप्पणी एवं पाठसारांश)
3--कथा नाटक कौमुदी भाग (एक) (कक्षा 9 के लिए)	1--गार्गी-याज्ञवल्क्यसंवादः 2--वत्सराजनिग्रहः 3--नागङ्गदत्तः पुनरेति कूपम् 4--शकुन्तलायाः पतिगृहगमनम् 5--क्षीयते खलसंसर्गात् 6--श्रम एवं विजयते

7--जडभरत:
8--भीमसेनप्रतिज्ञा
9--प्राचीना: पञ्चवैज्ञानिका:
10--त्याग एवं परोपधर्म:
11--बुद्धिर्यस्य बलं तस्य
12--यज्ञरक्षा
13--विद्यादानम्
14--षड्रिपुविजय:

4--संस्कृत व्याकरण (कक्षा 9 तथा 10 के लिए)

1--(क) माहेश्वरसूत्र एवं वर्णों का उच्चारण
(ख) सन्धि--स्वर, व्यंजन, विसर्ग सन्धियों का परिचय

2--समास--
अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व, बहुव्रीहि समासों का अभ्यास सहित परिचय ।

3--कारक एवं विभक्ति
4--वाच्य परिवर्तन
5--अनुवाद--
(i) सामान्य नियमों सहित अभ्यास
(ii) कारक एवं विभक्ति ज्ञान
(iii) अनुवाद अभ्यास
6--प्रत्यय
7--उपसर्ग
8--अव्यय
9--संस्कृत पदों का वाक्यों में प्रयोग
10--संस्कृत वाक्य शुद्धि
11--संस्कृत में आवेदन-पत्र तथा निमंत्रण-पत्र
12--संस्कृत में निबन्ध--

1--विद्या
2--सदाचार:
3--परोपकार:
4--सत्संगति:
5--अहिंसा परमोधर्म:
6--मातृभूमि:
7--वसुधैवकुटुम्बकम्
8--राष्ट्रिय एकता
9--अनुशासनम्
10--राष्ट्रपिता महात्मा गांधी
11--संस्कृत भाषाया: महत्वम्
12--भारतीय कृषक:
13--हिमालय:
14--तीर्थराज: प्रयाग
15--वनसम्पत्
16--पर्यावरणम्
17--परिवार कल्याणम्
18--राष्ट्रपक्षी मयूर:
19--पौतुकम्
20--दूरदर्शनम्
21--क्रिकेट क्रीडनम्

13--शब्द रूप--

संज्ञा ,सर्वनाम तथा संख्या वाचक शब्दों के तीनो लिंगों में रूप ।

14--धातु रूप--

परस्मैपद, आत्मनेपद तथा उभयपद में धातुओं के रूप ।

पालि

(कक्षा-9)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य--

1--भारत की प्राचीन सांस्कृतिक भाषा होने के कारण पालि भाषा और साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित करना ।

2--प्राचीन भारतीय इतिहास के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विवरण से परिचित होने के लिए और तत्कालीन लोक-जीवन का परिचय प्राप्त करने के लिए पालि साहित्य का अध्ययन करने की छात्रों में योग्यता उत्पन्न करना ।

विशेष दृष्टव्य--देवनागरी लिपि में ही पालि लिखी जानी चाहिए।

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा ।

1--गद्य--पालि--जातका बलि पाठ 1 से 7 तक	20 अंक
(क) दो अवतरणों में से किसी एक अवतरण का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद ।	2+8=10
(ख) किन्हीं दो जातकों में से किसी एक जातक की कथा हिन्दी अथवा अंग्रेजी में	10 अंक
2--पद्य-धम्मपद--यमक वग्गो से बाल वग्गो तक (पाठ 1 से 5 तक)--	15 अंक
(क) दो गाथाओं में से किसी एक गाथा का हिन्दी अनुवाद	5 अंक
(ख) दो वग्गों में से किसी एक वग्गों का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में सारांश	5 अंक
(ग) धम्मपद के पाठ 1 से 5 के अन्तवर्ती गाथा का उल्लेख	5 अंक
3--अपठित-गद्य-निर्धारित पाठ (सोलामिसस जातक, जम्मसारक जातक, उच्छङ्ग जातक)	5 अंक
4--सहायक पुस्तक-बोधिचर्या विधि--	
परित्राण परिच्छेद से आवाहन, महामंगल सुत्त, महामंगल गाथा (किसी एक गाथा की हिन्दी व्याख्या अथवा पूजा विधि का वर्णन)	20 अंक
5--व्याकरण	20 अंक
(क) शब्द रूप-पुलिंग=बुद्ध, पिक स्त्री लिंग--लता, रति नपुंसक लिंग-फल अट्ठि	5 अंक
(ख) धातु रूप--वर्तमान काल पठ, गम, चुर, रुध, सक, हिंस के रूप	5 अंक
(ग) सन्धि-स्वर सन्धि सरोलोपो सरे, परोक्वचि, जब्बेव, यव सरे, ए ओ न	5 अंक
(घ) समास तत्पुरुष एवं बहुब्रीहि का सामान्य परिभाषा तथा उदाहरण	5 अंक
6--अनुवाद-- हिन्दी के पांच वाक्यों का वर्तमान कालिक क्रिया में अनुवाद	10 अंक

अथवा

निबन्ध--

पालि भाषा में पांच वाक्य लिखना ।

भगवा, बुद्धों, धम्मपद, मभविज्जालयों, जम्बू दीपो, सारनाथ चत्तारि अरिय-सच्चानि ।

7--पालि साहित्य के इतिहास का संक्षिप्त परिचय	10 अंक

प्रथम संगीत, सुत्तपिटक--दीघ निकाय, मज्झिम निकाय, संयुत्त निकाय, अंगुत्तर निकाय खुद्दक निकाय ।

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें--

(क) पालिजातका बलि	--	पं0 वटुक नाथ शर्मा प्रकाशक--मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स, वाराणसी ।
(2) पद्य-धम्मपद	--	सम्पादित--भिक्षु धर्म रक्षित, प्रकाशक--महाबोधि सभा, सारनाथ, वाराणसी ।
(3) बोधचर्या विधि	--	सम्पादक--भिक्षु धर्म रक्षित, महाबोधि सभा, वाराणसी ।

(4) व्याकरण--

(i) पालि प्रबोधि--भगवत ठाकुर एम0 ए0--प्रकाशक--पुस्तक माला, लखनऊ ।

(ii) मैनुअल आफ पालि एम0 ए0 --सी0 सी0 जोशी, ओरियन्टल बुक एजेन्सी, पूना ।

(iii) पालि महा व्याकरण --भिक्षु जगदीश कश्यप, एम0 ए0 प्रकाशक--महाबोधि सभा, सारनाथ, वाराणसी ।

(iv) पालि व्याकरण एवं पालि साहित्य का इतिहास --ले0 राज किशोर सिंह, प्रकाशक--विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।

अरबी

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र तीन घंटों का होगा ।

खण्ड (अ) 50 अंक

1--व्याकरण-- 20 अंक

(क) (1) सरल वाक्यों की संरचना (मुबदा और खबार) 15 अंक

(2) मादी की रचना और इसके प्रकार ।

(3) सरल मुहावरे की रचना (अनिश्चितकाल) ।

(4) मुरक्कब जारी (जार और मजरूर) ।

(5) मुरक्कब इशारी (इस्मे इशारा और मुशारून लेह) ।

(6) अमर की संरचना (हबीर, गायब और मुताकल्लीन) ।

(7) नाही की संरचना (हबीर, गायब और मुताकल्लीन) ।

(8) इस्ने फाइल तथा इस्मे मफूल की संरचना ।

(9) मुरक्कब बाशफी (मौसूफ और सिफात) ।

(10) मुरक्कब इदाफी (मुदाफ और मुदाफेह) ।

(ख) रिक्त की पूर्ति 5 अंक

--अनुवाद 20 अंक

(क) अरबी के साधारण वाक्यों का अंग्रेजी अथवा उर्दू अथवा हिन्दी में परिवर्तन 10 अंक

(ख) अंग्रेजी अथवा उर्दू अथवा हिन्दी के साधारण वाक्यों का अरबी में परिवर्तन 10 अंक

-सरल अरबी शब्दों का वाक्यों में प्रयोग 10 अंक

जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा ट्रैफिक रूल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे ।

खण्ड (ब) 50 अंक

--गद्य 35 अंक

अल-किरत-उर रशीदा, भाग--एक-ले0 अब्दुल फतेह और अली आर (मिश्र संस्करण) उपलब्ध स्थान 0 रशीद एण्ड सन्स, उर्दू बाजार, जामा मस्जिद, दिल्ली 110046 ।

निम्नांकित पाठों का अध्ययन किया जाना है--

शीर्षक	पाठ संख्या
(1) कलही	3
(2) अ-थुआर	4
(3) अल-जुमन	8
(4) अल-पतार	9
(5) अल-सब्यां-वा-अल-फौल	13
(6) अल-असद-वा-अल-फार	18
(7) अल-राई-व-अल-जब	24

(8) अतलाकी-अल-तबर	28
(9) अल-हद्दमद	36
(10) बालादम नाजोयम	44
(11) अल शारो वो अल शारे	49
(12) फासलू अत-रावी	50
(13) हुलाबातु अल कतब	53
(14) महात्तलू सिकाती अल हबोंद	58
(15) तारीख अल कुर्सी	59

2—पद्य 15 अंक

(16) अल ताईट	10
(17) सरनीमातु अल-बलादी फी अल-सबाहे	27
(18) तरनीमातु अल-उम्मे ली अल-साबे फी अल-मसाये	33
(19) अल-फार	42

फारसी

कक्षा 9

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

भाग (अ) 50 अंक

(1) व्याकरण 15 अंक

[क] संज्ञा
[ख] सर्वनाम
[ग] अव्यय
[घ] क्रिया
[ङ] व्युत्पत्ति

नोट—निर्धारित पाठों पर आधारित ।

(1) अनुवाद— 20 अंक

(क) फारसी के सरल वाक्यों का अंग्रेजी अथवा हिन्दी अथवा उर्दू में अनुवाद 10 अंक

(ख) अंग्रेजी, हिन्दी अथवा उर्दू के सरल वाक्यों का फारसी में अनुवाद 10 अंक

3—फारसी के सरल शब्दों का वाक्यों में प्रयोग 10 अंक

4—रिक्तियों की पूर्ति 5 अंक

जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं ट्राफिक रूल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे ।

भाग (ब) 50 अंक

पाठ्य-पुस्तक (गद्य तथा पद्य) 35+15=50 अंक

निर्धारित पुस्तक—Following Lession Poems from the book1 entitled;

FARSI-WA-Destoor' (KITABI-I-AW WALA Part-1 for Class IX (1977) by D. S. Zobra -i Khanlari by M/s. I Jar h-e-Adabiyyat-e-Delhi, Jayyad Press. Ballimaran, Delhi-110006.

Lessions to be studied :

1 Be-name-e. Ezid Bakhshainde.
2 Dastan-e-Khar-O-Shar (Part I)
3 Dastoor-e-Zaban-e-Farsi
7 Pisarka--Fida-Kar.
8 Mehman-Nawazi
9 Umar-Khayy m
11 Manazorsah-Nakahse-Soczan Poem)
12 Arish Kamanzir
14 Isfah n-e-Nas i Jahan, I,
15 Dostoor-e-Zahen-e-Farsi. 5 Fool Zaman.
16 Isfahan-e-Nishi-Jawahe 2
17 Karana-e-Daortar.
18 Dastoor-e-Zauban-e Farsi
20 Suz Man-e-Mut'ahid.
(Farsi Shukas
21 Dastoor-e-Z ban-e-Carsi
22 Chashma-e-Sang (Poem)

लैटिन

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

गद्य व पद्य--पाठ्य-पुस्तक	30 अंक
व्याकरण	20 अंक
अनुवाद	20 अंक
निबन्ध (आलेख)	20 अंक
अपठित	10 अंक
कुल योग ..	100 अंक

टिप्पणी--जहां तक सम्भव हो व्याकरण के प्रश्न नियत पाठ्य-पुस्तकों से पूछे जाने चाहिए ।

सरल अंग्रेजी वाक्यों और अंग्रेजी के सरल क्रमबद्ध गद्यांश के लैटिन में अनुवाद को भी निबन्ध के अन्तर्गत समझा जायेगा ।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक

(क) गद्य और पद्य की निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें ।

[1] कैसर--ले० डी० पैलिपो, कैलिको, बुक-61 ।

[2] क्लिव० बुक--21, मैकमिलन एंन्ड को० कलकत्ता ।

[3] एनीड बुक--6, लेखक--विरगिल ।

(ख) व्याकरण के लिए--गिलडरली की लैटिन ग्रामर या एलेन का लैटन ग्रामर संस्तुत की जाती है ।

(ग) निर्धारित पुस्तकें--

जूनियर लैटिन कम्पोजीशन, लेखक--जे० मैज्योसन मिलनी, प्रकाशक--हरप ऐन्ड कम्पनी ।

गणित

(कक्षा 9)

इसमें 50-50 अंकों के दो प्रश्न-पत्र होंगे । प्रत्येक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे की अवधि का होगा ।

प्रथम प्रश्न-पत्र--50 अंक

(बीजगणित, लघुगणक तथा सांख्यकी)

क--बीजगणित	30 अंक	60 कालांश
ख--लघुगणक	10 अंक	20 कालांश
ग--सांख्यकी	10 अंक	20 कालांश

विषय प्रवेश--1--भारत में गणित के विकास का संक्षिप्त इतिहास ।
2--विशिष्ट गणितज्ञों एवं उनके कार्यों का संक्षिप्त विवरण ।

क-बीजगणित--30 अंक

1--संख्या पद्धति--(1) धनपूर्ण संख्यायें, पूर्णांक, परिमेय संख्यायें, परिमेय संख्याओं के गुणधर्म/योग का क्रम विनिमेय नियम, साहचर्य नियम, योज्य तत्समक योज्य प्रतिलोम नियम, गुणा का क्रम/विनिमेय नियम, साहचर्य नियम, गुणनात्मक तत्समक, गुणनात्मक/प्रतिलोम एवं बंटन नियम ।

(2) परिमेय संख्याओं का दशमलव संख्याओं में निरूपण ।

(3) अपरिमेय संख्यायें--आवर्ती एवं अनावर्ती दशमलव के रूप में अपरिमेय संख्याओं का निरूपण ।

(4) वास्तविक संख्याएं तथा उनकी विशेषताएँ ।

(5) करणी, करणियों के नियम, करणियों की तुलना, संख्या रेखा पर करणियों को प्रदर्शित करना, करणियों का योग, व्यवकलन, गुणन एवं विभाजन, करणियों का परिमेयोकरण ।

2—समुच्चय सिद्धान्त—

समुच्चय का संकेतन, समुच्चय के अवयव, विभिन्न प्रकार के समुच्चय, परिमित तथा अपरिमित समुच्चय, रिक्त समुच्चय, सम्पूर्ण समुच्चय, पूरक समुच्चय, उप समुच्चय, समुच्चय सम्मिलन, समुच्चय प्रतिच्छेद, संख्या पद्धति से समुच्चयों के उदाहरण, वेन आरेख तथा इनका अनुप्रयोग ।

3—फलन—

(1) प्रतिचित्रण के रूप में फलन का संबोध ।

(2) अचर रैखिक फलन और कार्तीय तल (समकोणिक निर्देशांक पद्धति) में उनका रेखाचित्र (ग्राफ) ।

4—बहुपद तथा इनके गुणनखण्ड—

(1) बीजगणितीय व्यंजकों के गुणनखण्ड, द्विघात बहुपद के गुणनखण्ड करना, द्विघातीय त्रिपद व्यंजक (ax^2+bx+c, $a\neq b$) के गुणनखण्ड (मध्य पद को दो भागों में बाँटकर तथा पूर्ण वर्ग बनाकर) ।

(2) गुणनखण्ड प्रमेय शेषफल प्रमेय (उपपत्ति नहीं) तथा बहुपदों (चारघात से अधिक के नहीं) के गुणनखण्ड में इनका उपयोग ।

(3) एक चर राशि में रैखिक समीकरण का वाणिज्यिक (कामर्शियल) गणित, मेंसुरेशन आदि में अनुप्रयोग ।

[ख] लघुगणक—10 अंक

(1) लघुगणक का अर्थ, घात के लघुगणक को घात में व्यक्त करना, आधार 10 पर सामान्य लघुगणक, पूर्णांश एवं अपूर्णांश, प्रति लघुगणक का अर्थ, लघुगणकों के नियम ।

(2) लघुगणकीय सारणियों का प्रयोग कर अभिकलन—चक्रवृद्धि ब्याज, जनसंख्या वृद्धि, वस्तुओं का मूल्य ह्रास, आयत, वर्ग, त्रिभुज, समचतुर्भुज, समलम्ब चतुर्भुज, समान्तर चतुर्भुज आदि का क्षेत्रफल ज्ञात करने में लघुगणक का प्रयोग ।

[ग] सांख्यिकी—10 अंक

सांख्यिकी का महत्व एवं उपयोगिता, आंकड़ों का वर्गीकरण, बारम्बारता, बारम्बारता वंटन, सारणीयन व संचयी बारम्बारता सारणी, सांख्यकीय आंकड़ों का आलेखीय निरूपण—आयात चित्र, बारम्बारता बहुभुज संचयी बारम्बारता वक्र (तोरण) खींचना ।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(त्रिकोणमिति, ज्यामिति तथा अभिकलन)—50 अंक

(क) ज्यामिति	35 अंक	70 कालांश ।
(ख) त्रिकोणमिति	10 अंक	20 कालांश ।
(ग) अभिकलन	5 अंक	10 कालांश ।

(क) ज्यामिति—35 अंक

हाई स्कूल स्तर पर ज्यामिति शिक्षण में उपपत्तियां देने में इस बात पर विशेष बल दिया जाय कि छात्र उपपत्ति की प्रकृति एवं कार्यविधि को भलीभांति समझ लें एवं आत्मसात कर लें । ज्यामिति शिक्षण के उद्देश्यों की संप्राप्ति हेतु पढ़ाये गये सभी प्रमेयों पर आधारित अभ्यास के प्रश्न अवश्य पढ़ाये जायें तथा उनका परीक्षण किया जाय ।

1—रेखा एवं कोण—

(1) दो भिन्न रेखाओं का एक से अधिक उभयनिष्ठ बिन्दु नहीं हो सकता ।

(2) दो रेखायें, जो एक ही रेखा के समान्तर हो, परस्पर समान्तर होती है ।

(3) यदि दो रेखायें परस्पर प्रतिच्छेद करें तो शीर्षाभिमुख कोण समान होते हैं ।

(4) यदि एक तिर्यक रेखा, दो समान्तर रेखाओं को काटे तो एकान्तर अंतःकोण समान होते हैं ।

(5) यदि एक तिर्यक रेखा दो समान्तर रेखाओं को काटती है तो तिर्यक रेखा के एक ओर के अन्तःकोण सम्पूरक होते हैं ।

(6) यदि एक तिर्यक रेखा दो रेखाओं को इस प्रकार काटे कि एकान्तर अन्तःकोण युग्म के कोण बराबर हो तो वे दो रेखायें समान्तर होती हैं ।

(7) यदि एक तिर्यक रेखा दो रेखाओं को इस प्रकार प्रतिच्छेद करे कि तिर्यक रेखा के एक ही ओर के अन्तःकोणों का एक युग्म सम्पूरक हो, तो वे रेखायें समान्तर होती हैं ।

(8) त्रिभुज के तीनों कोणों का योगफल दो समकोण के बराबर होता है ।

(9) यदि एक त्रिभुज की एक भुजा बढ़ाई जाय तो इस प्रकार बना बहिष्कोण दो दूर अन्तःकोणों के योगफल के बराबर होता है ।

2--त्रिभुजों की सर्वांगसमता--

(1) त्रिभुजों की बराबर भुजाओं के सम्मुख कोण बराबर होते हैं ।

(2) यदि एक त्रिभुज के दो कोण और उनकी अन्तरित भुजा क्रमशः दूसरे त्रिभुज के दो संगत कोणों और उनकी अन्तरित भुजा के बराबर हों तो वे त्रिभुज सर्वांगसम होते हैं ।

(3) यदि एक त्रिभुज के दो कोण बराबर हों, तो उसकी सम्मुख भुजाएं भी बराबर होती हैं ।

(4) यदि एक त्रिभुज की तीनों भुजायें, दूसरे त्रिभुज की क्रमशः तीन भुजाओं के बराबर हों, तो वे दोनों त्रिभुज सर्वांगसम होते हैं ।

(5) यदि एक त्रिभुज की दोनों भुजाएं और उनका आन्तरिक कोण क्रमशः दूसरे त्रिभुज की दो भुजाएं और उनके आन्तरिक कोण के बराबर हों, तो वे त्रिभुज सर्वांगसम होते हैं ।

(6) यदि एक समकोण त्रिभुज का कर्ण और एक भुजा, दूसरे समकोण त्रिभुज के क्रमशः कर्ण और संगत भुजा के बराबर हों, तो वे समकोण त्रिभुज सर्वांगसम होते हैं ।

3--त्रिभुज में असमिका सम्बन्ध--

(1) यदि किसी त्रिभुज की दो भुजाएं बराबर न हों, तो बड़ी भुजा के सामने का कोण बड़ा होता है ।

(2) यदि किसी त्रिभुज के दो कोण असमान हों, तो बड़े कोण के सामने की भुजा बड़ी होती है ।

(3) किसी त्रिभुज की दो भुजाओं का योगफल तीसरी भुजा से बड़ा होता है ।

(4) एक दी हुई रेखा पर एक बिन्दु से जो इस रेखा पर स्थित नहीं है, डाले गये सभी रेखा खण्डों में लांबिक रेखा खण्ड सबसे छोटा होता है ।

(5) उस बिन्दु का बिन्दुपथ जो दो दिये हुये बिन्दुओं से समदूरस्थ हो, इन दो बिन्दुओं को मिलाने वाले रेखा खण्ड को लम्ब समद्विभाजक होता है ।

(6) उस बिन्दु का बिन्दुपथ जो दी हुई दो प्रतिच्छेदी रेखाओं से समदूरस्थ हो, इन रेखाओं से बने कोणों को समद्विभाजित करने वाला रेखा-युग्म होता है ।

(7) त्रिभुज के कोण समद्विभाजक एक ही बिन्दु से होकर जाते हैं ।

(8) त्रिभुज की भुजाओं के लम्ब समद्विभाजक एक ही बिन्दु से होकर जाते हैं ।

(9) त्रिभुज के तीनों शीर्ष-लम्ब पर एक ही बिन्दु से होकर जाते हैं ।

(10) त्रिभुज की माध्यिकायें एक ही बिन्दु से होकर जाती हैं और यह बिन्दु प्रत्येक माध्यिका को 2 : 1 के अनुपात में विभाजित करता है ।

4--समान्तर चतुर्भुज--

(1) समान्तर चतुर्भुज की सम्मुख भुजायें बराबर होती हैं ।

(2) समान्तर चतुर्भुज के सम्मुख कोण बराबर होते हैं ।

(3) समान्तर चतुर्भुज के विकर्ण परस्पर समद्विभाजित करते हैं ।

(4) एक चतुर्भुज समान्तर चतुर्भुज होता है यदि इसकी सम्मुख भुजाएं परस्पर बराबर हों ।

(5) एक चतुर्भुज समान्तर चतुर्भुज होता है, यदि उसके सम्मुख कोण परस्पर बराबर हों ।

(6) यदि किसी चतुर्भुज के विकर्ण परस्पर समद्विभाजित करते हों तो वह चतुर्भुज समान्तर चतुर्भुज होता है ।

(7) चतुर्भुज समान्तर चतुर्भुज होता है यदि उसकी सम्मुख भुजाओं का एक युग्म परस्पर बराबर हो समान्तर हों ।

(8) आयत के विकर्ण समान लम्बाई के होते हैं ।

(9) यदि समान्तर चतुर्भुज के विकर्ण बराबर हों तो वह एक आयत होता है ।

(10) समचतुर्भुज के विकर्ण परस्पर लम्ब होते हैं ।

(11) यदि समान्तर चतुर्भुज के विकर्ण परस्पर लम्ब हो, तो वह एक समचतुर्भुज होता है ।

(12) वर्ग के विकर्ण समान लम्बाई के और परस्पर लम्ब होते हैं ।

(13 यदि एक समान्तर चतुर्भुज के विकर्ण समान लम्बाई के और परस्पर लम्ब हों, तो वह वर्ग होगा ।

(14) त्रिभुज की दो भुजाओं के मध्य बिन्दुओं को मिलाने वाला रेखा खण्ड तीसरी भुजा के समान्तर और लम्बाई में उसका आधा होता है ।

(15) त्रिभुज की एक भुजा के मध्य बिन्दु से, एक अन्य भुजा के सामान्तर खींची गयी रेखा, तीसरी भुजा उसके मध्य बिन्दु पर प्रतिछेदित करती है ।

(16) यदि तीन या तीन से अधिक समान्तर रेखायें हों और उनके द्वारा एक तिर्यक रेखा पर बनायें गये अन्तःखण्ड बराबर हों, तो किसी अन्य तिर्यक रेखा पर उनके द्वारा बनाये गये अन्तःखण्ड भी बराबर होंगे ।

5--क्षेत्रफल--

(1) समान्तर चतुर्भुज का प्रत्येक विकर्ण इसे दो बराबर क्षेत्रफल वाले त्रिभुजों में बांटता है ।

(2) एक ही आधार पर और समान समान्तर रेखाओं के बीच के समान्तर चतुर्भुजों के क्षेत्रफल के बराबर होते हैं ।

(3) एक ही आधार और समान समान्तर रेखाओं के बीच के त्रिभुज के क्षेत्रफल बराबर होते हैं ।

(4) यदि दो त्रिभुजों के क्षेत्रफल बराबर हों और एक त्रिभुज की एक भुजा, दूसरे त्रिभुज की एक भुजा के बराबर हो तो उनके संगतशीर्ष लम्ब बराबर होते हैं ।

6--रचनायें--

(1) वृत्त के अन्तर्गत एवं परिगत समपंचभुज, समषटभुज एवं समअष्टभुज की रचना करना ।

(2) दिये हुये चतुर्भुज के क्षेत्रफल के बराबर-बराबर वाले त्रिभुज की रचना करना ।

(ख) त्रिकोणमिति--10 अंक

(1) किसी समकोण त्रिभुज में न्यून कोण A (या दूसरे कोण) का त्रिकोणमितीय अनुपात।

$$\text{Sin A}=\frac{\text{सम्मुख भुजा}}{\text{कर्ण}},\quad \text{Cos A}=\frac{\text{संलग्न भुजा}}{\text{कर्ण}},\quad \tan A=\frac{\text{Sin A}}{\text{Cos A}},\quad \text{Coree A}=\frac{1}{\text{Sin A}}$$

$$\text{Sec A}=\frac{1}{\text{Cos A}},\qquad \text{Coe A}=\frac{1}{\tan A}$$

(2) 0°, 30°, 45°, 60°, 90°, 90+0,)180+0), के त्रिकोणमितीय अनुपात ।

(3)30°, 45°, 60° के कोणों के त्रिकोणमितीय अनुपात के परिणाम ज्यामितीय उपपत्ति विधि द्वारा निकालना ।

(4) त्रिकोणमितीय अनुपातों की ऊंचाई एवं दूरी के प्रश्नों के हल में सरल अनुप्रयोग ।

(ग) अभिकलन--5 अंक

(1) कम्प्यूटरों का परिचय--कम्प्यूटर क्या है तथा वे कौन से कार्य सम्पादित कर सकते हैं और कौन से कार्य सम्पादित नहीं कर सकते हैं । आधुनिक समाज में कम्प्यूटरों की भूमिका एवं इनका प्रयोग, आदि ।

(2) समस्या--कलन विधि (Problem algesiham) का अर्थ, साधारण दैनिक समस्यायें जैसे एक वस्तु खरीदना, संख्याओं का गुणन, आदि ।

(3) साधारण प्रवाह सचित्र (Flow Chart) बनाना [निर्णय वाक्य सम्मिलित किन्तु लूप (loap) नहीं] सरल अभ्यास के प्रश्न ।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें--

(1) गणित भाग-एक (कक्षा IX के लिये)
(2) गणित भाग--दो (कक्षा IX के लिये)

प्रारम्भिक गणित

(कक्षा--9)

इस विषय में 50-50 अंकों के दो प्रश्न-पत्र होंगे । प्रत्येक प्रश्न-पत्र की अवधि तीन घन्टे होगी ।

प्रथम प्रश्न-पत्र (अंकगणित, सांख्यिकी तथा बीजगणित) 50 अंक

द्वितीय प्रश्न-पत्र (ज्यामिति तथा मेंसुरेशन)-- 50 अंक

प्रथम प्रश्न-पत्र--

(क) अंकगणित--20 अंक, 40 कालांश
(ख) सांख्यिकी--12 अंक, 25 कालांश
(ग) बीजगणित--18 अंक, 35 कालांश

प्रथम प्रश्न-पत्र--50 अंक

(क) अंकगणित--20 अंक

1--विषय प्रवेश : (1) भारत में गणित के विकास का संक्षिप्त इतिहास ।
(2) विशिष्ट भारतीय गणितज्ञों एवं उनके कार्यों का संक्षिप्त परिचय ।

2--संख्या पद्धति : (1) घनपूर्ण संख्यायें,
(2) पूर्णांक (धन तथा ऋण),
(3) परिमेय तथा अपरिमेय संख्यायें तथा उनकी मुख्य विशेषतायें, क्रम विनिमेय साहचर्य एवं बंटन नियम ।
(4) अभाज्य तथा भाज्य संख्यायें ।

3--प्रतिशतता तथा उपयोग--

(1) प्रतिशतता,
(2) लाभ और हानि
(3) बट्टा

(ख) सांख्यिकी--12 अंक

1--सांख्यिकी का महत्व तथा उपयोगिता ।
2--आंकड़ों का वर्गीकरण, बारम्बारता, बारम्बारता बंटन, सारणीयन, संचयी बारम्बारता ।
3--सांख्यिकीय आंकड़ों का आलेखीय निरूपण--दण्ड चार्ट, पाई चार्ट, आयत चित्र, बारम्बारता, बहुभुज बारम्बारता वक्र, संचयी बारम्बारता आलेख तथा चित्रीय निरूपण ।

(ग) बीजगणित--18 अंक

घातांक नियम उसके अनुप्रयोग ।

2--गुणनखण्ड--सर्वनिष्ठ तथा-समूह विधि द्वारा, दो वर्गों के अन्तर का व्यंजक, द्विघात त्रिपद व्यंजक (मध्य दो भागों में बांट कर पूर्ण वर्ग बनाकर), दो घनों के योग तथा अन्तर के व्यंजक, गुणन खण्ड प्रमेय (उपपत्ति नहीं) तीन घात का हो, शेषफल प्रमेय (उपपत्ति नहीं) द्वारा, गुणन खण्ड ।

द्वितीय प्रश्न-पत्र--50 अंक

(क) ज्यामिति--30 अंक, 60 कालांश
(ख) मेन्शुरेशन--20 अंक, 40 कालांश

(क) ज्यामिति--30 अंक

1--विषय प्रवेश--ज्यामिति के विकास का संक्षिप्त इतिहास तथा इसमें पाइथा गोरस (580-500 ई० पू०) (यूक्लिड 320 ई० पू०) तथा विशिष्ट भारतीय गणितज्ञों का योगदान, अभिग्रहीतियाँ तथा मूल संकल्पनायें ।

2—त्रिभुज सम्बन्धी प्रमेय—

(1) पाइथागोरस प्रमेय तथा इसका विस्तार—त्रिभुज की एक भुजा पर बना वर्ग शेष दो भुजाओं पर बने वर्गों के योगफल से बड़ा, बराबर या छोटा होगा, यदि दोनों भुजाओं के बीच के कोण क्रमशः अधिक कोण, समकोण या न्यूनकोण हो। असमानता की दशा में अन्तर उन आयक का दुगुना होता है, जो दोनों में से एक भुजा और उस पर दूसरी भुजा के प्रक्षेप से बना है। पाइथागोरस संख्यायें (3, 4, 5) (5, 12,13), (7, 24, 25) इत्यादि का ज्ञान।

(2) आपोलोनियस का प्रमेय—किसी त्रिभुज में दो भुजाओं पर बने वर्गों का योगफल तीसरी भुजा के आधे पर बने वर्ग तथा उसको समद्विभाजित करने वाली माध्यिका पर बने वर्ग के योगफल के दुगुने के बराबर होता है।

3—बिन्दुपथ—

परिभाषा—सरल बिन्दुपथों के उदाहरण, सममितता के आधार पर निम्नलिखित बिन्दुपथों का बोध कराया जाय—

(1) दो स्थिर बिन्दुओं से समदूरस्थ बिन्दु का पथ उन दो बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा का लम्ब समद्विभाजक होता है।

(2) दो परस्पर प्रतिच्छेदी रेखाओं से समदूरस्थ बिन्दु का पथ उन रेखाओं से बने कोणों के समद्विभाजक होते हैं।

4—वृत्त सम्बन्धी प्रमेय—

(1) वृत्त के केन्द्र को किसी जीवा के मध्य बिन्दु से मिलाने वाली रेखा जीवा पर लम्ब होती है तथा इसका विलोम।

(2) उन तीन बिन्दुओं से होकर जो एक ही सरल रेखा में न हो, एक और केवल एक ही वृत्त खींचा जा सकता है।

(3) बराबर वृत्तों (या एक ही वृत्त) में यदि केन्द्रों (केन्द्र) पर दो चाप बराबर कोण अन्तरित करते हों तो वे आपस में बराबर होते हैं तथा इसका विलोम।

(4) बराबर वृत्तों (या एक ही वृत्त) में यदि दो जीवायें बराबर हों तो वे बराबर चाप काटती हैं तथा इस प्रमेय का विलोम।

(5) वृत्त की बराबर जीवायें वृत्त के केन्द्र से बराबर दूरी पर होती हैं तथा इस प्रमेय का विलोम।

5—रचना—

(1) त्रिभुजों व चतुर्भुजों की रचना।

(2) त्रिभुज व चतुर्भुज व पंचभुज के बराबर क्षेत्रफल वाले त्रिभुजों की रचना, क्षेत्रफल में आकृति बराबर वर्ग की रचना।

(ख) मेंसुरेशन— 20 अंक

(1) त्रिभुज, आयत, वर्ग, समलम्ब, समान्तर एवं समचतुर्भुज के परिमाप तथा क्षेत्रफल।

(2) वृत्त की परिधि एवं क्षेत्रफल।

(3) घन और घनाभ का सम्पूर्ण पृष्ठ, विकर्ण तथा आयतन ज्ञात करना।

निर्धारित पाठ्य पुस्तक—

(1) प्रारम्भिक गणित भाग—एक (कक्षा IX के लिए)

(2) प्रारम्भिक गणित भाग—दो (कक्षा IX के लिये)।

गृह विज्ञान

(कक्षा–9)

[केवल बालिकाओं के लिये]

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

एक प्रश्न-पत्र—100 अंक—

1—गृह प्रबन्ध— 20 अंक

(1) गृह विज्ञान के तत्व और क्षेत्र।

(2) व्यवस्था की परिभाषा, गृह और परिवार के सम्बन्ध में।

(3) कार्य व्यवस्था, प्रभाव डालने वाले कारक, साधन पारिवारिक आय, परिवार कल्याण, परिवार के सदस्यों की संख्या और उनका व्यवहार एवं अभिरुचि ।

(4) अर्थ व्यवस्था--परिवार की मूलभूत आवश्यकतायें ।

2--स्वास्थ्य रक्षा-- 20 अंक

(1) स्वास्थ्य की परिभाषा, व्यक्तिगत स्वास्थ्य की देख-रेख और रक्षा ।

(2) स्थानीय स्वास्थ्य संस्थाओं का प्रशासन और सेवायें, उनसे सहायता प्राप्त करना ।

(3) वायु-शुद्ध वायु का महत्व तथा संचालन, पर्यावरण एवं प्रदूषण का जन जीवन पर प्रभाव ।

(4) अशुद्ध वायु से होने वाले रोग ।

3--वस्त्र और सूत विज्ञान-- 20 अंक

(1) कपड़ों के तन्तु, कपड़ों के प्रकार, जीवन में उनका प्रयोग ।

(2) व्यक्तिगत सज्जा-उचित वेशभूषा (मौसम और अवसर के अनुकूल), व्यक्तिगत वेशभूषा ।

4--जीवन तथा पोषण विज्ञान-- 20 अंक

(1) भोजन का पाचन और सम्बन्धित शरीर क्रिया विज्ञान ।

(2) निम्नलिखित खाद्य पदार्थों का संगठन, वर्गीकरण, उनके कार्य, अनाज, दालों और मेवे, सब्जी और फल, दूध और दूध से बने पदार्थ, वसा और तेल, मांस, मछली, अण्डे ।

(3) संतुलित आहार ।

5--प्राथमिक चिकित्सा और गृह परिचर्या-- 20 अंक

(1) प्राथमिक चिकित्सा के मुख्य सिद्धान्त ।

(2) सामान्य घरेलू दुर्घटनायें और उनसे बचाव ।

(3) सामान्य घरेलू देशज औषधियां ।

(4) तिकोनी एवं लम्बी पट्टियां और उनका प्रयोग ।

(5) गृह परिचर्या की परिभाषा--परिचारिका के गुण ।

(6) रोगी का कमरा--चुनाव तैयारी सफाई और प्रकाश का प्रबन्ध ।

(7) बिस्तर, बिस्तर लगाना, चादर बदलना ।

गृह विज्ञान (प्रयोगात्मक)

नोट--प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन आन्तरिक होगा ।

खंड (क) (वस्त्र और सूत विज्ञान)

1--कपड़ों के पांच विभिन्न प्रकार के नमूनों की पहचान एवं संग्रह ।

2--किन्हीं छः विभिन्न फैंसी टांकों से किसी एक वस्तु की कढ़ाई करना ।

3--बची खुची एवं निष्प्रयोज्य सामग्री द्वारा सजावट की कोई एक वस्तु तैयार करना ।

खंड (ख) (भोजन तथा पोषण विज्ञान)

1--पाचन अंगों का चित्रांकन ।

2--प्रत्येक खाद्य तत्वों का संकलन चार्ट द्वारा ।

3--छात्रा (किशोरी) के एक दिन के संतुलित आहार की तालिका बनाना चार्ट द्वारा ।

खंड (ग) (प्राथमिक चिकित्सा और गृह परिचर्या)

1--तिकोनी पट्टी का प्रयोग (सिर, हथेली, कोहनी, एड़ी एवं घुटने की पट्टी) खपच्चियों का प्रयोग ।

2--बिस्तर लगाना और चादर बदलना ।

पठय पुस्तकें--

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है । विद्यालयों के प्रधान विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

विज्ञान

(कक्षा-9)

विज्ञान विषय में तीन प्रश्न-पत्र होंगे ।

प्रथम प्रश्न-पत्र (भौतिक विज्ञान) 35 अंक

द्वितीय प्रश्न-पत्र (रसायन विज्ञान) 30 अंक

तथा तृतीय प्रश्न-पत्र (जीव विज्ञान) 35 अंक का होगा । प्रत्येक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

प्रथम-प्रश्न-पत्र 35 अंक

(भौतिक विज्ञान)

(क) मापन--

मूल मात्रक, मूल राशियां, मूल मात्रकों की एस0 आई0 प्रणाली, मानक मीटर मानक किलोग्राम, मानक सेकण्ड, माइक्रान, आंगस्ट्रान तथा प्रकाश वर्ष, व्युत्पन्न मात्रक, सार्थक अंक, कोटिमान ।

(ख) गति एवं बल--

गति की सापेक्षता, विस्थापन, समान तथा असमान गति, चाल और वेग, त्वरण, गति के समीकरण एवं सरल आंकिक प्रश्न, बल का अर्थ, पिण्ड का जड़त्व संतुलित एवं असंतुलित बल और त्वरण, न्यूटन के गति के नियम, संवेग और बल के साथ सम्बन्ध और वस्तु का द्रव्यमान उपर्युक्त के आधार पर सरल आंकिक प्रश्न, क्रिया और प्रतिक्रिया बल सदैव युग्म के रूप में विद्यमान रहते हैं । न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के नियम, गुरुत्वाकर्षण जनित त्वरण, सरल लोलक और प्रत्यानयन बल, उसके आवर्त काल एवं लम्बाई से सम्बन्ध लेखाचित्रीय निरूपण ।

(ग) ऊष्मा--

ब्राउनियन गति, अणुगति सिद्धान्त, ऊष्मीय प्रसार, ठोसों का ऊष्मीय प्रसार, महत्व, ताप का अभिधारणा, ताप मापन, पारे का तापमापी, ताप के पैमाने, ऊष्मा का संचरण, ऊष्मा के सुचालक तथा कुचालक एवं तथ्यात्मक अध्ययन, ऊष्मा चालन के व्यावहारिक उदाहरण, ऊष्मा संवहन, ऊष्मीय विकिरण और प्रकाश, प्रकाश ऊष्मीय विकिरण के गुण, उत्सर्जन, अवशोषण विकिरण, ऊर्जा का दैनिक जीवन में महत्व, ऊष्मा के मात्रक, विशिष्ट ऊष्मा तथा ऊष्मा धारिता एवं इस पर सरल आंकिक प्रश्न, ऊष्मा का मापन, अवस्था परिवर्तन, आर्द्रता एवं उससे सम्बन्धित घटनायें ।

(घ) प्रकाश--

गोलीय दर्पण एवं लेन्स द्वारा प्रतिबिम्ब का बनाना, गोलीय दर्पण के लिए सूत्र $\frac{1}{f} = \frac{1}{v} + \frac{1}{u}$ का निगमन तथा लेन्स के लिए सूत्र $\frac{1}{f} = \frac{1}{v} - \frac{1}{u}$ का निगमन, दूरी सम्बन्धी चिन्हों का नियम । सरल आंकिक प्रश्न ।

(ङ) विद्युत--

ऊर्जा के स्रोत, चालक, प्रतिरोधक, धारा का मापन, विभवान्तर, प्रतिरोध, प्रतिरोधों का श्रेणीक्रम तथा समान्तर क्रम में संयोजन के सूत्र का निगमन तथा इनमें सम्बन्ध पर आधारित सरल आंकिक प्रश्न ।

(च) विज्ञान, शिल्प विज्ञान और मानव--

शिल्प विज्ञान तथा जीवन परिवर्तन प्रौद्योगिकी तथा विज्ञान की अन्योन्याश्रिता, शिल्प विज्ञान का विकास एवं उपयोग, नयी प्रौद्योगिकी, नयी आवश्यकताएं ।

द्वितीय प्रश्न-पत्र--30 अंक

(रसायन विज्ञान)

(क) रसायन विज्ञान की परिभाषा तथा वर्गीकरण ।

(ख) द्रव्य--प्रकृति और व्यवहार, पदार्थ के प्रकार, तत्व एवं उनका वर्गीकरण (धातु अधातु), यौगिक और मिश्रण, पदार्थ की संरचना, परमाणु सिद्धान्त, अणु और परमाणु ।

(ग) परमाणु संरचना, इलेक्ट्रोन, प्रोटोन, न्युट्रान, नाभिक की संरचना, परमाणु संख्या और द्रव्यमान संख्या । बोरबरी का नियम, आफबाऊ का नियम, शेल सबशेल, कक्षक का ज्ञान (परमाणु क्रमांक 1 से 30 तक तत्व के नाम एवं संरचना ।

(घ) रेडियो धर्मिता की परिभाषा, एल्फा, बीटा, गामा किरणों के गुणधर्म ।

(ङ) रसायन की भाषा--प्रतीक, संयोजकता, सूत्र एवं समीकरण, रसायनिक समीकरण का सन्तुलन करना ।

(च) रसायनिक अभिक्रियायें--भौतिक तथा रसायनिक परिवर्तन उनके भेद, योगात्मक प्रतिस्थापन, उष्मीय वियोजन, उष्मीय अपघटन अभिक्रिया उदासीनीकरण, मन्द तथा तीव्र अभिक्रियायें, उष्माक्षेपी और उष्मा शोषी अभिक्रियायें ।

(छ) उत्प्रेरक एवं उत्प्रेरण--परिभाषा, प्रकार एवं उपयोग ।

(ज) संयोजकता का इलेक्ट्रानिक सिद्धांत । विद्युत् संयोजकता, सह संयोजकता (ध्रुवीय छोड़कर) एवं उप सह संयोजकता का अध्ययन और योगिकों का इलेक्ट्रानिक सूत्र ।

(झ) रसायन संयोग के नियम व आंकिक प्रश्न ।

(ट) तुल्यांकीभार, परमाणुभार तथा अणुभार की परिभाषा ज्ञात करने की विधियां । सम्बन्धित आंकिक प्रश्न ।

तृतीय प्रश्न-पत्र--35 अंक

(जीव विज्ञान)

(क) जीवन पद्धति--

वास स्थान सूक्ष्मावास, परस्पर निर्भरता भूमि, पानी तथा हवा वास स्थान के रूप में (पक्षी का जीवन) ।

(ख) अनुकूलन--

आवश्यकता, जलीय, स्थलीय वास स्थान तथा अनुकूलन से होता है । मनुष्य अपने वास स्थान को अपने अनुकूल बनाता है ।

(ग) सजीव जगत में संगठन--

संगठन के स्तर, संगठन के सामान्य आधार, कोशिका संरचना, कोशिका विभाजन, विनियम का महत्व ।

(घ) जैव प्रक्रियाएं--

पोषण, प्रकाश संश्लेषण, स्वयं पोषी, विभिन्न पोषी श्वसन, परिवहन, उत्सर्जन, जनन वृद्धि एवं विभेदीकरण नियंत्रण एवं समन्वय ।

(ङ) मानव--

मानव शरीर की रचना, मनुष्य वातावरण का समायोजन करता है । मनुष्य का विकास ।

(च) खाद्य सम्पदा का प्रबन्धन

(छ) प्राणियों और वनस्पतियों का आर्थिक महत्व

प्रयोगात्मक

[प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आंतरिक होगा]

भौतिक विज्ञान--

1--दूरी समय दिये हुए आंकड़ों से रेखाचित्र खींचना और इससे चाल की गणना करना ।

2--वेग समय में दिए हुए आंकड़ों में रेखाचित्र खींचकर त्वरण की गणना करना ।

3--निदर्शन करना--

(1) समान और विपरीत बल ।

(2) एक भार को उठाने में किया गया कार्य ।

(3) गतिमान पिन्ड द्वारा किया गया कार्य ।

(4) दबे हुए स्प्रिंग द्वारा किया गया कार्य ।

4--तरंग प्रवाह का निदर्सन निम्न द्वारा करना--

(1) तनी रस्सी ।

(2) जल के तल ।

(3) स्लिंकी द्वारा ।

5--परावर्तन के नियम का सत्यापन करना ।

6--आवर्तन के नियम का सत्यापन करना ।

7--पिन होल कैमरा की रचना और प्रतिबिम्ब बनाने का स्पष्टीकरण करना ।

8--रंग विभेद परीक्षण द्वारा वर्णान्धता का अध्ययन करना ।

9--सुस्पष्ट दर्शन की दूरी ज्ञात करना ।

10--सूक्ष्मदर्शी एवं दूरदर्शी का साधारण कार्यकारी निदर्श की रचना ।

रसायन विज्ञान--

(i) निम्नलिखित के आधार पर अकार्बनिक तथा कार्बनिक यौगिक की पहचान--
(क) घुलनशीलता, (ख) विद्युत् चालकता, (ग) द्रवणांक, (घ) क्वथनांक ।

(ii) भौतिक व रासायनिक परिवर्तन का अध्ययन ।

(iii) कुछ रासायनिक परिवर्तन के समय, ताप परिवर्तन का मापन तथा उष्माक्षेपी एवं उष्माशोषी क्रिया में वर्गीकरण ।

(iv) रासायनिक तुला का अध्ययन एवं प्रयोग ।

(v) प्रयोगात्मक कार्य के उपयोग में आने वाले सामान्य उपकरणों का ज्ञान ।

जीव विज्ञान--

1--तालाब के जल का अध्ययन कराना ।

2--पर्यावरण के माध्यम से सजीव, निर्जीव और अजीव में भेद स्पष्ट करना ।

3--माडल, चार्ट द्वारा वाइरस के महत्व को बताना ।

4--पर्यावरण एवं चार्ट, माडल के सहयोग से कोशिका का ज्ञान कराना ।

5--स्थानीय पक्षियों का अध्ययन कराना ।

6--प्रकाश, संश्लेषण में O_2 बाहर निकलती है का प्रदर्शन ।

7--श्वसन में उष्मा उत्पन्न होती है, का प्रदर्शन ।

8--पारिस्थितिक परितन्त्र के प्रारम्भिक ज्ञान के लिए विद्यालय के आस-पास के वातावरण में पौधे और जन्तुओं के पारस्परिक निर्भरता का बोध कराना ।

9--माडल, चार्ट द्वारा परितंत्रों के घटकों का ज्ञान कराना ।

10--पादप संरक्षण से होने वाले लाभ का ज्ञान कराना ।

पाठ्य-पुस्तकें--

(1) विज्ञान भाग-एक (कक्षा-9 के लिए)

(2) विज्ञान भाग-दो (कक्षा-9 के लिए)

(3) विज्ञान भाग-तीन (कक्षा-9 के लिए)

सामाजिक विज्ञान

(कक्षा-9)

अध्ययन का उद्देश्य--

1--समाज के विकास, उसके आधारभूत कारकों, विस्तार तथा विविधता की जानकारी प्राप्त करना तथा उसके भावी रूप के बारे में निष्कर्ष निकालना ।

2--प्राकृतिक पर्यावरण तथा मानव के मध्य अन्तः क्रिया को भारत तथा विश्व के सन्दर्भ में सामाजिक विकास पर पड़ने वाले उसके प्रभाव को समझना तथा उसके बारे में निष्कर्ष निकालना ।

3--सामाजिक विकास में विभिन्न व्यवस्थाओं, नागरिक, प्रशासनिक तथा आर्थिक आदि के योगदान को समझना तथा उसकी समीक्षा करना।

4--सामाजिक विकास की परम्पराओं तथा प्रक्रियाओं, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, तकनीकी आदि के इतिहास का परिचय प्राप्त करना तथा भविष्य को दृष्टि में रखकर उसका मूल्यांकन करना।

5--विश्व का एकात्मक समाज की ओर अग्रसर होने वाला स्वरूप तथा इसमें भारत के योगदान को समझना।

6--समाज की समसामयिक समस्याओं के बारे में जानकारी करके निर्णय लेने की योग्यता प्राप्त करना।

7--समाज में अपने अधिकार तथा कर्तव्यों को तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों को समझकर उन पर अमल करना।

8--सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित विभिन्न कौशलों को विकसित करना तथा उनमें दक्षता प्राप्त करना, जैसे--मानचित्र की जानकारी, आंकड़ों का विश्लेषण करना, निष्कर्ष निकालना तथा आलेखों द्वारा प्रदर्शित करना जैसे ग्राफ, चार्ट आदि।

उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम आगे प्रस्तावित है। इसे निम्नवत् चार प्रमुख अनुभागों में विभक्त किया गया है--

		अंक अधिभार
अनुभाग (1)	ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत (इतिहास)	30
अनुभाग (2)	सामाजिक तथा नागरिक जीवन (नागरिक शास्त्र)	20
अनुभाग (3)	पर्यावरणीय स्वरूप एवं मानव विकास (भूगोल)	30
अनुभाग (4)	आर्थिक विकास एवं जन-जीवन (अर्थशास्त्र)	20

सामाजिक विज्ञान विषय में तीन घंटे के 50-50 अंकों के दो प्रश्न-पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्न-पत्र में विस्तृत उत्तरीय, लघु उत्तरीय, अति लघु उत्तरीय एवं बहु विकल्पीय प्रश्नों द्वारा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का समावेश होगा। अतएव सम्पूर्ण प्रकरण (इकाई) का सम्यक अध्ययन आवश्यक है।

प्रत्येक प्रश्न-पत्र में मानचित्र भरने के लिये कम से कम एक प्रश्न होगा। इसके अतिरिक्त प्रश्न-पत्र में ग्राफ आरेख तथा आंकड़ों के विश्लेषण से सम्बन्धित प्रश्न भी पूछे जायेंगे। दृष्टिहीन छात्रों के लिए मानचित्र में स्थानों/क्षेत्रों के अंकन के स्थान पर स्थानों/क्षेत्रों से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जायेंगे जिनका उत्तर उन्हें उत्तर-पुस्तिका में देना होगा। पाठ्यक्रम की प्रमुख इकाइयां तथा उनसे सम्बन्धित शिक्षण बलों तथा मूल्यांकन बलों की योजना निम्नवत् होगी :

प्रथम प्रश्न-पत्र--पूर्णांक 50

अनुभाग 1--ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत (इतिहास) 30 अंक

अध्ययन के उद्देश्य--

मानव विकास और उसकी उपलब्धियों तथा विफलताओं को सजीव एवं प्रेरणादायक रूप में प्रस्तुत किया जाय। समाज के समाजवादी स्वरूप की स्थापना पर बल देना अपेक्षित है।

इतिहास द्वारा वर्तमान को समझने के लिए अतीत का पर्याप्त ज्ञान प्रदान किया जाये। उसे समसामयिक जीवन एवं समस्याओं के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पक्षों को समझने के लिये पर्याप्त पृष्ठ भौतिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु सक्षम होना चाहिये।

विषय के शिक्षण में यथासम्भव राष्ट्रीय इतिहास की सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रवृत्तियों पर बल दिया जाये। इसे छात्रों में देश भक्ति की सच्ची भावना विकसित करने में सहायक होनी चाहिये जिनमें निम्नांकित का समावेश हो--

(क) अतीत एवं वर्तमान दोनों को समष्टि रूप में देश की सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों की प्रशंसात्मक अनुभूति

(ख) अपनी दुर्बलताओं को स्पष्ट रूप में समझाने, उनका सामना करने तथा निराकरण हेतु कार्य करने की तत्परता । यह तथ्य छात्रों को विशेष रूप से बताये जायें कि केन्द्रीय शक्ति के दुर्बल होने से ही देश में विदेशी आक्रमण सफल हुये ।

(ग) भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता की दिशा में सचेष्ट प्रयास ।

(घ) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के सवर्द्धन की आवश्यकता का अनुभव ।

मानचित्र विषयक प्रश्न भी पूछा जायेगा । जिसके लिए मानचित्र दिया जायेगा जिसमें तथ्यों को शुद्ध रूप में अंकित करने पर बल दिया जायेगा । विद्यार्थियों के विशेष अध्ययन के लिए किसी शीर्षक पर ऐतिहासिक तथ्यों के सम्बन्धित प्रोजेक्ट कार्य दिया जायेगा :

पाठ्यक्रम का इकाई के अनुसार अंक भार निम्नवत् होगा—

इकाई	अंक भार
1—प्रागैतिहासिक काल	05
2—प्राचीन लौह युगीन सभ्यतायें	06
3—मध्य कालीन विश्व	05
4—आधुनिक युग का आरम्भ	04
5—यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति	05
6—मानचित्र	05
	30 अंक

पाठ्यक्रम

इकाई 1—प्रागैतिहासिक काल—

(क) काल्य युग—

नगरों का उदय, सामाजिक स्थिति, भाषाओं तथा कलाओं के विकास की मुख्य विशेषतायें ।

(ख) काल्य युग की सभ्यताएं—

भारत, मेसोपोटामिया, मिस्र, चीन सभ्यताओं की विशेषताओं का संक्षिप्त उल्लेख एवं भारत की सभ्यता का विस्तृत उल्लेख ।

इकाई 2—प्राचीन लौह युगीन सभ्यताएं—

(क) भारत में लौह युग का आरम्भ—

राजनैतिक घटनाक्रम, बाहरी जातियों का आगमन और प्रसार तथा भारतीय संस्कृत से सम्बन्ध एवं पारस्परिक समन्वय, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था । समकालीन धर्म, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में उपलब्धियां ।

(ख) यहूदी एवं ईसाई धर्म का संक्षिप्त परिचय ।

इकाई 3—मध्य कालीन विश्व—

(क) यूरोप—राजनैतिक घटनाक्रम का संक्षिप्त विवरण, सामंतवाद एवं चर्च की भूमिका ।

(ख) इस्लाम का उदय एव प्रसार (भारत में आगमन के विशेष सन्दर्भ में) ।

(ग) समकालीन भारत का सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास ।

इकाई 4—आधुनिक युग का आरम्भ—

(क) पुनर्जागरण का परिचय, कारण एवं परिणाम ।

(ख) नये स्थानों की खोज यात्रायें ।

इकाई 5--यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति--

(क) कारण एवं प्रभाव (विशेष रूप से वाणिज्य एवं कृषि क्षेत्र में प्रभाव)।

(ख) उपनिवेश स्थापित किये जाने के लिए स्पर्धा एवं संघर्ष ।

(ग) भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना ।

इकाई 6--मानचित्र--

भारतीय ऐतिहासिक स्थानों (राज्य, साम्राज्य क्षेत्र सहित) का अंकन ।

7--प्रोजेक्ट कार्य--

स्वचिन्तन, स्वअधिगम तथा आत्माभिव्यक्ति को विकसित करने के लिए प्रत्येक छात्र को निर्धारित प्रोजेक्ट कार्य अनिवार्य रूप से करना होगा । अपेक्षा की जाती है कि विषय अध्यापक छात्रों से प्रोजेक्ट कार्य करायेगा । उनका आन्तरिक मूल्यांकन और निर्देशन करते हुए छात्रों के अधिगम को सुदृढ़ करेगा ।

निम्नलिखित में से कोई दो प्रोजेक्ट--

(1) प्रागैतिहासिक--

(क) मानव के जीवन और उद्गम का विकास ।

(ख) खाद्य पदार्थों की संरक्षण व्यवस्था ।

(ग) खाद्य उत्पादन की अवस्था ।

(घ) धातु की खोज और प्रयोग ।

(ङ) प्रागैतिहास के बारे में हम किस प्रकार जानते हैं ।

(2) भारत की सांस्कृतिक विरासत--

(क) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि;

(ख) कला और वास्तुकला;

(ग) भाषा और साहित्य;

(घ) विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास ।

(ङ) शिक्षा तथा दर्शनशास्त्र ।

(च) धर्म और धार्मिक सुधार आन्दोलन ।

विद्यार्थियों को अन्य उपलब्ध सन्दर्भ सामग्री के अलावा संदर्भ और मार्ग-दर्शन के लिए कक्षा 10 की पाठ्य-पुस्तक रखने की सलाह दी जाती है ।

अपेक्षित प्रोजेक्ट कार्य के लिए मार्ग-दर्शन किये जाने वाले कार्य-कलाप--

(क) किसी भी पुस्तकालय, संग्रहालय में उपलब्ध सम्बन्धित पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि से आधार सामग्री (डाटा) एकत्र करना ।

(ख) निर्देशनों को एकत्र करना--उपलब्ध सामग्री से या स्वयं तैयार किये गये हों ।

(ग) एलबम, चार्ट तैयार करना, सर्वेक्षण करना आदि ।

(घ) संगत विषय के सम्बन्ध में माडल तैयार करना, उदाहरण के लिए सांची स्तूप, चोल मन्दिर, कुतुबमीनार, हुमायूं का मकबरा, स्वर्ण मन्दिर और लाल किला आदि ।

(ङ) प्रोजेक्ट को सामूहिक रूप से या व्यक्तिगत रूप से किया जा सकता है ।

(च) सिक्कों, हस्तलिपियों को एकत्र करना और इतिहास की सम्बद्ध अवधि के साथ उनकी प्रासंगिकता का पता लगाना ।

(छ) धार्मिक गुरुओं सम्बन्धी प्रोजेक्ट में सन्तों के जीवन और उनका जीवन वृत्तियों, उनके चित्रों, उनकी मुख्य शिक्षाओं और उनकी हमारे जीवन में सार्थकता के बारे में उल्लेख शामिल होना चाहिये ।

(ज) भाषा सम्बन्धी प्रोजेक्ट में अधिकांश भाषाओं में आमतौर पर प्रयोग में लाये जाने वाले समान शब्दों की सूची शामिल होनी चाहिये, कुछेक प्राचीन भाषाओं से आधुनिक भाषाएं किस प्रकार विकसित हुई हैं, इसका उल्लेख होना चाहिए ।

(झ) प्रागैतिहास के सम्बन्ध में एक व्यापक प्रोजेक्ट पाठ्य विवरण में दी गई बातों पर प्रकाश डालते हुये तैयार किये जायेंगे, यह विभिन्न भागों में विभाजित चार्टों या एलबम के रूप में होंगे ।

(ञ) विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास सम्बन्धी प्रोजेक्ट में पूर्व में हुये वैज्ञानिकों, गणितज्ञों के जीवन, उनके योगदान और उनकी विलक्षण विशेषताओं को शामिल किया जा सकता है ।

अनुभाग 2--सामाजिक एवं नागरिक जीवन (नागरिक शास्त्र)--(20 अंक)

अध्ययन का उद्देश्य--

(1) विद्यार्थियों के सामूहिक क्रिया-कलापों में प्रभावपरक समझदारी की प्रवृत्ति का विकास ।

(2) नागरिक और सामाजिक संस्थानों की संरचना के स्वरूप और कार्य पद्धति के सम्बन्ध में प्रबुद्ध जागरूकता और जानकारी का विकास करना ।

(3) देश में हो रहे विविध सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों और उनसे देश पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति जागरूकता और आलोचनात्मक अवबोधन का विकास करना ।

(4) भारतीय संस्कृति में अन्तर्स्थ विविधता में एकता को दृष्टि पथ में रखते हुये देश के सभी क्षेत्रों और वर्गों के लोगों की जीवन शैली के प्रति समादर की भावना और राष्ट्रीय चेतना का विकास ।

(5) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सद्भावना के विकास में भारत के योगदान को अवगत कराना ।

पाठ्यक्रम की इकाई के अनुसार अंकभार निम्नवत होगा--

इकाई	अंकभार
1--मनुष्य एक नागरिक के रूप में	05
2--स्थानीय स्तर पर शासन	05
3--भारतीय संविधान	06
4--हमारे नागरिक एवं सामाजिक जीवन की चुनौतियां	04
	20 अंक

पाठ्यक्रम

इकाई 1--मनुष्य एक नागरिक के रूप में--

(क) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी के रूप में, समाज की आवश्यकतायें और पारस्परिक निर्भरता ।
(ख) व्यक्ति परिवार और समुदाय, पड़ोस, प्रदेश, देश, विश्व ।
(ग) राज्य--उसके कार्य, नागरिक एवं नागरिकता ।
(घ) सरकार--सरकार का स्वरूप एवं कार्य ।

इकाई 2--स्थानीय स्तर पर शासन--

(1) पंचायती राज व्यवस्था ।
(2) नगर निकाय ।
(3) जिला स्तरीय प्रशासन ।

इकाई 3--भारतीय संविधान--

(क) भारतीय संविधान की विशेषतायें ।
(ख) नीति निर्देशक तत्वों का ज्ञान ।
(ग) मौलिक अधिकारों का परिचय ।
(घ) मौलिक कर्त्तव्य ।

इकाई 4--हमारे नागरिक एवं सामाजिक जीवन की चुनौतियां--

(क) बढ़ती जनसंख्या, बेरोजगारी, निरक्षरता, पर्यावरण ।
(ख) साम्प्रदायिकता ।
(ग) जातिवाद एवं क्षेत्रवाद ।
(घ) निर्बल वर्गों की स्थिति एवं उत्थान के प्रयास ।
(च) महिला विकास की योजनायें ।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

पूर्णांक—50

अनुभाग-3—पर्यावर्णीय स्वरूप एवं मानव विकास (भूगोल)— 30 अंक

अध्ययन का उद्देश्य—

(1) प्राकृतिक पर्यावरण तथा मानव कार्य-कलापों का अन्तः क्रिया से जनित परिस्थितियों की भौगोलिक जानकारी प्राप्त करना ।

(2) भौगोलिक अध्ययन से सम्बन्धित सूचना एकत्र करना, विश्लेषण ,करना तथा निष्कर्ष निकालने में सहायक कौशलों का विकास तथा निपुणता प्राप्त करना ।

(3) विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में संसाधनों तथा उसके उपयोग की जानकारी प्राप्त करना तथा भविष्य के बारे में निष्कर्ष निकालना ।

(4) विभिन्न संस्थानों तथा प्रादेशिक क्षेत्रों के वर्तमान विकास का अवलोकन करना तथा भविष्य में उनके इष्टतम् विभाग की संकल्पना करने का प्रयास करना ।

(5) विभिन्न भौगोलिक घटकों से उभरी भारतीय समस्याओं का अध्ययन करना, उनका विश्लेषण करना तथा विकास पर पड़ने वाले प्रभावों को समझना ।

पाठ्यक्रम का इकाई के अनुसार अंकभार निम्नवत् होगा :

इकाई	अंक भार
1—भूगोल के उपकरण और उसका उपयोग	05
2—प्राकृतिक पर्यावरण	07
3—प्राकृतिक संसाधन और उनका उपयोग	07
4—मानव का पर्यावरण के साथ पारस्परिक प्रभाव	06
5—मानचित्र कार्य	05
	30 अंक

पाठ्यक्रम

इकाई 1—भूगोल के उपकरण और उपयोग—

(क) मानचित्र बनाने और मानचित्र अध्ययन करने के अवयव ।

(ख) भूगोल अध्ययन में ग्लोब, मानचित्रों और एटलसों का उपयोग ।

इकाई 2—प्राकृतिक पर्यावरण—

(क) पर्यावरण -वायु मण्डल, स्थल मण्डल, जल मण्डल, जैव मण्डल पर्यावरण की सम्पूर्णता ।

(ख) वायु मण्डल—सूर्यताप ताप कटिबन्ध, ऋतु चक्र, वाष्पीकरण, संघनन, वर्षण, वर्षण के प्रकार, वर्षा का वितरण, मौसम और जलवायु को निर्धारित करने वाले कारक, जलवायु और मनुष्य ।

(ग) स्थल मण्डल—धरती का बदलता स्वरूप, वाह्य प्रक्रियायें-अपक्षय, तल संतुलन के कारण (बहता जल), नदियां, भूमिगत जल, हिमानियां, पटने से समुद्री लहरें, आन्तरिक प्रक्रियायें, पृथ्वी की हलचलें, ज्वालामुखी और भूकम्प ।

(घ) जल मण्डल—महासागरीय अधःस्थल का उच्चावचन ।

(ङ) जैव मण्डल ।

इकाई 3—प्राकृतिक संसाधन और उनका उपयोग—

(क) संसाधन और उनका वर्गीकरण, अपूर्ति संसाधन, संभाव्य और विकसित संसाधन ।

(ख) संसाधनों का वितरण और उनका उपयोग, भूमि, मृदा, वन, मत्स्य, शक्ति संसाधन (खनिज ईंधन) और संसाधनों का संरक्षण ।

इकाई 4—मानव के पर्यावरण के साथ पारस्परिक प्रभाव—

(क) मानव जनसंख्या—वितरण, जनसंख्या की वृद्धि, जनसंख्या व घनत्व, मनुष्य तथा पारिस्थितिक तंत्र और खाद्य आपूर्ति ।

(ख) मानव व्यवसायों का विश्व प्रतिमान--प्राथमिक व्यवसाय-खाद्य पदार्थ संग्रहण, आखेट मत्स्य ग्रहण पशुपालन और खनन, गौण व्यवसाय उद्योग, तृतीय व्यवसाय-व्यापार, परिवहन, संचार तथा अन्य सेवायें ।

(ग) पर्यावरण का बिगड़ना मानव के हस्तक्षेप का स्वरूप जिसके कारण पर्यावरण बिगड़ रहा है, संसाधनों का ह्रास, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता तथा प्रयास ।

(घ) प्राकृतिक प्रदेश--प्राकृतिक प्रदेश की संकल्पना, विश्व के प्रमुख प्राकृतिक प्रदेश ।

इकाई 5--मानचित्र कार्य--

इकाई 2, 3। और 4 से सम्बन्धित विभिन्न भौगोलिक लक्षणों की स्थिति संसार के रेखा-मानचित्र में दिखाना ।

6--प्रस्तावित प्रोजेक्ट कार्य--(कोई तीन) कौशल विकास हेतु--

(1) विद्यालय के आस-पास अथवा अपने गाँव की धरातलीय स्वरूप का वर्णन ।

(2) अपने गाँव या किसी मुहल्ले के लोगों की जनगणना (पुरुष, स्त्री, बालक, बालिका) अलग करना ।

(3) स्थानीय मिट्टियों, वनस्पतियों एवं जीव जन्तुओं का विवरण लिखना ।

(4) स्थानीय उद्योग धन्धों का विवरण रखना ।

(5) निकटवर्ती किसी नगर की भौगोलिक टिप्पणी प्रस्तुत करना ।

(6) अपने आस-पास की कृषि उत्पादन, बाजार प्रमुख स्थानों की सूची तैयार करना ।

(7) मानचित्र में विभिन्न, भौगोलिक तथ्यों का अंकन करने का अभ्यास (अनिवार्य) ।

टीप--स्वचिन्तन, स्व अधिगम तथा आत्माभिव्यक्ति को विकसित करने के लिए प्रत्येक छात्र को निर्धारित प्रोजेक्ट कार्य अनिवार्य रूप से करना होगा । अपेक्षा की जाती है कि विषयाध्यापक छात्रों से प्रोजेक्ट कार्य करायेंगे । उनका आन्तरिक मूल्यांकन और निर्देशन करते हुए छात्रों के अधिगम को सुदृढ़ करेगा ।

अनुभाग-4--आर्थिक विकास एवं जनजीवन (अर्थशास्त्र)--20 अंक

अध्ययन का उद्देश्य--

(1) माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालयों का अर्थव्यवस्था की संरचना तथा उनके ज्ञान एवं विश्व की विविध समस्याओं, कठिनाइयों से परिचित कराना ।

(2) विद्यार्थियों को इस प्रकार तैयार करना, जिससे कि यह आगे चलकर अर्थशास्त्र के अध्ययन का लाभ उठा सकें ।

(3) विद्यार्थियों को इस प्रकार तैयार करना कि आर्थिक वातावरण तथा साधनों के वैकल्पिक प्रयोगों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकें ।

पाठ्यक्रम का इकाई के अनुसार अंकभार निम्नवत् होगा--

इकाई	अंकभार
1--अर्थ व्यवस्था का एक अध्ययन	7
2--भारतीय अर्थ व्यवस्था का अवलोकन	7
3--भारतीय अर्थ व्यवस्था का अवसंरचना	6
	20 अंक

पाठ्यक्रम

इकाई 1--अर्थव्यवस्था का एक अध्ययन--

(i) अर्थव्यवस्था क्या है ?

(ii) अर्थव्यवस्था के प्रकार--

[क] पूंजीवाद, समाजवादी और मिश्रित ।

[ख] विकसित और विकासशील--उनकी विशेषतायें ।

(iii) अर्थ व्यवस्था की मूल समस्यायें :

--क्या उत्पाद करें ?

--उत्पाद कैसे करें ?

—उत्पादन किसके लिए करें ?

इकाई 2—भारतीय अर्थव्यवस्था का अवलोकन—

(I) भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारभूत विशेषताएं ।

(II) भारतीय अर्थव्यवस्था के मुख्य स्रोत ।

(क) स्वामित्व के अनुसार—

[i] निजी क्षेत्र

[ii] सार्वजनिक क्षेत्र

(ख) व्यवसायों के अनुसार—

[i] प्राथमिक—कृषि और खनन ।

[ii] द्वितीयक/गौण—निर्माण, विद्युत्, गैस और जल ।

[iii] तृतीयक—विभिन्न सेवायें—बैंक, बीमा आदि ।

[iv] राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था में विभिन्न क्षेत्रों का महत्व और उनमें पारस्परिक सम्बन्ध —विभिन्न क्षेत्रों का उत्पादन और उनकी उत्पादकता, महत्व ।

[v] जनसंख्या—जनसंख्या स्थिति—वृद्धि, आकार, घनत्व, शिशु मृत्यु दर सहित, आयु, लिंग और निर्भरता के रूप में संरचना—मानव जनसंख्या के मात्रात्मक तथा गुणात्मक पहलू ।

[vi] जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्यायें—गरीबी, बेरोजगारी और खाद्यान्न आपूर्ति ।

[vii] मानव संसाधन विकास—शिक्षा की भूमिका, स्वास्थ्य और पर्यावरण, जनसंख्या और आर्थिक विकास भारत में जनसंख्या वृद्धि को कम करने की आवश्यकता और प्रयास ।

भारतीय अर्थव्यवस्था की अवसंरचना

इकाई—3—

(1) सुविकसित सामाजिक और आर्थिक अवसंरचना का कार्य और आवश्यकता ।

(2) सामाजिक अवसंरचना के घटक—

सामाजिक शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुसंधान
सामाजिक स्वास्थ्य
सामाजिक आवास
सामाजिक नागरिक सुविधायें
सामाजिक उपभोक्ता शिक्षा (सार्वजनिक वितरण प्रणाली सहित)

(3) आर्थिक संरचना के घटक—

आर्थिक परिवहन और संचार तन्त्र
आर्थिक विद्युत् और सिंचाई
आर्थिक वित्तीय और वित्तीय संस्थाएं

अर्थशास्त्र में प्रस्तावित प्रोजेक्ट कार्य

निम्नलिखित में से एक या दो प्रोजेक्ट :

1—आय और परिवार के आकार के बीच सम्बन्ध का पता लगाने की दृष्टि से किसी एक क्षेत्र (इलाके) का प्रतिवर्ष सर्वेक्षण करना ।

2—क्षेत्र में स्थित लघु तथा कुटीर उद्योगों के कच्ची सामग्री के स्रोतों और उत्पादों के बाजार का पता लगाने के लिए सर्वेक्षण करना ।

3—एक निश्चित समयावधि में कीमतों के उतार-चढ़ाव का अध्ययन करने के लिए निकट की मण्डी और बाजार केन्द्र का दौरा करना ।

4—खेतों के औसत आधार, कृषि के तकनीकों और उत्पादों को बेचने सम्बन्धी बातों के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु निकट के कृषि ग्रामों का दौरा करना ।

5--लघु बचत बैंक या सरकारी भण्डार की स्थापना करना ताकि ऐसी संस्थाओं की कार्य प्रणाली के बारे में पूरी जानकारी मिले ।

6--कार्यरत और बेरोजगार जनसंख्या के बारे में और बेरोजगारी का समाधान करने हेतु क्षेत्र का सर्वेक्षण करना ।

7--किसी बड़े उद्योग/लघु कुटीर उद्योग, कृषि कारखाने के किसी अधिक पहलू का अध्ययन करना ।

8--यह देखने के लिए स्थानीय बाजार का दौरा करना कि उपभोक्ताओं को कैसे ठगा जाता है और उन्होंने अपने को बचाने के लिये क्या उपाय किये हैं ।

टीप--

स्वचिन्तन, स्वअधिगम तथा आत्माभिव्यक्ति को विकसित करने के लिये प्रत्येक छात्र को निर्धारित प्रोजेक्ट कार्य अनिवार्य रूप से करना होगा । अपेक्षा की जाती है कि विषयाध्यापक छात्रों से प्रोजेक्ट कार्य करवायेगा। उनका आन्तरिक मूल्यांकन और निर्देशन करते हुये छात्रों के अधिगम को सुदृढ़ करेगा ।

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें--

(1) सामाजिक विज्ञान, भाग-एक (कक्षा 9 के लिये)

(2) सामाजिक विज्ञान, भाग-दो (कक्षा 9 के लिये)

अतिरिक्त विषयों के अन्तर्गत

भाषायें

(कक्षा 9)

शास्त्रीय भाषा, आधुनिक भारतीय भाषा तथा आधुनिक विदेश भाषा का पाठ्यक्रम व पुस्तकों की स्थिति वही रहेगी जो इस विवरण पत्रिका में अनिवार्य भाषाओं के लिये निर्धारित है ।

गृह विज्ञान

(कक्षा 9)

(बालकों के लिये तथा उन बालिकाओं के लिये जिन्होंने इसे अनिवार्य विषय के रूप में नहीं लिया है)

पाठ्यक्रम एवं पाठ्य-पुस्तकों की स्थिति वही रहेगी जो इस विवरण पत्रिका में गृह विज्ञान (केवल बालिकाओं के लिये) अनिवार्य विषय के लिये निर्धारित है ।

संगीत (गायन)

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र 3 घन्टे का होगा ।

शास्त्रीय शब्दावली का परिभाषा एवं व्याख्या, संगीत स्वर, सप्तक शुद्ध और विकृत सप्तक अलंकार आलाप विवादी पकड़, राग जाति, ओडव, सोडव, सम्पूर्ण ताल, मात्रालय तथा समाज के रागों का परिचय ।

1--संगीत का इतिहास, रागों का अध्ययन ।

2--पाठ्यक्रम के रागों की विशेषता, स्वर, विस्तार एवं अलंकारों के माध्यम से रागों की बढ़त ।

3--रागों का अलाप तान लिखने की योग्यता ।

4--तालों का ताल परिचय लिखने को इगुन तथा दुगुन लय में लिखने की योग्यता होनी चाहिये ।

5--गीतों का सरल आलाप तान सहित लिपिबद्ध करने की योग्यता ।

6--स्वर समूहों को छोटे-छोटे टुकड़ों के आधार पर राग पहचानने की योग्यता ।

7--अमीर खुसरो एवं मात खण्डे की जीवनी ।

8--राग यमन तथा समाज रागों का विस्तृत अध्ययन प्रत्येक में एक-एक गीत के साथ तीन-तीन अलाप एवं चार-चार तानें तालबद्ध करके गाने की योग्यता ।

9--बिलवाल, भूपाली, आसावरी रागों का राग परिचय एवं प्रत्येक का गीत स्वर लिपि सहित लिखने व गाने की योग्यता ।

10--प्रत्येक राग का राग सरगम गीत तथा लक्षण गीत सिखाया जाना चाहिये ।

11--प्रत्येक रागों का आरोह-अवरोह पकड़ गाना आना चाहिये ।

उपर्युक्त रागों एवं गीतों के साथ कहरवा, तीन ताल एवं झपताल नामक तालें बजाना होनी चाहिये ।

नोट--उपर्युक्त निर्धारित रागों एवं तालों का आन्तरिक प्रयोगात्मक मूल्यांकन किया जायेगा तथा उसमें ग्रेड दिया जायेगा ।

निर्धारित पुस्तकें--

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है । विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपर्युक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

संगीत वादन

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा ।

आगे दी हुई शास्त्रीय शब्दों की परिभाषा एवं व्याख्या : संगीत स्वर (शुद्ध एवं विकृत) आलाप, थाट, राग, आरोह, अवरोह, वादी, संवादी, पकड़ गत तोड़ा, जमजमा, मात्रा, लय, खाली, भारीटेक, समताल, तिहाई, टुकड़ा परन ।

संगीत का इतिहास एवं रागों का अध्ययन--

(1) वादन पाठ्यक्रम के रागों को विशेषतायें-स्वर विस्तार एवं अलंकारों के माध्यम से रागों को बढ़त ।

(2) तालों के टुकड़े, परन आदि लिखने तथा बजाने की योग्यता अथवा सरल स्वर विस्तार एवं तोड़ों के साथ गाने को लिपिबद्ध करके लिखने तथा बजाने की योग्यता ।

(3) स्वर समूह के छोटे-छोटे टुकड़े के आधार पर रागों को पहचानने की योग्यता अथवा ठेके के कुछ बोलों के आधार पर तालों को पहचानने की योग्यता ।

(4) अमीर खुशरू एवं भातखंडे की जीवनी, तबला पखावज या मृदंग, बीण, सितार, सरोद, सारंगी, इसराज या दिलरुबा, गिटार, वायलिन और बांसुरी में से कोई एक वाद्य ले सकता है ।

(5) तबला और पखावज--(अपने वाद्यों के अंग का सचित्र वर्णन तथा मिलाने की विधि का ज्ञान) ।

1--तीन ताल, झपताल, एक ताल में से प्रत्येक में दो कायदा, दो टुकड़े और दो तिहाइयां को लिखने तथा बजाने की योग्यता ।

2--दादरा, रूपक एवं सूलफाक तालों के साधारण ठेके तथा उनकी दुगुन में ताली देकर बोलने का अभ्यास ।

अन्य वाद्य लेने वाले--

1--राग यमन और खमाज रागों में से प्रत्येक में एक-एक राग जिसकी विस्तृत जानकारी आवश्यक है ।

2--राग बिलावल, आसावरी एवं भूपाली रागों में आरोह-अवरोह एवं पकड़ लिखने की क्षमता ।

3--तीन ताल, झपताल, दादरा, एक ताल से परिचित होना चाहिये ।

(6) भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण ।

नोट--उपर्युक्त निर्धारित रागों एवं तालों का आन्तरिक प्रयोगात्मक मूल्यांकन किया जायेगा तथा ग्रेड दिया जायेगा ।

निर्धारित पुस्तकें

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है । विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपर्युक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

वाणिज्य

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा ।

1--दोहरा लेखा प्रणाली का तात्विक सिद्धान्त व व्यवहार, आधुनिक पाश्चात्य बही खाता प्रणाली के अनुसार प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकें केवल रोजनामचा व रोकड़ बही, खतौनी व तलपट, भारतीय बही-खाता प्रणाली, रोकड़ बही व जमा तथा नाम नकल बही ।

2--व्यापारिक कार्यालय का संगठन व कार्य प्रणाली, आने-जाने वाले पत्रों का लेखा, प्रतिलिपिकरण, पूछ-ताछ व आदेश सम्बन्धी पत्र-व्यवहार ।

3—मुद्रा इतिहास, परिभाषा कार्य, भारत में मुद्रा प्रणाली का सामान्य परिचय ।
4—अर्थशास्त्र की परिभाषा, क्षेत्र अर्थशास्त्र से सम्बन्धित शब्दावली जैसे उपयोगिता, धन कीमत मूल्य आदि । आवश्यकताओं का वर्गीकरण एवं लक्षण ।

निर्धारित पुस्तकें

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है । विद्यालयों के प्रधान विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

चित्रकला

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

प्रश्न-पत्र तीन खन्डों में विभक्त होगा, जिसमें से किसी दो खंडों के प्रश्न करने होंगे ।

खण्ड-क (प्राविधिक) 50 अंक

इस खंड में कुल पांच प्रश्न होंगे, जिसमें से कुल तीन प्रश्न करने होंगे । 20 अंक का अक्षर लेखन अनिवार्य होगा । शेष प्रश्न 15-15 अंकों के होंगे ।

1—रेखाओं तथा कोणों पर आधारित ज्यामितीय निर्मेय ।
2—अनुपात तथा समानुपात (रेखा तथा कोण) ।
3—त्रिभुज (समद्विबाहु समबाहु आदि) ।
4—चतुर्भुज (वर्ग, आयात, पतंगाकार आदि) ।
5—बहुभुज (पंचभुज आदि) ।
6—अक्षर लेखन (बड़े अक्षर एवं तिरछे) ।

खंड-ख (आलेखन) 50 अं

दिये गये वर्ग अथवा आयत में एक या दो आयुक्त के किसी भारतीय पुष्प (कमल, सूरजमुखी, गुलाब, कनेर, जोलिया, डहेलिया आदि) पर आधारित मौलिक आलेखन वस्त्र पर छपाई (टेक्सटाइल डिजाइन) अथवा अल्पना के दृष्टिकोण से तैयार करना ।

चित्र दो सपाट रंगों से पूर्ण किया जाये ।

खंड-ग (मानव आकृति) 50 अंक

साधारण पृष्ठ भूमि में—सम्पूर्ण आकृति के एक वर्णीय (मोनोक्रोम) चित्रांकन, बालक किशोर युवा अथवा वृद्ध (स्त्री, पुरुष) का स्मृति से दिये गये विषय के अनुसार चित्र बनाया जाये । चित्र पेंसिल, क्रेयान अथवा काली स्याही (ब्लैक स्केचपेन) से लगभग पूरे पृष्ठ पर बनाया जाये । मानव शरीर एवं उसके विविध अंगों के अनुपात पर ध्यान दिया जाय ।

निर्धारित पुस्तकें

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है । विद्यालयों के प्रधान विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

कृषि

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

भाग-एक

1—जलवायु विज्ञान—

उत्तर प्रदेश तथा भारत में मौसम और ऋतुयें । फसलों पर अनुकूल तथा प्रतिकूल मौसम का प्रभाव । वर्षा, उसमें वार्षिक तथा ऋतुगत परिवर्तन, उसके वितरण का फसलों तथा कृषि क्रियाओं पर प्रभाव ।

2—मृदायें—

मृदा निर्माण, मृदा संगठन, मिट्टी के भौतिक गुण-मृदा गठन, मृदा विन्यास, रन्ध्राकाश, सुघट्यता, घनत्व, संसजन और असंजन, भूमि ताप । मृदा जल उ० प्र० के मृदाओं का संक्षिप्त विवरण ।

3—सिंचाई और जल निकास—

(क) पौधों को जल की आवश्यकता, नमी संरक्षण, अत्यधिक जल से हानियां, जल निकास की सामान्य विधियां ।

(ख) उत्पादकों के प्रकार, उनके नाम, वाशर रहट तथा शक्ति चलित पम्प का विशेष ज्ञान ।

4—खाद तथा उर्वरक—

पौधों के आवश्यक पोषक तत्व और उनके स्रोत, जैविक खाद, गोबर की खाद, कम्पोस्ट खाद, हरी खाद, खलिया आदि ।

5—कृषक—

जुताई के उद्देश्य और जुताई की विधियां ।

6—कृषि यंत्र—

(क) विभिन्न प्रकार के हल—जैसे देशी मेस्टन, शावशि, केपर, यू० पी० नं०-2
(ख) कल्टीवेटर
(ग) हैरो-खूंटीदार, कमानीदार, तिकोनिया तथा तवेदार हैरो ।
(घ) अन्य यन्त्र—पटेला, रोलर, करहा ।
(ङ) हाथ के औजार—खुरपी, हो, रैक तथा फावड़ा ।

भाग-बी

(1) फसलों का वर्गीकरण—

फसल चक्र, शुष्क खेती, दियारा खेती, मिश्रित खेती, मिलवो फसल तथा बहुफसलों की खेती ।

(2) निम्न फसलों की खेती—

मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर, कपास, सोयाबीन, उर्द, मूंग, जौ, चना, मटर, सरसों तथा बरसीम ।

(3) पशुपालन—

गाय, भैंस, भेड़ तथा बकरी की उन्नत नस्लें ।

(4) लेखपाल के कागज—

गांव का नक्शा तथा खतौनी, जोत बही तथा उसकी उपयोगिता ।

कृषि (प्रयोगात्मक)

[प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा]

1—विभिन्न प्रकार के जैविक खादों की पहचान एवं प्रयोग विधि ।

2—फार्म की फसलों की बीज शैया (मक्का, ज्वार, बाजरा, सोयाबीन, बरसीम, चना, मटर) तैयार करना ।

3—विभिन्न प्रकार के कृषि यन्त्रों की पहचान एवं सामान्य प्रयोग (मेस्टन हल, शावाश हल, यू० पी०-2, कल्टीवेटर, तवेदार हेरो, कमानीदार हैरो, तिकोनिया हैरो, पटेला, रोलर एवं करहा) ।

4—मौसमी खरपतवारों की पहचान एवं फसल सुरक्षा सम्बन्धी रसायनिक पदार्थों का प्रयोग ।

5—छात्रों द्वारा वर्ष भर के प्रयोगिक कार्यों का अभिलेख तैयार किया जायेगा जिसे मूल्यांकन कर्ता के समक्ष प्रस्तुत करना होगा ।

नोट—(i) प्रयोगात्मक परीक्षा विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगी जिसका आन्तरिक मूल्यांकन किया जायेगा ।

(ii) आन्तरिक मूल्यांकन निम्नवत् होगा—
(क) 60% या इससे अधिक ए श्रेणी
(ख) 45% या 60% से कम बी श्रेणी
(ग) 45% से कम सी श्रेणी

(iii) कुल प्रयोगात्मक परीक्षा का आन्तरिक मूल्यांकन 50 अंकों में को जायेगी । आन्तरिक प्रयोगात्मक परीक्षा का अंक विभाजन निम्नवत् होगा—

[1] बीज शैया	10 अंक
[2] खाद/बीज/खरपतवार/फसल सुरक्षा रसायनों की पहचान	10 अंक
[3] विभिन्न प्रकार के कृषि यन्त्रों की पहचान एवं उनकी प्रयोग सम्बन्धी जानकारी	10 अंक
[4] मौखिक	10 अंक
[5] वार्षिक अभिलेख	10 अंक

पुस्तकें—

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है । विद्यालय के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

सिलाई

(कक्षा–9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न–पत्र तीन घन्टे का होगा ।

1—विभिन्न प्रकार के कपड़े (सूती, ऊनी, रेशमी, सिन्थेटिक) का ज्ञान तथा उनके सिकुड़ने की प्रवृत्ति का ज्ञान ।

2—सूती, ऊनी, रेशमी, सिन्थेटिक कपड़ों पर लोहा करने की विधि ।

3—सिलाई में प्रयोग होने वाली सामग्री का ज्ञान ।

4—तागे का ज्ञान ।

5—पर्यावरण सुरक्षा—अर्थ, स्वरूप तथा पर्यावरण और सिलाई कला का सम्बन्ध ।

6—प्रदूषण क्या है ? उनके विभिन्न प्रकार का प्रभाव ।

7—सिलाई क्रिया के समय प्रदूषण के अवसर ।

8—मनुष्य और शरीर का गठन ।

9—नाप लेने का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रणाली ।

10—सादा पैजामा, पेटीकोट, बंगला कुर्ता, फ्राक, परिधानों की नापें लिखना, रेखाचित्र बनाना तथा पेपर कटिंग करना ।

प्रयोगात्मक

पाठ्यक्रम

(प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा)

(1) पेपर कटिंग—सादा पायजामा, पेटीकोट, बंगला कुर्ता, फ्राक सम्बन्धित यंत्रों के नापों की जानकारी एवं ड्राइंग बनाने का अभ्यास ।

(2) पेटीकोट, फ्राक, पैजामा, प्रेसिंग उपकरणों की जानकारी एवं उपयोगिता । वस्त्रों के सिलाई सम्बन्धी परिधानों को हाथ सिलाई, काज, बटन एवं पुणरूपेण फिनिशिंग का ज्ञान एवं अभ्यास करना ।

निर्धारित पुस्तकें

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है । विद्यालयों के प्रधान विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

रंजन कला

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न–पत्र तीन घन्टे का होगा ।
प्रश्न–पत्र तीन खण्डों में विभक्त होगा, जिसमें से दो खण्ड के प्रश्न करने होंगे ।

खण्ड–क (चित्र संशोधन) 50 अंक

भारतीय चित्रण शैली अथवा स्वतन्त्र शैली में काल्पनिक चित्र जिसमें कम से कम एक मानव आकृति एवं पृष्ठ भूमि में साधारण दृश्य अंकित किये जाय । चित्र जल रंग अथवा पोस्टर रंग में तैयार किया जाय । चित्र लगभग पूरे पृष्ठ पर बनाया जाय ।

खण्ड–ख (वस्तु चित्रण) 50 अंक

साधारण जीवन में दैनिक उपयोग की घरेलू वस्तुएं, पालतू जानवर, शाक–सब्जी और फल–फूल आदि किसी दो वस्तुओं का स्मृति से चित्र, छाया–प्रकाश दर्शाते हुए अंकित करना । चित्र एक वर्ण (मोनोक्रोम) पेन्सिल क्रेयान, काली स्याही में चित्रित किया जाय ।

खण्ड–ग (चित्र कला के मूल तत्व) 50 अंक

इस खण्ड में पांच प्रश्न होंगे जिसमें से कुल तीन प्रश्न करने होंगे। 50 अंक का एक वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनिवार्य होगा।

शेष प्रश्न 15–14 अंकों के होंगे।

1—रेखा (Line), 2—रंग या वर्ण (Colour), 3—तान (Tone), 4—पोत (Texture), 5—आकृति (Form), 6—अन्तराल (Space), 7—षडांग (चित्रकला के छः अंक)।

पुस्तकें

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है।

विद्यालयों के प्रधान विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

कम्प्यूटर

(कक्षा 9)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न–पत्र तीन घण्टे का होगा।

उद्देश्य—

आने वाली नई इक्कीसवीं शताब्दी को यदि कम्प्यूटर युग कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कम्प्यूटर का उपयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। उसकी कार्य कुशलता एवं दक्षता को ध्यान में रखते हुए माध्यमिक शिक्षा परिषद् के छात्र/छात्राओं को हाई स्कूल स्तर पर कम्प्यूटर विज्ञान का ज्ञान होने की योजना सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नवीन कदम सिद्ध होगा। इसका मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है—

1—छात्र एवं छात्राओं को सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जागरुक करना।

2—कम्प्यूटर विज्ञान को एक कैरियर की तरह अपनाने के लिए छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित करना।

3—कम्प्यूटर डेटा को कैसे एकत्रित और सुरक्षित रखता है तथा प्रोसेस करता है, उसका ज्ञान देना।

4—छात्र/छात्राओं को कम्प्यूटर के प्रमुख भाग तथा उसकी कार्य क्षमता एवं उपयोगिता की जानकारी देना।

5—मनुष्य की कार्यशैली की कम्प्यूटर की भाषा में लिखने तथ उससे वांछित सूचना प्राप्त करना।

6—विभिन्न प्रकार के सजीव उदाहरण पर आधारित कम्प्यूटर साफ्टवेयर बनाना।

पाठ्यक्रम

1—कम्प्यूटर फण्डामेन्टल्स— 15 अंक

—कम्प्यूटर का परिचय
—कम्प्यूटर के विकास का इतिहास
—कम्प्यूटर के प्रकार
—कम्प्यूटर का रेखाचित्र
—कम्प्यूटर के भाग
—हार्डवेयर और साफ्टवेयर तथा उनके प्रकार

2—आपरेटिंग सिस्टम— 15 अंक

—आपरेटिंग सिस्टम का परिचय
—सिस्टम बूट करना
—आपरेटिंग सिस्टम के कार्य तथा उसके प्रकार
—डास के अवयव
—फाइल और उनके प्रकार
—डायरेक्ट्री
—सब डायरेक्ट्री
—डिवाइस के नाम
—वाइल्ड कार्ड अक्षर
—त्रुटियों की सूचना
—कमान्ड्स–आन्तरिक और वाह्य
—आन्तरिक कमान्ड्स
(कापी कान, डेर, टाइप, डी0 आई0 आर0, सी0 एल0 एस0 प्रम्ट कौयो रे, डेल0 एस0 डी0, आर0 डी0, पाथ टाइप)
—वाह्य कमान्ड्स :
(फारमेट, पूस मोर, ट्री, डिस्कापी)

3—विन्डोज का परिचय (इन्ट्रोडक्शन टू विन्डोज)— 10 अंक

--प्रारम्भ (Getting Started)

--माउस का प्रयोग करने की विधि

—डॉस और विन्डोज के बीच आना-जाना

—विन्डोज से बाहर निकलने की विधि (शटडाउन)

--किसी भी एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर को शुरू तथा बन्द करने की विधि

4—अंक प्रणाली (नम्बर सिस्टम) 10 अंक

—डिजिटल (डिस्क्रीट) और एनालाग (कन्टीन्यूअस) आपरेशन

--बाइनरी डेटा

--बाइनरी अंक प्रणाली

—दशमलव (डेसीमल)

—ऑक्टल

--हेक्साडेसीमल प्रणाली

—बाइनरी एवं डेसीमल में परस्पर सामान्य रूपान्तरण (फ्रेक्शनल कनवर्जन सहित) 10 अंक

5—वर्ड प्रोसेसिंग के तत्व (एलीमेन्ट्स आफ वर्ड प्रोसेसिंग)—

—वर्ड प्रोसेसिंग

—कम्प्यूटराइज्ड वर्ड प्रोसेसिंग के लाभ

—कुछ महत्वपूर्ण प्राथमिक कमान्ड्स किसी दस्तावेज के क्रिएटिंग, फार्मेटिंग, एडिटिंग, प्रिंटिंग हेतु

6—प्रोग्रामिंग तकनीक (प्रोग्रामिंग कान्सेप्ट्स)— 10 अंक

—एलगोरिथ्म

—फ्लोचार्टिंग

—ब्रांचिंग

—लूपिंग

—माड्यूलर डिजाइन

7—इन्ट्रोडक्टरी बेसिक अथवा बेसिक प्रोग्रामिंग के तत्व— 10 अंक

1—बेसिक (BASIC) एक परिचय—

—बेसिक का महत्व

—कम्प्यूटर में बेसिक के साथ कार्य प्रारम्भ करना

—कैरेक्टर सेट

—कान्स्टेन्टस एवं वेरिएबल्स

—बेसिक में एक्सप्रेशन्स

—गेटिंग स्टारटेड विद बेसिक

2—प्रिन्टर कन्ट्रोल्स—

—कामा और सेमी कालन नियंत्रण

—टैब फंक्शन्स

—छपाई नियंत्रण

3—लूपिंग और ब्रान्चिंग—

0—एक परिचय

0—लूपिंग Oesto कथन

0—ब्रान्चिंग if Then कथन तथा WHILE END कथन

0—एक से अधिक (मल्टीपुल) ब्रान्चिंग—ON Gat कथन

8—कम्प्यूटर एप्लीकेशन और उनके लाभ— 10 अंक

—स्कूल, वाचनालय, छपाई, बैंकिंग और परिवहन

प्रयोगात्मक

(अ) आपरेटिंग सिस्टम—

1—डास कमांण्ड ।

2—डास एवं विन्डोज के बीच आना-जाना ।

3—एप्लीकेशन साफ्टवेयर को बन्द करना एवं खोलना ।

4—एम0 एस0 वर्ड में पैराग्राफ को एडिट (EDIT) एवं (FORMAT) करना ।

5—पेज सेट अप एवं पैराग्राफ सेट अप ।

6—डाक्यूमेन्ट्स को प्रिन्ट करना ।

(ब) बेसिक प्रोग्रामिंग—

फ्लोचार्ट एवं एलगोरिज्म के साथ साधारण प्रोग्राम विकसित बनाना ।

नोट—प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा । प्रयोगात्मक परीक्षा के अतिरिक्त मूल्यांकन हेतु ग्रेड निम्नवत् दिये जायेंगे । 60% या 60% से अधिक 'ए' ग्रेड 45% या 45% से अधिक तथा 60% से कम 'बी' ग्रेड 33% या 33% से अधिक तथा 45% से कम 'सी' ग्रेड ।

सन्दर्भ पुस्तकें—

1—प्रोग्रामिंग इन बेसिक

2—फ्लोरिंग इन बेसिक

3—बिट्स और बाइट्स (CBSE BOARD)

4—फन्डामेन्टल (वी राजारमन)

5—कम्प्यूटर लिट्रेसी डास (सी0 बी0 एम0 प्रकाशन)

सुझाव—

अध्यापक महोदय/महोदया, कृपया आप अपने अनुसार पुस्तकों का चयन कर पुस्तकालय में पुस्तकों को रखने का कष्ट करें ।

उपकरणों की सूची

कम्प्यूटर की आवश्यकता

आवश्यक हार्डवेयर (Hardware Requirement)

1—कम्प्यूटर सिस्टम — 1 नग

सेलेराम PI/CpU, 32 MBRAM, Colour Monitor Key Board,
हार्डडिस्क I0.2 GBHDD, I44 MBFOD Mouse, PCI Lan Card
C D Ram drive on one System only for installation purpose only.

3—Lct Matrix printe 80 Column	1 No.
4—UPS 625 VA—5 one UPS for each two Systems	1 No
5—Hub	5 No
6—UTP Cables for Networking—As per requirement	1 No

आवश्यक साफ्टवेयर Software Requirement

1—Windows—98-2000 अथवा नया वर्जन	1 No.
2—MS cifiee—97-2000 अथवा नया वर्जन	1 No.
3—G. W. Basic	1 No.

नैतिक, शारीरिक, समाजोपयोगी, उत्पादक एवं समाज सेवा कार्य

(कक्षा 9 हेतु)

1—उद्देश्य—

1—बालकों का सर्वांगीण विकास एवं नैतिक गुणों का उन्नयन ।

2—बालकों को वैयक्तिक, सामाजिक एवं शैक्षिक जीवन में नैतिक भावना का विकास करना ।

3—बालकों में स्वास्थ्य नेतृत्व, उत्तरदायित्व वहन करने की क्षमता, समय-पालन, सदाचार, शिष्टाचार, विनम्रता, साहस, अनुशासन, आत्म सम्मान, आत्म संयम, समाज सेवा, सभी धर्मों के प्रति आदर एवं सहिष्णुता तथा विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास ।

4—सुदृढ़ शरीर का निर्माण करने हेतु शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं की अभिवृद्धि ।

5—बालकों के श्रम के प्रति आदर एवं आत्म निर्भर बनने हेतु उत्पादक कार्यों के प्रति अभिरुचि का सम्बर्द्धन करना ।

(6) समाज सेवा की भावना का सृजन करना ।
(7) स्वास्थ्य के प्रति सतत् जागरूकता तथा क्रीड़ा-शालीनता की भावना का विकास करना ।
(8) बालकों की मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सामाजिक एवं संवेदात्मक विकास करना ।

नैतिक शिक्षा

(1) नैतिकता का स्वरूप तथा महत्व ।
(2) स्वयं, परिवार, समाज, देश तथा मानवता के प्रति कर्तव्य ।
(3) भारत में प्रचलित प्रमुख धर्मों (हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई) के मूल तत्वों में समान बातें ।

शारीरिक शिक्षा

(1) स्वास्थ्य की परिभाषा ।
(2) स्वास्थ्य के नियमों की जानकारी एवं उन नियमों के पालन की आदत डालना ।
(3) खो-खो, कबड्डी, अत्यापत्या, नलखम्भ, कुश्ती, तैराकी, जिम्नास्टिक तथा वैडमिंटन में से एक खेल ।
(4) जनपदीय, मण्डलीय, प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय युवक समारोहों का ज्ञान ।
(6) भारत के महत्वपूर्ण टूर्नामेंट राष्ट्र मण्डलीय खेल, एशिया खेल, ओलम्पिक खेल के बारे में सामान्य जानकारी ।

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

स्थानीय सुविधानुसार निम्नलिखित में से कोई एक कार्य कराया जाय--

(1) विद्यालय की कृषि भूमि पर आधारित ऋतु अनुसार फूल-पत्तियों का लगाना एवं सब्जियां बोना ।
(2) विद्यालय में घास का लान तैयार करना ।
(3) गमलों में दीर्घजीवी शोभायुक्त पौधे लगाना ।
(4) विद्यालय की बाउन्ड्री पर हेज लगाना, लतायें लगाना ।
(5) वृक्षारोपण ।
(6) कताई-बुनाई ।
(7) काष्ठ-शिल्प ।
(8) ग्रन्थ-शिल्प ।
(9) चर्म-शिल्प ।
(10) धातु-शिल्प ।
(11) धुलाई, रफू, बखिया ।
(12) रंगाई और छपाई ।
(13) सिलाई ।
(14) मूर्ति कला ।
(15) मत्स्य पालन ।
(16) मधुमक्खी पालन ।
(17) मुर्गी पालन ।
(18) साग-सब्जी का उत्पादन ।
(19) फल संरक्षण ।
(20) रेशम तथा टसर काम ।
(21) सुतली तथा टाट-पट्टी का निर्माण ।
(22) हाथ से कागज बनाना ।
(23) फोटो ग्राफी ।
(24) रेडियो मरम्मत ।
(25) घड़ी मरम्मत ।
(26) चाक पर या मोमबत्ती बनाना ।
(27) कालीन व दरी का निर्माण ।
(28) फूलों, फलों तथा सब्जियों के पौधे तैयार करना ।
(29) लकड़ी, मिट्टी आदि के खिलौने का निर्माण ।
(30) बेंकरी और कन्फेक्शनरी का काम ।
(31) उपर्युक्त की सुविधा न होने पर कोई स्थानीय प्रचलित कार्य ।

उपयुक्त कार्यों के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम--

(एक) विद्यालय की कृषि भूमि पर आधारित ऋतु अनुसार फूल-पत्तियों का लगाना एवं सब्जियां बोना।

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि ऋतु फूल-पत्तियों के लगाने तथा सब्जियों के बोने से जहां एक ओर आस-पास की वायु शुद्ध होती है, प्रदूषण दूर होता है, वहीं दूसरी ओर ताजी सब्जियां खाने को मिलती हैं, जिससे शरीर के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक विटामिन तथा खनिज लवणों की आपूर्ति होती है।

(2) छात्रों में ऋतु अनुसार फूल-पत्तियों तथा सब्जियों का चयन कर उन्हें लगाने तथा उनकी खेती करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) स्थानीय परिवेश एवं जलवायु को दृष्टिगत रखते हुए विद्यालय की भूमि पर ऋतु के अनुसार फूल-पत्तियों तथा सब्जियों का चयन कर उनकी पौध तैयार करना।

(2) पौध लगाने के लिए उचित भूमि (क्यारियों) को तैयार करना, उसमें अपेक्षित कम्पोस्ट खाद तथा रसायनिक उर्वरक उचित मात्रा में डालना।

(3) बीजों को बोने के पूर्व उनका आवश्यकतानुसार शोधन करना।

(4) वर्षाकाल में लौकी, तरोई, गोभी, बैंगन, टमाटर, भिन्डी, गुलमेंहदी, जीनिया, गेंदा आदि के पौध लगाना।

दो विद्यालय में घास की लान तैयार करना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि मैदान में घास लगाने से विद्यालय के सौन्दर्यीकरण के साथ-साथ भूमि का कटाव नहीं होता, भूमि में फिसलन नहीं होती, लान की हरी-हरी घास नेत्रों को रोशनी के लिए लाभदायक होती है तथा घास के बढ़ने पर उसे पशुओं के लिये चारा भी उपलब्ध हो सकता है।

(3) छात्रों में विद्यालय तथा घर के आस-पास की रिक्त भूमि पर घासों का लान तैयार करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) भूमि तैयार करने तथा घास लगाने के लिए आवश्यक औजारों तथा सामग्रियों की जानकारी, प्रयोग विधि, सावधानियां तथा सुरक्षा के उद्देश्यों की जानकारी।

(2) लान (मैदान) से कंकड़ पत्थर साफ कर भूमि को खोदकर भुरभुरी बनाना।

(3) मिट्टी में कम्पोस्ट खाद तथा अपेक्षित उर्वरक डालना। घास लगाने के लिए तैयार करना।

(4) भूमि में आवश्यक सिंचाई कर मिट्टी में नमी पैदा करना तथा पुनः भूमि की गुड़ाई कर पटेला लगाना तथा भूमि को समतल बनाना।

(तीन) गमलों में दीर्घ जीवी, शोभायुक्त पौधे लगाना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि घर के आस-पास भूमि की कमी या अभाव होने पर भी गमलों में दीर्घ-जीवी शोभायुक्त पौधे लगाये जा सकते हैं, जिनसे पर्यावरणीय प्रदूषण कम किया जा सकता है।

(2) छात्रों में सुरुचि एवं सौन्दर्य भावना जागृत करने के लिए गमलों में दीर्घजीवी शोभायुक्त पौधे लगाने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) गमलों में दीर्घजीवी शोभायुक्त पौधे लगाने के लिए आवश्यक उपकरणों, सामग्रियों, मिट्टी तथा उर्वरकों की जानकारी।

(2) गमलों में कम्पोस्ट खाद (गोबर की सड़ी खाद) युक्त मिट्टी भरने का अभ्यास।

(3) जुलाई से सितम्बर के मध्य गमलों में फर्न (विभिन्न प्रकार के घास, क्रोटन, विभिन्न प्रकार के कैक्टस, बुकावियां) आदि लगाना।

(4) नियमित रूप से गमलों में सिंचाई करना।

(चार) विद्यालय की बाउन्ड्री पर हेज लगाना, लतायें लगाना

उद्देश्य--

(1) विद्यालय को बोध कराना कि विद्यालय की शोभा इसकी बाउन्ड्री पर हेज तथा लतायें लगाने से बढ़ती है साथ ही इससे पर्यावरणीय प्रदूषण कम होता है तथा मिट्टी का क्षरण रुकता है ।

(2) छात्रों में विद्यालय (साथ ही घर) की बाउन्ड्री पर हेज अथवा लतायें लगाने का शौक तथा कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) हेज तथा लतायें लगाने के लिये आवश्यक उपकरणों एवं सामग्रियों की जानकारी, उपविधियां तथा सुरक्षा के उपाय ।

(2) हेज लगाने हेतु मेंहदी नीलकांटा (डयरेटा) सुदर्शन, जस्तीशिया, बस्तशिया छोटी, हेज, चांदनी आदि में से किसी उपयुक्त तथा मन पसन्द हेज का चुनाव करना, वर्षा ऋतु में उसे लगाना ।

(पांच) वृक्षारोपण

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि वृक्ष मानव जाति के अस्तित्व के लिये आवश्यक हैं, इससे पर्यावरण प्रदूषित होने से बचता है, भूमि का कटाव रुकता है, समय पर उपयुक्त वर्षा होती है, भोज्य पदार्थ, औषधियां, इमारती तथा ईंधन की लकड़ियां प्राप्त होती हैं । वृक्ष वास्तविक अर्थ में मानव के सच्चे मित्र एवं रक्षक हैं ।

(2) छात्रों में वृक्षारोपण का शौक तथा कौशल विकसित कराना ।

पाठ्यक्रम--

(1) वृक्षारोपण हेतु आवश्यक औजारों तथा सामग्रियों की जानकारी, उनकी प्रयोग विधि, सावधानियां तथा सुरक्षा के उपायों की जानकारी प्राप्त करना ।

(2) वृक्षारोपण हेतु उपयोगी वृक्षों की पौध तथा कलम तैयार करना ।

(3) वृक्षारोपण के लिये गड्ढे खोदकर उसमें कम्पोस्ट तथा आवश्यक उर्वरक डालना ।

(4) तैयार गड्ढों में वर्षा ऋतु में वृक्षों के पौध लगाना ।

(छः) कताई-बुनाई

उद्देश्य--

(1) छात्रों को सूत, खजूर की पत्ती, नाइलोन का धागा तथा सुतली से बुनाई करने का बोध कराना ।

(2) आसनी बनाना, चटाई बुनना तथा टाट-पट्टी बुनने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) विभिन्न प्रकार की तकली व रुई के प्रकार की जानकारी प्राप्त करना ।

(2) कताई में काम आने वाले विभिन्न उपकरणों एवं औजारों की जानकारी ।

(3) कताई-बुनाई में आवश्यक सावधानियों एवं सुरक्षा नियमों का ज्ञान प्राप्त करना ।

(4) रुई बुनाई तथा पूनी बनाने का अभ्यास ।

(5) तकली तथा चरखे पर सूत कातने तथा अटेरन पर सूत लपेटने और गुच्छियां तैयार करने का अभ्यास ।

(सात) काष्ठ-शिल्प

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि भव्य इमारतों तथा फर्नीचरों के निर्माण तथा सजावट की वस्तुयें तयार करने में काष्ठ शिल्प का ज्ञान नितान्त आवश्यक है ।

(2) इस कला द्वारा छात्रो के हाथ, नेत्र और मस्तिष्क में सामंजस्य स्थापित होता है ।

पाठ्यक्रम--

(1) काष्ठ शिल्प में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों एवं औजारों की जानकारी, उनके प्रयोग की सावधानियां तथा सुरक्षा के उपाय ।

(2) यन्त्र प्रयोग एवं कार्य करने का विधिवत् अभ्यास ।

(आठ)—ग्रन्थशिल्प

उद्देश्य—

(1) छात्रों का पुस्तकों एवं अभ्यास पुस्तिकाओं को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने का बोध कराना ।
(2) छात्रों में पुस्तकों को सिलने तथा उनकी जिल्दसाजी का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम—

(1) ग्रन्थशिल्प में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों तथा औजारों की जानकारी, उनके विधिवत् प्रयोग करने का अभ्यास, सावधानियां एवं सुरक्षा के उपाय, यन्त्रों के रख-रखाव की जानकारी ।
(2) साधारण पुस्तकों और नोट-बुकों के पन्ने मोड़ना, उनकी सिलाई करना (जुजबन्दी तथा साबी दोनों प्रकार की), किनारे काटना, पीठ गोल करना, रक्षक कागज लगाना, आवरण चढ़ाना तथा उनकी सुसज्जा करना ।
(3) पुस्तक आवरण का लेखन तैयार कर उनकी सुरक्षा करना ।

(नौ) चर्म शिल्प

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना कि दैनिक जीवन के चर्म से बनी वस्तुयें कितनी उपयोगी हैं ।
(2) छात्रों में चर्म से विभिन्न प्रकार की दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं के निर्माण का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम—

(1) चर्म शिल्प में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों, औजारों तथा सामग्री की जानकारी, उनके विधिवत् प्रयोग करने का अभ्यास, सावधानियां तथा सुरक्षा के उपाय ।
(2) चर्म से तैयार की गयी वस्तुओं में बटन लगाने का अभ्यास ।
(3) कागज से विभिन्न प्रकार के माडल बनाना, औजारों से सही ढंग से काटना, चिपकाना, चमड़े की पट्टी लगाने का अभ्यास ।

(दस) धातु-शिल्प

उद्देश्य—

(1) छात्रों को धातु-अधातु में अन्तर तथा धातु के महत्व का बोध कराना ।
(2) छात्रों में धातुओं से बनी दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुओं के मामूली टूट-फूट की मरम्मत करने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम—

(1) धातु-शिल्प में प्रयोग होने वाले उपकरणों एवं औजारों तथा सामग्रियों की जानकारी, उनके प्रयोग विधि का अभ्यास, सावधानियां तथा सुरक्षा के उपाय ।
(2) यन्त्रों के उचित ढंग से रख-रखाव की जानकारी ।
(3) लोहा, टीन, तांबा, अलमूनियम, शीशा, जस्ता आदि धातुओं की जानकारी तथा उनसे बनने वाली वस्तुओं की जानकारी तथा उनके मामूली टूट-फूट की मरम्मत करने का अभ्यास ।

(ग्यारह) धुलाई, रफू तथा बखिया

उद्देश्य—

छात्रों को बोध कराना कि धुलाई, रफू तथा बखिया द्वारा प्रत्येक परिवार में प्रयोग होने वाले वस्त्रों को अधिक समय तक पूर्ण चमक-दमक के साथ चलाया जा सकता है तथा इस प्रकार आर्थिक बचत की जा सकती है ।

पाठ्यक्रम—

(1) धुलाई, रफू तथा बखिया के उपकरणों, साज-सज्जा तथा सामग्रियों की जानकारी, सही प्रयोग सावधानियां रख-रखाव सुरक्षा के उपाय ।
(2) विभिन्न देशों के बने वस्त्रों की जानकारी ।
(3) प्रक्षालन के विभिन्न प्रकारों की जानकारी तथा अभ्यास ।
(4) विभिन्न प्रकार के धब्बे हटाने की जानकारी तथा अभ्यास ।

(बारह) रंगाई तथा छपाई

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि हर प्रकार के वस्त्रों को किस प्रकार रंगाई तथा छपाई कर उन्हें नयनाभिराम तथा आकर्षक बनाया जा सकता है ।
(2) छात्रों में सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों की रंगाई के कौशल का विकास करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) रंगाई तथा छपाई हेतु प्रयुक्त होने वाले उपकरणों, साज-सज्जा तथा सामग्रियों की जानकारी, सही प्रयोग विधि का अभ्यास, सावधानियां तथा उनका रख-रखाव ।
(2) विभिन्न प्रकार के टेक्सटाइल रेशों की पहचान का अभ्यास ।
(3) कोरी वस्तुओं की अशुद्धियों को निकाल कर उन्हें रंगने योग्य बनाने का अभ्यास ।
(4) सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों पर नमक के रंगों की विधि का अभ्यास ।

(तेरह) सिलाई

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि सिलाई कला के अभ्यास से पर्याप्त धन की बचत की जा सकती है ।
(2) छात्रों में सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों की सिलाई के कौशल का विकास करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) सिलाई के उपकरणों, साज-सज्जा तथा सामग्रियों की जानकारी, उनके सही प्रयोग विधि का अभ्यास सावधानियां तथा रख-रखाव की जानकारी ।
(2) विभिन्न प्रकार के कपड़ों के सिकुड़ने आदि की प्रवृत्ति की जानकारी ।
(3) सूती, ऊनी तथा रेशमी कपड़ों पर लोहा करने की विधि का अभ्यास ।
(4) सूती, ऊनी तथा रेशमी कपड़ों की सिलाई हेतु सही धागों के चुनाव का अभ्यास ।

(चोदह) मूर्ति कला

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि मूर्ति-कला का जीवन से कितना गहरा सम्बन्ध है यह विगत स्मृतियों को जीवित रखने का एक मुखर साधन है ।
(2) छात्रों में मूर्ति-कला के कौशल का विकास करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) मूर्ति-कला में प्रयोग होने वाले औजारों तथा अन्य सामग्रियों की जानकारी, उनकी प्रयोग विधि का ज्ञान, सावधानियां, रख-रखाव तथा सुरक्षा के उपाय ।
(2) मिट्टी व अन्य रद्दी वस्तुओं, प्लास्टर आफ पेरिस, कागज की लुग्दी को कार्योपयोगी बनाने की विधि का अभ्यास ।
(3) अच्छी मिट्टी व कागज की लुग्दी की पहचान का अभ्यास ।
(4) मट्ठियां बनाने की कला की जानकारी ।
(5) टूटे बर्तनों व मूर्तियों को जोड़ने की कला की जानकारी ।

(पन्द्रह) मत्स्य पालन

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि मत्स्य पालन से पौष्टिक आहार प्राप्त होता है, मत्स्योत्पादन एक लाभकारी उद्योग है ।
(2) छात्रों को मत्स्य पालन हेतु प्रेरित करना तथा सही विधि से मत्स्य पालन करना सिखाना ।

पाठ्यक्रम--

(1) मत्स्य पालन के काम आने वाली सामग्रियों की जानकारी ।
(2) मत्स्य पकड़ने के उपकरणों जैसे बंसी, जाल, नाव तथा जहाज की जानकारी तथा छात्र द्वारा मत्स्य पकड़ने का अभ्यास ।
(3) मत्स्य पालन के सामान्य सिद्धान्त, प्रजनन एवं पोषण की जानकारी ।
(4) मत्स्य की सुरक्षा, जीवाणु सम्बन्धी खराबी, इसके कारण तथा सुरक्षा के उपायों की जानकारी ।

(सोलह) मधुमक्खी पालन

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि मधु एकत्र करने के लिये मधुमक्खियों को पाला जा सकता है ।

(2) छात्रों को बोध कराना कि मधु अनेक दवाओं में प्रयुक्त होती है तथा अत्यन्त स्वास्थ्यवर्द्धक भोज्य पदार्थ है ।

(3) छात्रों में मधुमक्खियों को मौन गृह में रखना तथा उनके रख-रखाव और शहद निकालने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) मधुमक्खी पालन तथा शहद निकालने के लिये आवश्यक उपकरणों एवं सामग्रियों की जानकारी ।

(2) मौन गृह की व्यवस्था करना ।

(3) मधुमक्खियों को बक्से में रखने के दोनों प्रकारों की जानकारी (1) मौनवंश में बनछट होने पर इन्हें ड्रम या कनस्टर छोड़कर, धूल उड़ाकर या पानी की बौछार कर रोक लेने की जानकारी तथा अभ्यास, स्वामीबैग से पकड़कर इन्हे बक्से में डालकर बवानगट लाने की जानकारी, (2) मौनवंश को जाले से अथवा पेड़ की खोखल से स्थानान्तरित कर मौन गृह में लाना ।

(4) मधुमक्खियों द्वारा छत्ता बनाने के लिये रात के समय चीनी का घोल प्याले में रखकर उसमें दूध या सूखी घास डालकर ऊपरी व भीतरी, ढक्कन के बीच में रखने की जानकारी ।

(5) धुआँ देकर मधुमक्खियों को भगाकर छत्तों को काटकर मौन गृह में फ्रेमों में फिट करना तथा रानी मक्खी को पकड़कर बक्से में डालना जिससे सभी मधुमक्खियाँ उस बक्से में आने लगें ।

(6) बक्सों को ऐसे स्थान पर रखना जहाँ सभी मधुमक्खियों के आवागमन में किसी प्रकार का रुकावट न हो ।

(सत्रह) मुर्गी पालन

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि प्रोटीन भोजन का एक मुख्य अवयव है । प्रोटीन का सरलता से उपलब्ध होने वाला प्रमुख साधन अण्डा है, जिसे मुर्गी पालन से प्राप्त किया जा सकता है ।

(2) छात्रों में मुर्गी के आवास-व्यवस्था, रख-रखाव व रोग तथा उनके उपचार, मुर्गी फार्म के हिसाब से रख-रखाव का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) मुर्गी के आवास-व्यवस्था का प्रबन्ध करना ।

(1) मुर्गियों के साधारण रख-रखाव की जानकारी प्राप्त करना ।

(3) मुर्गी के विभिन्न रोगों की जानकारी, उनके उपचार एवं रोक-थाम के उपायों की जानकारी ।

(4) मुर्गी पालन प्रारम्भ करने के लिए उचित नस्ल की जानकारी तथा चुनाव ।

(5) स्थानीय मांग के अनुसार यदि अंडों की खपत अधिक है तो अण्डे देने वाली नस्ल की मुर्गियों का पालन करना तथा यदि बाजार में मांस की अधिक खपत है तो मांस के लिए पाली जाने वाली नस्लों का चयन कर मुर्गियों को पालना ।

(अठारह) शाक-सब्जी का उत्पादन

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि हमारे संतुलित आहार में शाक-सब्जी का कितना महत्वपूर्ण स्थान है तथा ये सब प्रकार के विटामिन्स, खनिजों एवं लवणों की आपूर्ति की हमारे शरीर को स्वस्थ रखते हैं तथा रोगों से लड़ने की क्षमता उत्पन्न करते हैं।

(2) छात्रों में मौसम के अनुसार शाक-सब्जी को पैदा करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) शाक-सब्जी उत्पन्न कराने के लिए अच्छी मिट्टी की जानकारी, भूमि तैयार करना, सही मात्रा में आवश्यक खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करना।

(2) शाक-सब्जी की खेती में प्रयोग आने वाले कृषि उपकरणों तथा औजारों की जानकारी, उनके प्रयोग की विधि, सावधानियाँ एवं उनका रख-रखाव।

(3) अधिक उपज देने वाले बीजों की जानकारी एवं उनका चुनाव।

(4) बीज-शोधन प्रक्रिया की जानकारी तथा अभ्यास।

(5) शाक-सब्जी बोने के पूर्व भूमि में उचित मात्रा में नमी बनाये रखने की जानकारी, सिंचाई के समय तथा सही मात्रा की जानकारी तथा अभ्यास।

(6) मौसम के अनुसार शाक-सब्जी की खेती करने का अभ्यास, जिससे कम लागत में अच्छी उपज प्राप्त हो सके।

(उन्नीस) फल संरक्षण

उद्देश्य--

(1) फलों के नष्ट होने की प्रक्रिया का छात्रों को बोध कराना।

(2) विभिन्न प्रकार के फलों के संरक्षण का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) फल संरक्षण हेतु आवश्यक उपकरणों एवं सामग्रियों की जानकारी।

(2) जेली, जैम, अचार, मुरब्बा सास, कचप तथा स्क्वैश की सामान्य जानकारी, उनमें परस्पर अन्तर की जानकारी तथा यह जानना कि कौन सा फल किस वस्तु के लिए तैयार करने में प्रयोग में लाया जाता है।

(3) प्रत्येक प्रकार की वस्तु (जैसे जेली, जैम, अचार आदि) तैयार करने के लिए उनमें प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल (जैसे फल, चीनी, नमक, तेल, घी, मसाले आदि) की सही मात्रा (अनुपात) की जानकारी।

(4) अमरूद की जेली बनाने का अभ्यास।

(5) पपीते का जैम बनाने का अभ्यास।

(6) आम, मिर्चा, कटहल का अचार बनाने का अभ्यास।

(7) गाजर, मूली, शलजम, गोभी, सिंघाड़ा आदि का मिश्रित अचार बनाने का अभ्यास।

(8) आँवले का मुरब्बा बनाने का अभ्यास।

(बीस) रेशम तथा टसर का काम

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि रेशम के कीटों का पालन कर रेशम का धागा प्राप्त किया जा सकता है।

(2) छात्रों में शहतूत के पौधों का उत्पादन करना, शहतूत के पौधों पर रेशम के कीटों का पालन करना, कूवा (कोआ) एकत्र कर उनसे रेशम का धागा प्राप्त करने का कौशल विकसित करना।

पाठ्यक्रम--

(1) रेशम कीट पालन हेतु आवश्यक उपकरणों एवं सामग्रियों की जानकारी सावधानियाँ एवं सुरक्षा के उपाय।

(2) शहतूत की पत्ती का उत्पादन करना।

(3) रेशम कीट पालन एवं कोया उत्पादन ।

(4) कोयें सुखाना एवं कोये की रीलिंग पर धागों (रेशम सूत) को उत्पादन करना ।

(5) पत्तियों को ट्रे में धीरे-धीरे डालने का अभ्यास करना जिसमें कीड़ों को चोट न पहुचे ।

(6) पुरानी पत्तियों को समय से तत्परतापूर्वक ट्रे से हटाते रहना ।

(इक्कीस) सुतली तथा टाट-पट्टी का निर्माण

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि सुतली तथा टाट-पट्टी कुटीर उद्योग हैं जिससे ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था सुधारने में सहायता मिल सकती है तथा कम पूंजी में इसे प्रारम्भ किया जा सकता है एवं इसके लिए कच्चा माल सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है ।

(2) छात्रों में सुतली तथा टाट-पट्टी के निर्माण का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) सुतली एवं टाट-पट्टी के निर्माण के लिए आवश्यक उपकरणों, औजारों एवं सामग्रियों की जानकारी सावधानियां एवं सुरक्षा के उपाय ।

(2) अच्छे रेशमों की जांच पड़ताल करना तथा रेशों के विभिन्न प्रकारों की जानकारी प्राप्त करना एवं पहचानने का अभ्यास करना ।

(3) सुतली कातने तथा उसके 2 प्लाई, 3 प्लाई तथा 4 प्लाई धागों का निर्माण करना ।

(4) कच्चे माल को एकत्र करने में बरतने योग्य सावधानियों की जानकारी प्राप्त करना तथा उनका अभ्यास करना ।

(बाइस) हाथ से कागज बनाना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि आधुनिक युग में ज्ञान के विकास तथा उसे सुरक्षित रखने में कागज का महान् योगदान है ।

(2) छात्रों मे हाथ से कागज बनाने के कौशल का विकास करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) हाथ मे कागज बनाने में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों तथा कच्चे माल की जानकारी, (क) प्रकृति के पदार्थों से मिलने वाला कच्चा माल, (ख) रद्दी कागज उपयोग ।

(2) कच्चे माल को गलाने तथा साफ करने की विधियों की जानकारी तथा अभ्यास (प्रकृति से प्राप्त होने वाले वस्तुओं को छोटे टुकड़ों में काटना, रासायनिक पदार्थों द्वारा गलाना, उबालना, कुटाई करना, कुटी हुई लुग्दी में सफेदा लाने का अभ्यास, लुग्दी तथा रासायनिक पदार्थों को अलग करने की विधि) ।

(3) तैयार लुग्दी की पहचान का अभ्यास ।

(4) तैयार लुग्दी से कागज उठाना ।

(5) हाथ से कागज उठाने की विधियां ।

(तेईस) फोटोग्राफी

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि विगत स्मृतियों को साकार रूप में सुरक्षित रखने के लिए फोटोग्राफी एक सशक्त माध्यम है ।

(2) छात्रों को फोटो खींचने, उसका डेवलपमेन्ट करने, प्रिंटिंग तथा एनलार्जमेन्ट करने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) निगेटिव फिल्मों को तैयार करने की प्रक्रिया की जानकारी ।

(2) फोटोग्राफी के लिए आवश्यक उपकरणों, साज-सज्जा सामग्रियां की जानकारी उसका रख-रखाव तथा आवश्यक सावधानियों की जानकारी, सुरक्षा के नियमों को जानना ।

(3) साधारण कैमरा, बाक्स कैमरा, डबल लेन्स, ट्विन लेन्स कैमरा की जानकारी, फोल्डिंग कैमरा आदि का प्रयोग करना तथा रख-रखाव, सावधानियों की जानकारी ।

(4) कैमरा के मुख्य पुर्जों की जानकारी, उनका प्रयोग तथा सावधानियां ।

(5) डार्क रूम की जानकारी, फोटोग्राफी में प्रकाश का महत्व ।

(6) फोटो खींचने का अभ्यास, फोटोग्राफी हेतु आकर्षक पोज की स्थिति समझाने की जानकारी तथा अभ्यास (आउट डोर तथा इन्डोर फोटोग्राफी का अभ्यास) ।

(7) कैमरे में रील भरने तथा फोटो खींचने के बाद जब भर जाय तो उसे बाहर निकालने के अभ्यास तथा सावधानियां ।

(8) कैमरा द्वारा लाइट के अनुरूप इक्सपोजर देने तथा टाईमिंग का अभ्यास ।

(9) निगेटिव फिल्म तैयार करने का अभ्यास ।

(10) विभिन्न रसायनों से डवलपर तैयार करना तथा फिल्म को डेवलेप करने का अभ्यास ।

(चौबीस) रेडियो मरम्मत

उद्देश्य--

(1) छात्रों का रेडियो, ट्रान्जिस्टर, टेपरिकार्डर तथा टू-इन-वन के बारे में बोध कराना ।

(2) रेडियो तथा ट्रांजिस्टर की असेम्बली एवं रिपेयरिंग का कौशल विकसित करना ।

(3) टेप रिकार्डर तथा टू-इन-वन की मरम्मत करने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) रेडियो तथा इलेक्ट्रानिक का साधारण ज्ञान प्राप्त करना ।

(2) विद्युत् की सामान्य जानकारी ।

(3) रेडियो तथा ट्रांजिस्टर के प्रकारों की जानकारी ।

(4) रेडियो तथा ट्रांजिस्टर के विभिन्न पार्ट्स तथा उनके कार्यों की जानकारी ।

(5) ट्रांजिस्टर रिसीवर पार्ट्स की जानकारी ।

(6) रेडियो तथा ट्रांजिस्टर के दोषों को ढूंढना तथा उनको ठीक करने का अभ्यास ।

(पच्चीस) घड़ी मरम्मत

उद्देश्य--

(1) छात्रों में कम लागत में घड़ियों की मरम्मत तथा रख-रखाव की क्षमता का विकास करना ।

(2) मैकेनिकल तथा इलेक्ट्रिकल प्रकार की कलाई घड़ी टेबुल घड़ी, तथा दीवार घड़ी की मरम्मत सर्विसिंग और संयोजन (असेम्बली) का कौशल विकसित करना ।

(3) छोटे-छोटे कल-पुर्जों को लेकर किये जाने वाले कार्यों में बरतने योग्य सावधानियों का अभ्यास करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) घड़ीसाजों के औजारों की पहचान एवं उनके उपयोग करने की विधियों का अभ्यास तथा सावधानियां ।

(2) विभिन्न प्रकार की मैकेनिकल एवं इलेक्ट्रिकल घड़ियों का अध्ययन ।

(3) घड़ी के कलपुर्जों की बनावट एवं कार्य प्रणाली का अध्ययन ।

(4) घड़ियों की खुलाई, सफाई, आयलिंग एवं बंधाई ।

(5) पुर्जों की मरम्मत एवं जांच तथा सही ढंग के नये पार्ट्स की फिटिंग करना ।

(6) हेयर स्प्रिंग, टाइम सेटिंग का अभ्यास ।

(छब्बीस) चाक एवं मोमबत्ती बनाना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि कम लागत की पूंजी में चाक एवं मोमबत्ती बनाने का लघु कुटीर उद्योग प्रारम्भ किया जा सकता है जिसको अपने आस-पास के परिवेश में हो सकती है ।

(2) छात्रों में चाक एवं मोमबत्ती बनाने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम--

चाक एवं मोमबत्ती बनाने के लिए आवश्यक उपकरणों एवं सामग्रियों की जानकारी, सावधानियां एवं सुरक्षा के उपाय ।

चाक बनाने हेतु--

(1) चाक बनाने के सांचे (गनमेटल तथा एल्यूमिनियम) की जानकारी, सांचों को कसने के लिए पे की जानकारी, उनके प्रयोग का अभ्यास ।

(2) कच्चे माल (प्लास्टर आफ पेरिस, चीनी मिट्टी) की जानकारी तथा प्रयोग विधि की जानकारी एवं अभ्यास ।

(3) 10 : 1 के अनुपात में प्लास्टर आफ पेरिस तथा चीनी मिट्टी मिलाकर आवश्यकतानुसार पानी मिल कर लकड़ी के पतले तख्ते से संमिश्रण का खोठने का अभ्यास करना जिससे वह गाढ़ी लेई सदृश्य तैयार हो जाय ।

(4) उपर्युक्त संमिश्रण को मोबिल आयल लगे सांचे के छिद्रों में भरना तथा सांचे में 10–15 मिनट तक प्लास्टर आफ पेरिस के सूख जाने पर सांचे को खोलकर चाक को बाहर निकाल कर सुखा लेना ।

(5) सूखे हुए चाकों की पैकिंग कर बाजार में विक्रय हेतु तैयार करना ।

मोमबत्ती बनाने हेतु--

(1) मोमबत्ती बनाने के लिए एल्यूमिनियम से बने सांचे की जानकारी तथा प्रयोग विधि का अभ्यास ।

(2) मोमबत्ती हेतु कच्चे माल-- पैराफीन, मोम, सूत तथा आयल रंग की जानकारी एवं प्रयोग विधि की जानकारी ।

(3) सांचे के पलड़ों को खोलकर रूई की सहायता से अन्दर आयलिंग करना, सांचे में धागा लगाने के स्थान पर धागा लगाना तथा सांचे के पलड़ो को मिलाकर सांचे को बन्द करना ।

(4) पैराफीन, मोम को किसी पात्र में आग पर पिघलाकर सांचे के छिद्रों में घोलना तथा सांचे को पूरी तरह से पिघली मोम से भर जाने पर सांचे को ठंडे पानी के टब में डुबाना ।

(सताइस) कालीन तथा दरी का निर्माण

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि अखाड़ों पर बिछाने तथा ड्राइंग रूम को सजाने में कालीन तथा दरी का भारी उपयोग होता है ।

(2) छात्रों में कालीन तथा दरी बनाने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) कालीन तथा दरी के निर्माण में प्रयोग होने वाले उपकरण तथा कच्चे माल की जानकारी ।
(2) सूत छांटना तथा सूत खोलना ।
(3) सूत की कटाई ।
(4) ताना लगाना ।
(5) दरी बुनाई की तकनीकी की जानकारी व बुनाई का अभ्यास ।

(अट्ठाइस, फूलों, फलों तथा सब्जियों का पौध तैयार करना)

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि अच्छी प्रजाति के पौध तैयार कर उनके सही रोपण द्वारा पौधे शीघ्र बढ़ते हैं तथा उनसे उत्पादन भी अधिक होता है ।

(2) छात्रों में मौसम के अनुसार सब्जियों तथा फूलों का चयन कर उनकी पौध तैयार करने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) पौधों का चयन स्थानीय आवश्यकता एवं सुविधा को रखते हुए मौसम के अनुसार उगाई जाने वाली सब्जियों, फलों तथा फूलों की सूची तैयार करना ।

(2) वर्षा काल में लौकी, गोभी, बैंगन, टमाटर, मिर्चा, गुल मेंहदी, जोनिया, गेंदा, पपीता इत्यादि की पौध तैयार करना ।

(3) शीतकाल में फूलगोभी, पातगोभी, गांठगोभी, प्याज, कलेण्डला, डहेलिया, नैस्ट्रोशियम, गुलदावदी, सूरजमुखी इत्यादि की पौध तैयार करना ।

(4) ग्रीष्मकाल में करना, कोचिव, पोटूलाका वरगीनिया इत्यादि की पौध तैयार करना ।

(5) अक्तूबर, नवम्बर में गुलाब की पौध तैयार करना ।

(उन्तीस) लकड़ी तथा मिट्टी के खिलौने का निर्माण

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि लकड़ी तथा मिट्टी के खिलौने बच्चों के लिये आकर्षण के केन्द्र तथा घर पर तथा ड्राइंग रूम सजाने के लिए सुन्दर साधन होते हैं ।

(2) छात्रों में लकड़ी तथा मिट्टी के खिलौने के निर्माण का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) लकड़ी के खिलौने बनाने में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों / औजारों तथा कच्चे माल की जानकारी ।

(2) औजारों का प्रयोग करने का अभ्यास एवं सावधानियां ।

(3) विभिन्न प्रकार के डिजाइनों के अनुसार वन पीस तथा थ्री पीस में लकड़ी के खिलौने तैयार करने का अभ्यास ।

(4) लकड़ी के खिलौने पर फिनिशिंग टच देना तथा पालिश करने का अभ्यास ।

(5) मिट्टी के खिलौने बनाने के लिए उपयुक्त मिट्टी की जानकारी चुनाव, उसे तैयार करना ।

(6) खिलौनों के सांचों की प्रयोग की विधि की जानकारी ।

(7) सांचे के खिलौनों को निकालने, सुखाने तथा भट्ठे में उपयुक्त आंच में पकाने की कला जानकारी तथा अभ्यास ।

(तीस) बेकरी तथा कन्फेक्शनरी का काम

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना है कि सामान्यतः नाश्ते में प्रयोग किये जाने वाले बिस्कुट तथा केक आदि सरलता से घर में बनाये जा सकते हैं ।

(2) छात्रों को बिस्कुट, केक, पेस्ट्री तथा पावरोटी बनाने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम--

(1) बेकरी तथा कन्फेक्शनरी के काम में उपयोग में आने वाले आवश्यक उपकरणों/औजारों तथा ओवन की जानकारी ।

(2) बिस्कुट, केक, पेस्ट्री तथा पावरोटी में प्रयुक्त होने वाली सामग्री तथा उनकी सही मात्रा के अनुपात की जानकारी ।

(3) पावरोटी बनाने की विधियां--स्टेट की विधि, (ख) सालट डिलाइट विधि, (ग) नो टाइम की विधि, (घ) स्पेजडो विधि का ज्ञान प्राप्त करना ।

(4) ब्रेड बनाने की प्रक्रिया--(1) पलाई परमेन्ट, (2) मिक्सिंग, (3) नोडिंग, (4) प्रथम फर्मेंटिंग, (5) इंटरमीडिएट प्रूफ, (6) मोल्डिंग एवं पैकिंग, (7) प्रूफिंग, (8) बेकिंग, (9) कूलिंग, (10) स्लाईसिंग तथा (11) रैपिंग ।

सामाजिक सेवा

(1) सामान्य व्यवहार की बातें, जैसे--सड़कों पर चलने, वाहन चलाने एवं सार्वजनिक स्थानों पर व्यवहार के नियम ।

(2) कक्षा सजावट ।

(3) नशाबन्दी एवं धूम्रपान आदि व्यसनों के कुप्रभाव से अवगत कराना ।

सामान्य निर्देश

(1) विद्यालय का प्रारम्भ सामूहिक प्रार्थना एवं दैनिक प्रतिज्ञा से होना चाहिये ।

(2) प्रार्थना स्थल पर सप्ताह में दो बार प्रधानाचार्य, शिक्षकों, विशेष अतिथियों एवं छात्रों द्वारा नैतिक मूल्यों को जगाने वाले दो मिनट के प्रवचन कराये जायें ।

(3) विद्यालय में समय-समय पर अभिनय, लेख, कहानी, सूक्ति, कविता पाठ, अन्ताक्षरी आदि की प्रतियोगिताओं, महापुरुषों के जन्म दिनों तथा वार्षिकोत्सव एवं राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन किया जाय ।

(4) छात्रों को प्रतिदिन निर्धारित व्यायाम एवं योगदान करने के लिये प्रेरित किया जाय ।

(5) सामूहिक व्यायाम एवं खेलों का आयोजन किया जाय ।

(6) समाज सेवा के कार्य के अन्तर्गत विद्यालय प्रदर्शनी का आयोजन, विद्यालय की सफाई, मरम्मत एवं सजावट तथा पुस्तकालय सेवा जैसे रचनात्मक कार्य भी कराये जायें ।

3--मूल्यांकन--

1--उपर्युक्त पाठ्यक्रम का मूल्यांकन पूर्णतया आन्तरिक होगा ।

2--प्रत्येक छात्र को एक डायरी रखनी होगी, जिसमें उसके द्वारा किये गये कार्य नैतिक सत् प्रयास शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत किये गये अभ्यासों, कृत समाजोपयोगी, उत्पादक कार्यों एवं सामाजिक सेवा के रूप में किए गए प्रयत्नों तथा कार्यों का सांख्यिक विवरण सम्बन्धित अध्यापक द्वारा अंकित हो तथा प्रत्येक माह के अन्त में यह विवरण मूल्यांकन हेतु कक्षाध्यापक के माध्यम से प्रधानाचार्य के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा ।

3--मूल्यांकन के आधार पर इसमें तीन श्रेणियां ए, बी, सी प्रदान की जायेगी । जिन छात्रों ने कार्य, न पूरा किया हो तो उन्हें तब तक सामान्य परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित नहीं किया जायेगा, जब तक कि निर्धारित कार्य पूरा न कर लें जो छात्र उपर्युक्त तीनों श्रेणियों में से किसी भी श्रेणी के योग्य नहीं पाये जायेंगे, उनकी विवरण पुस्तिका (डायरी) में तद्नुसार प्रविष्टि कर दी जायेगी तथा ऐसा छात्र मुख्य परीक्षा में बैठने के लिए अर्ह न होगा ।

निर्धारित पुस्तकें

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है । विद्यालय के प्रधान सम्बन्धित विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपर्युक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

पूर्व व्यावसायिक का पाठ्यक्रम

(1) ट्रेड--टेक्सटाइल डिजाइन

उद्देश्य--

1--छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।

2--छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।

3--छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।

4--छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।

5--छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना :

6--छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

स्वरोजगार के अवसर--

टेक्सटाइल डिजाइन ट्रेड से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं--

(क) वेतनभोगी रोजगार--

(1) टेक्सटाइल इन्डस्ट्रीज म निम्न पदों पर रोजगार प्राप्त हो सकता है--

(क) सहायक रंगाई मास्टर,

(ख) सहायक छपाई मास्टर ।

(2) छोटे कारखानों में--

छपाई, रंगाई के सहायक कार्यकर्ता के रूप में ।

(ख) स्वरोजगार के रूप में--

(1) घरेलू व्यवसाय के रूप में छपाई कार्य, रंगाई कार्य करके माल को स्वयं बेच सकता है या बड़े उद्योगों में सप्लाई कर सकता है ।

(2) ग्राहकों को आवश्यकतानुसार आर्डर लेकर कार्य पूरा करके अपनी आय कर सकता है ।

पाठ्यक्रम के स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई 1--

(क) उद्यमिता बोध--उद्यम एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाओं उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार के संचालन का ज्ञान, विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई 2--

(क) टेक्सटाइल परिचय--रेशा धागा, कपड़े का सामान्य ज्ञान ।

(ख) टेक्सटाइल से सम्बन्धित डिजाइन का अध्ययन--बुनाई, रंगाई, छपाई, वाश पेंटिंग का साधारण नमूना तैयार करना ।

इकाई 3--

(क) डिजाइन तैयार करने के मूलभूत सिद्धान्त तथा प्रारम्भिक डिजाइन का प्रमुख नमूना तैयार करना ।

(ख) डिजाइन में रंगों एवं रंग योजना का प्रयोग । विभिन्न प्रकार के डिजाइन अवधारणा का निर्माण करना जिसको हम छपाई, रंगाई व पेन्टिंग में प्रयोग कर सकते हैं ।

प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(1) रेशों की पहचान--सूती, ऊनी, रेशमी । परीक्षण विधि--मौलिक, जलाकर ।

(2) कपड़े/धागे की रंगाई, छपाई के लिए तैयार करना । उबालना, विरजन करना--मारकीन और कच्चा सूत ।

(3) नमक के रंगों से छपाई करना--रूमाल या दुपट्टा कपड़ा--सूती कपड़ा धागा ।

(4) नप्थोल रंग से रंगाई करना--तीन गहरे रंग का प्रयोग, इन रंगों का प्रयोग पर्दे इत्यादि पर किया जा सकता है ।

(5) ठप्पे (कपड़ों के) द्वारा छपाई--मेजपोश, रूमाल, तकिया का गिलाफ । कपड़ा--सूती ।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक
1	2	3	4
1	वस्त्र विज्ञान के मूल सिद्धान्त	जे० पी० शैरी	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।
2	वस्त्र विज्ञान एवं परिवार (तृतीय संस्करण)	प्रो० प्रेमिला वर्मा	यूनिवर्सल बुक डिपो, लखनऊ ।
3	हाउस होल्ड टेक्सटाइल	दुर्गादत्त	बुक कम्पनी, नई दिल्ली ।
4	टेक्सटाइल केयर एण्ड डिजाइन	एन० सी० ई० आर० टी० एक्सप्लेनर, इन्स्ट्रक्शनल, मैटेरियल फार क्लासेज, दिल्ली IX-X	एस० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली ।

(2) ट्रेड--पुस्तकालय विज्ञान

उद्देश्य—

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।

(3) छात्रों में 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक पुस्तकालय विज्ञान ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि उत्पन्न करना ।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव उत्पन्न करना ।

(6) छात्रों को पुस्तकालय विज्ञान ट्रेड की प्रारम्भिक जानकारी से अवगत कराना ।

रोजगार के अवसर—

(1) वेतनभोगी रोजगार के अवसर--

(क) ग्रामीण, कम्युनिटी सेन्टर, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, पंचायत तथा अन्य लघु स्तरीय पुस्तकालयों में रोजगार के अवसर ।

(ख) विभिन्न श्रेणी के पुस्तकालयों में पुस्तक प्रदाता, जमादार, पुस्तक संरक्षण सहायक तथा शाटर के रूप में रोजगार के अवसर ।

(2) स्वरोजगार के अवसर--

(क) पुस्तकालय का अध्ययन-सामग्रियों की जिल्दबन्दी का व्यवसाय ।

(ख) पुस्तकालय उपकरण एवं उपस्कर निर्माण का व्यवसाय ।

(ग) पुस्तकालय एवं उसकी अध्ययन सामग्रियों की सुरक्षा एवं संरक्षण का व्यवसाय ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों का प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इनकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक (लिखित परीक्षा)

1--(क) उद्यमितता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या । वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनायें । उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता के गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योगों की परिभाषा सीमायें तथा लाभ। राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग . . . हेतु सरकारी तथा गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान, विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं का परिचय।

2--पुस्तकालय का परिचय, परिभाषा, उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व पुस्तकालयों के विभिन्न प्रकार (रूप) पुस्तकालय विज्ञान के पांच सिद्धान्तों की अवधारणा।

3--पुस्तकालय उपकरण उपस्कर एवं साज-सज्जा।

4--पुस्तकालय अध्ययन--सामग्री की अवाप्ति प्रक्रिया, उनके उपयोग हेतु सुनियोजन, फलक व्यवस्था तथा प्रदायक सेवा।

पत्रिकाओं का अभिलेख एवं रख-रखाव।

प्रयोगात्मक

(1) लघु प्रयोग :

पुस्तकालयों के निम्नलिखित उपकरणों का प्रारूप तैयार करना--

बुक-प्लेट, बुक-लेबिल, तिथि-पत्रों, पुस्तक-पत्र, पुस्तक-पाकेट, पुस्तकालय-पत्रक, सूची-पत्रक, सूचना निर्देशक-पत्र, तिथि निर्देशक, बुक सपोर्टर।

(2) दीर्घ प्रयोग :

(क) पुस्तकालय के निम्नलिखित उपस्करों एवं उपकरणों का प्रारूप, (डिजाइन तैयार करना):--
परिग्रहण-पंजिका, समाचार-पत्र तथा पत्रिका-पंजिका, निर्गत पंजिका, कैटलाग, कैबिनेट चार्जिंग ट्रे, डिसप्ले, रैक, एटलस, स्टैण्ड, शब्दकोष स्टैण्ड।
पुस्तकों की मरम्मत, जुजबन्दी एवं सादी सिलाई द्वारा जिल्दबन्दी करना।

(ख) वर्गीकरण एवं सूचीकरण प्रायोगिक का मूल्यांकन, सत्रीय कार्य के अन्तर्गत (आगे उल्लिखित क्रम संख्या 4 एवं 5 पर आधारित कार्य करना।

(1) सत्रीय कार्य--

छात्र कक्षा 9 में निम्नलिखित कार्य करेंगे और उनका अभिलेख तैयार कर सत्रीय कार्य के मूल्यांकन हेतु सुरक्षित रखेंगे :

1--पचास पुस्तकों की परिग्रहण पंजिका में प्रविष्टि।

2--पांच पुस्तकों का उपयोग हेतु सुनियोजन।

3--पत्र-पत्रिका से पांच समाचार-पत्र तथा दस पत्रिकाओं की प्रविष्टि।

4--सौ पुस्तकों का ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति से तीन अंकों तक का वर्गांक बनाना।

5--पचीस पुस्तकों के मुख्य, अतिरिक्त एवं अन्तर्देशीय संलेख को पत्रक स्वरूप सूची रण ए0 ए0 सी0 आर-2 के अनुसार बनाना

(2) व्यवहारिक अध्ययन--

1--छात्र द्वारा किन्हीं दो पुस्तकालयों की कार्य-प्रणाली का ज्ञान प्राप्त कर दस पृष्ठों की आख्या प्रस्तुत करना।

2--किसी जिल्दसाज की दुकान पर भौतिक ग्रन्थ विज्ञान एवं जिल्दसाजी का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करना एवं किये गये कार्य का विवरण प्रस्तुत करना।

3--ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति के तृतीय सारांश में प्रयुक्त पदों के हिन्दी समानार्थी शब्दों का ज्ञान।

निर्धारित पुस्तकें--

कोई भी पुस्तक निर्धारित एवं संस्तुत नहीं की गई है। विद्यार्थियों से सम्बन्धित विषय के अध्यापक पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तकों का चयन कर लें।

(3) ट्रेड–पाक शास्त्र (कुकर)

उद्देश्य––

1––भोजन से प्राप्त होने वाले पोषक–तत्वों का ज्ञान कराना ।

2––भिन्न भोज्य–सामग्रियों का प्रकृति तथा रसायनिक संगठन के आधार पर भोजन पकाने की विधियों से अवगत कराना ।

3––व्यावसायिक रूप से विक्रय योग्य व्यंजन बनाने की क्षमता उत्पन्न करना ।

4––विभिन्न प्रदेशों के विशिष्ट व्यंजनों की जानकारी देना ।

5––विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाने की विधियों के आदान–प्रदान द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत करना ।

6––खाद्य–सामग्रियों एवं तरीकों में संदूषण के कारणों से अवगत कराना ।

7––व्यवसायिक अभिरुचि को बढ़ाना ।

8––समाज में भोजन की आदतों एवं पोषण स्तर में वृद्धि लाना अर्थात् पोषण अल्पता के कारण होने वाले रोगों में कमी लाना ।

9––छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधा पूर्वक ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।

10––छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।

रोजगार के अवसर––

(क) वेतनभोगी––

1––किसी होटल में नौकरी की जा सकती है ।

2––खान–पान उद्योग के अन्य स्वरूपों जैसे अस्पताल, छात्रावास, फैक्ट्री एवं परिवहन कैटरिंग संस्थान में नौकरी की जा सकती है ।

(ख) स्वरोजगार––

1––भोजनालय स्थापित किया जा सकता है ।

2––होटल (राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे जहाँ वाहन खड़ा करने व उसके रख–रखाव, व्यक्तियों के रहने एवं भोजन की व्यवस्था हो) स्थापित किया जा सकता है ।

3––पाकशास्त्र के प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित कर, उनका संचालन किया जा सकता है ।

4––पाक शास्त्र से सम्बन्धित उपकरणों/संयन्त्रों की विक्रय की एक जानकारी केन्द्र स्थापित किया जा सकता है ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन :

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक लिखित तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक––

इकाई–1

(क) उद्यमिता बोध उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या,

वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनायें, उद्यमिता मूल एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(ख) लघु उद्योग एवं रोजगार––लघु उद्योग की परिभाषा एवं सीमायें एवं लाभ । राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व/लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं का परिचय ।

इकाई--2

(1) पाक कला की परिभाषा, उत्पत्ति एवं उद्देश्य ।

(2) पाक शास्त्र की शब्दावली--

एरोमेट्स	ब्लीचिंग	रिफ्रेश
बैटर	कॉग्लेट	शार्टनिंग
बोटिंग	क्रोटॉन्स	विपिंग
कैरामेल	डो	जूलियन
कुजीन	ग्लूटेन	रेजिंग एजेन्ट्स
गार्निश	आड्रव	रू
आग्रेटिन	मिन्स	सॉटे

इकाई--3

1--कच्ची खाद्य सामग्रियों का परिचय एवं उनको खरीदते समय ध्यान देने योग्य मानक--नमक, दूध तेल एवं वसा, रेजिंग एजेन्ट्स, मिठास देने वाले पदार्थ, गाढ़ापन देने वाले पदार्थ, अण्डा, अनाज, दालें, सब्जियाँ मांस, मछली ।

2--भोजन पकाने की विधियाँ--उबालना, पोचिंग, ब्रेजिंग, भाप द्वारा पकाना, स्ट्यूइंग, फ्राइंग, रोस्टिंग, ग्रिलिंग या बॉयलिंग, बेकिंग या ग्रिडलिंग ।

प्रयोगात्मक

(1) भारतीय व्यंजन (खाद्य उत्पाद)--

1--चावल--वेजिटेबिल पुलाव, प्लेन फ्राइड राइस, कोकोनट मलो राइस, बिरयानी ।

2--रोटी--मिस्सी रोटी, भरवी पराठा, नान, कचौड़ी ।

3--दाल--दाल मक्खनी, सूखी मसाला दाल ।

4--सब्जी--वेजिटेबिल कोफ्ता, वेजिटेबिल कोरमा, भरवा शिमला मिर्च या टमाटर, पनीर पसंदीदा, सूखी सब्जी ।

5--मांस--कोरमा, शामी कबाब, रोगनजोश, मटर कीमा, मटर चिकन ।

6--रायता--बूंदी, खीरा, टमाटर, आलू ।

7--सलाद--सलाद काटना, सजाना ।

8--मीठा--गुलाब जामुन, रसगुल्ले, बर्फी, फिरनी ।

9--स्नैक्स--समोसा, कटलेट्स, वेजिटेबल रोल्स, वेजिटेबल कबाब ।

10--पेय पदार्थ--चाय, काफी, कोल्ड काफी, लस्सी ।

11--अण्डा--एगकरी, आमलेट, स्क्रैम्बल्ड एग पोच एग ।

(2) पाश्चात्य व्यंजन--

1--सूप--क्रीम आफ टोमैटो सूप, धुली मसूर की दाल का सूप, मिक्स्ड वेजिटेबल सूप ।

2--वेजिटेबल--बेक्ड वेजिटेबल, बेक्ड पोटैटो, सॉटे पीज, क्रीम्ड कैरट्स ।

3--मीट एवं मछली--आइरिश स्टयू, बेक्ड फिश, फिशफिंगर्स ।

4--चायनीज--चाऊमीन, चायनीज फ्राइड राइस ।

5--पुडिंग--ब्रेड बटर पुडिंग, कैरेमल कस्टर्ड फ्रूट क्रीम ।

(3) प्रान्तीय--

उत्तर भारतीय--छोले भटूरे, फिश लाई ढोकला ।

दक्षिण भारतीय--इडली, डोसा, सांभर, नारियल चटनी ।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम एवं पता
1	2	3	4
1	भारतीय एवं पाश्चात्य पाकशास्त्र के सिद्धान्त एवं व्यंजन विधियां	सुश्री अनुपम चौहान	हिन्दी प्रचारक संस्थान, पो० बा० नं० 1106। पिशाच मोचन, वाराणसी
2	आहार एवं पोषण विज्ञान	श्रीमती ऊषा टंडन	स्वास्तिक प्रकाशन एवं पुस्तक विक्रेता, अस्पताल मार्ग, आगरा ।

ट्रेड—(4) छाया चित्रण (फोटोग्राफी)

उद्देश्य—

छाया चित्रण मात्र एक ललित कला ही नहीं है, अपितु एक स्वतन्त्र व्यवसाय के रूप में तेजी से उभरा है । व्यक्ति चित्रण के साथ-साथ यह जर्नलिज्म का एक महत्वपूर्ण अंग है । इसका उपयोग वैज्ञानिक अनुसंधानों, तकनीकी क्रियाओं को स्पष्ट करने एवं अध्ययन करने में तथा शिक्षण कार्य के अपेक्षाकृत सुगम बनाने एवं प्रभावकारी बनाने में हो रहा है । छाया चित्रण का अध्ययन न केवल व्यक्तित्व विकास एवं सौन्दर्यबोध को प्रखर करने में सशक्त है अपितु वह उपार्जन क्षमता भी प्रदान करेगा ।

छाया चित्रण के प्रारम्भिक अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इसके ज्ञान को निम्नलिखित अध्यायों में निरूपित किया गया है—

(1) स्वरोजगार ।

(2) छाया-चित्रण परिचय, तथा संक्षिप्त इतिहास, व्यावसायिक उपयोगिता एवं आधारभूत सम्बन्धित विषयों (फन्डामेन्टल सब्जेक्ट्स) का आवश्यक ज्ञान ।

(3) छाया-चित्रण सम्बन्धी उपकरणों का ज्ञान एवं प्रकाश संवेदित (फोटो सेन्सिटिव, रासायनिक यौगिकों के उपयोग एवं चित्रण कुशलता सम्बन्धी जानकारी ।

(4) बाक्स कमरा एवं उसके उपयोग की विस्तृत जानकारी, इसमें छाया चित्रण के लिए कैमरे के बिम्ब उद्भासित (एक्सपोज) करना तथा रासायनों के उपयोग फिल्म पर बने बिम्ब से संवेदनशील कागज पर प्रतिबिम्ब निरूपण प्रणाली सम्मिलित है ।

(5) छाया चित्रण सम्बन्धी सहायक उपकरण, प्रकाश के विभिन्न स्रोत तथा चित्र का सुरुचिपूर्ण ज्यामितिक प्रारूप निर्धारण (कम्पोजीशन) करने की जानकारी ।

(6) छाया चित्रण के विभिन्न क्षेत्रों में से दो विशिष्ट क्षेत्रों—(1) व्यक्ति चित्र (पोट्रेट) तथा (2) प्राकृतिक दृश्यावली अंकन (लेण्डस्केप) का अपेक्षाकृत विस्तृत जानकारी ।

कार्य के अवसर—

(1) स्वरोजगार—

1—फ्रीलान्स फोटो जर्नलिस्ट (स्वैच्छिक फोटो पत्रकारिता)
2—कला भवन स्वामित्व

(2) वेतनभोगी रोजगार—

1—छाया चित्रकार के पद पर—
—शोध संस्थानों में,
—औद्योगिक संस्थानों में,
—मुद्रणालयों में,
—संग्रहालयों में, कला भवनों आदि में,
—शिक्षा संस्थाओं में,
—समाचार (दैनिक एवं पाक्षिक) पत्र-पत्रिकाओं में आदि

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन—

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों के प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी बाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

(1) [क] उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं संभावनाएं । उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

[ख] लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग म सहायक सरकारी एवं गैरसरकारी एजेंसियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, रजत प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान । विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

(2) फोटोग्राफी--परिचय, संक्षिप्त इतिहास उपयोगिता--

1--कैमरों के प्रकार, पिन होल, घुक्स, फोल्डिंग, रिफलैक्स, फील्ड कैमरा, मिनिएचर (लघु) तथा सब मिनिएचर (अति लघु) ।

--कैमरा के विभिन्न अंग--

(क) लेन्स--विभिन्न प्रकार के लेन्स, फोकल बिन्दु, फोकल दूरी, साधारण लेन्सों द्वारा वस्तु के बिम्ब का बनाना । क्षेत्र की गहनता रेखाचित्र द्वारा समझना ।
लेन्सों में दोष--वर्णीय (क्रोमेटिक) एवं गोलीय, दोषों का निवारण नार्मल वाइड एंगिल तथा टेलीफोटो लेन्स ।

(ख) अपरचर या द्वारक--कार्य, विभिन्न प्रकार, रचना, संख्या ।

(ग) शटर या कपाट--कार्य, विभिन्न प्रकार जैसे, लीफ/ब्लेड शटर फोकल प्लेन आदि उनकी रचना ।

(घ) दृश्यदर्शी, (View find) सीधा दृश्यदर्शी, दर्पण ग्राउण्ड ग्लास (घिसा हुआ कांच) तथा दर्पण-पटा प्रिज्म दृश्यदर्शी ।

(ङ) फिल्म प्रकोष्ठ (Film chamber) रचना, फिल्म की हाथ द्वारा (मैनुअल) तथा आटोमेटिक वाइंडिंग ।

3--फोटोग्राफिक फिल्म तथा पेपर, प्रकाश संवेदनशील पदार्थ, फोटोग्राफिक फिल्म तथा पेपर की संरचना तथा उनके प्रकार । धीमा स्लो (धीमा), मध्यम (मीडिया) तथा तेज (फास्ट) फिल्में । फिल्मों का गति व्यक्त करने के लिए ए0 एस0 ए0 तथा डिम (Dim) पद्धति । पैक्रोमेटिक तथा आर्थो-क्रोमेटिक फिल्में तथा पेपर । पेपर के विभिन्न ग्रेड एवं वेट, विभिन्न प्रकार की फिल्में ।

प्रयोगात्मक

प्रयोगात्मक लघु--

1--कैमरे (बाक्स) की संरचना का अध्ययन कीजिए एवं चित्र खींचिए (सभी भागों का नाम लिखिए) ।

2--कैमरे (बाक्स) का संचालन सीखना ।

3--कैमरे के साथ उपयोग होने वाले प्लेट, एक्सपोजर, मोटर ड्राइपाड स्ट्रेन्ड इत्यादि का अध्ययन ।

4--किसी निगेटिव का कान्ट्रेक्ट प्रिन्ट बनाना ।

5--किसी निगेटिव का एनलार्जमेन्ट बनाना ।

6--किसी प्रिन्ट को टूनिंग तथा ग्लेजिंग तथा पेस्टिंग करना ।

7--पीले फिल्टर का प्रयोग कर फोटो लेना ।

8--बनाने के बाद प्रिन्ट के defect (त्रुटियों) का अध्ययन तथा साधारण त्रुटियों को दूर करना ।

प्रयोगात्मक दीर्घ--

1--कैमरे के शटर स्पीड एवं एपन्चर का उद्भासन (एक्सपोजर) समय पर प्रभाव का अध्ययन, फोटो खींच कर करना ।

2--फोटो खींचकर या रेफ्लेक्स कैमरे द्वारा Aperture का फोकस की गहनता, depth तथा Sharpness पर प्रकाश का अध्ययन करना ।

3--एनलारजर की रचना एवं संचालन का अध्ययन करना, सही उद्भासन समय निकालना एवं लीवर/अण्डर एक्सपोजर का अध्ययन ।

4—निगेटिव के ग्रेड का अध्ययन तथा प्रिन्ट के लिए विभिन्न पेपर ग्रेड के प्रभाव का अध्ययन ।

5—एक्सपोजर समय पर फिल्म की गति के प्रभाव का अध्ययन ।

6—चित्र के कम्पोजीशन का अध्ययन करना ।

7—बच्चे, महिला एवं वृद्ध के पोर्ट्रेट खींचना ।

8—लैण्ड स्केप फोटो खींचना ।

9—डार्क रूम के साज सामान तथा ले-आउट का अध्ययन करना ।

10—डेवलपमेन्ट टाइम का चित्र पर प्रभाव एवं ओवर/अन्डर डेवलपमेन्ट का अध्ययन ।

11—बाक्स कैमरे द्वारा कम से कम एक कलर फोटो लेना तथा अध्ययन करना ।

12—किसी विषय पर प्रोजेक्ट Project करना, जैसे पोर्ट्रेट, लैण्ड स्केप ।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम व पता
1	2	3	4
1	डायमण्ड कम्पलीट फोटोग्राफी	श्रीकृष्ण श्रीवास्तव	डायमण्ड पाकेट बुक्स, दिल्ली वितरक—विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
2	फोटोग्राफी सहज पाठ	अशोक डे	इण्डियन विक्टोरियल, पब्लिशर्स, कलकत्ता । वितरक—विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
3	ट्रिक फोटोग्राफी ऐण्ड कलर प्रासेसिंग	ए0 एच0 हाशमी	यूनिवर्सल बुक सेन्टर, लखनऊ ।
4	प्रैक्टिकल फोटोग्राफी	ए0 एच0 हाशमी	तदेव
5	गुड फोटोग्राफी	कोडक	यूनिवर्सल बुकसेलर, लखनऊ ।
6	फोटोग्राफी स्पोर्ट्स	,,	तदेव
7	मोविमेकर एच0 बी	,,	तदेव
8	दी होम वीडियो पिक्चर	,,	तदेव
9	फोकल गाइड टू ट्रैडिंग	,,	तदेव
10	फोकल गाइड मूवी मेकिंग	,,	तदेव
11	दी फोकल गाइड ट साइड टॉर	,,	तदेव
12	दी फोकल गाइड टू एक्शन फोटोग्राफी	कोडक	तदेव
13	दी पाकेट गाइड टू फोटोग्राफी चिल्ड्रेन	,,	तदेव
14	गाइड टू परफेक्ट पिक्चर	,,	तदेव
15	वे आफ प्रैक्टिकल फोटोग्राफी	,,	तदेव

(5) ट्रेड बैंकिंग एवं कन्फेक्शनरी

उद्देश्य—

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपर्युक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना।

रोजगार के अवसर--

बेकरी एवं कन्फेक्शनरी व्यवसाय में शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं :

(क) वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में--

1--बेकरी उद्योग में नौकरी

2--होटल/मेस में नौकरी

3--कच्चे पदार्थों के भण्डारण में प्रभारी के रूप में।

(ख) स्वरोजगार--

(1) कुटीर उद्योग स्थापित करना।

(2) कच्चे माल के क्रय-विक्रय का धन्धा चलाया जा सकता है।

(3) बिक्री कार्य में।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इनकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी :

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई-1

(1) उद्यमिता बोध--

उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषायें एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों म स्वरोजगार का महत्व एवं संभावनाएं, उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।

(2) लघ उद्योग एवं स्वरोजगार--

लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं एवं लाभ। राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व एवं उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया लघु औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2

(1) बेकरी विज्ञान का ज्ञान, महत्व एवं उद्देश्य।

(2) बेकरी उपकरणों का संक्षिप्त ज्ञान, बेकरी ओवन एवं भट्टी।

(3) बेकरी तकनीकी शब्दावली।

(4) [क] ब्रेड बनाने की विधियों के नाम,
[ख] स्ट्रेट डो विधि से ब्रेड बनाने का विस्तृत तरीका,
[ग] ब्रेड बनाने की विभिन्न प्रक्रियाओं का संक्षिप्त ज्ञान,
[घ] ब्रेड की बीमारियों के नाम व बचाव।

इकाई-3

बेकरी व कन्फेक्शनरी में प्रयुक्त होने वाली कच्ची सामग्री का संक्षिप्त ज्ञान (मैदा, चीनी, घी, अण्डा, ईस्ट नमक, पानी, दूध, बेकिंग पाउडर, सुगन्ध, रंग, कोको एवं चाकलेट, सोयाबीन, आटा (मक्का आटा)।

प्रयोगात्मक

लघु प्रयोग—

1—कोकोनट कुकीज
2—कंडेन्सड कुकीज
3—कंडेन्सड बिस्कुट
4—जीरा बिस्कुट
5—बटर स्पंज केक
6—स्वीस रोल
7—डेकोरेटिव पेस्ट्री
8—रायल नाईसिंग, क्रीम आइसिंग
9—गम पेस्ट
10—मिल्क टाफी

दीर्घ प्रयोग—

1—ब्रेड स्टेट डो विधि से
2—फ्रूट बन्स
3—स्वीट बन्स
4—ब्रेड रोल
5—फ्रूट केक
6—वेजीटेबिल पैटीज
7—हाटक्रास बन्स
8—पाइन एपिल पेस्ट्री
9—बर्थडे केक (विथ आइसिंग)

संस्तुत पुस्तकें

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम	मूल्य
1	2	3	4	5
				रुपया
1	अप-टू-डेट कन्फेक्शनरी इण्डस्ट्रीज	..	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	30.00
2	बी सुगम बुक आफ बेकिंग	..	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	20.00
3	बेकिंग तथा कन्फेक्शनरी सिद्धान्त एवं विधियाँ	सुश्री अति उत्तमा चौहान	हिन्दी प्रचारक संस्थान, मी 21/30, पिशाच-मोचन, वाराणसी-221010, पो0 बा0-1106, पिशाचमोचन, वाराणसी	50.00
4	किचन गाइड	..	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	70.00
5	बेकिंग	बी0 एन0 अग्निहोत्री	कृषि साहित्य प्रकाशक, नरही, लखनऊ	50.00
6	बेकिंग तथा कन्फेक्शनरी	राम किशोर अग्रवाल	भारत प्रकाशन मन्दिर, मेरठ 142, विजय नगर, वेस्ट कचहरी रोड, मेरठ	85.00

(6) ट्रेड--मधुमक्खी पालन

उद्देश्य—

(1) मधुमक्खी पालन औद्योगीकरण की जानकारी प्राप्त कर बढ़ती हुई बेरोजगारी को दूर करना एवं बेरोजगारी दूर करने के लिए अन्य राष्ट्रीय योजनाओं को छात्रों को समझाना ।

(2) शुद्ध मधु-मोम उत्पादन को मात्रा की वृद्धि करना तथा बिक्री कर के प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना तथा बच्चों का उद्यमिता प्रदान कर उद्यमी बनाना ।

(3) बच्चों, बीमार एवं कमजोर व्यक्तियों के लिए उपयोगी वस्तु (मधु) औषधि एवं पोष्टिक उत्पादन करके आय में वृद्धि करना ।

(4) ग्रामीण अंचल के निर्धनों के लिए आय का साधन स्रोत ।

(5) कम पूंजी लगाकर मधुमक्खी पालन कर शहद के रूप में फूलों के रस को एकत्रित करना ।

(6) मधुमक्खी पालन उद्योग में दक्षता, निपुणता प्राप्त कर जीवकोपार्जन के लिए उत्तम बनाना ।

(7) मधुमक्खी पालन उद्योग के लिए मौनगृह, छोटे उपकरणों का ज्ञान प्राप्त करना ।

(8) मधुमक्खी पालन द्वारा किसानों एवं बागवानों की फसलों, फलों का उत्पादन 20 प्रतिशत से 30 प्रतिश. तक वृद्धि करने का ज्ञान प्राप्त करना ।

(9) मोम-पराग, रायल, जेली, मौन विष, प्रोपेजिस का ज्ञान, उपयोग की जानकारी प्राप्त करना ।

रोजगार के अवसर :—

(क) वेतनभोगी :—

1—मधुमक्खी पालक सहायक

2—मौन पालक प्रदर्शक

3—सहायक मौन पालक

4—सहायक काष्ठ कला प्रशिक्षक या शिक्षक

5—सहायक मधु विकास निरीक्षक

6—मधुमक्खी पालक शिक्षक या प्रशिक्षक

7—मधु विकास निरीक्षक

8—शोध सहायक (मधुमक्खी पालन)

(ख) स्वरोजगार :—

1—मधु मोम उत्पादक

2—मोमी छत्तादार उत्पादक

3—मौन गृह एवं उपकरण निर्माणकर्ता एवं विक्रेता

4—पराग, रायल, जेली, मौन, विष उत्पादक

5—मौन वंश प्रजनन करके विक्रय करना

6—शहद, मौम, रायल, जेली से औषधि निर्माण करना

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन :

इस ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों का प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक :

इकाई :

(क) उद्यमिता शोध—उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं, उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार—लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सहकारी तथा गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान, विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं का परिचय।

इकाई—2 :

मौन पालन की परिभाषा, व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र के लिए महत्व तथा भारत वर्ष में एवं इस प्रदेश में मधुमक्खी पालन का इतिहास एवं विकास की सम्भावनाएं।

जन्तु जगत में मौन (मधुमक्खी) का जैविक स्थान। देश में पायी जाने वाली मधुमक्खी की जातियों की पहचान, स्वभाव, सामान्य व्यवहार, तुलनात्मक अध्ययन एवं उपयोगिता।

इकाई—3 :

(1) मधुमक्खी की शरीर की वाह्य रचना, सिर, धड़ एवं उदर तथा प्रत्येक खण्ड में पाये जाने वाले अंग जैसे मुखांग, स्पर्शेन्द्रिय (एन्टिना) आँखें, पंख, मोम ग्रन्थियां, पेट तथा डंक की पहचान एवं उपयोगिता।

1—मधुमक्खी का विकास, मौन का जीवन चक्र, मौन परिवार का संगठन, कमेरी, नर एवं मादी की पहचान तथा उनके छत्तों की पहचान एवं उनके कार्य।

2—मौन प्रबन्ध (हनी बी मैनेजमेन्ट) की परिभाषा, साधारण एवं ऋतु के अनुसार मौन प्रबन्ध की देखरेख, प्राकृतिक मधुमक्खी परिवार को मौन गृह में बसाना, । बगछूट, घर छूट, लूटपाट, कमेठ मां मौन की पहचान, नियंत्रण के उपाय।

प्रयोगात्मक

(क) दीर्घ प्रयोग—

1—विभिन्न मधुमक्खी की जातियों की पहचान कराना और अभ्यास पुस्तिका पर उनका चित्र बनाना।

2—मौन के जीवन-चक्र (अण्डा, लार्वा, प्यूपा एवं वयस्क) की पहचान कराना।

3—मधुमक्खी के वाह्य शरीर का चित्र बनाना और उसके प्रत्येक अंगों की प्रयोगात्मक कार्य कराना।

4—मौन परिवार में प्रत्येक सदस्य (कमेरी, नर और नारी) की पहचान कराना।

5—भारतीय एवं इटैलियन मौन गृह निर्माण के सिद्धान्त (सीमान्तर) आकार को बताना।

6—मधु निष्कासन यन्त्र का चित्र बनवाना तथा शहद निकालने की विधि का प्रयोगात्मक कार्य कराना।

7—मौसमवार फूलों का सर्वे कराना तथा इसको पर-परागण क्रियाओं में मौनों का योगदान को बताना एवं पुष्प संग्रह कराना।

(ख) लघु प्रयोग—

1—रानी, कमेरी एवं नर के छत्तों की पहचान कराना।

2—तलपट, शिशु खंड, मधु खण्ड, डमी, इनर कवर, ऊपर ढक्कन, फ्रेम की पहचान कराना।

3—मधुमक्खी के शत्रु बर्रे, मोमी पतंगा, छिपकली, चींटें, हानिकारक पक्षियों की पहचान कराना।

4—क्वीन केज, न्यूक्लियस, मौन वाहक पिंजड़ा, हाइव टूल, मुहरक्षक, जाली, दस्ताने, प्यालियां, क्वीन गेट इत्यादि उपकरणों की पहचान कराना।

5—विभिन्न प्रकार के शहद जैसे सरसों, यूकिलपटस, शहजन, नीबू प्रजाति, सूरजमुखी, बेर, लीची, नीम एवं मिश्रित फलों की शहद की पहचान कराना।

पुस्तकों की सूची

1—प्रारम्भिक मौन पालन	ले0 योगेश्वर सिंह
2—प्राइमरी किशन आफ बी कीपिंग	..
3—बी कीपिंग आफ इण्डिया	डा0 सरदार सिंह
4—सफल मौन पालन	श्री बच्चो सिंह राव
5—रोचक मौन पालन	..
6—मौन पालन प्रश्नोत्तरी	..
7—मधुमक्खी की मनोहारी बाजार	डा0 विष्ठ (आई0 सी0 आई0 प्रकाशन)
8—रोगों के अचूक दवा शहद	डा0 हीरा लाल

(7) ट्रेड--पौधशाला

उद्देश्य--

(1) छात्रों को उद्यमिता के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी कराना ।

(2) पौधशाला व्यवसाय का प्राविधिक जानकारी कराना ।

(3) उन्नत किस्म के अधिकाधिक पौधे तैयार करना ।

(4) कम पूंजी से अधिक उत्पादन करना तथा अधिक लाभ प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होना ।

(5) पौधशाला व्यवसाय में दक्षता प्राप्त करना तथा साथ ही साथ 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त व्यवसाय के चयन में सहायक होना ।

(6) भूमि सुधार तथा पर्यावरण संरक्षण में सहयोग प्रदान करना ।

(7) श्रम के प्रति आस्था उत्पन्न करना ।

(8) आत्म निर्भर करना ।

(9) एक कुशल नागरिक के रूप में राष्ट्र निर्माण में सहायक होना ।

(10) विद्यालय में एक सुसज्जित उद्यान का निर्माण ।

रोजगार के अवसर--

पौधशाला व्यवसाय की शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त निम्नलिखित रोजगार के अवसर मिल सकते हैं--

(क) वेतनभोगी--

1--माली का कार्य करना ।

2--पौधशाला प्रभारी का कार्य करना ।

3--पौधशाला में वैतनिक वेतनभोगी कर्मचारी का अवसर प्राप्त करना ।

(ख) स्वरोजगार--

1--अपनी पौधशाला तैयार करना ।

2--बीजोत्पादन तथा बीज व्यवसाय अपनाना ।

3--पौधशाला उद्योग सम्बन्धी यन्त्रों, उपकरणों, उर्वरकों तथा कीटनाशकों के क्रय-विक्रय की दुकान चलाना ।

4--थोक एवं फुटकर शीघ्र आपूर्ति कार्य करना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों का प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई-1--

उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषाएं एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं । उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग स्थापना प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार सचालन का ज्ञान, विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई-2--

पौधशाला--परिचय, परिभाषा, महत्व, वर्तमान दशा एवं भविष्य । पौधशाला के लिए स्थान का चुनाव, भूमि को तैयार तथा रेखांकन एवं उनके विभिन्न अंगों तथा मातृ, वृक्ष, क्षेत्र, गमला क्षेत्र, प्रतिरोपण क्षेत्रों तथा प्रवर्धन क्षेत्र का ज्ञान ।

0 पौधशाला के दैनिक कार्य उपकरण एवं आवश्यक सामग्री की जानकारी ।

0 भूमि, खाद, भू-परिष्करण की सामान्य जानकारी ।

इकाई–3––

0 बीज शैय्या––परिचय, लाभ, हानि, बीज शैय्या तैयार करने की विधि, आकार, निर्धारण, मिट्टी की भूमि शोधन, खाद, सिंचाई, जल निकास एवं देखभाल ।

0 एक वर्षीय, बहुवर्षीय सब्जियों तथा शोभाकार पौधों की पौध तैयार करने की विधि का अध्ययन ।

0 वानिकी की सामान्य जानकारी तथा वानिकी वृक्षों की पौध तैयार करना ।

0 पौधों की सिंचाई, जल निकास, निराई–गुड़ाई एवं फसल सुरक्षा की विधियों की जानकारी ।

प्रयोगात्मक

(अ) लघु प्रयोग––

1––गमला मापन ।

2––गमला भरना ।

3––बीजों की पहचान ।

4––बीजों की शुद्धता की जांच ।

5––उपकरणों की पहचान ।

6––पौधों (सब्जी, फलदार, फूल, शोभाकार तथा छायादार) एवं वानिकी पौधों की पहचान ।

7––खाद एवं उर्वरकों की पहचान ।

8––मिट्टी की पहचान ।

(ब) दीर्घ प्रयोग––

1––आदर्श नमूना बरसदी का रेखांकन ।

2––बीज शैय्या बनाना ।

3––ऋतुवार बीज शैय्या बनाना ।

4––ऋतुवार गमला मिश्रण तैयार करना ।

5––तना, कलम तैयार करना ।

6––बूटी लगाना ।

7––कलिकायन से पौधे तैयार करना ।

8––भेड़ कलम से पौधे तैयार करना ।

9––पौध रोपण ।

10––गमले एवं क्यारी से पौधे निकालना ।

11––पौधबन्दी (पैकिंग करना) ।

12––पौधशाला भ्रमण ।

13––अभिलेख तथा आय–व्यय तैयार करना ।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक
1	2	3	4
1	भारत में फलों की खेती	डा0 एम0 एल0 लावानिया	सिंघल बुक डिपो, बड़ौत, मेरठ
2	सब्जियां एवं पुष्प उत्पादन	डा0 के0 एन0 दुबे	भारती भण्डार, बड़ौत, मेरठ ।

1	2	3	4
3	पौधशाला प्रौद्योगिकी	डा0 ओमपाल सिंह	अलंकार पुस्तक भवन, बड़ौत, मेरठ ।
4	पौधशाला व्यवसाय	श्री कोठारी एवं श्री ए0 बी0 श्रीवास्तव	रंजना प्रकाशन मन्दिर, आगरा ।
5	नर्सरी मैनुअल	डा0 गौरी शंकर	इलाहाबाद ।
6	फल विज्ञान	डा0 रामनाथ सिंह	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ।
7	उद्यान विज्ञान	श्री गंगा महेश मिश्र	राम नारायन लाल, इलाहाबाद ।

(8) ट्रेड--आटोमोबाइल

उद्देश्य--

1--छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।

2--छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।

3--छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।

4--छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।

5--छात्रों को कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।

6--छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

रोजगार के अवसर--

आटोमोबाइल व्यवसाय से शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते है ।

(क) वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में--

1--आटोमैकेनिक के रूप में ।

2--सेल्समैन के रूप में ।

(ख) स्वरोजकार के रूप में--

1--अपना रिपेयर वर्कशाप एवं गैराज का संचालन,

2--शोरूम स्थापित करना,

3--स्पेयर पार्ट के विक्रेता के रूप में ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लेखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक :

इकाई-1--(अ) उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं । उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(ब) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय । बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान । विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई-2--आटोमोबाइल व्यवसाय का महत्व, स्वरोजगार स्थापित करने में इसकी भूमिका, विभिन्न प्रकार के आटोमोबाइल का वर्गीकरण ।

आटोमोबाइल के मुख्य भाग--फ्रेम सस्पेन्शन सिस्टम, धुरी पहिया, टायर, इंजन, पारेषण-प्रणाली, नियंत्र प्रणाली संधिसंरचना आदि की पहचान, कार्य एवं बनावट । विभिन्न प्रकार के आटोमोबाइल्स--कार, आटो रिक्शा, स्कूटर, मोटर साइकिल, ट्रक, मोपेड आदि के ट्रेड नाम, मेक, क्षमता एवं निर्माता आदि का परिचय । इस गाड़ियों की विशिष्टता तथा तकनीकी डाटा ।

इकाई-3--आटोमोबाइल में प्रयुक्त होने वाले इंजनों का सामान्य परिचय ।

आटोमोबाइल के विभिन्न प्रणालियों की जानकारी--विभिन्न प्रणालियों, जैसे ईंधन सप्लाई प्रणाली (कार-बूरेटर एवं इन्जक्टर) । इग्नीशन प्रणाली, शीतलन प्रणाली, स्टार्टिंग प्रणाली, शक्ति-संचालन, प्रणाली स्टीयरिंग प्रणाली, ब्रेक प्रणाली आदि का सामान्य परिचय, उनकी पहचानना, बाजार से क्रय करना एवं उनके कार्य ।

प्रयोगात्मक

(क) लघु प्रयोग (प्रायोगिक) (कोई दस प्रयोग)--

1 से 2--स्कूटर/मोपेड का अध्ययन ।

3 से 6--अन्तर्दहन इंजन के माडल का अध्ययन (डीजल/पेट्रोल तथा आरेखन ।

7 से 10--कार के चेसिस, स्टेयरिंग, बाडी, शक्ति संचारण, विद्युत् एवं प्रकाश व्यवस्था, ब्रेक व्यवस्था का अध्ययन करना तथा उनके रेखाचित्र बनाना ।

11--कार के स्टेयरिंग प्रणाली का अध्ययन ।

12--शाक एवं जारबर का अध्ययन ।

13--स्कूटर में तार विन्यास एवं प्रकाश व्यवस्था का अध्ययन ।

14--गियर बाक्स का अध्ययन ।

15--कारबोरेटर का अध्ययन ।

(ख) दीर्घ प्रयोग :

1--पंचर जोड़ बनाना, हवा भरना तथा हवा के दाव को मापना ।

2--स्कूटर की धुलाई, सर्विसिंग करना ।

3--स्कूटर चलाने का अभ्यास ।

4--स्कूटर में दोष ढूढ़ना एवं मरम्मत करना ।

5--बाजार से सामग्री क्रय करने का अभ्यास तथा शो रूम का अध्ययन ।

6--लोहे के टुकड़ों को नाप में काटना, उन्हें रेत कर साइज में करना ।

संस्तुत पुस्तकें

(1) आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	कृष्णनन्द शर्मा
(2) आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	सी० बी० गुप्ता
(3) आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	धनपत राय ऐन्ड शुक्ला
(4) बेसिक आटोमोबाइल	सी० पी० बक्श

(9) ट्रेड--धुलाई रंगाई

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।

(5) छात्रों का कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी रोजगार--

(1) रंगाई-धुलाई की दुकानों में सहायक कर्मचारी के पद पर कार्य कर सकता है ।

(2) रंगाई के कारखाने में रंगाई मास्टर के पद पर कार्य कर सकता है ।

(3) सरकारी संस्थाओं में वस्त्र सफाई विभाग में कार्य प्राप्त कर सकता है ।

(ख) स्वरोजगार--

(1) ड्राई क्लीनिंग की दुकान खोलने में सहायक हो सकता है ।

(2) डाईंनिंग (रंगाई) की दुकान खोलने में सहायक हो सकता है ।

(3) चरक की दुकान या उद्योग लगाने में सहायक हो सकता है ।

(4) कम लागत में इस्त्री करने, साड़ी लगाने की दुकान खोलकर कार्य कर सकता है ।

(5) रंगाई छपाई का छोटा रोजगार कर सकता है ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी बाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई-1--

(क) उद्यमिता बोध--

उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनायें । उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता प्रक्रिया ।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--

लघु उद्योग की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान । विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई-2--

(1) तन्तुओं का वर्गीकरण तथा उनकी पहचान करना (और जलाकर), सूती, ऊनी, रेशमी, बयान पालीस्टर ।

(2) धागों का वर्गीकरण तथा उनका ज्ञान--साधारण, फ्लाई, फैन्सी ।

(3) विभिन्न रंगों का विभिन्न कपड़ों के लिये आवश्यकता ।

(4) कपड़ों को रंगने से पहले उनको तैयार करना ।

[क] उबालना ।

[ख] विरंजन करना ।

(5) रंगने के बाद कपड़ों की फिनिशिंग--

[क] साड़ी लगाना ।

[ख] तनाव देना ।

[ग] चरक ।

[घ] इस्तरी ।

[ङ] तह लगाना ।

इकाई-3--

(1) धुलाई का उद्देश्य एवं महत्व।
(2) धुलाई का सिद्धान्त, तकनीक के सुझाव तथा आवश्यक सावधानियां।
(3) धुलाई के उपकरण (प्राचीन या आधुनिक)।
(4) प्रारम्भिक धुलाई एवं पारम्परिक धुलाई।
(5) विभिन्न प्रकार की माड़ी तथा नील देना।
(6) विभिन्न प्रकार के धब्बे छुड़ाना--

चाय, काफी, चाकलेट, अन्डा, रक्त, हल्दी, तेल, कालिख, जंक, पान।

प्रयोगात्मक

(1) विभिन्न वस्तुओं का संग्रह एवं पहचानना (देखकर जलाकर):

[क] वनस्पति तन्तु।

[ख] पशु से प्राप्त होने वाला तन्तु।

[ग] खनिज तन्तु।

[घ] कृत्रिम तन्तु।

(2) विभिन्न धागों का संग्रह--साधारण प्लाई।
(3) विभिन्न प्रकार के वस्त्रों और शेड कार्ड को संग्रहीत करके फाइल बनाना।
(4) विभिन्न प्रकार के कपड़ों को रंगना (15 इंच × 15 इंच) (सूती, रेशमी, ऊनी कृत्रिम कपड़े, धोना सुखाना प्रेस व तह लगाना)।
(5) नील लगाना, कलफ लगाना।
(6) दाग छुड़ाना--
   (1) चाय
   (2) काफी
   (3) हल्दी
   (4) जंक
   (5) रक्त
   (6) मशीन का तेल
   (7) स्याही
   (8) अन्डा
   (9) पान
   (10) ग्रीस
(7) धागे को रंगना--सूती, ऊनी।
(8) डायरेक्ट रंगों के विभिन्न रंगों के मिश्रण द्वारा डिजाइन बनाना--6 नमूने (15 इंच × 15 इंच) टाइ एन्ड डाई प्रिंटिंग द्वारा।
(9) नेप्थाल रंगों के द्वारा एक नमूना तैयार करना (15 इंच × 15 इंच)।
(10) फेडिंग परीक्षण सूती, ऊनी, रेशमी, रेयान (4 इंच × 4 इंच)।
(11) सूखी धुलाई---शाल, स्वेटर, रेशमी, फैन्सी कपड़े।
(12) टेक्सचर के द्वारा रंगाई--(6 नमूने) (12 इंच × 12 इंच)
(13) पुराने कपड़े को पुनः रंग कर ब्लाक प्रिंटिंग द्वारा आकर्षण बनाना।
(14) गीली धुलाई--सूती, ऊनी, रेशमी, कृत्रिम।

(ब) लघु प्रयोग--

(1) डायरेक्ट रंगों द्वारा रंगाई (एक रंग में)।

(2) कपड़ों को पहचानना (छूकर व देखकर)।

(3) साधारण व धुलाई धागों की पहचान ।
(4) जलाकर कपड़ों का परीक्षण ।
(5) फेडिंग परीक्षण 3/4 घंटा ।
(6) तह लगाना ।
(7) इस्तरी करना ।
(8) साड़ी लगाना ।
(9) ब्लाक प्रिंटिंग (एक नमूना) ।
(10) ट्रेक्सचर तैयार करना (दो नमूना) ।

(ख) दीर्घ प्रयोग--

(1) नेप्थाल रंगों द्वारा रंगाई ।
(2) सूती कपड़ों को रंगना ।
(3) ऊनी कपड़ों को रंगना ।
(4) रेशमी कपड़ों को रंगना ।
(5) धागों को रंगना सूती, ऊनी ।
(6) मील लगाना ।
(7) कलफ लगाना ।
(8) चरक लगाना ।
(9) सूखी धुलाई ।
(10) गीली धुलाई--सूती, ऊनी, रेशमी, कृत्रिम कपड़े ।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	नाम	लेखक	प्रकाशक
1	2	3	4
1	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	डा० प्रमिला वर्मा	प्रकाशक, बिहार ग्रन्थी अकादमी पटना विश्वविद्यालय प्रकाशन ।
2	वस्त्र विज्ञान एवं धुलाई कार्य	श्री आनन्द वर्मा	रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर वितरक विश्वविद्यालय, प्रकाशन ।
3	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	श्रीमती लोकेश्वरी शर्मा	स्वास्तिक प्रकाशन अस्पताल मार्ग, आगरा-3 ।
4	वस्त्र धुलाई विज्ञान	,,	यूनिवर्सल सेकर, हजरतगंज, लखनऊ ।
5	दी केमिकल टेक्नोलाजी आफ टेक्सटाइल फाइबर्स	श्री आर० आर० चक्रवर्ती	केक्सटन प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55 ।

(10) ट्रेड-परिधान रचना एवं सज्जा

सामान्य उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
(5) छात्रों को कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।
(6) छात्रों को ट्रेड के प्रारम्भिक कार्यों की जानकारी देना ।

विशिष्ट उद्देश्य--

(1) परिधान रचना एवं सज्जा ट्रेड के द्वारा बच्चों से सिलाई विषय से सम्बन्धित जागरूकता उत्पन्न करना ।

(2) भविष्य में प्रचलित फैशन के अनुसार विभिन्न डिजाइनों के वस्त्रों के निर्माण के कौशल का विकास करना ।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी रोजगार--

[अ] अपने विषय से सम्बन्धित प्रशिक्षण केन्द्रों पर प्रशिक्षण देना ।

[ब] किसी रेडीमेड गारमेन्ट फैक्ट्री में वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में कार्य करना ।

(ख) स्वरोजगार--

[अ] सिलाई का कार्य घर पर ही करके बचत करना ।

[ब] बाजार में दुकानों से आर्डर लेकर वस्त्र तैयार करके आय प्राप्त करना ।

[स] सिलाई शिक्षा से सम्बन्धित स्कूल चलाना ।

[द] विद्यालयों की यूनीफार्मों को तैयार करने का आर्डर लेना ।

[य] सिलाई के उपकरणों की मरम्मत से सम्बन्धित केन्द्र खोलना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई- 1--

(क) उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं । उद्यमिता मूल्यों एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता । विकास प्रक्रिया :

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योगों की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान । विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई-2--

(क) व्यक्तिगत स्वच्छता एवं स्वास्थ्य--

आंख, पलक, कान, दांत, बालों तथा सम्पूर्ण शरीर की सफाई, घर तथा पास-पड़ोस की सफाई, सफाई का स्वास्थ्य पर प्रभाव ।

(ख) प्रदूषण, प्रदूषण के प्रकार, कारण, हानियां तथा दूर करने के उपाय--

वायु प्रदूषण--कारण, हानियां तथा दूर करने के उपाय ।

जल प्रदूषण--कारण, हानियां तथा दूर करने के उपाय ।

ध्वनि प्रदूषण--कारण, हानियां तथा दूर करने के उपाय ।

मृदा प्रदूषण--कारण, हानियां तथा दूर करने के उपाय ।

(ग) भोजन के तत्वों का सामान्य ज्ञान--

प्रोटीन, कार्बोज, वसा, विटामिन, खनिज लवण, जल प्राप्ति के साधन तथा इनकी कमी से होने वाली हानियां ।

(घ) आयु लिंग कार्य के अनुसार भोजन की आवश्यकता तथा उसकी कमी से हानियां ।

इकाई–3––

(क) विभिन्न प्रकार के वस्त्रों के तन्तु तथा उनकी विशेषताएं––
सूती––धूप, ताप, रासायनिक पदार्थ, अम्ल का प्रभाव ।
रेशमी––धूप, ताप, रासायनिक पदार्थ, अम्ल का प्रभाव ।
ऊनी––धूप, ताप, रासायनिक पदार्थ, अम्ल का प्रभाव ।
कृत्रिम तन्तु––धूप, ताप, रासायनिक पदार्थ, अम्ल का प्रभाव ।

(ख) सिलाई करने से पूर्व की तैयारियां––
नाप लेना, नाप के अनुसार कपड़ा लेन, कपड़े की भिक करना, कपड़े की रुख के अनुसार रखना, पैटर्न बनाना, कटिंग करना, प्रेस करना ।

(ग) परिधान को आकर्षक बनाने में, लेसरिकिन, फिल, बटन, पाइपिंग का महत्व ।

प्रयोगात्मक

लघु उद्योग––

1––विभिन्न प्रकार के सिलाई के टांके––कच्चा टांका, बखिया, तुरपन, पिको, काज, टांका ।

2––कढ़ाई के टांके––लेजी–डेजी, रनिंग स्टिच, स्टेम स्टिच, चैन स्टिच, क्रास स्टिच, काज स्टिच, शैडोवर्क साटन, स्टिच, पंच वर्क, शेड वर्क ।

3––उपरोक्त कढ़ाई के टांकों से छः रूमाल बनाना ।

4––रफू करना ।

5––पैबेन्ट लगाना ।

6––ब्लोट––काटना, सिलना ।

7––विब––काटना, सिलना ।

8––बड्डो––काटना, सिलना ।

9––झबला––काटना, सिलना ।

10––मशीन के पुर्जों को खोलना, सफाई करना तथा मशीन में तेल डालना ।

दीर्घ उद्योग––

1––बेबी शर्मीज

2––पजामा (एक मीटर कपड़े का)

3––बेबी फ्राक

4––गर्ल्स फ्राक

5––पेटीकोट

6––ईवनिंग बैग

नोट––उपरोक्त वस्त्रों की ड्राफ्टिंग, कटिंग, सिलना तथा उनकी सज्जा करना तथा रूमाल, पेबन्द, एफ को बनाकर रिकार्ड फाइल में लगाना ।

मौखिक प्रश्नोत्तर––लघु तथा दीर्घ प्रयोगों से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर ।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक व प्रकाशक	मूल्य
1	2	3	4
			रु0
1	परिधान रचना एवं सज्जा	श्रीमती चरन दासी, स्वास्तिक प्रकाशन, आगरा	13.50
2	गृह विज्ञान का सामान्य ज्ञान	श्रीमती स्वराज्य लता सिंह, स्वास्तिक प्रकाशन, आगरा	35.00

1	2	3	4
			रु०
3	परिधान रचना एवं सज्जा	श्रीमती अनामिका सक्सेना, भारत प्रकाशन मन्दिर, मेरठ	18.00
4	आधुनिक सिलाई एवं कढ़ाई विज्ञान	श्री एम० ए० खान, पुस्तक प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद	15 00
5	अनमोल सिलाई कला परिचय	श्री असगर अली, गर्ग प्रकाशन, इलाहाबाद	18.00
6	रंपिडेक्स टेलरिंग कोर्स	श्रीमती आशा रानी वोहरा	68.00

(11) ट्रेड--खाद्य संरक्षण

उद्देश्य--

1--छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।

2--छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।

3--छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।

4--छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।

5--छात्रों की कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।

6--छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

7--अधिक उपज से उगाने के बाद बचे हुए फल और सब्जियों का संरक्षण करना ।

8--खाद्य संरक्षण द्वारा पौष्टिक भोजन की कमी को पूरा करना ।

9--बिना मौसम में भी संरक्षित खाद्य पदार्थों को उपलब्ध कराना ।

रोजगार के अवसर--

1--खाद्य संरक्षण सम्बन्धी इकाई में रोजगार मिल सकता है ।

2--खाद्य संरक्षण में दक्षता अर्जित कर छात्र अपना निजी व्यवसाय चला सकता है ।

3--अचार, मुरब्बा, सॉस आदि विभिन्न प्रकार के संरक्षित खाद्य पदार्थ तैयार कर डिब्बा बन्दी कर बाजार में आपूर्ति कर सकता है ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर प्रारम्भिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई-11--

(1) उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार मूल्यांकन का महत्व एवं संभावनायें । उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(2) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम कार्य, लघु उद्योग की स्थापना प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान । विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई-2--

1--खाद्य-संरक्षण परिचय ।

2--खाद्य-संरक्षण से लाभ ।

3--खाद्य पदार्थ--प्रोटीन कार्बोहाइड्रेड्स, वसा, खनिज, लवण, विटामिन का सामान्य परिचय एवं महत्व ।

4--अम्लक्षार, लवण एवं पी० एच० का सामान्य ज्ञान ।

5--ताप संवहन, शून्य तापक्रम, दबाव का सामान्य ज्ञान ।

6--जल के प्रकार तथा क्लोरीनेशन ।

7 -छानना, वाष्पीकरण, संघनन, सामान्य परिचय ।

इकाई-3 :

1--खाद्य पदार्थ को नष्ट करने वाले तत्व और उससे बचने का उपाय ।

2--खमीर, फफूंद बैक्टीरियों की साधारण रचना एवं वृद्धि ।

3--सफाई के विभिन्न उपाय--साबुन एवं डिटर्जेन्ट का उपयोग ।

4--डिब्बाबन्दी खाद्य पदार्थों में होने वाली खराबी और उसकी पहचान ।

5--खाद्य नियन्त्रण-सरल परिचय ।

6--थर्मामीटर, जलमीटर, रिफरेक्टोमीटर, सेलुनीमीटर, ब्रिक्स, हाइड्रोमीटर का सामान्य परिचय ।

प्रयोगात्मक

(क) दीर्घ प्रयोग :

1--जैम बनाना

2--मुरब्बा बनाना

3--आचार बनाना

4--शरबत बनाना ।

5--प्यूरी एवं टमाटर सास बनाना

6--मटर, गाजर, अमचूर सुखाने की विधियां

7--कृत्रिम सिरका

8--फलों के रस एवं गूदे का संरक्षण

9--वलिया, चिप्स, पापड़, बड़ी बनाना एवं संरक्षण

10--पनीर निर्माण

(ख) लघु प्रयोग :

1--रिफरेक्ट्रोमीटर का उपयोग

2--ब्रिक्स हाइड्रोमीटर का उपयोग

3--सूक्ष्मदर्शी यंत्र के विभिन्न भागों का परिचय

4--पी० एच० पेपर का महत्व एवं उपयोग

5--पेक्टिन परीक्षण

6--विभिन्न खाद्य पदार्थों की पहचान

7--आयसोसित साधारण प्रयोग

8--खाद्य संरक्षण में उपयोग होने वाले तापमापी का उपयोग, प्रेशर कुकर का ज्ञान ।

संस्तुत पुस्तकें--

		रु०
1--फल एवं सब्जी संरक्षण	ले० डा० गिरधारी लाल डा० सिद्धाप्पा एवं गिरधारी लाल टण्डन	45.00
2--फल संरक्षण	एस० एन० माटी	30.00
3--फल संरक्षण (प्रयोगात्मक)	बी० एन० अग्निहोत्री	15.00
4--फल संरक्षण विज्ञान	बी० एन० अग्निहोत्री	25.00
5--फल परिरक्षण सिद्धान्त एवं विधियां	डा० श्याम सुन्दर श्रीवास्तव	100.00
6--आहार एवं पोषण विज्ञान	विमला वर्मा	50.00

12--ट्रेड एकाउन्टेन्सी एवं अंकेक्षण

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
(2) छात्रों को स्वरोजगार करने हेतु मानसिक रूप से तैयार करना ।
(3) 10+2 स्तर पर ट्रेड चयन करने हेतु छात्रों को सहायता करना ।
(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
(5) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।
(6) वेतनभोगी रोजगार सहायक रोकड़िया, कनिष्ठ लेखाकार, लिपिक, सहायक के रूप में छात्रों को तैयार करना ।

रोजगार के आधार--

(क) वेतनभोगी रोजगार तथा सहायक रोकड़िया, कनिष्ठ लेखाकार, कनिष्ठ लिपिक, कार्यालय सहायक आदि के रूप में ।
(ख) स्वरोजगार--जैसे छोटे स्तर के व्यापार के हिसाब का रख-रखाव करने के रूप में ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी बाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम--

सैद्धान्तिक--

इकाई-1--

(क) उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनायें । उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक, सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान, विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं का परिचय ।

इकाई-2--

रोजनामचा एवं प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकें, चेक सम्बन्धित लेखे, बैंक समाधान विवरण एवं खाता बहियों में खतौनी की विधि, तल पट तैयार करना ।

इकाई-3--

(1) लागत लेखांकन--परिभाषा, महत्व तथा पद्धतियां ।
(2) लागत के मूल तत्व--सामग्री, श्रम एवं उपरिव्यय का सामान्य ज्ञान ।
(3) लागत विवरण एवं निविदा तैयार करना ।

प्रयोगात्मक

(अ) लघु प्रयोग--

(1) नकद रसीद
(2) डेबिट नोट एवं क्रेडिट नोट
(3) चेक, पे-इन-स्लिप
(4) टेलीग्राम, मनीआर्डर फार्म
(5) आर0 आर0 ट्रेजरी चालान फार्म
(6) कैलकुलेटर्स, रेडीरेकनर
(7) डेटिंग मशीन
(8) नम्बरिंग मशीन
(9) स्टेपलर्स, पंचिंग मशीन

(ब) बड़े प्रयोग--

(1) छात्रों को बाउचर प्रदान किये जायें एवं उन्हें तैयार कराया जाये ।
(2) क्रय-पुस्तक तैयार करना ।
(3) विक्रय-पुस्तक तैयार करना ।
(4) बीजक एवं विक्रय-विवरण बनाना ।
(5) खुदरा रोकड़ पुस्तक बनाना ।
(6) रोकड़ पुस्तक तैयार करना ।
(7) स्टाक रजिस्टर तैयार करना ।
(8) पत्र प्राप्ति पुस्तक एवं पत्र प्रेषण पुस्तक तैयार करना ।

सन्दर्भित पुस्तकें--

1--हाई स्कूल बहीखाता एवं व्यापार प्रणाली	लेखक--श्री विजय पाल सिंह
2--अनुपम प्रारम्भिक बहीखाता एवं व्यापार प्रणाली	लेखक--श्री जगन्नाथ वर्मा
3--पूर्व व्यावसायिक वाणिज्यिक ट्रेड	लेखक--श्री राम प्रकाश अवस्थी
4--पूर्व व्यावसायिक वाणिज्यिक ट्रेड प्रयोगात्मक	लेखक--श्री राम प्रकाश अवस्थी
5--लागत लेखांकन	लेखक--डा0 लक्ष्मण स्वरूप

13--ट्रेड आशुलिपिक तथा टंकण

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
(3) छात्रों को 10--2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
(4) छात्र में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
(5) छात्रों की कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।
(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतन भोगी रोजगार-- वकील अथवा व्यापारी के यहां कार्य करना ।
(ख) स्वरोजगार--अपनी टंकण मशीन लेकर तहसील, कचहरी आदि में बैठकर आवेदन पत्र एवं प्रत्यावेदन का डिक्टेशन लेकर टंकण का उपलब्ध कराना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई-1--(1) उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषायें एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं संभावनायें । उद्यमिता मूल्य एवं गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(2) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति से लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग स्थापना प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान । विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई-2--रोजनामचा एवं प्रारम्भिक लेखों की पुस्तकें, चेक सम्बन्धी लेखे, बैंक समाधान विवरण तथा खाता बहियों में खतौनी की विधि, तलपट तयार करना ।

इकाई-3--अंतिम खातों को तैयार करना, साधारण समायोजनाओं सहित व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा बनाना ।

प्रयोगात्मक

(क) लघु प्रयोग--

(1) शब्द चिन्ह ।
(2) जुट शब्द ।
(3) रेखाक्षरों के स्थल ।
(4) चित्र एवं संकेतों के माध्यम से रेखाक्षरों का ज्ञान ।
(5) टाइप करने की प्रणालियां ।
(6) मशीन में कागज लगाने, ठीक करने व कागज निकालने का ढंग ।
(7) हाशिया निश्चित करना ।
(8) मशीन पर बैठने की स्थिति ।

(ख) दीर्घ प्रयोग--

(1) श्याम पट्ट पर लिखित लेखों का पढ़ना ।
(2) पत्रों का आशुलिपि में लेखन तथा हिन्दी रूपान्तर ।
(3) आशुलिपि से दीर्घ लिपि में लिखना तथा टाइप करना ।
(4) आशुलिपि नोटों अनुवादित होने के बाद उन पर चिन्ह लगाना ।
(5) कुंजी पटल का ज्ञान ।
(6) पोस्ट कार्डों पर पतों का टंकण ।
(7) टाइप मशीन से प्रतिलिपि लेना ।
(8) प्रार्थना-पत्र अथवा पत्रों को टाइप करना ।

सन्दर्भ पुस्तकें--

1--अनुपम टाइपिंग मास्टर -श्रीमती उषा गुप्ता ।
2--उपकार व्यावहारिक टंकण कला--श्री ओंकार नाथ वर्मा ।
3--हिन्दी संकेत लिपि (ऋषिप्रणाली)--श्री ऋषिलाल अग्रवाल ।
4--पिटमैन अंग्रेजी संकेत लिपि--पिट्समैन
5--पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड--श्री राम प्रकाश अवस्थी ।
6--पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड (प्रयोगात्मक)--श्री राम प्रकाश अवस्थी ।
7--अनुपम प्रारम्भिक बहीखाता एवं व्यापार प्रणाली--श्री जगन्नाथ वर्मा ।
8--आशुलिपि एवं टंकण--श्री गोपाल दत्त त्रिष्ट ।

14--ट्रेड--बैंकिंग

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
(3) छात्रों को 10+2 स्तर का सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
(5) छात्रों को कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।
(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।
(7) व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कराना ।
(8) बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रारम्भिक ज्ञान की जानकारी छात्रों को उपलब्ध कराना ।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी--

1--विद्यालयों में संचायिका का लेखा रखने की जानकारी देना ।
2--अपने व्यवसाय की बैंकिंग कार्य प्रणाली की जानकारी प्राप्त करना ।
3--सहायक रोकड़िया ।
4--गोदाम सहायक ।

(ख) स्वरोजगार--

1--लघु व्यावसायिक संस्थानों का हिसाब तैयार करना ।
2--अभिकर्ता के रूप में कार्य करना ।
3--डाकघर के एजेन्ट के रूप में कार्य करना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

सैद्धान्तिक--

इकाई-1--

(क) उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनायें, उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योगों की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघ उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान । विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई-2--

रोजनामचा एवं प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकें, चेक सम्बन्धित लेखे, बैंक समाधान विवरण तथा खाता में खतौनी करने की विधि, तलपट तैयार करना ।

इकाई-3--

व्यावसायिक संगठन, अर्थ एवं प्रारूप, एकांकी व्यवसाय, साझेदारी एवं संयुक्त स्कंध कम्पनी, परिभाषा, लक्षण एवं भेद ।

क्रियाकलाप

लघु प्रयोग--

1--चेक लिखना, निर्गम करना एवं निर्गमन रजिस्टर में लेखा करना ।

2--चेकों का पृष्ठांकन एवं रेखांकन करना, चेकों की वैधता की जाँच करना ।

3--पे इन स्लिप तथा आहरण-पत्र का प्रयोग ।

4--चेक लिखने वाली मशीन का प्रयोग ।

5--रेडो रेकनर का प्रयोग ।

6--कैलकुलेटर का प्रयोग ।

7--डेटिंग मशीन एवं नम्बरिंग मशीन का प्रयोग ।

8--पंचिंग मशीन एवं स्टेप्लर का प्रयोग ।

दीर्घ प्रयोग--

1--बैंक में खाता खोलने के विभिन्न प्रपत्रों को भरना ।

2--बैंक लेजर खातों एवं पास बुक में लेखा करना ।

3--ब्याज की गणना एवं उसका लेखा करना ।

4--बैंक ड्राफ्ट, एम0 टी0 टी0 एवं पे आर्डर तैयार करना ।

5--ऋण सम्बन्धी आवश्यक प्रपत्रों को भरना ।

6--साप्ताहिक विवरण, रिटर्न तैयार करना एवं प्रधान कार्यालयों को प्रेषित करना ।

7--बीजक एवं विक्रय विवरण तैयार करना ।

8--रेजकारी छांटने वाली मशीन का प्रयोग ।

सन्दर्भ-पुस्तकें--

1--पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड--श्री राम प्रकाश अवस्थी ।

2--पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड (प्रयोगात्मक)--श्री राम प्रकाश अवस्थी ।

3--हाई स्कूल मुद्रा बैंकिंग एवं अर्थशास्त्र--श्री एम0 पी0 गुप्ता ।

4--अधिकोषण तत्व--श्री डी0 डी0 निगम ।

15–ट्रेड–टंकण

उद्देश्य––

(1) छात्रों में उद्यमिता के गुणों का विकास करना ।
(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
(5) छात्रों का कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।
(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

रोजगार के अवसर––

(क) वेतनभोगी रोजगार––वकील अथवा व्यापारी के यहां टाइप करना ।
(ख) स्वरोजगार––अपनी टंकण मशीन लेकर तहसील, कचहरी आदि में बैठकर आवेदन एवं प्रत्यावेदन का डिक्टेशन लेकर टंकण कर उपलब्ध कराना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन––

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी बाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक––

इकाई–1––

(क) उद्यमिता बोध––उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषायें एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनायें, उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों को व्य । एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार––लघु उद्योग की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान । विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई–2––

रोजनामचा एवं प्रारम्भिक लेखे की पुस्तकें, चेक सम्बन्धी लेखे, बैंक समाधान विवरण तथा खाता बहियों में खतौनी की विधि, तलपट तैयार करना ।

इकाई–3––

अन्तिम खातों को तैयार करना––साधारण समायोजनाओं सहित, व्यापार एवं लाभ–हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा बनाना ।

प्रयोगात्मक

(क) लघु प्रयोग––

(1) टंकण कल पर बैठने की स्थिति ।
(2) टंकण करने की प्रणालियां ।
(3) टंकण मशीन में कागज लगाने एवं बाहर निकालने की विधि ।
(4) हाशिया निश्चित करना ।
(5) ऐसे संकेतों का टंकण, जो कुंजी पटल में नहीं दिये गये हैं ।
(6) नया पैराग्राफ बनाना ।
(7) स्पेस बार का प्रयोग ।
(8) "सिफ्ट की" एवं "सिफ्ट की लाक" का प्रयोग ।
(9) छोटे पत्रों व लघु अवतरणों का टंकण ।

(ख) दीर्घ प्रयोप--

(1) कुंजी पटल का ज्ञान ।
(2) प्रार्थना-पत्र एवं पत्रों का टंकण करना ।
(3) पोस्टकार्ड पर पते टाइप करना ।
(4) टाइप मशीन से प्रतियां लेना ।
(5) प्रूफ रीडिंग में प्रयुक्त होने वाले चिन्ह ।
(6) रिबन का बदलना ।
(7) कठिन शब्दों का टंकण ।
(8) टाइप मशीन की सफाई एवं तेल देना ।
(9) बड़े अवतरणों एवं साधारण सारिणियों का टंकण करना ।

सन्दर्भ पुस्तकें

(1) अनुपम टाइपिंग मास्टर	..	श्रीमती उषा गुप्ता
(2) उपकार व्यावहारिक टंकण कला	..	श्री ओंकार नाथ वर्मा
(3) पूर्व व्यवसायिक वाणिज्य ट्रेड	..	श्री राम प्रकाश अवस्थी
(4) पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड (प्रयोगात्मक)	..	श्री राम प्रकाश अवस्थी
(5) अनुपम प्रारम्भिक बहीखाता तथा व्यापार प्रणाली	..	श्री जगन्नाथ वर्मा

(6) ट्रेड-फलसंरक्षण

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधानुसार उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
(4) छात्रों में व्यावसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
(5) छात्रों को कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।
(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।
(7) फल उत्पादन बढ़ाना तथा खाने के बाद बचे हुए फल और सब्जियों का संरक्षण करना ।
(8) फलोत्पादक औद्योगीकरण द्वारा देश की बढ़ती हुई बेरोजगारी को दूर करना ,
(9) बिना मौसम में भी संरक्षित फल पदार्थों को उपलब्ध कराना ।

रोजगार के अवसर--

(1) फल संरक्षण सम्बन्धी इकाइयों में रोजगार मिलने की सम्भावना ।
(2) फल संरक्षण उद्योग में स्वरोजगार या अपना निजी व्यवसाय चलाना या डिब्बा बन्दी कर बाजार में आपूर्ति करना ।
(3) संरक्षित पदार्थों की दुकान या गोदाम खोल सकता है, जिसमें संरक्षित खाद्य पदार्थों का सहीढंग से रख-रखाव कर उन्हें नष्ट होने से बचाव कर रोजगार चला सकता है ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक लिखित) तथा 50 अंकों का प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई-1--

(क) उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनायें । उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(ख) लघु उद्योप एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान । विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई-2—फल संरक्षण विषय परिचय, परिभाषा, इसकी उपयोगिता एवं भविष्य ।

फल संरक्षण में प्रयोग किये जाने वाली तकनीकों अंग्रेजी शब्द और हिन्दी में उनका विवरण विभिन्न फल एवं सब्जियां से निर्मित, संरक्षित पदार्थ फल संरक्षण कार्य में प्रयोग करने हेतु बर्तन मशीनरी एवं उपकरण ।

इकाई-3—फल एवं सब्जियों के खराब होने के कारण फफूंदी, मोल्ड, खमीर, यीस्ट, बैक्टीरिया एवं एन्जाइम्स का सूक्ष्म परिचय, प्रजनन, इनके प्रसार के लिये उपयुक्त वातावरण और निष्क्रिय करने का उपाय ।
फल सब्जियों के संरक्षण के सिद्धान्त स्थायी एवं अस्थायी संरक्षण ।

प्रमुख संरक्षणों--सल्फर डाई आक्साइड (पोटेशियम मेटा बाई सल्फाइट अथवा के० एम० एस०), सोडियम मेटा बाई सल्फाइड और बेन्जोइक एसिड के यौगिक (सोडियम बेन्जोएट) का परिचय तथा फल के रसों के संरक्षण में उपयोग विधि एवं इनकी सीमाएं ।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(क) लघु प्रयोग--

(1) विक्स हाइड्रोमीटर, से लिनोमीटर, हन्ड से केरोमीटर (रिफरेक्टोमीटर), थर्मामीटर का परिचय एवं उपयोग विधि ।
(2) तरल पदार्थों को लिटमस पेपर की सहायता से पी० एच० ज्ञात करना ।
(3) सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) से परिचय, उसके विभिन्न पार्ट्स स्प्रिट द्वारा पेक्टिन टेस्ट ।
(4) स्प्रिट द्वारा पेक्टिन टेस्ट ।
(5) सीलिंग के लिए प्रयोग को जाने वाली मशीनें ।
(6) कान्टेनर्स (बोतल, जार, अमृतबान, कारब्यास) को धोना और जीवाणु रहित (स्टरलाइज) करना ।

(ख) दीर्घ प्रयोग—

(1) जैम--विभिन्न ऋतुओं में पैदा होने वाले फलों से जैम बनाना ।
(2) मुरब्बा बनाना---आंवला, बेल, पेठा, करौंदा, पपीता, गाजर ।
(3) अदरक, पेठा नींबू, प्रजाति के फलों के छिलकों से कैण्डी बनाना ।
(4) टमाटर, कैचप, सॉस, सूप बनाना ।
(5) फलों से चटनी बनाना ।
(6) विभिन्न ऋतुओं में उपलब्ध फल एवं सब्जियों (आम, नींबू, कटहल, अदरक, करौंदा, प्याज, खीरा आदि) से अचार बनाना ।
(7) कृत्रिम सिरका बनाना ।
(8) कृत्रिम शरबत (खस, गुलाब, केवड़ा आदि) बनाना ।
(9) स्क्वेस बनाना ।
(10) अमरूद से चीज टाफी बनाना ।

संस्तुत पुस्तकें—

			रुपया
1—फल एवं सब्जी संरक्षण	..	डा० गिरधारी लाल डा० सिट्टप्पा	45.00
2--फल संरक्षण	..	श्री एस० एम० भाटी	30.00
3--फल संरक्षण (प्रयोगात्मक)	..	श्री० वी० एन० अग्निहोत्री	15.00
4--फल संरक्षण विज्ञान	..	श्री बी० एन० अग्निहोत्री	25.00
5--फल परिरक्षण सिद्धान्त एवं विधियां	..	डा० श्याम सुन्दर श्रीवास्तव	100.00
6--फल तथा तरकारी परिक्षण प्रौद्योगिकी	..	एस० सदाशिव नायर एवं डा० हरीश चन्द्र शर्मा	100.00
7—फ्रूट एवं वेजीटेबिल	..	डा० संजीव कुमार	150.00

(17) ट्रेड-फसल सुरक्षा

उद्देश्य—

(1) फसल सुरक्षा व्यवसाय की सामान्य जानकारी कराना।
(2) फसल सुरक्षा सेवा अपना कर फसलों को होने वाली हानि से इन्हें बचाना ।

(3) फसल सुरक्षा सेवा द्वारा प्रतिवर्ष हजारों टन खाद्यान्न को नष्ट होने से बचाना ।

(4) फसल सुरक्षा व्यवसाय में दक्षता प्राप्त कर इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाना ।

(5) श्रम के प्रति आस्था उत्पन्न करना तथा आत्म निर्भर बनाना ।

(6) कुशल नागरिक निर्माण में योगदान देना ।

(7) फसल सुरक्षा सेवा सम्बन्धी यन्त्रों एवं उपकरणों आदि का समुचित ज्ञान प्राप्त कर अपने निजी जीवन में उपयोग करना ।

(8) फसल सुरक्षा सेवा व्यवस्था का विद्यालय में सफल प्रदर्शन करना ।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी रोजगार--

(1) सरकारी, सरकारी विभागों में फसल सुरक्षा सहायक की कार्य करने का अवसर प्राप्त करना ।

(2) फसल सुरक्षा का उत्पादन तथा वितरण इकाइयों में रोजगार प्राप्त करना ।

(ख) स्वरोजगार--

1--फसल सुरक्षा सम्बन्धी रसायनों तथा यंत्रों--उपकरणों की आपूर्ति करने सम्बन्धी व्यवस्था को अपनाना ।

2--फसल सुरक्षा के यंत्रों, उपकरणों तथा रसायनों की दुकान चलाना ।

3--फसल सुरक्षा के यंत्रों, उपकरणों को किराये पर चलाना ।

4--सहकारी समितियां बनाकर फसल सुरक्षा के क्षेत्र में लघु उद्योग-धन्धा चलाना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड के 80 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों का प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक-1--

इकाई-1--

(क) उद्यमिता बोध--उद्यम उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनायें । उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्यवस्था एवं उद्यमित विकास प्रक्रिया ।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमायें तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान । विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई-2--

(1) फसल सुरक्षा का सामान्य ज्ञान ।

(2) फसल सुरक्षा की विभिन्न विधियों की जानकारी ।

(3) पादप रोगों से होने वाली हानियां, उनके लक्षण, कारण एवं प्रकृति का ज्ञान ।

(4) फसल सुरक्षा से सम्बन्धित विभिन्न संगठनों के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी ।

(5) फसल सुरक्षा की समस्यायें एवं उनके समाधान का ज्ञान ।

इकाई-3--

(1) धान्य फसलों में धान, गेहूं, गन्ना, सरसों, अरहर, ज्वार, मक्का, कपास, मूंग, उरद तथा मटर । सब्जियों में आलू, टमाटर, बैंगन, भिण्डी, गोभी तथा फलों में आम, अमरूद, पपीता, जामुन, सेब के रोगों एवं कीटों का अध्ययन और उनके रोक-थाम के उपाय की सामान्य जानकारी ।

(2) परजीवी पौधों की जानकारी तथा उनसे होने वाली क्षति एवं उनसे बचाव के उपाय का ज्ञान ।

(3) वायरस द्वारा उत्पन्न प्रमुख रोगों की सामान्य जानकारी । फसल सुरक्षा के विभिन्न उपाय अपनाने का ज्ञान ।

(4) फसलों के प्रमुख खर-पतवार, उनका वर्गीकरण उनसे हानियां एवं रोकथाम के उपाय की जानकारी ।

प्रयोगात्मक क्रिया कलाप

(क) दीर्घ प्रयोग :

(1) कीट संकलन एवं उनकी जीवन-चक्र की रेखांकन करना ।

(2) इमलसन मिश्रण बनाना ।

(3) पेस्टन तैयार करना तथा उनके प्रयोग विधि का प्रदर्शन ।

(4) रसायन का घोल तैयार करना, उनका प्रयोग तथा उसमें अपनायी जाने वाली सावधानियों की क्रियात्मक समझ ।

(5) फसलों पर पाउडर का छिड़काव करना ।

(6) भण्डार गृह में रसायनों का प्रयोग करना ।

(7) उपकरणों को खोलने एवं बांधने की समझ ।

(8) रसायन एवं उपकरण के प्राप्ति केन्द्रों की जानकारी एवं उन स्थानों का पर्यवेक्षण तथा उसका विवरण तैयार करना ।

(ख) लघु प्रयोग :

(1) विभिन्न खर-पतवारों की पहचान ।

(2) विभिन्न पादप रोगों की पहचान ।

(3) विभिन्न पादप कीटों की पहचान ।

(4) फसल सुरक्षा उपकरणों की पहचान ।

(5) कवकनाशी रसायनों की पहचान ।

(6) कीटनाशी रसायनों की पहचान ।

(7) खर-पतवारनाशी रसायनों की पहचान ।

(8) भण्डारण में प्रयोग होने वाले रसायनों की पहचान ।

(9) भण्डारण के कीटों की पहचान ।

(10) भण्डारण में हानि पहुंचाने वाले जन्तुओं की पहचान करना ।

संस्तुत पुस्तकें

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक का नाम एवं पता	मूल्य
1	2	3	4	5
				रु0
1	फसल सुरक्षा	डा0 धर्मराज सिंह	ग्राम विकास प्रकाशन, कमिश्नर कम्पाउण्ड, कालोनी, इलाहाबाद	16.00
2	सब्जी की खेती	दर्शनानन्द	ग्राम विकास प्रकाशन कमिश्नर कम्पाउण्ड कालोनी, इलाहाबाद	16.00
3	फलों की खेती	डा0 राम कृपाल पाठक	ग्राम विकास प्रकाशन, कमिश्नर कम्पाउण्ड कालोनी, इलाहाबाद	25.00
4	नया कृषि कीट विज्ञान	बी0 ए0 डेविड एवं एम0 एच0 डेविड	सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद	12.00
5	पादप रोग नियंत्रण	डा0 उपाध्याय एवं मथुर	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	12.00
6	खर-पतवार नियंत्रण	प्रो0 ओम प्रकाश	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	

1	2	3	4	5
				रु0
7	फसलों के रोगों की रोकथाम	डा0 संगम लाल	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्व-विद्यालय, पन्तनगर, नैनीताल	20.00
8	फसलों के रोग	डा0 मुखोपाध्याय एवं डा0 सिंह	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्व विद्यालय, पन्तनगर, नैनीताल	50.00
9	फसलों के हानिकारक कीट	डा0 बिंदा प्रसाद खरे	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्व-विद्यालय, पन्त नगर, नैनीताल	22 00
10	खर पतवार नियंत्रण	डॉ0 विष्णु मोहन मान	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्व-विद्यालय, पन्तनगर, नैनीताल	25.00
11	पादप रक्षा कीट नियंत्रण	डा0 उपाध्याय एवं माथुर	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	22.50
12	प्लाण्ट प्रोटेक्शन	डा0 उपाध्याय एवं माथुर	कुक्का पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ	30.00
13	सचित्र कृषि विज्ञान	श्री श्याम प्रसाद शर्मा	भारत भारती प्रकाशन, मेरठ	20.00
14	कृषि विज्ञान	श्री गंगा महेश मिश्र	राम नारायण लाल, इलाहाबाद	20.00

(18) ट्रेड--मुद्रण

उद्देश्य--

1--छात्रों में उद्यमिता--गुणों का विकास करना ।
2--छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेषित करना ।
3--छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपर्युक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
4--छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
5--छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।
6--छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी रोजगार
(ख) स्वरोजगार

सरकारी तथा निजी मुद्रण उद्यमों में कुशल कामगार के पद का कार्य कर सकते हैं--उदाहरण के लिए--कम्पोजीटर, मुद्रण मशीन चालक, प्रूफ रीडर, बुक बाइण्डर, छोटी इकाई के रूप में निजी उद्योग भी लगा सकते हैं ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी बाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई--एक

(क) उद्यमिता बोध--

उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार योजना का महत्व एवं सम्भावनाएं । उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(ख) लघु उद्योग में स्वरोजगार--

लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग में महत्व सहायक सरकारी तथा गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई--दो

संयोजन विधियां (कम्पोजिंग प्रोसेसेज)--

(अ) संयोजन (कम्पोजिंग) का अर्थ, हाथ द्वारा संयोजन, मोनो मशीन द्वारा संयोजन, लाइनो मशीन द्वारा संयोजन, फोटो सेटर द्वारा संयोजन और कम्प्यूटर या डेस्कटाप पब्लिशिंग (डी० टी० पी०) मशीन द्वारा संयोजन ।

(ब) प्रूफ सम्बन्धित--

प्रूफ का अर्थ, प्रूफ के प्रकार, प्रूफ पढ़ने की विधि, प्रूफ पढ़ने के आई० एस० आई० (भारतीय मानक) चिन्ह ।

इकाई--तीन

(अ) कैमरा तथा ब्लाक बनाना--

कैमरा का अर्थ, विभिन्न प्रकार के कैमरा वर्टिकल (क्षैतिजकार, डार्करूम तथा इलेक्ट्रानिक) निगेटिव तथा पाजीटिव बनाना, ब्लाक का अर्थ एवं प्रयोग लाइन ब्लाक, हाफटोन ब्लाक, ब्लाक बनाने हेतु आवश्यक सामग्रियां ।

(ब) पृष्ठ संयोजन--

पृष्ठ संयोजन (इम्पोजिशन) का अर्थ, एक पृष्ठ, दो पृष्ठ, चार पृष्ठ तथा आठ पृष्ठों तक की योजना ।

प्रयोगात्मक

लघु प्रयोगात्मक अभ्यास--

1--अक्षर संयोजन विभाग की साज-सज्जा तथा उपकरणों का परिचय ।
2--मुद्रणालय में सुरक्षा (सेफ्टी) उपाय ।
3--मुद्रण तथा बाइंडिंग विभाग की मशीनों और उपकरणों का परिचय ।
4--टाइप केस ले आउट याद करना एवं कम्पोजिंग स्टिक में मांप बांधना ।
5--प्रूफ उठाना तथा टाइप मैटर में लगी स्याही की सफाई करना ।
6--मुद्रणालय की सभी मशीनों तथा उपकरणों में स्नेहन (लुब्रीकेटिंग) तेल या ग्रीस देना और सफाई करना ।
7--मुद्रित तथा अमुद्रित कागज को बराबर करना और गिनती करना ।
8--पुरानी पुस्तकों की मरम्मत करना ।

दीर्घ प्रयोगात्मक अभ्यास--

1--लेटर हेड तथा विजिटिंग कार्ड आदि छोटे जाब कार्यों की कम्पोजिंग करना तथा प्रूफ उठाकर उसे पढ़ना और संशोधन करना ।
2--विभिन्न मशीनों के लिए एक या दो पृष्ठों का फर्मा कसना ।
3--मुद्रण मशीन की तैयारी, मुद्रण मशीन पर फर्मा चढ़ाना, फर्मा की तैयारी तथा लगातार मुद्रण कार्य करना ।

4--मुद्रण मशीन पर एक या दो रंग की छपाई करने का अभ्यास
5--स्थानीय किसी एक या अधिक मुद्रणालयों में छात्रों को ले जाकर निरीक्षण कराना और छात्रों द्वारा एक अध्ययन रिपोर्ट तैयार कराना जो 390 शब्दों से अधिक न हो।
6--बाइंडिंग करने के लिए मुद्रित अथवा अमुद्रित कागजों को मोड़ना, सिलाई उठाना, सिलाई करना।
7--पुस्तकों पर कागज के कवर तथा दफ्ती के कवर लगाने का अभ्यास।
8--सिल्क स्क्रीन मुद्रण की तैयारी तथा मुद्रण का अभ्यास करना।

पुस्तकों की सूची

हिन्दी पुस्तकें--

1--अक्षर मुद्रण शास्त्र	चन्द्रशेखर मिश्र
2--संयोजन शास्त्र	,, ,,
3--आफसेट मुद्रण शास्त्र	,, ,,
4--मुद्रण परिस्करण, भाग-1	के0 सी0 राजपूत
5--मुद्रण परिस्करण, भाग-2	,, ,,
6--आधुनिक ग्रन्थ शिल्प	चन्द्रशेखर मिश्र
7--मुद्रण स्याहियाँ तथा कागज	,, ,,
8--मुद्रण प्रौद्योगिकी सामग्री	एम0 एन0 लिड़बिड़े
9--ब्लाक मेकर्स गाइड	एस0 अग्रवाल

19 --ट्रेड-रेडियो एवं टेलीविजन

उद्देश्य--

1--वर्तमान समय में रेडियो एवं टेलीविजन की बढ़ती हुई माँग तथा इस विषय की जानकारी रखने वाले व्यक्तियों की माँग को देखते हुए यह आवश्यक है कि हाई स्कूल स्तर से बच्चों में इस विषय में रुचि उत्पन्न करना।
2--10+2 में रेडियो एवं टी0 वी0 पहले से चल रहा है। इसके लिये हाई स्कूल स्तर से बच्चों को तैयार करना तथा इण्टरमीडिएट में एडमीशन के समय वरीयता।
3--छात्र शहर तथा गाँव में व्यवसाय का उचित अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

रोजगार के अवसर--

1--रेडियो एवं टी0 वी0 इण्डस्ट्री पी0 सी0 बी0 पर एसेम्बलिंग का कार्य प्राप्त कर सकते हैं।
2--विभिन्न टी0 वी0 सर्विस सेन्टर में टी0 वी0 टेक्नीशियन का अवसर प्राप्त कर सकते हैं।
3--किसी बड़ी इकाई के साथ लघु उद्योग स्थापित करना।
4--स्वयं की दुकान प्रारम्भ कर सकना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जावेगी।

पाठ्यक्रम

सैद्धान्तिक--

इकाई-1--

1--उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों में स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनायें। उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया।
(2) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजेन्सियों के नाम एवं कार्य लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान। विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय।

इकाई-2--

तरंग एवं गति तरंग तथा उनके प्रकार, प्रगामी तरंगों का सूत्र कालान्तर, कला, आवृत्ति, तरंग दैर्ध्य तथा उनमें सम्बन्ध।

इकाई-3—

विद्युत क्षेत्र व विभव, कूलम का नियम, विद्युत चालान व स्वतन्त्र इलेक्ट्रान, ओहम के नियम चालकों पर ताप का प्रभाव, ओहमी व अरा ओहमी परिपथ, फैराडे के नियम, विद्युत चुम्बक। विद्युत चुम्बक चुम्बकत्व का परमाणवी माडल।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

लघु प्रयोग—

(1) कलर कोड की सहायता से प्रतिरोधों का मान पढ़ना, तथा प्रतिरोधों की वाटेज को जानना।
(2) विभिन्न प्रकार के प्रतिरोधों को पहचानना, समानान्तर तथा श्रेणी क्रम में जोड़ना तथ उनका मान ज्ञात करना।
(3) विभिन्न प्रकार के धारित्रों को पहचानना, तथा श्रेणी व समानान्तर क्रम में जोड़ना तथा उनका मान ज्ञात करना।
(4) विभिन्न प्रकार के डायोडों तथा ट्रांजिस्टरों को पहचानना।
(5) मल्टीमीटर की सहायता से वोल्टेज, धारा व प्रतिरोध मापना।
(6) मल्टीमीटर की सहायता से डायोड तथा ट्रांजिस्टरों का परीक्षण करना।
(7) इलेक्ट्रानिक्स में प्रयोग होने वाले विभिन्न यन्त्रों की जानकारी।
(8) पी० सी० बी० पर सोल्डर करने की विधि तथा सावधानियां।

दीर्घ प्रयोग—

(1) साधारण प्रकार का बैटरी एलीमिनेटर निर्माण (असम्बल) करना।
(2) विभिन्न निर्गत वोल्टेजों के लिये बैटरी एलीमिनेटर का निर्माण करना।
(3) स्थिर वोल्टेज के लिये बैटरी एलीमिनेटर का निर्माण करना।
(4) ट्रांजिस्टरों की सहायता से प्रवधक (एम्पलीफायर) का निर्माण करना।
(5) ट्रांजिस्टरों की सहायता से ध्वनि परिपथ (म्युजिकल सर्किट) का निर्माण करना।
(6) ट्रांजिस्टर अभिग्राही के विभिन्न भागों का वोल्टेज ज्ञात करना।
(7) ट्रांजिस्टर अभिग्राही के सामान्य दोषों को ज्ञात करना तथा उनका निवारण करना।
(8) टेलीविजन के विभिन्न भागों के वोल्टेज ज्ञात करना।

संस्तुत पुस्तकें—

1—बेसिक इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग	लेखक—पी० एस० जासड़ तथा सत्या जासड़
2—इलेक्ट्रानिक थ्रू प्रैक्टिकलस	,, पी० एस० जासड़
3—प्रारम्भिक इलेक्ट्रानिकी	,, कुमार एवं त्यागी
4—इलेक्ट्रानिक्स	,, महेन्द्र भारद्वाज
5—टेलीविजन	,, जोन एण्ड राबर्ट
6—बेसिक शाप प्रैक्टिकल— इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग	,, अलवानी हुम्मा

20—ट्रेड—बुनाई तकनीक

उद्देश्य—

1—छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना
2—छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।
3—छात्रों को 10×2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।
4—छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।
5—छात्रों का कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।
6—छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी।

विशिष्ट उद्देश्य—

1—विभिन्न प्रकार की बुनाई डिजाइनों को बनाकर हथकरघा उद्योग को उपलब्ध करना।
2—विभिन्न प्रकार की बुनाई डिजाइन के द्वारा फिगर डिजाइन बनाना।
3—इस उद्योग में विद्यार्थी को दफ्ती के ऊपर रेशे द्वारा फीगर डिजाइन तैयार करना/सिखाना।
4—बुनाई तकनीक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् बुनाई से सम्बन्धित लघु उद्योग स्थापित कर सकता है।

रोजगार के अवसर--

बुनाई के तकनीक ट्रेड से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं -
(क) वेतन भोगी रोजगार--1--खादी ग्रामोद्योग, यू0 पी0 हैण्डलूम में रोजगार के अवसर ।
2--छोटे कारखानों में बुनाई के सहायक कार्यकर्त्ता के रूप में ।
3--बुनाई अध्यापकों के लिये प्रशिक्षित शिक्षक की उपलब्धि ।
(1) स्वरोजगार--(1) छोटे बुनाई उद्योग स्थापित करना ।
(2) सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त करके उद्योग चलाना ।
(3) न्यूनतम पूंजी में उद्योग का कार्य प्रारम्भ करके जीवनयापन करना ।
(4) अपने साथ में पूरे परिवार को साथ लगाकर कार्य करके जीवन यापन करना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की संद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

पाठ्यक्रम

संद्धान्तिक--

इकाई--1

(क) उद्यमिता बोध--उद्यम, उद्यमी एवं उद्यमिता की परिभाषा एवं व्याख्या, वर्तमान परिस्थितियों स्वरोजगार का महत्व एवं सम्भावनाएं । उद्यमिता मूल्य एवं उद्यमिता गुणों की व्याख्या एवं उद्यमिता विकास प्रक्रिया ।

(ख) लघु उद्योग एवं स्वरोजगार--लघु उद्योग की परिभाषा, सीमाएं तथा लाभ, राष्ट्रीय औद्योगिक नीति में लघु उद्योग का महत्व, लघु उद्योग में सहायक सरकारी एवं गैर सरकारी एजन्सियों के नाम एवं कार्य, लघु उद्योग की स्थापना, प्रक्रिया एवं औपचारिकताओं का संक्षिप्त परिचय, बाजार सर्वेक्षण एवं कारोबार संचालन का ज्ञान । विभिन्न स्वरोजगार की योजनाओं का परिचय ।

इकाई--2

(क) कपास की कृषि, उपयुक्त भूमि एवं प्रकार ।
(ख) ओटाई के प्रकार, धुनाई, धुनकी के भाग एवं कार्य ।
(ग) पूनी बनाना एवं सूत कातना ।
(घ) तकली, चर्खी के प्रकार एवं भाग ।
(ङ) विभिन्न प्रकार के तन्तु एवं रेशा ।
(कपास, ऊन, रेशम, खनिज कृत्रिम तन्तु)

इकाई--3

(क) सूत से कपड़ा बनाने तक की समस्त क्रियाएं ।
(ख) लच्छी सुलझाना, बाबिन भरना, सटर में बाबिन लगाना, सांचे से निकालना, ड्रम मशीन पर चढ़ाना, बाने के बेलन पर लपेटना, होल्ड भरना, कंघी में भरना, बुनाई करना ।
(ग) करघे या लूम का परिचय, हत्थे के भाग एवं कार्य ।

प्रयोगात्मक

लघु-उद्योग :

1--सूत की लच्छियों को सुलझाना ।
2--चरखी के ऊपर सूत को चढ़ाकर चरखे की सहायता से ताने को बाबिन भरना ।
3--भरी हुई बाबिनों को सटर में सजाना ।
4--ताने के तारों की डिजाइन के अनुसार वय में भरना और कंघी में भरना ।
5--ताने एवं बाने की बाबिन भरना ।
6--लीज राड को ताने में लगाना ।
7--शटल में ताने एवं बाबिन लगाना ।
8--चरखे को चलाना ।
9--तकली से सूत कातना ।
10--सूत की लच्छियों को अंटा पर चढ़ाना ।

दीर्घ प्रयोग--

1--टटर से ताने के तागे निकालना ।
2--क्रम से बाबिनों को लगाना ।
3--हैंक या (बिनिया) से तागे निकालना ।
4--ड्रम मशीन पर ताने जुक्ट्टी बांधना ।
5--बाने के बेलन में ताने के तागे लपेटना ।
6--बाने के बेलन को करघे पर फिट करना ।
7--डिजाइन के अनुसार ड्राफ्टिंग करना ।
8--आई से कंघी में पिराना या तागे निकालना ।
9--ताने के तागों को जुट्टी बांधना ।
10--करघे पर बुनाई करना ।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम	मूल्य
1	2	3	4	5
				रु0
1	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	डा0 प्रमिला वर्मा	विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी	55.00
2	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	डा0 प्रमिला वर्मा	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	55.00
3	बुनाई पुस्तक	श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव	नवीन पुस्तक भंडार, दारागंज, इलाहाबाद	8.00
4	हाउस होल्ड टेक्सटाइल	श्री दुर्गादत्त	बुक कम्पनी, नई दिल्ली	75.00
5	भारतीय कशीदाकारी	श्रीमती शिन्दे एवं कु0 पंडित	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर, नैनीताल	27.00

हिन्दी

[कक्षा-10]

इस विषय में 50-50 अंक के दो प्रश्न-पत्र होंगे । प्रत्येक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

प्रथम प्रश्न-पत्र--पूर्णांक 50

(हिन्दी गद्य एवं पद्य साहित्य)

1--हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय--शुक्ल युग से शुक्लोत्तर युग तक — 04 अंक
2--हिन्दी पद्य साहित्य का संक्षिप्त इतिहास--(रीतिकाल से आधुनिक काल तक) — 04 अंक
3--गद्य संकलन (निर्धारित पाठ)-- — 08 अंक
'आचार्य द्विवेदी जी,' 'ममता,' 'क्या लिखूं,' 'नर से नारायण,' 'भारतीय संस्कृति,' 'मित्रता,' 'साहित्य,' 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से,' 'अजन्ता,' 'ठेले पर हिमालय,' 'पानी में चन्दा और चांद पर आदमी' ।
सन्दर्भ--(सन्दर्भ सम्बन्धी विकल्प देकर वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न) — 02 अंक
सप्रसंग व्याख्या — 04 अंक
साहित्यिक सौन्दर्य--विविध उद्धरण देकर शैलीगत सौन्दर्य का आंकलन — 02 अंक
4--लेखक परिचय--(जीवनी, साहित्यिक अवदान एवं शैली) — 04 अंक

5--काव्य संकलन--पाठ--सूरदास, तुलसीदास, रसखान, बिहारी लाल, सुमित्रा नन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, राम कुमार वर्मा, राम नरेश त्रिपाठी, मखन लाल चतुर्वेदी, बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन', राम धारी सिंह 'दिनकर', सुभद्रा कुमारी 'चौहान', विविधा — 10 अंक

सन्दर्भ — 02 अंक

व्याख्या — 06 अंक

काव्यगत विशेषतायें — 02 अंक

6--पठित कविताओं के केन्द्रीय भाव एवं सौन्दर्य पर आधारित वस्तुनिष्ठ प्रश्न — 05 अंक

7--कवि परिचय--(जीवनी, साहित्यिक अवदान एवं शैली) — 04 अंक

8--काव्य सौन्दर्य के तत्व--

(क) हास्य एवं करुण रस--परिभाषा एवं उदाहरण — 02 अंक

अथवा

दिये गये उद्धरण में निहित रस की पहचान

(ख) छन्द--दोहा एवं सोरठा--लक्षण एवं उदाहरण — 02 अंक

अथवा

उद्धृत छन्द की पहचान

(ग) अलंकार--अर्थालंकार, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा--परिभाषा और उदाहरण — 02 अंक

अथवा

दिये गये उद्धरण से अलंकारों की पहचान

9--शब्द रचना के तत्व — 05 अंक

उपसर्ग एवं प्रत्यय--

उपसर्गों के प्रयोग एवं शब्द निर्मित — 0 अंक
अ, अन्, अधि, अप, अनु, आ, उप, सह, सहा, अति, निर, अभि, परि, वि, सु, स
(हिन्दी एवं संस्कृत उपसर्ग) एवं ला तथा हम (अरबी फारसी से आगत उपसर्ग)

प्रत्यय--

प्रत्ययों से शब्द निर्मित — 02 अंक
आई, त्वा, ता, पन, वा, हट्, वट्

द्वितीय प्रश्न-पत्र--पूर्णांक-50

1--संस्कृत परिचायिका का सन्दर्भ सहित हिन्दी अनुवाद — 07 अंक

2--पठित पाठों पर आधारित संस्कृत में लघु उत्तरीय प्रश्न — 03 अंक

3--संस्कृत व्याकरण-- — 10 अंक

(क) सन्धि--यण एवं वृद्धि--परिभाषा, उदाहरण एवं पहचान — 02 अंक

(ख) शब्द रूप (सभी विभक्तियों एवं वचनों में)-- — 02 अंक
संज्ञा शब्द--फल, मति, मधु, नदी
सर्वनाम शब्द--अस्मद् एवं युष्मद्

(ग) समास--तत्पुरुष समास (सभी भेदों सहित) — 02 अंक

(घ) धातु रूप--(लट्, लोट्, विधिलिंग, लङ् तथा लृट् लकारों में) पठ्, हस्, दृश्, वच् — 02 अंक

(ङ) अधोलिखित सूत्रों के आधार पर कारकों की परिभाषा एवं उदाहरण-- — 02 अंक
सम्प्रदान--कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्
अपादान--ध्रुवमपायेऽपादानम्
अधिकरण--आधारोऽधिकरणम्

4—हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद	06 अंक
5—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द—सरोवर, वायु, गो, आकाश, मातृ, पितृ, चन्द्र	02 अंक
6—पाठ्य-पुस्तक से कोई एक श्लोक लिखना जो प्रश्न-पत्र में न दिया हो	02 अंक
7—खण्ड काव्य—सारांश, चरित्र-चित्रण तथा तथ्यपरक प्रश्न	05 अंक
8—निबन्ध—पौराणिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा सामाजिक समस्याओं पर आधारित जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य, शिक्षा, ट्राफिक रूल पर भी प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे ।	10 अंक
9—कार्यालयीय पत्राचार एवं वाक्य शुद्धि—	03 अंक

(क) नौकरी के लिए आवेदन-पत्र ।
(ख) अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र ।
(ग) सम्पादक के नाम पत्र ।

10—अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना— 02 अंक

उदाहरणार्थ—

अशुद्ध—पांच रेलवे के कर्मचारी पकड़े गये ।
शुद्ध—रेलवे के पांच कर्मचारी पकड़े गये ।
अशुद्ध—यह गुलाब का फूल है ।
शुद्ध—यह गुलाब है ।
अशुद्ध—अनेकों लोगों ने सरकारी नीतियों की प्रशंसा की ।
शुद्ध—अनेक लोगों ने सरकारी नीति की प्रशंसा की ।
अशुद्ध—सरकारी मिट्टी के तेल की दुकान बन्द है ।
शुद्ध—मिट्टी के तेल की सरकारी दुकान बन्द है ।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें—

पुस्तक का नाम	पाठ	लेखक का नाम
1	2	3
5—गद्य संकलन (भाग दो) (कक्षा 10 के लिए)	1—मित्रता	राम चन्द्र शुक्ल
	2—आचार्य द्विवेदी जी	हरिभाऊ उपाध्याय
	3—ममता	जयशंकर 'प्रसाद'
	4—क्या लिखूं ?	पदुमलाल पुन्ना लाल बख्शी
	5—नर से नारायण	गुलाब राय
	6—भारतीय संस्कृति	राजेन्द्र प्रसाद
	7—ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से	रामधारी सिंह 'दिनकर'
	8—अजन्ता	भगवत शरण उपाध्याय
	9—साहित्य	लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
	10—ठेले पर हिमालय	धर्मवीर भारती
	11—पानी में चन्दा और चांद पर आदमी	जय प्रकाश भारती
6—काव्य संकलन (भाग दो) (कक्षा 10 के लिए)	—पद	1—सूरदास
	—जनकपुर में राम, लक्ष्मण	2—तुलसीदास
	—पद, वन पथ पर	
	—सवैया, कवित्त	3—रसखान
	—दोहे	4—बिहारी लाल
	—चींटी, यह धरती कितना देती है, चन्द्रलोक में प्रथम बार	5—सुमित्रा नन्दन पन्त
	—हिमालय से, वर्षा सुन्दरी के प्रति अधिकार	6—महादेवी वर्मा

1	2	3
6--काव्य संकलन (भाग दो) (कक्षा 10 के लिये	--निर्झर से, क्या गाऊं	7--राम कुमार वर्मा
	--सत्कर्तव्य, --स्वदेश प्रेम	8--राम नरेश त्रिपाठी
	--पुष्प की अभिलाषा, जवानी	9--माखन लाल चतुर्वेदी
	--हिन्दुस्तान हमारा है	10--बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन'
	--मनुष्य और सर्व, आग की भीख, भगवान के डाकिये	11--रामधारी सिंह 'दिनकर'
	--वीरों का कैसा हो बसन्त	12--सुभद्रा कुमारी चौहान
	--झांसी की रानी की समाधि पर	13--बच्चन एवं नागार्जुन
	--पथ की पहचान, बादल को घिरते देखा है	14--विविधा
7--संस्कृत परिचायिका (कक्षा 10 के लिये)	1--वाराणसी 2--अन्याकितविलास: 3--वीर: वीरेणपूज्यते 4--उद्बोधनम् 5--प्रबुद्धो ग्रामीण: 6--देशभक्त:/चन्द्र शेखर: 7--केन कि वर्धते 8--अन्तरिक्ष यात्रा 9--भारतीया संस्कृति: 10--जीवन-सूत्राणि 11--व्याकरण	

खण्ड काव्य के लिये--

निम्नलिखित पुस्तकों में से कोई एक पुस्तक को अध्ययन, अध्यापनार्थ जिलेवार निम्नवत् निर्धारित किया जाता है--

क्रमांक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम	अनुवादित जिले
1	2	3	5
1	मुक्तिदूत	अशोक कुमार अग्रवाल 43, चाहचद इलाहाबाद	आगरा, बस्ती, गाजीपुर, फतेहपुर, बाराबंकी, उन्नाव ।
2	ज्योति जवाहर	मोहन प्रकाशन, जवाहर नगर, कानपुर	कानपुर, टेहरी गढ़वाल, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, ललितपुर, रामपुर, गोण्डा ।
3	अग्रपूजा	हिन्दी भवन, 63, टंगोर नगर, इलाहाबाद	इलाहाबाद, आजमगढ़, मथुरा, देहरादून, पिथौरागढ़, चमोली,
4	मेवाड़ मुकुट	शंकर प्रकाशन, 8/98, आर्य नगर, कानपुर	बुलन्दशहर, देवरिया, बरेली, सुल्तानपुर, सीतापुर, बहराइच ।

1	2	3	4
5	जय सुभाष	रोहिताश्व प्रकाशन, 268 मालती सदन, ऐशबाग, लखनऊ	लखनऊ, सहारनपुर, फैजाबाद, बांदा, झांसी, हरदोई ।
6	मातृ भूमि के लिये	आधुनिक प्रकाशन गृह, दारागंज, इलाहाबाद	गोरखपुर, मुरादाबाद, शाहजहांपुर, लखीमपुर खीरी, मैनपुरी, मुजफ्फरनगर ।
7	कर्ण	बुनियादी साहित्य मन्दिर, पटना-4	अलीगढ़, जौनपुर, बलिया, हमीरपुर, एटा, नैनीताल ।
8	कर्मवीर भरत	हिन्दुस्तान बुक हाउस, अस्पताल रोड, परेड, कानपुर	मेरठ, फर्रुखाबाद, पौड़ी-गढ़वाल, पीलीभीत, रायबरेली, उत्तरकाशी
9	तुमुल	इन्डियन प्रेस पब्लिकेशन प्रा० लि० 36, पन्नालाल रोड, इलाहाबाद	वाराणसी, इटावा, बिजनौर, जालौन, अल्मोड़ा, बदायूं ।

प्रारम्भिक हिन्दी

(कक्षा 10)

(हिन्दी से छूट पाने वाले छात्रों के लिये)

इस विषय में दो प्रश्न-पत्र होंगे । प्रत्येक प्रश्न-पत्र 50-50 अंकों तथा तीन घन्टों का होगा ।

प्रथम प्रश्न-पत्र--50 अंक

	अंक
1—हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय (शुक्ल युग व शुक्लोत्तर युग लेखकों एवं रचनाओं के नाम)	05
2--पद्य साहित्य का संक्षिप्त इतिहास रीतिकाल तथा आधुनिक काल (कवि एवं उनके काव्य)	05
3—गद्य संकलन का सन्दर्भ सहित अर्थ (मित्रता, आचार्य द्विवेदी जी, ममता, नर से नारायण, भारतीय संस्कृति)	10
4—लेखकों का परिचय (जीवनी व साहित्यिक योगदान)	05
5--काव्य संकलन का सन्दर्भ सहित अर्थ (सूरदास, तुलसीदास, सुमित्रानन्दन पन्त, राम नरेश त्रिपाठी, सुभद्रा कुमारी चौहान)	10
6--पठित कविताओं का केन्द्रीय भाव	05
7—काव्य सौन्दर्य के तत्व	
(क) अलंकार (उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा)	02
(ख) रस—हास्य एवं करुण (लक्षण व उदाहरण)	02
(ग) छन्द—दोहा, चौपाई (लक्षण व उदाहरण)	02
8--पत्र लेखन--	04
(क) पारिवारिक पत्र,	
(ख) मित्रों एवं सम्बन्धियों को पत्र,	
(ग) अवकाश के लिये प्रार्थना-पत्र ।	

द्वितीय प्रश्न–पत्र—50 अंक

	अंक
1—संस्कृत गद्य तथा पद्य का हिन्दी में अनुवाद	07
(वाराणसी, अन्योक्ति विलास, प्रबुद्धो ग्रामीणः, भारतीया संस्कृतिः, जीवनसूत्राणि)	
2—पठित पाठों पर आधारित संस्कृत के लघु उत्तरीय प्रश्न	02
3—हिन्दी के वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद	03
4—सूक्तियों की व्याख्या (हिन्दी में)	03
5—संस्कृत व्याकरण— (06 अंक)	
(क) सन्धि (इकोयणचि), व्यंजन एवं विसर्ग	22
(ख) शब्द रूप—	02
संज्ञा—कल, मति, पयस्	
सर्वनाम—अस्मद्, युष्मद्	
(ग) धातु रूप—हस्, दृश्, पच्, कृ	02
6—हिन्दी व्याकरण— (14 अंक)	
(क) समास (अव्ययी भाव कर्मधारय, बहुव्रीहि)	02
(ख) लोकोक्तियों तथा मुहावरों का अर्थ एवं वाक्यों में प्रयोग	04
(ग) पर्यायवाची शब्द	02
(घ) विपरीतार्थक शब्द	02
(ङ) तत्सम, तद्भव, विदेशी, व्रज व अवधी शब्दों की पहचान	02
(च) वाक्यांशों के लिये एक शब्द निर्माण	02
7—निबन्ध (संस्मरणात्मक एवं आत्माभिव्यक्ति)	15
जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं ट्राफिक रूल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे ।	

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक—

(1) गद्य संकलन (कक्षा 10 के लिए)
(भाग-दो)

(2) काव्य संकलन (कक्षा 10 के लिए)
(भाग-दो)

(3) संस्कृत परिचायिका (कक्षा 10 के लिए)
(भाग-दो)

(4) सामान्य हिन्दी (कक्षा 6, 7, 8 के लिए निर्धारित)
(राजकीय प्रकाशन)

गुजराती

(कक्षा–10)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न–पत्र तीन घंटे का होगा ।

भाग–अ –50 अंक

	अंक
1—व्याकरण—	18
(क) वचन परिवर्तन	06
(ख) लिंग परिवर्तन	06
(ग) वाक्य शुद्धि	06
2—रचना—	20
(क) निबन्ध लेखन—(भावनात्मक वर्णनात्मक)	12

अथवा

दी गई रूपरेखा के आधार पर कहानी का विकास करना ।

(ख) पत्र लेखन (व्यक्तिगत, कार्यालय सम्बन्धी, सम्पादक सम्बन्धी) । 8 अंक

3—अपठित गद्य खण्ड— 12 अंक

भाग-ब—50 अंक

1—गद्य—(पाठ्य-पुस्तक पर आधारित लघु प्रश्न) 20 अंक

2—पद्य—सन्दर्भ सहित व्याख्या तथा निर्धारित पुस्तक की कविताओं की समीक्षा 15 अंक

3—सहायक पुस्तक—स्वअध्ययन 15 अंक

(क) कविता 5 अंक

(ख) गद्य—सामान्य आलोचनात्मक समीक्षा, केन्द्रीय भाव तथा चरित्र-चित्रण । 10 अंक

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें—

गुजराती वचन माला—बसवीं कक्षा हेतु प्रकाशन 199 , गुजरात राज्यशाला पुस्तक माला, पुराना विधान सभा गृह, सेक्टर 17, गांधीनगर, गुजरात द्वारा प्रकाशित ।

गद्य—निम्नांकित पाठ पढ़ने होंगे—

1—जूनो मिस्त्री	धूमकेतु
2—लोहेनि सगई	पेटलीकार
3—थिगाटुन	सुरेश जोशी
4—श्रुतियेनी समाअती	सो बख्शी
5—बो लघु कथा	मोहन लाल पटेल
6—पृथ्वी बल्लभ खेन्दबो	के मुन्शी
7—सत्य आने अहिंसा	गांधी जी
8—मध्याह्ना नु काव्य	कलेलकर
9—मन्कारा	चन्द्रवाकर

पद्य—निम्नांकित कविताएं पढ़नी होंगी—

1—भजरे भजतुन	नर सिन्हा मेहता
2—चम्पा	अकहो
3—हवाई सखी	दयाराम
4—मेहामानोन सम्बोधन	कान्ता
5—चेलो कचेरो	मेघानी
6—उन्तोचाहूं	मनसुख लाल जवेरी
7—मन	निरंजन भगत

सहायक पुस्तक (स्वाध्याय)—

(1) गद्य—निम्न पाठ पढ़ने होंगे :

(क) अगागाबी ना अनुभव	रमन भाई निम्न कन्था
(ख) मोहादेव भाई नोदयारो	महादेव देसाई
(ग) एक-एकरार	इन्दूलाल याज्ञनिक
(घ) फक्ता पन्दार मिनीत	विभूति शाह

पद्य—निम्न कवितायें पढ़नी होंगी : 5 अंक

1—स्मृति भवन	पन्ना नायका
2—मजुब रकोवायो ये	श्याम साधु

उर्दू

(कक्षा 10)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

खण्ड (अ) 50 अंक

1--व्याकरण और उसका प्रयोग--व्याकरण के केवल उन्ही तत्वों पर बल दिया जायेगा जो भाषा के प्रयोगात्मक ज्ञान और उसके लेखन एव सम्भाषण पर आधारित हो । व्याकरण का अध्ययन एक विषय के रूप में अनिवार्य नहीं है परन्तु छात्रों को कक्षा में पढ़ते समय भाषा में व्याकरण के महत्व तथा वाक्य प्रयोग पर अधिक बल दिया जाय । साथ ही छात्रों का वाक्य विन्यास तथा दूसरे प्रचलित क्षेत्रीय भाषा में अनुवाद करने का अभ्यास कराना चाहिये। 10 अंक

2--साहित्यिक विधाएं-- 10 अंक

1--उपन्यास (नावेल), 2--अफसाना, 3--नज्म, 4--कसीदा, 5--मरसिया,

3--अलंकार--(सनाअते)-- 5 अंक

हुस्ने तालील, मराअतुननजीर, तजाद तलमी लफ व नसूर ।

तजनीस, तशबीह व इस्तियारा ।

4--इडियम्स व प्रोवर्ब्स (मुहावरात व जवेल अमलात)--5 अंक

5--निबन्ध लेखन-- 10 अंक

6--अपठित (गैर दरसी नसरी इकतेबास का खुलासा)--अंक 10

खण्ड (ब) 50 अंक

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक (गद्यांश)

"उर्दू की नई किताब"--कक्षा 10 के लिए प्रकाशन--एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली ।

(1) निम्नलिखित गद्य के पाठ्य अध्ययन के लिये प्रस्तावित हैं-- 15 अंक

(अ) (i) उमराव जान अदा (इकतिबास)--मिर्जा हादी रुस्वा
(ii) सवेरे जो कल मेरा आंख खुली--पतरस बुखारी
(iii) चारपाई (इकतिबास)--रशीद अहमद सिद्दीकी
(iv) पूरे चांद की रात कृशन चन्दर
(v) गरम कोट : राजेन्द्र सिंह बेदी
(vi) मौलवी अब्दुल हक--मौलाना हाली
(vii) हिन्दुस्तनी तहजीब के अनासिर--प्रो0 एहतशाम हुसेन

(ब) गद्य लेखक का जीवन परिचय (सवानेह हयात), गद्य लेखन की विशेषताएं, (नस्रनिगारी की खूबियां तथा लेखन शैली (तर्जे निगारिश) का ज्ञान (मालूमात) फराहम कराना । 05 अंक

(2) निर्धारित पाठ्य पुस्तक (पद्यांश)

"उर्दू की नई किताब--कक्षा 10 के लिए प्रकाशन--एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली ।

पद्यांश--

गजलियात--हाली, इकबाल, हसरत मूहानी, असगर गोण्डवी, फानी बदायूंनी, जिगर मुरादाबादी, फिराक गोरखपुरी, फैज अहमद फैज । --12 अंक

नजमियात : नजीर अकबराबादी, हाली, दुर्गा सहाय, चकबस्त, इकबाल, जोश, मलीहाबादी, अख्तरुल इमान, अलासरदार जाफरी । 4 अंक

कसीद--सौदा 2 अंक

मरसियां--मीर अनीस 2 अंक

3--उर्दू जबान व अदब का इरतका 5 अंक

2--उर्दू शोरा (जो पाठ्य-पुस्तक में निर्धारित हैं, के सवानेह हयात व उनके कलाम की खूबियों से छात्रों को रूशनास कराया जाय । 5 अंक

सहायक पुस्तक--

उर्दू अदब की तारीख--लेखक अजीमुलहक जुनेदी ।

प्रकाशन--एजूकेशन बुक हाउस, मुस्लिम यूनिवर्सिटी मार्केट, अलीगढ़ ।

पंजाबी

(कक्षा 10 के लिए)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग-एक	50 अंक
पद्य पाठ--	25
1--प्रसंग-अर्थ एवं भावार्थ	
2--कविता का सारांश	
3--कविता के सम्बन्ध में प्रश्न	
गद्य पाठ--	25
1--उपन्यास--प्रसंग	
2--विषय--वस्तु, पात्र भाषा	
3--लेखक की जीवनी	

भाग-दो	50 अंक
व्याकरण--	
1--मुहावरे	5
2--वाकखंड	3
3--पर्यायवाची शब्द	3
4--सामासिक शब्द	3
5--प्रत्यय-उपसर्ग	3
6--अनुवाद-हिन्दी से पंजाबी	5
पंजाबी से हिन्दी	5
7- निबन्ध--प्रचलित विषयों पर	15
8--पत्र-लेखन--पत्र-लेखन (व्यापारिक एवं कार्यालयीय)	8

निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें--

1--गद्य-पद्य (भाग-दो)--हरशरन कौर
2--जंगल दे शेर--जसवंत सिंह कंवल
3--पंजाबी व्याकरण लेख रचना--ज्ञानी लाल सिंह

बंगला

(कक्षा-10 के लिए)

इस विषय में 100 अंक का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

भाग-अ	50 अंक
व्याकरण	20 अंक

सन्धि, व्यंजन और विसर्ग (समास, कर्मधारय, बहुव्रीही, अव्ययी भाव, तद्धित प्रत्यय, कहावते, मुहावरे, लोकोक्तियां, विराम चिन्ह वाक्य परिवर्तन (साधारण, संयुक्त एवं मिश्रित) वाक्यों और शब्दों का संशोधन।

रचना--	30 अंक
1--निबन्ध	20 अंक
2--अपठित गद्य या दिये गये विचारों का विस्तार	10 अंक

जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं ट्राफिक रुल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के विषय में पूछे जायेंगे।

भाग-ब	50 अंक
गद्य--	25 अंक
1--सामान्य प्रश्न	15 अंक
2--पद्यांश की व्याख्या	05 अंक
3--संक्षिप्त टिप्पणी	05 अंक

निर्धारित पुस्तकें--

1--पद्य संकलन (पद्य भाग केवल)--1987 संस्करण बोर्ड आफ सेकेन्डरी एजूकेशन, पश्चिम बंगाल, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित ।

पाठों के नाम--

1--देशेर श्री वृद्धि
2--देना पावना ,
3--नियोभेर राजस्व
4--पद्य साचो
5--पाली साहित्य
6--मातृ-भाषा
7--पद्मा नादीर माझी

2--पद्य-- 15 अंक

1--सामान्य प्रश्न 06 अंक
2--व्याख्या 06 अंक
3--संक्षिप्त टिप्पणी 03 अंक

निर्धारित पुस्तक--

पद्य संकलन--1987 संस्करण पद्य भाग बोर्ड आफ सेकेन्डरी एजूकेशन, वेस्ट बंगाल, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित ।

कविताएं जो पढ़नी हैं--

1--अन्नपूर्णा बो ईश्वरीय पत्नी
2--ईश्वर चन्द्र विद्यासागर
3--ऐ मोर दूर्भागादेश
4--नया वर्ष
5--कन्डारी हंसियार
6--कागज बिक्री
7--रूपमूनी बंगला
8--अगामी

3--छोटी कहानी-- 10 अंक

राज कहानी--1986 द्वारा अवनिन्द्र नाथ टैगोर
विश्व भारती द्वारा प्रकाशित ।
प्रश्न सामान्य हों भाव तथा चरित्र पर आधारित हो ।

कहानी का नाम--

1--शिलादित्य
2--गोहा
3--बप्पादित्य
4--पद्मिनी
5--हम्बीर
6--हम्बीरेर राज्यालय

मराठी

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र होगा । समयावधि तीन घन्टे की होगी ।

खंड-क--50 अंक

1--व्याकरण 15 अंक

(क) वाक्य परिवर्तन 5 अंक
(ख) काल परिवर्तन 5 अंक
(ग) दिएपा वाक्योसील अशुद्धीये शुद्धिकरण 5 अंक

2—रचना—— 25 अंक

(क) निबन्ध—चित्तात्मक 15 अंक

(ख) पत्र लेखन (कार्यालय सम्बन्धी—व्यावसायिक विषय) 10 अंक

3—अपठित गद्य खंडाचे ज्ञान 10 अंक

खण्ड—ख—50 अंक

1—गद्य—

(पाठ्य—पुस्तकवार आधारित संक्षिप्त प्रश्न व गद्यांशांचे संदर्भ सहित स्पष्टीकरण) 20 अंक

निर्धारित पुस्तक

कुमार भारती (1995) कक्षा 10

क्रमांक	पाठाचा क्रमांक	पाठाचे शीर्षक	लेखक
1	2	3	4
1	3	आमाचे अजून ग्रह सुठलो नाही	जी0 जी0 आगरकर
2	5	अवमानतून सुटका	वी0 द0 सावरकर
3	6	उन्नतीचा मूलमंत्र	बाबा साहेब अम्बेडकर
4	7	स्वरूप पाहा	विनोबा भावे
5	8	विजय स्तम्भ	वि0 स0 खांडेकर
6	10	उपास	पु0 ला0 देशपांडे
7	11	औंधचा राजा	जी0 डी0 माडगुलकर
8	12	स्मशानातील सोने	अण्णाभाऊ साठे
9	14	सुन्दर	एस0 डी0 पानवलाकर
10	16	बुद्धदर्शन	भालचंद्र नामाडे

2—पद्य—

(सन्दर्भ सहित स्पष्टीकरण आणि रस ग्रहण) 10 अंक

क्रमांक	पद्य (भाग)	कविता शीर्षक	कवीचे भाव
1	2	3	4
1	3	तुकारामाची अभंगवाणी	तुकाराम
2	6	फटका	अनंत फंदी
3	7	अखंड	महात्मा फूले
4	8	आम्ही कोण ?	केशव गुप्त
5	9	पर्व	बालकवि
6	10	भ्रांत तुम्हां का पडे ?	माधवज्युलिअन
7	15	मृत्युल कोण हसे	आरती प्रभु

निर्धारित पुस्तक—(गद्य व पद्य या कविता)—कुमार भारती कक्षा 10, 1995 प्रकाशक महाराष्ट्र स्टेट सेकेन्डरी बोर्ड (पुणे)।

3—नाटक—

(पात्र चरित्र, कल्पना, साधारण टीकात्मक रस ग्रहण यावर आधारित प्रश्न) 10 अंक

(क) निबन्धात्मक (एक) 6 अंक

(ख) लघु उत्तरीय (दोन) 4 अंक

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक--

सुन्दर मी होणार--लेखक--पी0 एल0 देशपांडे
प्रकाशक--कान्टेनेन्टल पब्लिकेशन, पुणे

4--चरित्र-- 10 अंक

"शोरले बाजीराव"--लेखक--एम0 बी0 गोखले
प्रकाशक--आर्यदे प्रकाशक, पुणे

निबन्धात्मक प्रश्न (एक)

आसामी

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा।

खण्ड-क--50 अंक

I--अनुप्रयोगात्मक व्याकरण--
वाक्य रचना की अशुद्धियों का संशोधन, गलतियों का सुधार एवं तुलना, गलत क्रियाओं का प्रयोग में सुधार। 20 अंक
II--कहावतों एवं मुहावरों/लोकोक्तियों का प्रयोग
III--वाक्य रचना में परिवर्तन

रचना-- 30 अंक

(क) निबन्ध (तथ्यात्मक तथा वर्णनात्मक) 15 अंक
(ख) सार लेखन (अपठित गद्यांश) 15 अंक

संस्तुत पुस्तकें--

1--बहाल व्याकरण--सत्य नाथ बोरा, बरुआ एजेन्सी, गुवाहाटी
2--असमिया व्याकरण--हेम चन्द्र बरुआ, हेम कोष, गुवाहाटी
3--असमिया रचना विधि--प्रधानाचार्य, गिरिधर शर्मा, प्राप्ति स्थान--आसाम बुक डिपो
4--असमिया भाषा बोधिका प्रिय दास तालुकदार, एल0 बी0 एस0 पब्लिकेशन, अम्बारी, गुवाहाटी, पिन-781001

खण्ड-ख--50 अंक

1--पद्य-- 20 अंक

(क) निर्धारित खण्ड की व्याख्या 8 अंक
(ख) निर्धारित पुस्तक से सामान्य प्रश्न 12 अंक

पद्य एवं गद्य के लिये निर्धारित पुस्तकें--

[1] माध्यमिक साहित्य चयन--प्रकाशक--आसाम स्टेट टेक्स्ट बुक, प्रोडक्शन एंण्ड पब्लिकेशन कारपोरेशन लिमिटेड, गुवाहाटी।

निम्नलिखित पद्य का अध्ययन करना होगा--
1--गोलप
2--अमंक कोने मारे
3--गीत
4--सुरार देओल

2--गद्य-- 20 अंक

(I) पठित खण्ड की व्याख्या 8 अंक
(II) संक्षिप्त विवरण (निर्धारित पुस्तक से पौराणिक, ऐतिहासिक, लाक्षणिक तकनीकी या भावात्मक सन्दर्भों में) 4 अंक

(III) पठित खण्ड से सामान्य प्रश्न — 8 अंक

निम्नलिखित गद्य पाठों का अध्ययन करना होगा—

1—पाक शिबिद सलीम अली

2—स्विग बाल

?—भारतार विचित्रार मजोट आकिया

4—आसामो लोकगीत

5—लूकोईका फुकानार देश भोविन

3—आत्म कथा — 10 अंक

निर्धारित पुस्तक—

जीवनी संग्रह—पद्म नाथ गोहेन बरुआ द्वारा मूल रूप में संकलित वर्तमान में आसाम बोड, बानुनी मंदान गुवाहाटी द्वारा प्रकाशित, गुवाहाटी—781022

उड़िया

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में एक प्रश्न–पत्र 100 अंकों का होगा । समयावधि तीन घण्टे की होगी ।

भाग—1 — 50 अंक

(1) व्याकरण — 20 अंक

(क) शब्दों का निर्माण (संज्ञा, विशेषण)
संधि (व्यन्जन, विसर्ग), समास (बहुव्रीहि, कर्मधारय, अव्ययीभाव, तदिया)

(ख) कहावतें एवं मुहावरे

(ग) विराम चिन्ह

(घ) वाक्य का परिवर्तन (संयुक्त मिश्रित, साधारण)

(ङ) साधारण वाक्य का सुधार, शब्दों वाक्य

(2) रचना—

निबन्ध (साधारण विषय पर) — 20 अंक

अपठित गद्यांश — 10 अंक

भाग—दो — 50 अंक

(1) गद्य (विस्तार अध्ययन)— — 25 अंक

(क) खण्ड (निर्धारित) की व्याख्या — 5 अंक

(ख) साधारण प्रश्न — 15 अंक

(ग) संक्षिप्त टिप्पणियां — 5 अंक

(निर्धारित पुस्तक से पोराणिक, ऐतिहासिक, लाक्षणिक, तकनीकी या भावात्मक)

निर्धारित पुस्तक —

'साहित्य' 1992 गद्य विभाग प्रकाशित उड़िया बोर्ड सेकेण्ड्री एजुकेशन, उड़िया
नोट—सभी पाठों का अध्ययन किताब में निर्धारित हैं ।

(2) संक्षिप्त टिप्पणियां और एक अंश का लेख विस्तृत अध्ययन में 'त्रिधारा' प्रकाशित 1992 उड़िया बोर्ड सेकेण्डरी एजुकेशन, उड़िया — 10 अंक

(3) पद्य— — 15 अंक

(1) साधारण प्रश्न

(2) व्याख्या

निर्धारित पुस्तक—

'साहित्य' 1992 में प्रकाशित (पद्य भाग) प्रकाशित उड़िया बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजुकेशन, उड़िया
नोट—सभी निर्धारित पद्य पाठ करना हैं ।

कन्नड़

(कक्षा 10 के लिए)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र होगा। समयावधि तीन घंटे की होगी।

भाग—अ 50 अंक

1—अ—व्याकरण— 25 अंक

(I) सन्धि, समास।
(II) पैरा फ्रेजिंग (Paraphrasing) सरलीकरण/अपने शब्दों में लिखना।
(III) पर्यायवाची एवं विलोम शब्द।

व्याकरण का औपचारिक ज्ञान देते समय व्याकरण के कार्यकारी प्रयोग करना ताकि छात्रों में भाषा व्याकरण को उपयोगिता का ज्ञान हो सके तथा भाषायी चातुर्य को बढ़ावा मिल सके।

ब—मुहावरे तथा लोकोक्तियां।

2—रचना— 20 अंक

(अ) निबन्ध रचना—वर्णनात्मक, सामाजिक (पारिवारिक एवं विद्यार्थी जीवन के सम्बन्ध में) कथात्मक (निबन्ध 150 से 200 तक शब्दों में)।

(ब) पत्र लेखन (सम्पादक को व्यापारिक पत्र एवं प्रार्थना-पत्र)।

3—अपठित गद्यांश का बोध कराना। 05 अंक

भाग—ब 50 अंक

निर्धारित पुस्तकें (गद्य एवं पद्य)—

1—कन्नड भारतीय—10, प्रकाशक नव कर्नाटक पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, इम बहसी सेन्टर, क्रिट रोड पोस्ट आफिस 5159, बंगलौर।

निम्नलिखित पाठ पढ़ने होंगे—

(अ) गद्य (विस्तृत अध्ययन)— 20 अंक

(1) साध्वाब
(2) नमताख
(3) नीबू, वंधवार, मानू पिकितो
(4) मानादानिबा नोदी मानीदेय
(5) बसावननवारू कत्ताविंयासिदा समाज
(6) किसागोतामी
(7) लदायावान्ति के अजपासयागालु
(8) चिपको चलीवालि
(9) डा० अम्बदकर वैयवितत्व
(10) यशुबिना कोन्य वोना
(11) मन्दय सूलो गन्धर
(12) दुर्ग भुजंग कथे

(ब) पद्य— 20 अंक

(1) अराइके
(2) महात्मा
(3) जुगाडा समोकू
(4) सगाडा श्रीवन्तु
(5) बंधव्य
(6) बिलाणु
(7) अभिमानानि ना नम्मविदे
(8) अक्कनावननामालू
(9) मनामांडेपाध्यम
(10) पुराणपुठयमक पुआस्ठा अविन्दे पोमुटिगे
(11) करननारेन्द्र
(12) कुरू कुलव्य नम्वार केम उमसकर तरेयबिदार

सहायक पुस्तक-- — 10 अंक

(1) जोत्याली
(2) नगमा (1994), प्रकाशक (एन0 बी0 टी0)

निम्नलिखित पाठ पढ़ने होंगे :

(1)	साके चिला	पेज 12
(2)	ओम माट हाटो	,, 15
(3)	सुमारी सुवन	,, 32
(4)	तातोकु कन्द एक ऋवंसु	,, 32
(5)	प्रार्थनाये प्रभाव	,, 46
(6)	लिंगिनटा एवं बुदाद	,, 62
(7)	हाजो वरलोल	,, 78
(8)	मुस्वा कुदूर	,, 93
(9)	बोधात्या पोव हनुगालू	,, 100
(10)	मूऊ जनाऊ अटाक	,, 150
(11)	उताना	,, 156
(12)	अतिस्य विवेकहा	,, 158

कश्मीरी

(कक्षा 10 के लिए)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र 3 घन्टे का होगा ।

नोट—प्रश्नों के उत्तर कश्मीरी में दिये जायेंगे ।

भाग (अ)—50 अंक

(1) व्याकरण और उसके प्रयोग— 25 अंक

(I)	काल प्रयोग	05
(II)	वाक्य परिवर्तन	05
(III)	मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग	05
(IV)	समुच्चय बोधक अव्यय तथा सम्बन्ध सूचक अव्यय का प्रयोग	05
(V)	प्रत्यय और उपसर्ग	05

(2) कम्पोजीशन— 15 अंक

निबन्ध लेखन (सामान्य रुचि के विषयों पर आधारित लगभग 150 शब्दों में)

(3) पाठ्य-पुस्तक से दिये गये अवतरणों पर लघु उत्तरीय प्रश्न 10 अंक

भाग (ब)—50 अंक

(1) गद्य— 30 अंक

निम्नलिखित पाठ पढ़ने होंगे—

(I) मातो तुगनो कीन्ह
(II) चार्ली चैपलीन
(III) टेलीफोन से रेडियो
(IV) जम्हूरियत

निम्नांकित प्रकार के प्रश्न पूछे जायेंगे—

(क)	सन्दर्भ सहित व्याख्या	10 अंक
(ख)	पाठ्य पुस्तक के अवतरण का अंग्रेजी/उर्दू/अंग्रेजी में अनुवाद	10 अंक
(ग)	पाठ्य सारांश	10 अंक

(2) पद्य— 20 अंक

पाठ्य-पुस्तक से निम्नांकित कवितायें पढ़नी होंगी—

(I) रूबाई (मिर्जाआरिफ)
(II) जूनी मंत्र दल
(III) गजल
(IV) गशो तुरुब

(V) दूरी प्रणालियों तालिका

(VI) बहार

(VII) येथ हस्यास मंज

निम्नलिखित विषयों से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जायेंगे--

(अ) सन्दर्भ साहित्य व्याख्या 10 अंक

(ब) दिये गये पद्यांश का सारलेखन 01 अंक

निर्धारित पुस्तक—कशूर निशाब कक्षा 9 तथा 10 के लिये--प्रकाशक जम्मू एवं कश्मीर स्टेट बोर्ड आफ स्कूल एजूकेशन (1982)

सिन्धी

(कक्षा 10 के लिए)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र 3 घन्टे का होगा।

भाग (अ)-50 अंक

(1) व्याकरण 18 अंक

(क) सिन्धी शब्दों का निर्माण किस प्रकार होता है ?

(ख) वाक्य (साधारण उप मिश्रित संयुक्त)

(ग) विलोम/पर्यायवाची

(2) कहावतें, पदबन्ध एवं मुहावरे 10 अंक

(3) निबन्ध--निम्नलिखित विषयों में से 500 शब्दों तक एक निबन्ध 12 अंक

(1) सिन्धी भाषा दिवस (10 अप्रैल, 1967)

(2) सिन्धी साहित्यकार

(3) सिन्धी महापुरुष

(4) सिन्धी पर्व

(5) राष्ट्रीय पर्व

(4) अनुवाद--सिन्धी से हिन्दी में एवं हिन्दी से सिन्धी में 5+5=10 अंक

भाग-(ब)—50 अंक

(1) गद्य

क--निर्धारित पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों में से एक प्रश्न 10 अंक

ख—निर्धारित पाठ्यपुस्तक के निर्धारित पाठों में से एक गद्यांश को प्रसंग, संदर्भ साहित्यिक सौन्दर्य सहित व्याख्या। 10 अंक

(2) पद्य

क--निर्धारित पाठ्यपुस्तक के निर्धारित पाठों में से एक पद्यांश को संदर्भ, काव्यगत सौन्दर्य सहित व्याख्या। 10 अंक

ख--निर्धारित पाठ्यपुस्तक के निर्धारित पाठों पर आधारित एक प्रश्न 10 अंक

(3) कहानी — 5+5=10

कथा की विशेषता एवं उसके तत्व तथा घटनायें चरित्र चित्रण भाषा कहानी कला, सारांश आदि पर आधारित एक प्रश्न एवं पांच लघु उत्तरीय प्रश्न।

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें—

(1) व्याकरण, कहावतें, पदबन्ध, मुहावरे, निबन्ध तथा अनुवाद के लिये—

मथ्यों सिन्धी व्याकरण (देवनागरी) ले0 दयाराम वसणमल मोरचन्दानी, प्रकाशक सिन्धु-ब्रह्म विद्या सम्मेलन एवं देवनागरी सिन्धी सभा, मुम्बई।

प्राप्ति स्थान—(1) कमला हाईस्कूल-खार-मुम्बई-400052

(2) हिन्दुस्तान किताबघर—19-21 इमाम स्ट्रीट, मुम्बई

मथ्यों सिन्धी व्याकरण पुस्तक से पहाका 21 से 42 तक इस्तलाह 21 से 48 तक तथा अदबीगुलदस्ती के पाठों के अन्त में अभ्यास के लिये दिये अंशों का अध्ययन भी किया जाना होगा।

(2) सहायक पुस्तक संदर्भ के लिए

सिन्धी भाषा (व्याकरण एवं प्रयोग) लेखक, प्रकाशक, विक्रेता—डा0 मुरलीधर जेतली, डी0 127 विवेक विहार, नई दिल्ली-95

(3) गद्य एवं पद्य के लिये

अदबी गुलदस्तो—लेखक डा0 कन्हैया लाल, लेखवाणी

प्रकाशक एवं विक्रेता—निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान मानस गंगोत्री, विनोवा रोड, मैसूर।

"अदबी गुलदस्ता" के गद्य भाग में से पाठ संख्या 11 से 20 तक एवं पद्य भाग में से पाठ संख्या 3 से 10 तक का अध्ययन करना है।

(4) कहानी के लिए पुस्तक—

विसारिया न विसरनि लेखक—लोकनाथ

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान—विभागाध्यक्ष आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली—110007

तमिल

(कक्षा 10 के लिए)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा।

भाग-(अ)—50 अंक

(1) प्रयुक्त व्याकरण— 20 अंक

निम्नलिखित के पहचान हेतु प्रारम्भिक ज्ञान—

(A) PEYAR ; Panpu ppeyar, Thozhirpeyar, Vinayaalanaiyum Peyar, Ashu Peyar, Thinai, Paal, jdam and Vetrumai.

(B) VINAI : Therinilal and Kurippu Vinumutru Vinaicoban Peyarecham, Eeval, Viyangol, Mutreehana.

(C) IDAICHOL AND URICHOL : Definition of Idaichol with special reference to Ehaaram, Ohaaran and Ummai and definition of Urichol with suitable examples.

(D) PODU : Thehainilai and Thehaanilai, Vazhu Vazhaanilai and Vazhuamaithi and Marabu.

(2) लोकोक्तियां— 5 अंक

परिभाषा एवं प्रयोग :

(लोकोक्ति पुस्तक तमिल इलक्कानम (TAMIL ILAKKANAM) के पृष्ठ 152 और 153 पर दिया हुआ है) ।

(TAMIL ILAKKANMAM)

: Class IX (1993 revised edition) Reprinted in 1994.

(3) रचना— 15 अंक

पत्र-लेखन (व्यक्तिगत और व्यापारिक पत्र)

निर्धारित पुस्तक—

(1) व्याकरण के लिये—

'तमिल इलक्कानम' कक्षा नौ के लिय (1990 संस्करण) पुनः मुद्रित 1994, प्रकाशक—तमिलनाडु टेक्स्ट बुक सोसाइटी, मद्रास-6 (पेज 1–47) ।

(2) लोकोक्ति के लिये—

'तमिल इलक्कानम' (कक्षा 10 के लिये संशोधित संस्करण)

(4) सार लेखन— 10 अंक

भाग (ब)—50 अंक

(5) पद्य— 20 अंक

'तमिल टेक्स्ट बुक' कक्षा 10 के लिए (1990 संस्करण) प्रकाशक—तमिलनाडु टेक्स्ट बुक सोसाइटी, मद्रास-6 ।

Section III—Poems to be studied :

2. Kambaramayanam
3. Thiruvilayadarpura Pcm.
4. Seerappuranam.

Section. V :

Palsuvi Paadalgal.
First five poem.

(6) गद्य— 20 अंक

'तमिल टेक्स्ट बुक' कक्षा 10 के लिये गद्य भाग (1994 संस्करण)
प्रकाशक—तमिलनाडु टेक्स्ट बुक सोसाइटी, मद्रास 6, नं० 8 से 14 तक के पाठ पढ़ना है ।

(7) अविस्तृत अध्ययन—

Prescribed Book—Sindhanai Selvam (1990) Reprinted In 1994. Published Tamilnadu Text book Society, Madras-6.

Lesson to be studied—Nos. 1 to 12.

1. Veetirkor Pathaka Saalai—Dr. C. N. Annadurai.
2. Klaaigal—Dr. U. V. Swami Nathan Ayyar.
3. Sangakala Atichumurai—N. Aalkazhaoon.
4. Mozhi Gnayiru Deua Neya Paaavnae.—R. Jlankumara.
5. Ulagam Unnudaiya thu—S. T. Kasirajan.
6. Kaakkum Karangal—Pon. Parama guru.
7. Vetrikkul or Vazbi—S. Hamid.
8. Kada lukkul or Kulagum—Pera sriya Irama, Dhatshinam.
9. Kattu Valame Naattu Valam—Pulavarr Thillai Tha. Ayhagunanaar,
10. Varilatru Vaailgal—Pulavarka, Shanmugn sundram.
11. Vuthtira merur Kaattum Vooraa tchith therthel—Doctor Ma. Iradhuram Singh, Doctor Nu. Govindarajan.

तेलुगु

(कक्षा 10 के लिए)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र होगा तथा समयावधि तीन घन्टे होगी ।

भाग-(अ)--50 अंक

(1) व्याकरण-- 30 अंक

(क) (1) A datailed knowledge of the following— 12 अंक

Telugu Sandhulu—Akra. Ikare, Ukara, Sandulu, Gasad ade vades Sandhi, Pump vadese Sandhi : Dvirukte Tahara Takare Sandhi.

(2) Prosody : Champakamala, Utpalamala, Mettehhan Shardulan. 4 अं

(3) Alankaraas--Figures of speech. Upama and Atishyokti only. 4 अंक

(4) समास--द्वन्द, द्विग और बहुव्रीहि और रुपाला 4 अंक

(ख) मुहावरे और लोकोक्तियां 6 अंक

(किसी एक अत्यधिक प्रचलित एवं जाने माने का प्रयोग)

(2) रचना 10 अंक

निबन्ध लेखन--

समाज परिवार और विद्यालय जीवन और तात्कालिक विषय पर लगभग 200 शब्दों का वर्णनात्मक तथा वृत्तात्मक लेख ।

(3) अपठित गद्य खण्ड का ज्ञान लगभग 100 शब्द 10 अंक

भाग (ब)—50 अंक

(1) विस्तृत अध्ययन 20 अंक

गद्य— 70 अंक

तेलुगु वाचाकम् (कक्षा 10) प्रकाशक--आन्ध्र प्रदेश सरकार (नया संस्करण 1988)

1—संदर्भ सहित व्याख्या (4 में से 2) 8 अंक

2--निर्धारित पाठ में से निबन्धात्मक प्रश्न (लगभग 80 शब्द) 8 अंक

3--दो लघु उत्तरीय प्रश्न 4 अंक

Lessons to be studied :

1. Tudivinnapamu.
2. Pracheena Vritti Vidhanam.
3. Raju.
4. Rikshavadu.
5. Sonta Puslakam.
6. Srinagara Yatra.

(2) पद्य 20 अंक

तेलुगु वाचाकम् (कक्षा 10), प्रकाशक--आन्ध्र प्रदेश सरकार (नया संस्करण 1988)

1—एक पद्य का अर्थ 8 अंक

2--सन्दर्भ सहित व्याख्या (दो) 8 अंक

3--विषय-वस्तु पर प्रश्न (एक) 4 अंक

Poems to be studied :

(1) Bhagiratha Prayatnamu.
(2) Hitokti.
(3) Satyanistha.
(4) Kanyaka.
(5) Sishuvu.
(6) Rudramadevi.
(7) Mahandhroda yamu.

(3) अविस्तृत अध्ययन

लघु नाटक

Hindi Ekankikala (Telugu Book) (1980 Edition), Published by National Book Trust (India) A-5, Green Park, New Delhi-110016.

Plays to be studied :

1. Padivalu.
2. Kaumudi Mahotsavamu.
3. Tuvvallu.
4. Hindustan ki Velli Cheppandi.

(4) One Essay type question on the content, Characters and events will be asked. 10 Marks

---

मलयालम

(कक्षा 10 के लिए)

इस विषय में 100 अंक का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

भाग (अ)--50 अंक

1--व्याकरण--25 अंक

(1) वाक्य परिवर्तन (पाठ्य-पुस्तक पर आधारित)
(2) पर्यायवाची तथा विलोम
(3) अपने शब्दों में व्यक्त करना (Paraphrasing)
(4) सन्धि और समास

व्याकरण का औपचारिक ज्ञान देते हुए कार्यकारी प्रयोग पर विशेष बल दिया जाना चाहिए ताकि छात्रों में भाषा व्याकरण की उपयोगिता का ज्ञान दे सके तथा भाषा के चातुर्य को बढ़ावा मिल सके ।

2--रचना-- 20 अंक

1--कहावतें/मुहावरे तथा लोकोक्तियां 5 अंक
2--निबन्ध रचना 10 अंक
3--पत्र लेखन--(प्रार्थना-पत्र, समाचार-पत्र के सम्पादक को व्यावहारिक पत्र लिखना) 5 अंक

3--अपठित गद्यांश-- 5 अंक

भाग (ब)--50 अंक

1--गद्य--

(1) केरला पाठावलि Volume संख्या-9 (संस्करण 1987) (केवल गद्य भाग) प्रकाशक--शिक्षा विभाग, केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम ।

निम्नलिखित पाठों का अध्ययन करना--

(1) करनानुम करमासमयम्
(2) आविकोरम मोक्षम
(3) मलायला भाषायले पश्चात्या प्रभावम्
(4) चकपुरसरोवाग्लास्थवम् दाश्तुरम्
(5) प्रकृति सौन्दर्यम्
(6) कला सौन्दर्यम्

2--पद्य--

केरला पाठावली, Volume संख्या-9 (1987 संस्करण), (केवल गद्य भाग), प्रकाशक--शिक्षा विभाग, केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम ।

निम्न कविताएं पढ़नी होंगी--

17--श्रा भविलास्था
21--इन्टवेलो
25--मयूर दर्शनम्
23--करमामानु घरहा

3--अविस्तृत अध्ययन--

(1) प्राफेसरुत लोकम--के० एल० मोहना वर्मा, पूनद पब्लिकेशन, टी० बी० एस० बिल्डिंग, कालीकट--673001 द्वारा प्राप्त ।

निम्न को छोड़कर सभी कहानियां पढ़नी होंगी--

(1) नकराम
(2) कुगधम

नेपाली

(कक्षा 10 के लिए)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा ।

भाग (अ)--50 अंक

1--प्रायोगिक व्याकरण-- 20 अंक

(क) शब्द उच्चारण और ध्वनि के अनुरूप परिवर्तन ।
(ख) शब्द-भेद (उपसर्ग और प्रत्यय) ।
(ग) मुहावरे और कहावतें ।
(घ) वाक्य परिवर्तन ;
(ङ) समास ।

सम्बन्धित पुस्तक--

सरल नेपाली व्याकरण--के0 राज नारायण प्रधान और जगत क्षेत्रीय ।
प्रकाशक--श्याम ब्रदर्स, चौक बाजार दार्जिलिंग (प0 बंगाल) ।

2--अपठित गद्यांश, जो वर्णनात्मक विषयों पर आधारित हों 10 अंक
जैसे--सामाजिक पर्व, दृश्य और छात्र जीवन की स्मरणीय घटनायें

3--रचना-- 10 अंक

(क) पत्र लेखन--
(i) अपरिचित (क्रय-विक्रय उत्तर, जांच/प्रश्न) ।
(ii) नौकरी के लिए आवेदन-पत्र ।
(iii) सम्पादक के नाम पत्र ।
(iv) शिकायतें, क्षमा-प्रार्थना, निवेदन आदि ।
(v) निमंत्रण एवं स्मृति-पत्र ।

(ख) निबन्ध लेखन-- 10 अंक
पर्व, यात्रा, दृश्य, साहसिक कार्य और छात्र जीवन की अविस्मरणीय घटनायें

भाग (ब)--50 अंक

1--गद्य --

नेपाली साहित्य सौरभ, प्रकाशक--शिक्षा निदेशालय, पाठ्य-पुस्तक अनुभाग, सिक्किम, गंगटोक ।
अध्ययन के लिए पाठ--

(i) म्यो फेरिफरकला--भवानी भिक्षु ।
(ii) रात भरी हुरी चाल्यो--इन्द्र प्रसाद राय ।
(iii) बहुरो मैसी--रमेश विकल ।
(iv) सोझा--हृदय चन्द्र सिंह प्रधान ।
(v) भारतेन्दु रा मोती रंको--डी0 आर0 रोमसीमा ।
(vi) रणदुलभ--बाल कृष्ण साम ।

2--पद्य--

नेपाली साहित्य सौरभ, प्रकाशक--शिक्षा निदेशालय, पाठ्य-पुस्तक अनुभाग, सिक्किम, गंगटोक ।
अध्ययन के लिए कविताएं--

(i) भानु अस्तया पक्षी--लेखानाथ पौडियाल
(ii) गरीब--लक्ष्मी प्रसाद देव पोटा ।
(iii) केसारी छत्तीस लागें--सिद्ध चरण श्रेष्ठ ।
(iv) सन्तोष--भीम निधि तिवारी ।
(v) मृत्यु कामना केही मेरा--अगम सिंह गिरि ।
(vi) आकाश को तारा के तारा--हरिभक्त कटवाल ।
(vii) बालक छोरी को हटा सुमसुम्या औन्दा--ध्रुव ।

3--थोड़ा अध्ययन के लिए (रेपड रीडिंग)--

कथाबिम्ब, प्रकाशक--शिक्षा निदेशालय, गंगटोक, सिक्किम ।

(i) ककेया--बालकृष्ण सम ।
(ii) परिबन्ध--पुष्कर समसेर ।
(iii) काबीलोबाल--रवीन्द्र नाथ टैगोर ।
(iv) ओउत्तीन पत्र--ओ हेन्द्री ।

नोट--निर्धारित पाठ्य-पुस्तक के लघु उत्तरीय एवं निबन्धात्मक प्रश्न-पूछे जायेंगे

अंग्रेजी

(कक्षा 10 के लिए)

इस विषय में 50-50 अंकों के दो प्रश्न-पत्र तीन घन्टे के होंगे ।

FIRST PAPER

Time—3 Hours M. M.—50

(A) Prose—25 Marks

1.	Two out of three prose passages from English Reader-II	5+5=10 Marks
2.	One out of two long answer type questions about 100 words	06 Marks
3.	Two out of three short answer type questions in 25 words each.	3+3=06 Marks
4.	One question to test vocabulary	½×6=03 Marks

(B) Poetry—10 Marks

1.	Two out of three poetry passages from Reader-II	3+3=06 Marks
2.	Central Idea of one out of two poems from the prescribed/ text book—English Reader-II	04 Marks

OR

Reproduction of eight lines of any poem from Reader-II except the lines given in the question paper.

(C) Supplementary Reader—15 Marks

1.	One out of two long answer type questions in about 100 words from Supplementary Reader-II	06 Marks
2.	Two out of three short answar type questions in about 25 words each	2+2=04 Marks
3.	Objective type—True/False statement type question	½+6=03 Marks
4.	Two very short multiple choice questions	1+1=02 Marks

SECOND PAPER

Time—3 Hours
[Grammar, Translation, Writing skill and Unseen prose] M. M.—50

(A) Grammar—16 Marks

1.	Filling the gaps—closed type	½×4=02 Marks
2.	Sentence completion	½×4=02 Marks
3.	Sentence Formation by re-ordering given words	½×4=02 Marks
4.	Conversion of sentences	½×4=02 Mark
5.	Narration from Direct to Indirect	½×6=03 Marks
6.	Spelling test—2 words	½+½=1 Marks
7.	Punctuation	2 Marks
8.	Testing ability to use tenses and other verbs/words forms	½×4=02 Marks

(B) Translation—8 Marks

Hindi to English (8 sentences in Hindi requiring translation into day to day spoken English form including conversational English) 8 Marks

(C) Writing skill—18 Marks

1. Letter writing/application writing etc. — 06 Marks
2. Short writing task : story completion — 04 Marks
3. Long composition (essay writing on one out of 5/6 given topics) in about 150 words — 08 Marks

Question Relating, Population, Environment, Health Education and Traffic Rules shall be asked in Essay form

(D) Unseen prose—8 Marks

1. Title — 01 Marks
2. 4 comprehension questions — 06 Mark
3. Meaning of the word underlined — $\frac{1}{2}\times2=01$ Marks

पाठ्य-पुस्तकें—

पुस्तक का नाम	पाठ्यवस्तु
(1) English Reader (For Class X)	1. Foot Prints Without Feet : H. G. Wells (adapted) (i) Lucy Gray : W. Wordsworth. 2. Buddha and Jesus : (i) Swami Vivekanand of Speeches to you, (ii) The Fountain..James Russell Lowell. (iii) The Psalm of Life : H. W. Longfellow. 3. A letter to God : G. L. Fuentes. 4. The Ganga : Pt. Jawaharlal Nehru. (iv) The Perfect Life : Ben Jonson. 5. Socrates : Rhoda Power (Adapted). 6. Moti Guj Mutineer : Rudyard Kipling (an adaptation). (v) The Nation Builders by R. W. Emerson. 7. On saying 'Please' : A. G. Gardiner 8. Torch Bearers : W. M. Ryburn (Adapted). 9. Tiger Trouble : Manohar Malgaonkar. 10. Our Indian Music-Stories : Ananecdotes : B. Srinivasan,
(2) Supplementary Reader (For Class X)	1. The Inventor who kept his promise. 2. Not Just Oranges : Isal Tobolsky. 3. The End of The Rope : Georges Surded. 4. The Coward's Way : R. Venugopal Reddy. 5. I Can Play School's : May C. Kenkins. 6. War : Luiqi Pirandello. 7. The Judgement-Seat of Vikramaditya. 8. My Greatest Olympic Prize. : Jesse Owans. 9. Quality : John Galsworthy.

Note—Every worksheet is attached at the end of every prose lesson.

1. English Grammar—

1. Parts of the Sentence.
2. The Sentences : Types.

3. The Verbs
4. Primary Auxiliaries (Be, Have, do)
5. Model Auxiliaries
6. Negative Sentences
7. Interogative Sentences
8. Tense : Form and Use
9. Non-Finites
10. The Passive Voice
11. The Parts of Speech
12. Indirect Speech or Reported
13. Co-ordination and Sub ordination
14. Word-Formation
15, Punctuation and Spelling

II. (a) Translation—English to Hindi
(b) Translation—Hindi to English

III. Composition -

1. Controlled Composition
2. Paragraph Division
3. Short Composition
4. Letter Writing
5. Story Completion
6. Long Composition

IV. Comprehension :

Appendices

1. Words often confused
2. Synonyms and Antonyms
3. Cries of some birds and animals
4. Glossary :

Note—Work-book—Part II is based on the prescribed English Reader, Part II includes grammar, letter writing of application, translation and composition.

(विशेष—माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा निर्धारित अंश)

फ्राँसीसी

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा।

1—व्याकरण— 50 अंक

संस्तुत फ्रांसीसी पुस्तक के पाठ 32 से 65 पर आधारित।

2—अनुवाद— 30 अंक

(क) दिये गये पाठ्यांश का फ्रांसीसी से हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद।
(ख) एक अपठित गद्य पद्यांश का फ्रांसीसी से हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद।

3—संस्तुत पाठ्य-पुस्तक के सामान्य प्रश्नोत्तर—

संस्तुत पाठ्य-पुस्तक—कूर द लांग ए द सिविल साजिआं फ्रांसेज—भाग-1 जी० मोझे द्वारा लिखित एवं लोब्रेरी अशेत, पेरिस द्वारा प्रकाशित (Course delangue Civilization Nrancaise, Vol. 1 G. Mauger, Librairie Hachette, Paris) 20 अंक

पाठ्य—संस्तुत पुस्तक के पाठ 32 से 65 तक।

जर्मन

(कक्षा 10 के लिए)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा। इसमें व्याकरण सम्बन्धित प्रश्नों में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का भी समावेश होगा।

1—व्याकरण (वस्तुनिष्ठ) (निर्धारित पाठ्य-पुस्तक से दिये गये अभ्यास के आधार पर) 30 अंक

2—अनुवाद-जर्मन से अंग्रेजी अथवा हिन्दी में (निर्धारित पाठ्य-पुस्तक से) 30 अंक

3—जर्मन अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों का जर्मन में उत्तर 15 अंक

4—जर्मन में पूछे गये सामान्य प्रश्नों का जर्मन में उत्तर देना 15 अंक

5—दिये गये विषयों में से किसी एक पर पाँच वाक्य जर्मन में लिखना 10 अंक

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक--

1. Deutsehesprah lehre fuer Auslaenders' Dora schulz and Heinz Griesback (Grund stufe in sinem Band)

/Lessons 6—10)

2. Deutsche sprach lehre fuer Auslaender (Grund stufe in eiem Band) You Dora schulz Heinz Grisbach.
(Lesson 1—3)

रूसी

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा ।

1--व्याकरण (पाठ्य-पुस्तक पर आधारित)	50 अंक
2--अनुवाद--(1) निर्धारित पाठ्य-पुस्तक से रूसी भाषा से हिन्दी या अंग्रेजी में	20
(ii) हिन्दी या अंग्रेजी सरल वाक्यों का रूसी भाषा में अनुवाद	10
3--निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों के पाठों पर आधारित लघु प्रश्नों के रूसी भाषा में उत्तर (पाठ 12 से 16)	20

निर्धारित पुस्तक--

मेरी तीसरी रूसी किताब, लेखक-आराकिन और आई० ओ० सामोएलोवा (1978 पोपल्स पब्लिशिंग हाउस) रानी झांसी रोड, नई दिल्ली, 55 ।

पाठ 12 से 16 तक

तिब्बती

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

भाग-अ--50 अंक

1--प्रयुक्त व्याकरण - 20 अंक

(क) मुहावरे और लोकोक्तियां
(ख) वाक्य परिवर्तन, साधारण और मिश्रित
(ग) तिब्बतन में शब्दों को जोड़ना

संदर्भ हेतु पुस्तक--

TAIBETAN GRAMMAR : by khecheg Nyukhu yab sey (Senchapa Section), published by Tibetan Cultural Printing Press, Dharamshala Kangra. (H.P.)

2--अपठित तिब्बतन गद्यार्थ का ज्ञान जो निम्नलिखित पर आधारित होगा : 10 अंक
सामाजिक त्योहार, छात्र जीवन के स्मरणीय घटना और दृश्य तिब्बतन में

या

एक अपठित तिब्बतन गद्यांश का अनुवाद जो विवरणात्मक विषय पर आधारित हो जैसे--सामाजिक त्योहार, छात्र जीवन के स्मरणीय घटना और दृश्य पर--अंग्रेजी अथवा हिन्दी में

3--रचना-- 10

(क) पत्र लेखन--
1--अज्ञात को (आदेश देना, उत्तर, पूंछ-ताछ पर प्रश्न)
2--कार्य के लिए प्रार्थना-पत्र
3--सम्पादक को पत्र
4--शिकायत, क्षमा, अनुरोध आदि

(ख) निबन्ध लेखन विस्तृत टापिक जैसे--त्योहार, यात्रा, दृश्य, छात्र जीवन में स्मरणीय और साहसिक घटनाओं पर 10

भाग–ब––50 अंक

अंक

1––गद्य–– 24

(क) निर्धारित पाठ्य पुस्तक के गद्यांश पर प्रश्न

(ख) निर्धारित पाठ्य पुस्तक से सामान्य प्रश्न का उत्तर तिब्बती भाषा में

निर्धारित पुस्तक––

'LEKSHE LOSIAR Migji, H, H, The DALAILAMA Published by Tibetan Cultural Printing Press, Dharmshala, Distt. Kangra H. P. Edition (1982).

(7 से 11 तक के पाठ पढ़ना है)।

2––पद्य–– 14

(क) तिब्बती भाषा में दिये गये पद्यांश को व्याख्या तथा विस्तार करना अथवा सारांश लेखन।

(ख) दिये गये गद्यांश का भाव और उससे सम्बन्धित प्रश्न।

निर्धारित पुस्तक––

'SAKYA LEGSHE, by Sakya Panchan Published by Freedom Press Darjeeling (Chapter 3).

3––रैपिड रीडिंग–– 12

(1) कहानी तथा प्रसंग का सार लेखन

(2) विभिन्न घटनाओं पर आधारित लघु प्रश्न

(3) चरित्र–चित्रण

निर्धारित पुस्तक––

My LAND AND My PEOPLE, H. H. the DALAILAMA NOOs Kys danngy I danngos Kylamimag (Pages 31 to 68, Chapter 2).

नोट––पाठ्य पुस्तक में से लघु स्तरीय और निबन्धात्मक प्रकार के प्रश्न पूछे जायेंगे। पाठ्य पुस्तक के गद्यांश को अंग्रेजी अथवा हिन्दी में परिवर्तन सम्बन्धी प्रश्न दिये जायेंगे।

चीनी

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न–पत्र तीन घण्टे का होगा।

(1) नियत पाठ्य पुस्तक से चीनी से अंग्रेजी अथवा हिन्दी और अंग्रेजी अथवा हिन्दी से चीनी भाषा में अनुवाद के लिए अंश दिये जायेंगे। नियत पाठ्य पुस्तकों पर प्रश्न और चीनी व्याकरण और मुहावरों पर सरल प्रश्न भी होगा 50 अंक

(2) नियत पाठ्य पुस्तकों में चीनी से हिन्दी अथवा अंग्रेजी अथवा हिन्दी से चीनी भाषा में अनुवाद करने के सिलसिले में आये वर्णों पर बताये गये चीनी भाषा के अपठित गद्यांश होंगे। अंग्रेजी अथवा हिन्दी भाषा के ऐसे सरल वाक्य भी होंगे जिनका चीनी में अनुवाद करने के लिए उन चीनी वर्णों को जानने की आवश्यकता नहीं होगी, जो नियत पाठ्य पुस्तकों में प्रयुक्त न हुए हों। 50 अंक

संस्तुत पुस्तकें––

(1) कनवरसेशनल चायनीज प्रथम से पैंतीसवें पाठ तक ले0 तेग सू यू।

(2) इन्ट्रोडक्शन टू स्पोकेन चायनीज (लेख) कहानी तथा कविता पर (25 पाठ पृष्ठ 107 से 227 तक) से0 कें0 जे0 ब्राउण्ट, प्रकाशक––यले विश्वविद्यालय प्रस।

टिप्पणी––उक्त पुस्तकें आक्सफोर्ड बुक कम्पनी, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता से प्राप्त की जा सकती हैं।

संस्कृत

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टों में होगा। सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के आधार पर प्रश्न-पत्र में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का भी उल्लेख होगा तथा उसके उत्तर के रूप में तीन या चार उत्तर प्रश्न-पत्र में अंकित होंगे। उनमें से एक शुद्ध उत्तर होगा। उसका उल्लेख उत्तर-पुस्तिका में छात्र को अंकित करना होगा तथा उनका अंक विभाजन निम्नवत् होगा :

(1) आशुपाठ	4 अंक
(2) प्रत्याहारों का सामान्य परिचय	1 अंक
(3) संधि	1 अंक
(4) शब्दरूप	2 अंक
(5) धातुरूप	2 अंक
(6) समास	1 अंक
(7) कारक	1 अंक
योग ..	12 अंक

खण्ड 'क' (गद्य, पद्य, आशुपाठ)

गद्य

1--गद्य खण्ड का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद — 10 अंक
2--पाठ-सारांश — 6 अंक

पद्य

1--पद्यांश की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या — 10 अंक
2--सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या — 5 अंक
3--किसी एक श्लोक का संस्कृत में अर्थ — 5 अंक

आशुपाठ

1--पात्र चरित्र-चित्रण (हिन्दी में) — 6 अंक
2--लघु उत्तरीय प्रश्न (संस्कृत में) — 8 अंक

खण्ड 'ख' (व्याकरण अनुवाद, रचना)

व्याकरण

1--प्रत्याहारों का सामान्य परिचय एवं वर्णों का उच्चारण स्थान — 2 अंक
2--सन्धि-- — 3 अंक
(1) स्वर सन्धि--इकोयणचि, एचोऽयवायावः आद्गुणः, वृद्धिरेचि, अकः सवर्णे दीर्घः।
(2) हल्-सन्धि--स्तोःश्चुनाश्चुः, ष्टुनाष्टुः, झलांजशोऽन्ते, मोऽनुस्वारः अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।
(3) विसर्ग सन्धि--विसर्जनीयस्यसः, ससजुषोरुः, अतोरोरप्लुता दप्लुते हशिच।
3--शब्दरूप-- — 4 अंक
(अ) पुल्लिंग--पितृ, भगवत्, गो, करिन, राजन्।
(ब) स्त्रीलिंग--नदी, धेनु, वधू, सरित।
(स) नपुंसकलिंग--वारि, मधु, नामन्, मनस, किम, यद्, अदस।
4--धातुरूप--(लट्, लृट, लोट, लङ् तथा विधिलिंग--लकारों में)-- — 4 अंक
(अ) परस्मैपद--भू, पा, वश, स्था, नश, आप, इष।
(ब) आत्मनेपद--वृध, जन्।
(स) उभयपद--नी, दा, ज्ञा, चुर्।
5--समास--समासों के विग्रह सहित उदाहरण-- — 3 अंक
अव्ययी भाव, द्विगु, बहुव्रीहि।
6--कारक-विभक्ति--निम्न सूत्रों के आधार पर कारक-विभक्ति-ज्ञान एवं प्रयोग-- — 3 अंक
कर्तुरीप्सिततमं कर्म, कर्मणि द्वितीया, साधकतमं करणम्, कर्तृकरणयोस्तृतीया,
कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्, चतुर्थी सम्प्रदाने ध्रुवमपायेऽपादानम्,
अपादाने पंचमी, आधारोधिकरणम्, सप्तम्यधिकरणे च।

7--प्रत्यय--क्त, क्तवतु, क्तिन्, क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच, तुमुन, अनीयर, इन्, मतुप्, ठक्, त्वा, तल, टाप् । — 4 अंक

8--वाच्य परिवर्तन — 2 अंक

अनुवाद--

1--हिन्दी अनुच्छेद का संस्कृत में अनुवाद — 10 अंक

रचना--

1--निबन्ध (कम से कम 10 वाक्य) — 10 अंक

2--संस्कृत शब्दों का वाक्यों में प्रयोग — 5 अंक

जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं ट्राफिक रूल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे ।

निर्धारित पाठ्य पुस्तक--

निम्नलिखित पाठ्य पुस्तकों के सम्मुख अंकित पाठ्यवस्तु (माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा निर्धारित अंश का अध्ययन करना होगा)--

1--संस्कृत व्याकरण (कक्षा 9 तथा 10 के लिये)

1--(क) महेश्वर सूत्र एवं वर्णों का उच्चारण
(ख) सन्धि--स्वर, व्यंजन, विसर्ग सन्धियों का परिचय एवं अभ्यास

2--समास--
अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व बहुव्रीहि समासों का अभ्यास सहित परिचय ।

3--कारक एवं विभक्ति

4--वाक्य परिवर्तन

5--अनुवाद--
(i) सामान्य नियमों सहित अभ्यास
(ii) कारक एवं विभक्ति ज्ञान
(iii) अनुवाद अभ्यास

6--प्रत्यय

7--उपसर्ग

8--अव्यय

9--संस्कृत पदों का वाक्यों में प्रयोग

10--संस्कृत वाक्य शुद्धि

11--संस्कृत में आवेदन-पत्र तथा निमंत्रण-पत्र

12--संस्कृत में निबन्ध--

1--विद्या
2--सदाचार:
3--परोपकार:
4--सत्संगति
5--अहिंसा परमोधर्म:
6--मातृभूमि
7--वसुधैव कुटुम्बकम्
8--राष्ट्रीय एकता
9--अनुशासनम्
10--राष्ट्रपिता महात्मा गांधी
11--संस्कृतभाषाया: महत्वम्
12--भारतीय कृषक:
13--हिमालय:
14--तीर्थराज: प्रयाग
15--वनसम्पत्
16--पर्यावरणम्
17--परिवार कल्याणम्
18--राष्ट्रपक्षी मयूर:
19--पौतुकम
20--दूरदर्शनम्
21--क्रिकेट क्रीडनम्

13--शब्द-रूप--
संज्ञा, सर्वनाम तथा संख्या वाचक शब्दों के तीनों लिंगों में रूप

14--धातु-रूप--
परस्मैपद, आत्मनेपद तथा उभयपद में धातुओं के रूप ।

2--संस्कृत गद्य भारती भाग--दो (कक्षा 10 के लिये)

संस्कृत गद्य का विकास
1--कविकुलगुरु: कालिदास:
2--उद्भिज्ज--परिषद्
3--नैतिकमूल्यानि
4--भारतीय जनतन्त्रम्
5--विश्वकवि: रवीन्द्र:
6--कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्

7--भारते जनसंख्या-समस्या
8--आदिशंकराचार्यः
9--संस्कृत भाषायाः गौरवम्
10--मदनमोहनमालवीयः
11--शुकनासोपदेशः
12--जीवनं निहतं वने
13--लोकमान्यः तिलकः
14--गुरुनानकदेवः
15--योजना-महत्वम्
16--गजेन्द्रमोक्षः

3--संस्कृत पद्य पियूषम्
(भाग-दो)
(कक्षा 10 के लिये)

1--लक्ष्य-बेध-परीक्षा
2--वर्षावैभवम्
3--वृक्षाणां चेतनात्वम्
4--सूक्ति सुधा
5--क्षान्ति-सौख्यम्
6--नागाधिराजः
7--विद्यार्थिचर्या
8--सिद्धार्थस्य निर्वेदः
9--गीतामृतम्
10--जलयानेन विदेशगमनम्
11--उपनिषत् सुधा
12--जीयात्-भारतवर्षम्
परिशिष्ट

4--कथानाटक कौमुदी
(भाग-दो)
(कक्षा 10 के लिये)

1--महात्मनः संस्मरणानि
2--कारुणिको जीमूतवाहनः
3--धैर्यधना: हि साधवः
4--यौतुकः पापसञ्चयः
5--भोजस्यशल्य चिकित्सा
6--परिवर्तनम्
7--कवि सम्मानम्
8--परशुरामस्य हृदयपरिवर्तनम्
9--दशपुत्रसमो द्रुमः
10--मौर्यकथा
11--जिज्ञासा
12--पापानां कथा हेला
13--वीरबालः दुश्यन्तश्च
14--ज्ञानं पूततरं सदा
15--वयं भारतीयः

पालि

(कक्षा 10 के लिये)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य--

1--भारत की प्राचीन सांस्कृतिक भाषा होने के कारण पालि भाषा और साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित करना।

2--प्राचीन भारतीय इतिहास के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विवरण से परिचित होने के लिए और तत्कालीन लोक-जीवन का परिचय प्राप्त करने के लिए पालि साहित्य का अध्ययन करने की छात्रों में योग्यता उत्पन्न करना ।

विशेष दृष्टव्य--देवनागरी लिपि में ही पालि लिखी जानी चाहिए ।
इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा ।

1--गद्य--पालि जातकावलि--पाठ 8 से 14 तक । 20 अंक

(क) दो अवतरणों में से किसी एक अवतरण का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद । 2+8=10 अंक

(ख) किन्हीं दो जातकों में से किसी एक जातक की कथा हिन्दी अथवा अंग्रेजी में । 10 अंक

2--पद्य--धम्मपद--पण्डित वग्गो से दण्ड वग्गों तक (पाठ 6 से पाठ 10 तक) 15 अंक

(क) दो गाथाओं में से किसी एक गाथा का हिन्दी अनुवाद ।
(ख) दो वग्गों में से किसी एक वग्गों का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में सारांश । } 10 अंक

(ग) धम्मपद के पाठ 6 से 10 के अन्तवर्ती गाथा का लेखन जो प्रश्नपत्र में न आया हो 5 अंक

3--अपठित--गद्य-निर्धारित पाठ (वेदब्भजातक, राजोवादजातकं) 5 अंक

मखादेव--जातकं (सन्दर्भित ग्रन्थ पालि जातकावलि)

4--सहायक पुस्तक--सिंगलसुत सुत्तं--20 अंक

(क) दो अवतरणों या गाथाओं में से किसी एक का हिन्दी अनुवाद 10 अंक
(ख) सिगाल सुत्त की विषय वस्तु, निदान कथा, मित्र के गुण अमित्र के लक्षण आदि पर आधारित सामान्य प्रश्न 10 अंक

5--व्याकरण-- 20 अंक

(क) शब्द रूप--पुलिंग=मुनि, भिक्खु 5 अंक
स्त्रीलिंग=लता इत्थी, धेनु,
नपुंसकलिंग=आयु पोत्थक

(ख) धातु रूप--भविष्यत् काल, लोट् लकार 5 अंक
भू, हस, वद, चज, दिस, नम, सर के रूप

(ग) सन्धि--व्यंजन सन्धि 5 अंक
व्यंजन दीघरस्सा, सरम्हाद्वेवदे, चतुत्थदुतिये स्वेसं ततियपठमा

(घ) समास --कर्मधारय समास, द्वन्द्व समास की सामान्य परिभाषा तथा उदाहरण । 5 अंक

6--अनुवाद--हिन्दी के पांच वाक्यों का वर्तमान एवं भविष्यत् कालिक क्रिया में अनुवाद । 10 अंक

अथवा

निबन्ध--पालि भाषा में पांच सरल वाक्यों में किसी एक पर निबन्ध--
कुसीनारा, बोध गया, पालि भाषा, राजा असोको, बुद्ध धम्मों, इसिपतन,

7--पालि साहित्य का इतिहास--संक्षिप्त परिचय-- 10 अंक

द्वितीय संगीति, तृतीय संगीति, विनयपिटक एवं अभिधम्मपिटक के ग्रन्थ तथा इनका परिचय--

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें—

(I) पालि जातकावलि—लेखक पं0 बटुक नाथ शर्मा,
प्रकाशक—मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स, वाराणसी ।

(II) पद्य धम्मपद—सम्पादित-धर्मभिक्षु रक्षित,
प्रकाशक—मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स, वाराणसी ।

(III) सिगल सुत्तं—अनुवादक—छल्लन मिश्र, सम्पादक-भिक्षु सिननायक,
प्रकाशन—अखिल भारतीय युवा बौद्ध परिषद्, कुशीनगर ।

(IV) व्याकरण—

[क] पालि प्रवेशिका—लेखक-आद्य दत्त ठाकुर, एम0 ए0
प्रकाशक—पुस्तक माला, लखनऊ ।

[ख] पालि व्याकरण—लेखक-भिक्षु धर्म रक्षित, प्रकाशक-ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी ।

[ग] मैनुअल आफ पालि—लेखक जी0 सी0 जोशी, ओरिएण्टल बुक एजेन्सी, पूना ।

[घ] पालि व्याकरण एवं पालि साहित्य का इतिहास ।
लेखक—राजकिशोर सिंह, प्रकाशक—विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।

[ङ] पालि महा व्याकरण—भिक्षु जगदीश काश्यप, एम0 ए0
प्रकाशक—महाबोधि सारनाथ, वाराणसी ।

[च] पालि साहित्य का इतिहास—लेखक डा0 कोमल चन्द जैन,
प्रकाशक—विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।

अरबी

(कक्षा 10 के लिए)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा ।

भाग-एक—अंक 50

1—कवाइद— 10 अंक

(1) फेल, फाइल, मफऊल बनाने का काइदा
(2) मरफूआत
(3) मन्सूबात मफाईलेखम्सह, इन्न-इन्ना व लखवातिही खबर-कान व अखवातिही
(4) हुरूफेअत्फ
(5) जमाईर
(6) तस्मिया
(7) हुरूफ नवासब, जवाजिम
(8) जमा जमातालिम, जामामुकस्सर, जमाकिल्लत, जमाकसरत

2—तर्जुमा—20 अंक

(क) अरबी के आसान जुमलों का अंग्रेजी/हिन्दी/उर्दू में तर्जुमा

(ख) अंग्रेजी/हिन्दी/उर्दू के आसान जुमलों का तर्जुमा अरबी में

3—दिये गये अलफाज का अरबी जुमलों में इस्तेमाल 10

4—दिये गये उन्वान पर मजमून/खुतूत नवीसी 10

भाग–बी अंक 50

1—मुकर्रर किताब—अलकराअतुर्रशीदह जुज्व सानी मुअल्लिफ अब्दुलफत्ताह व अलीउमर मसुबूआमिस्त्र शाए कर्दाह एम0 रशीद एण्ड संस, उर्दू बाजार, दिल्ली।

2—नस्र — 35

दर्ज जेल अस्बाक पढ़ाए जायेंगे

		सबक नं0
(1)	जजाउस्सबक	1
(2)	अलअदवी असासुन्निजाह	4
(3)	मजीयांतुत्तस्वीर	10
(4)	अन्नमीर	13
(5)	अलअस्फन्ज	17
(6)	अव्यमेहुन्नतिनतख्तारी	19
(7)	अश्शाय	23
(8)	होलतुल अन्कबूत	29
(9)	अलमाशी	30
(10)	अलगुराय वलजराअत	31
(11)	अल अहराम	34
(12)	जमाअतुल फीरान	35
(13)	अलवादिम वस्समवत	45
(14)	अत्ताइरात	48
(15)	अश्शुजातो अलजुब्न	49
(16)	अलफतात, अश्शुजाअत	59

2—नज्म

दर्ज जेल नज्में पढ़ाई जायेंगी 15 अंक

		सबक नं0
(17)	अन्नहॅलतो बजिजम्बार	8
(18)	वलातस्ने अलमारुफ फिलगैर	18
(19)	मशीयतुल गुराब	46
(30)	जजाउलवालिदैन	54

जन संख्या, पर्यावरण स्वास्थ्य शिक्षा एवं ट्राफिक रूल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे।

फारसी

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न–पत्र होगा। समयावधि तीन घंटे का होगा।

भाग (अ) 50 अंक

व्याकरण—

1—(क) लफ्जमुफरद अजमाए कलाम (Parts of speech) संज्ञा (Noun) (इस्म) 10 अंक

(ख) सर्वनाम (Pronoun) (जमीर)

(ग) हर्फजार (Prepsi tion)

(घ) क्रिया (Verb) (फेल)

(ङ) व्युत्पत्ति (i) मुख्य व्युत्पत्ति (ii) गौण व्युत्पत्ति (उपसर्ग) (Primary Derivatives and Secondary Derivatives)

2—अनुवाद—

(क) फारसी के साधारण वाक्यों का अंग्रेजी अथवा हिन्दी अथवा उर्दू भाषा में अनुवाद कराने का अभ्यास । 10 अंक

(ख) अंग्रेजी अथवा हिन्दी या उर्दू के साधारण वाक्यों का आसान फारसी जुबान में अनुवाद कराये जाने का अभ्यास । 10 अंक

3—फारसी के शब्दों का आसान फारसी जुबान में वाक्य प्रयोग (फारसी अलफाज का फारसी जुमलों में इस्तेमाल) । 10 अंक

4—रचना— 10 अंक

(क) फारसी जुबान में मुख्तसर इकतिबास लिखने का अभ्यास करना (Precis Writing)।

(ख) पत्र-लेखन का अभ्यास ।

भाग (ब) अंक 50

पाठ्य-पुस्तक (गद्य तथा पद्य)

निर्धारित पुस्तक—

"फारसी व दस्तूर"—किताब अव्वल (Part I) 1997, लेखक (Zahrai-Khangari), प्रकाशक—मेस से इदारए अदबियाते दहली जैयद प्रेस बिल्ली मारान, दिल्ली—110006 में से निम्नलिखित गद्य पाठ तथा प (Poem) का अध्ययन कराना है : [35 15

पाठ 34—किस्सए बहराम व कर्नाजक (1)
पाठ 26—किस्सए बहराम व कर्नाजक (2)
पाठ 27—किस्सए बहराम व कर्नाजक (3)
पाठ 28—दस्तूर जबाने फारसी—इस्म आम व इस्म खास । [कवायद]
पाठ 29—हबीसून (1)
पाठ 30—हबीसून (2)
पाठ 31—दस्तूर जबाने फारसी (जमीर) [कवायद]
पाठ 35—दो (दू) हिकायात अज गुलिस्ताने सादी
पाठ 36—जश्न सादा
पाठ 37—सदा (नज्म)
पाठ 42—दस्तूर जबाने फारसी (फेल लाजिम व फेल मुतअद्दी) [कवायद]
पाठ 43—किस्सा कुजा कि मूसा
पाठ 46—माजनदरान (नज्म)
पाठ 47—शाहाने गोशफन्द
पाठ 53—नाजिमे अंगुश्तरी
पाठ 55—किताब (नज्म)

जनसंख्या पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं ट्राफिक रूल्स की जानकारी हेतु प्रश्न निबन्ध के रूप में पूछे जायेंगे ।

लैटिन

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र तीन घंटे का होगा ।

	अंक
पाठ्य-पुस्तक गद्य व पद्य	30
व्याकरण	20
अनुवाद	20
निबन्ध (आलेख)	20
अपठित	10
	100 अंक

टिप्पणी—जहां तक सम्भव हो व्याकरण के प्रश्न नियत पाठ्य-पुस्तकों से पूछे जाने चाहिये।

सरल अंग्रेजी वाक्यों और अंग्रेजी के सरल क्रमबद्ध गद्यांश के लैटिन में अनुवाद को भी निबन्ध के अन्तर्गत समझा जायेगा।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें—

(क) गद्य और पद्य के लिए—

(1) कैसर, लेखक—डी0 वेलियों, कॉलिको बुक-61।
(2) लिव0-बुक-21, (मेकमिलन एण्ड को0, कलकत्ता)।
(3) एनीडा बुक-6, लेखक—विरजिल।

(ख) व्याकरण के लिए—

गिरडरली की लैटिन ग्रामर या एलेन की लैटिन ग्रामर संस्तुति की जाती है।

(ग) निर्धारित पुस्तकें—

जूनियर लैटिन कम्पोजीशन, लेखक—जे0 मंथ्योहनरिलनी, प्रकाशक—हेरप एण्ड कम्पनी।

गणित

(कक्षा 10 के लिये)

इसमें 50-50 अंकों के दो प्रश्न-पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्न-पत्र की अवधि 3 घण्टे होगी।
प्रथम प्रश्न-पत्र—(बीजगणित, वाणिज्यिक गणित, सांख्यिकी, अभिकलन मेन्सुरेशन)।
द्वितीय प्रश्न-पत्र—ज्यामिति, त्रिकोणमिति, निर्देशांक ज्यामिति।

अंक विभाजन

प्रश्न-पत्र	उपविषय	अंक	कालांश	प्रश्न-पत्र	उपविषय	अंक	कालांश
1	2	3	4	1	2	3	4
	क—बीजगणित	15	35		क—ज्यामिति	23	46
	ख—वाणिज्यिक गणित	8	15		ख—त्रिकोणमिति	15	30
प्रथम				द्वितीय			
	ग—सांख्यिकी	10	20		ग—निर्देशांक ज्यामिति	12	24
	घ—अभिकलन	5	10				
	ङ—मेन्सुरेशन	12	20				

प्रथम प्रश्न-पत्र 50 अंक

(क) बीजगणित— 15 अंक

1—दो चरों वाला रैखिक समीकरण—

(1) दो चरों वाले रैखिक समीकरण का हल और आलेख।
(2) दो चरों वाले युगपत रैखिक समीकरण का आलेखीय विधि द्वारा हल।
(3) युगपत रैखिक समीकरण निकाय का संगत/असंगत होना।
(4) युगपत रैखिक समीकरण निकाय पर आधारित इबारती प्रश्न।

2—गुणनखण्ड ल0 स0 तथा म0 स0—

(1) गुणनखण्ड विधि से बहुपदों के लघुत्तम समापवर्त्य एवं महत्तम समापवर्तक।
(2) चक्रीय व्यंजकों का गुणनखण्ड।

3—परिमेय व्यंजक—

(1) परिमेय व्यंजक का अर्थ।
(2) परिमेय व्यंजकों का योग, व्यवकलन, गुणा एवं भाग।

4--द्विघात समीकरण--

(1) द्विघात समीकरण का अर्थ ।
(2) मानक द्विघात समीकरण ($ax^2+bx+c=0$, $a=1$, द्विघात समीकरण $ax^2+bx+c=0$, $a=0$, का गुणनखण्ड विधि एवं सूत्र द्वारा हल ।
(3) द्विघात समीकरण का विविक्तकर एवं उनके मूलों की प्रकृति ।
(4) दिये गये मूलों के द्विघात समीकरण बनाना ।
(5) विभिन्न क्षेत्रों में द्विघात समीकरणों का अनुप्रयोग (द्विघात समीकरणों पर आधारित इबारती प्रश्न) ।
(6) द्विघात समीकरण में सममित समीकरण तथा इनका हल ।
(7) द्विघात सूत्रों के प्रयोग से द्विघात बहुपदों के गुणनखण्ड (जब अन्य विधियाँ सुगम न हों) ।

(ख) वाणिज्यिक गणित-- 8 अंक

1--बैंकिंग--

(1) बैंकों की कार्य प्रणाली ।
(2) विभिन्न प्रकार के खाते (बचत बैंक खाता, आवर्ती जमा खाता तथा इन पर प्रश्न)
(बचत बैंक खाता सम्बन्धी प्रश्नों के हल पर अधिक बल दिया जाय)

2--कराधान--

इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य छात्रों को राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के संबोध (विशेषतः विभिन्न प्रकार के करों के परिप्रेक्ष्य में) से परिचित कराना है--
(1) प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर ।
(2) आयकर का आकलन ।
(3) बिक्री-कर का आकलन ।

(ग) सांख्यिकी-- 10 अंक

केन्द्रीय प्रवृत्ति की मापें--
(1) अवर्गीकृत तथा वर्गीकृत आंकड़ों के समान्तर माध्य ।
(2) अवर्गीकृत आंकड़ों की माध्यिका ।
(3) जन्म-मरण सांख्यिकी ।
(4) अशोधित मृत्यु दर ।
(5) विशिष्ट मृत्यु दर ।
(6) शिशु मृत्यु दर ।
(7) निर्वाह व्यय सूचकांक ।
(8) मूल्य सूचकांक ।

(घ) अभिकलन-- 5 अंक

पाश (loop) सहित प्रवाह सचित्र तथा पूर्ण पठित प्रकरणों, जैसे--अनुपात, समानुपात, लाभ-हानि, प्रतिशत, साधारण एवं चक्रवृद्धि ब्याज, बट्टा सरल प्रश्नों को हल करने में इसका प्रयोग करना ।

(ङ) मेन्सुरेशन-- 12 अंक

(1) वृत्त, त्रिज्याखण्ड और वृत्तखण्ड का क्षेत्रफल ।
(2) घन, घनाभ का पृष्ठ एवं आयतन ।
(3) बेलन, शंकु तथा गोले का वक्र पृष्ठ, सम्पूर्ण पृष्ठ एवं आयतन (गणना कार्य हेतु लघुगणक सारणियों का प्रयोग कर सकते हैं) ।

द्वितीय प्रश्न-पत्र 50 अंक

(क) ज्यामिति-- 23 अंक

हाई स्कूल स्तर पर ज्यामिति शिक्षण में उपपत्तियाँ देने में इस बात पर विशेष बल दिया जाय कि छात्र उपपत्ति की प्रकृति एक कार्यविधि को भलीभांति समझकर आत्मसात कर लें । ज्यामिति शिक्षण के उद्देश्यों की सम्प्राप्ति हेतु पढ़ाये जाने वाले सभी प्रमेयों पर आधारित अभ्यास के प्रश्न अवश्य पढ़ाये जायें तथा इनका परीक्षण किया जाये--

1.—समरूप त्रिभुज—

(1) एक त्रिभुज की एक भुजा से समान्तर खींची गयी रेखा अन्य दो भुजाओं को जिन दो बिन्दुओं पर प्रतिच्छेद करती है वे बिन्दु भुजाओं को समान अनुपात में विभाजित करते हैं।

(2) यदि कोई रेखा किसी त्रिभुज की दो भुजाओं को समान अनुपात में विभाजित करती हो, तो यह रेखा तीसरी रेखा के समान्तर होती है।

(3) यदि दो त्रिभुजों में संगत कोण बराबर हों (अर्थात् दोनों त्रिभुज समान कोणिक हों) तो उनकी संगत भुजायें समानुपातिक होती हैं।

(4) यदि दो त्रिभुजों की संगत भुजायें आनुपातिक हों तो वे त्रिभुज समरूप होते हैं।

(5) यदि दो त्रिभुजों की संगत भुजायें समानुपातिक हों तो वे त्रिभुज समानकोणिक होते हैं।

(6) यदि दो त्रिभुजों में संगत भुजाओं का एक युग्म अनुपातित हों और आन्तरिक कोण बराबर हो तो त्रिभुज समरूप होते हैं।

(7) यदि समकोण त्रिभुज के समकोण वाले शीर्ष से कर्ण पर लम्ब डाला गया हो तो लम्ब रेखा के दोनों ओर के त्रिभुज आपस में तथा मूल त्रिभुज के समरूप होते हैं।

(8) समरूप त्रिभुजों के क्षेत्रफलों का अनुपात संगत भुजाओं के वर्गों के समानुपाती होता है।

(9) एक समकोण त्रिभुज के कर्ण का वर्ग अन्य दो भुजाओं के वर्गों के योगफल के बराबर होता है।

(10) किसी त्रिभुज में यदि एक भुजा का वर्ग अन्य दो भुजाओं के वर्गों के योगफल के बराबर हो तो सबसे बड़ी भुजा के सामने का कोण समकोण होता है।

2—वृत्त—

(1) यदि किसी वृत्त (अथवा सर्वांगसम वृत्तों) के दो चाप सर्वांगसम हों तो संगत जीवायें बराबर होती हैं।

(2) यदि किसी वृत्त (अथवा सर्वांगसम वृत्तों) की दो जीवायें समान हों तो उनके संगत चाप सर्वांगसम होते हैं।

(3) वृत्त के केन्द्र से जीवा पर डाला गया लम्ब जीवा को समविभाजित करता है।

(4) वृत्त के केन्द्र और जीवा के मध्य बिन्दु को मिलाने वाली रेखा जीवा पर लम्ब होती है।

(5) तीन अंश रेखी बिन्दुओं से होकर केवल एक वृत्त जाता है।

(6) वृत्त (अथवा सर्वांगसम वृत्तों) की समान जीवायें केन्द्र (अथवा संगत केन्द्रों) से समदूरस्थ होता है।

(7) वृत्त (अथवा सर्वांगसम वृत्तों) की जीवायें जो केन्द्र (अथवा संगत केन्द्र) से समदूरस्थ हों, समान होती हैं।

(8) वृत्त के एक चाप का अंश माप चाप के सापेक्ष वृत्त के एकान्तर खण्ड के किसी एक बिन्दु पर इस चाप द्वारा अन्तरित कोण का दूना होता है।

(9) अर्द्ध वृत्त का कोण समकोण होता है।

(10) अपने एकान्तर खंड में वृत्त के किसी बिन्दु पर समकोण अन्तरित करने वाला चाप खंड अर्द्धवृत्त होता है।

(11) वृत्त के एक खंड के कोण परस्पर बराबर होते हैं।

(12) यदि दो बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा खंड दो अन्य बिन्दुओं पर, जो इस रेखाखंड को अविष्ट करने वाली रेखा के एक ही ओर स्थित हैं, समान कोण अन्तरित करता हो तो ये चारों बिन्दु एक वृत्तीय होते हैं।

(13) वृत्त (अथवा सर्वांगसम वृत्तों) की बराबर जीवायें केन्द्र (संगत केन्द्रों) पर बराबर कोण अन्तरित करती हैं।

(14) यदि वृत्त (सर्वांगसम वृत्तों) की दो जीवाओं द्वारा केन्द्र (संगत केन्द्रों) पर अन्तरित कोण बराबर हो तो जीवायें बराबर होती हैं।

(15) चक्रीय चतुर्भुज के सम्मुख कोणों के किसी भी युग्म का योगफल 180 अंश होता है।

(16) यदि चतुर्भुज के सम्मुख कोणों के किसी भी युग्म का योगफल 180 अंश हो तो चतुर्भुज चक्रीय होता है।

(17) वृत्त की स्पर्श रेखा, स्पर्श बिन्दु से होकर जाने वाली त्रिज्या पर लम्ब होती है ।

(18) किसी बाह्य बिन्दु से वृत्त पर खींची गई दो स्पर्श रेखाओं की लम्बाइयां बराबर होती हैं ।

(19) यदि किसी वृत्त की दो जीवायें वृत्त के अन्दर या बढ़ाने पर बाहर प्रतिच्छेद करती हों तो एक जीवा के दो खण्डों से बने आयत का क्षेत्रफल दूसरी जीवा के दो खण्डों से बने आयत के क्षेत्रफल के बराबर होती है ।

(20) यदि PAB वृत्त की छेदक रेखा हो, जो वृत्त को A और B पर प्रतिच्छेद करती हो और PT एक स्पर्श रेखा खण्ड हो तो

$$PA \cdot PB = PT^2$$

(21) यदि वृत्त की स्पर्श रेखा के स्पर्श बिन्दु से एक जीवा खींची जाये तो इस जीवा द्वारा दी हुई स्पर्श रेखा के साथ बनाये गये कोण, संगत एकान्तर खण्डों से बनाये गये कोण के क्रमशः बराबर होते हैं तथा इसका विलोम ।

(22) यदि वृत्त की जीवा के एक छोर बिन्दु से होती हुई खींची गई रेखा और जीवा के बीच का कोण एकान्तर खण्ड में जीवा द्वारा अन्तरित कोण के बराबर हो तो यह वृत्त की स्पर्श रेखा होती है ।

(23) यदि दो वृत्त एक दूसरे का (अन्तरिततः या बाह्यतः) स्पर्श करते हों तो स्पर्श बिन्दु केन्द्रों से होकर जाने वाली रेखा पर स्थित होता है ।

3--रचना--

(1) वृत्त के किसी दिये हुये बिन्दु पर स्पर्श रेखा की रचना करना, जबकि वृत्त का केन्द्र (1) ज्ञात है (2) अज्ञात है ।

(2) त्रिभुज के अन्तर्गत और परिगत वृत्त खींचना ।

(3) परिधि के बाहर के बिन्दु से वृत्त की स्पर्श रेखा खींचना, दो वृत्तों की उभयनिष्ठ स्पर्श रेखायें खींचना ।

(4) एक त्रिभुज की रचना करना, जिसके आधार, शीर्ष कोण और शीर्ष से होकर जाने वाली मध्यिका अथवा शीर्ष-लम्ब दिये हुये हैं ।

(5) दी हुई आकृतियां (त्रिभुज चतुर्भुज आदि) के समरूप दिये हुये पैमाने पर आकृतियों की रचना करना है ।

(6) दिये हुये रेखा खंड का दिये हुये अनुपात में आन्तरिक अथवा वाह्यतः विभाजन करना ।

त्रिकोणमिति--15 अंक

(1) $n \times 360^0 + A$ (जहां n एक पूर्णांक) के त्रिकोणमितीय अनुपात

(2) त्रिकोणमितीय सर्व समितायें--
$\sin^2 A + \cos^2 A = 1$, $\sec^2 A = 1 + \tan^2 A$, $\operatorname{cosec}^2 A = 1 + \cot^2 A$

(3) दो कोणों के योग और अन्तर तथा किसी कोण के अपवर्तक एवं अपवर्त्य कोणों के त्रिकोणमितीय अनुपात ।

(4) Sine और Cesine के योग और अन्तर को उनके गुणनफल के रूप में व्यक्त करना ।

5--ऊंचाई एवं दूरी--

त्रिकोणमितीय सारणियों का पढ़ना त्रिकोणमितीय सारणियों लघुगणक सारणियों के प्रयोग से ऊंचाई व दूरी के के साधारण प्रश्नों का हल ।

(ग) निर्देशांक ज्यामिति--12 अंक

(1) दो बिन्दुओं के बीच की दूरी, रेखा खण्डों को दिये हुये अनुपात में विभाजन करने वाले बिन्दु के निर्देशांक (त्रिभुज का क्षेत्रफल)

(2) सरल रेखा के समीकरण ।

(3) सरल रेखा पर किसी बिन्दु से डाले गये लम्ब की लम्बाई ।

(4) सरल रेखा के समानान्तर तथा लम्बवत् रेखाओं के समीकरण ।

(5) दो सरल रेखाओं का प्रतिच्छेद बिन्दु ।

(6) दो सरल रेखाओं के बीच का कोण ।

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें--

(1) गणित भाग-एक (कक्षा 10 के लिये)
(2) गणित भाग-दो (कक्षा 10 के लिये)

प्रारम्भिक गणित

(कक्षा-10 के लिये)

इसमें 50-50 अंकों के दो प्रश्न-पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्न-पत्र की अवधि तीन घन्टे की होगी।
प्रथम प्रश्न-पत्र अंक गणित, सांख्यिकीय, बीजगणित तथा लेखाचित्र।
द्वितीय प्रश्न-पत्र--ज्यामिति तथा मेंसुरेशन।

अंक विभाजन--

प्रश्न-पत्र	उप विषय	अंक	कालांश	प्रश्न-पत्र	उप विषय	अंक	कालांश
प्रथम	क--अंक गणित	15	30	द्वितीय	क--ज्यामिति	30	60
	ख--सांख्यिकी	10	20		ख--मेन्सुरेशन	20	40
	ग--बीजगणित तथा लेखाचित्र	25	50				

प्रथम प्रश्न-पत्र — 50 अंक

(क) अंक गणित-- — 15 अंक

(1) चक्रवृद्धि ब्याज (ब्याज तथा मिश्रधन ज्ञात करना, समय भिन्न में न हो), समय तथा धन की गणना न पूछा जाये।
(2) बैंक जमा पूंजी--बचत खाता, आवर्ती खाता, सावधि खाता तथा चेकों का ज्ञान तथा किस्तों में भुगतान (किस्तों की गणना के प्रश्न न पूछे जायें)।
(3) कर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर आय कर की गणना, बिक्री कर की गणना।
(4) अनुपात तथा समानुपात।
(5) काम, समय तथा चाल समय पर साधारण प्रश्न।

(ख) सांख्यिकीय केन्द्रीय माप-- — 10 अंक

(1) समान्तर माध्य
(2) माध्यिका
(3) बहुलक (केवल अवर्गीकृत आंकड़ों के लिये)

(ग) बीजगणित तथा लेखाचित्र-- — 25 अंक

(1) ल० स० तथा म० स० और उनमें सम्बन्ध।
सर्वनिष्ठ तथा समूह विधि द्वारा दो वर्गों के अन्तर का व्यंजक, पूर्ण वर्ग बना कर त्रिपद व्यंजक, दो घनों के योग तथा अन्तर के व्यंजक क्षेत्रफल द्वारा गुणन खंडों की सहायता से लघुत्तम समापवर्त्य तथा महत्तम समापवर्तक।
(2) युगपत समीकरण
दो अज्ञात राशियों के युगपत समीकरणों का हल तथा इन पर इबारती प्रश्न।
(3) लेखाचित्र--आंकड़ों का लेखाचित्र।
सरल युगपत समीकरणों का ग्राफ खींचना व हल करना।
(4) द्विघात बहुपद तथा द्विघात समीकरण--द्विघात समीकरणों का सूत्र द्वारा हल।
द्विघात समीकरणों का गुणन खंड द्वारा हल, द्विघात समीकरण पर आधारित सरल वास्तविक प्रश्न

द्वितीय प्रश्न-पत्र

[ज्यामिति तथा मेन्सुरेशन]

ज्यामिति-- 30 अंक

(1) वृत्त सम्बन्धी प्रमेय--

किसी वृत्त में एक चाप द्वारा केन्द्र पर अन्तरित कोण उसके द्वारा शेष परिधि के किसी भी बिन्दु को अन्तरित कोण का दुगुना होता है ।

(2) एक वृत्त खण्ड का कोण बराबर होता है ।

(3) यदि किन्हीं दो बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा अपने एक ही ओर स्थित अन्य दो बिन्दुओं पर समान कोण अन्तरित करें, तो चारों बिन्दु चक्रीय होंगे ।

(4) अर्द्ध वृत्त में स्थित कोण समकोण होता है, वृत्त के दीर्घ खंड में स्थित कोण समकोण से छोटा और लघु खंड में स्थित कोण समकोण से बड़ा होता है ।

(5) चक्रीय चतुर्भुज के कोण सम्पूरक होते हैं तथा इसका विलोम ।

(6) वृत्त के किसी बिन्दु पर खींची गई, स्पर्श रेखा उस बिन्दु से होकर जाने वाली त्रिज्या पर लम्ब होता है ।

(7) यदि दो वृत्त एक दूसरे को स्पर्श करें तो स्पर्श बिन्दु उनके केन्द्रों को मिलाने वाली रेखा पर स्थित होगा ।

(8) एक वृत्त पर किसी बाह्य बिन्दु से जो दो स्पर्श रेखायें खींची जा सकती हैं वे आपस में बराबर होती हैं ।

(9) यदि एक सरल रेखा किसी वृत्त को स्पर्श करती है तो स्पर्श बिन्दु से खींची गई जीवा और स्पर्श रेखा के बीच बने कोण एकान्तर वृत्त खण्डों के कोण के बराबर होते हैं ।

(2) रचनायें--

(1) वृत्त खींचने की सरल स्थितियां ।

(2) वृत्त की स्पर्श रेखायें ।

(3) वृत्त के परिगत तथा अन्तर्गत समबहुभुज (3, 4, 6 या 8 भुज वाले) की रचना ।

(ख) मेन्सुरेशन-- 20 अंक

(1) लम्बवृत्तीय बेलन का वक्र पृष्ठ, सम्पूर्ण पृष्ठ एवं आयतन ।

(2) लम्ब वृतीय शंकु का वक्र पृष्ठ एवं आयतन ।

(3) गोला का पृष्ठीय तल एवं आयतन ।

टिप्पणी--(1) उपर्युक्त के वक्र पृष्ठ तथा आयतन केवल सूत्रों के उपयोग से ज्ञात किया जाना है, उपपत्ति नहीं है ।

(2) खोखले गोले, खोखले बेलन तथा खोखले शंकु के प्रश्न न पूछे जायें ।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक--

(1) प्रारम्भिक गणित भाग-एक (कक्षा 10 के लिये)

(2) प्रारम्भिक गणित भाग-दो (कक्षा 10 के लिये)

गृह विज्ञान

(कक्षा 10 के लिये)

[केवल बालिकाओं के लिये]

पाठ्यक्रम के उद्देश्य--

गृह विज्ञान वास्तव में कोई एक स्वतन्त्र विषय नहीं है, वरन् विभिन्न सामाजिक एवं वैज्ञानिक विषयों के ऐसे अंशो का समन्वित रूप है जिनका ज्ञान गृह एवं सामाजिक परिवेश के सामान्य क्रिया-कलापों में भाग लेने एवं गृहस्थ जीवन की दैनिक समस्याओं को हल करने हेतु आवश्यक है । ज्ञातव्य है कि गृह विज्ञान स्त्री, पुरुष, बालक एवं

बालिका के लिये समान रूप से उपयोगी हैं। गृह विज्ञान के पाठ्यक्रम की संरचना के इस आधार को ध्यान में रखते य प्रस्तुत पाठ्यक्रम में निम्नांकित उद्देश्यों पर विशेष बल दिया गया है--

(1) गृह विज्ञान के महत्व का बोध।

(2) दैनिक जीवन में समय, अर्थ एवं श्रम की बचत के उपाय का ज्ञान।

(3) स्वास्थ्य एवं आरोग्य के परिपूर्ण जीवन की आवश्यकताओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण व विकास।

(4) पौष्टिक एवं संतुलित आहार का बोध।

(5) पारिवारिक आय की सीमा में बजट बनाने के कौशल का विकास करना एवं अधिकाधिक आर्थिक बचत की नवीन तकनीक का ज्ञान।

(6) क्रय-विक्रय, बजट एवं पोस्ट आफिस, बैंक आदि से सम्बन्धित सामान्य परिचर्या का व्यावहारिक ज्ञान एवं अभ्यास।

(7) सामान्य रोगों, उनकी रोकथाम, प्राथमिक चिकित्सा एवं परिचर्या का ज्ञान।

(8) शारीरिक श्रम एवं सामाजिक कार्यों के प्रति रुचि से नैतिक मूल्यों का विकास।

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र होगा। समयावधि तीन घन्टे की होगी।

1--गृह प्रबन्ध-- 20 अंक

(1) शिक्षिका द्वारा प्रति वर्ष बजट का प्रदर्शन।

(2) आय-व्यय और बचत, डाकखाना और बैंक के माध्यम से।

(3) घर की सफाई और सजावट।

(4) गृह गणित--दशमलव, जोड़ना, घटाना, गुणा तथा भाग (रुपया, पैसा, किलोग्राम, ग्राम, मीटर, सेन्टीमीटर के सन्दर्भ में), प्रतिशत, लाभ, हानि तथा साधारण ब्याज पर सरल गणनायें।

2--स्वास्थ्य रक्षा-- 20 अंक

(1) जल-जल के स्रोत और उपयोग।

(2) घरेलू विधियों से जल शुद्ध करना।

(3) अशुद्ध जल से फैलने वाले रोग।

(4) पर्यावरण और जन-जीवन पर उसका प्रभाव।

(5) कुछ सामान्य रोगों के कारण और उनकी रोकथाम, चेचक, छोटी माता खसरा, डिप्थीरिया, कुकुरखांसी, टिटनेस, क्षयरोग, मियादी बुखार, पेचिस, अतिसार, हैजा और विषैला भोजन (फूड प्वायजनिंग)।

3--वस्त्र और सूत विज्ञान-- 20 अंक

(1) सिलाई किट--बेबी फ्राक या कुर्ता, पायजामा या पेटीकोट, उपलब्धि के अनुसार (हाथ की सिलाई अथवा मशीन की सिलाई द्वारा)।

(2) कपड़ों की धुलाई तथा रख-रखाव, धोने की विधियां और इस्तरी करना।

4--भोजन तथा पोषण विज्ञान-- 20 अंक

(1) रसोईघर की व्यवस्था, देख-रेख और सफाई।

(2) भोजन पकाने और परोसने की आधारित विधियां, तत्वों की सुरक्षा का ध्यान रखना।

(3) निम्न रोगों के रोगियों का भोजन, रोग की अवधि में और स्वास्थ्य लाभ के समय का भोजन तीव्र ज्वर और दीर्घ स्थायी ज्वर, अतिसार, पेचिस, गैस्ट्रोइनट्राइटिस, मियादी बुखार, मलेरिया, क्षयरोग, लू लगना।

5--प्राथमिक चिकित्सा और गृह परिचर्या-- 20 अंक

(1) मानव अस्थि संस्थान तथा संधियां।
(2) हड्डियों की टूट और मोच।
(3) श्वसन तन्त्र का प्रारम्भिक ज्ञान।
(4) प्राकृतिक और कृत्रिम श्वसन क्रिया।
(5) घायल स्थानान्तरण हस्त आसन द्वारा।
(6) रोगी को स्पंज करना, गर्म सेक-सफाई लेना, बर्फ की टोपी का प्रयोग।
(7) नाड़ी, श्वास गति और ताप का चार्ट बनाना।

प्रयोगात्मक का पाठ्यक्रम

(खण्ड क)

(1) किसी एक स्थान (घर या पाठशाला कक्ष) की सफाई की दैनिक आख्या तैयार करना।
(2) किसी एक लकड़ी के फर्नीचर की सफाई और पालिश करना।
(3) धातु की किसी एक वस्तु की सफाई।
(4) प्रतिवर्ष बजट का अभिलेख रखना।

(खण्ड ख)

(1) छात्राओं द्वारा सिलाई का किट तैयार करना।
(2) बेबी फ्राक या कुर्ता, पायजामा या पेटीकोट सिलना।
(3) वस्त्रों की धुलाई—सूती, रेशमी, ऊनी तथा कृत्रिम रेशे के वस्त्रों को धोना।

(खण्ड ग)

(1) भोजन पकाने की सही विधियाँ—उबालना, भाप में पकाना, तलना, स्ट्यू करना, धीमी आंच में पकाना, भूनना।
(2) भोजन का परोसना।
(3) रोगी का भोजन, फटे दूध का पानी, साबूदाना का पानी, खिचड़ी, तरकारियों की सूप और सब्जियों का रस, फलों के रस, पना।

(खण्ड घ)

(1) कृत्रिम श्वास देने की विधियाँ।
(2) हस्त आसन द्वारा स्थानान्तरण।
(3) स्पंज करना, गर्म सेंक (पुल्टिस), भपारा लेना, बर्फ की टोपी और गर्म पानी की थैली; प्रयोग।
(4) ताप का चार्ट बनाना।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें—

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है। विद्यार्थियों के प्रधान विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

विज्ञान

(कक्षा 10 के लिये)

विज्ञान विषय में तीन प्रश्न-पत्र होंगे। प्रथम प्रश्न-पत्र [भौतिक विज्ञान]—35 अंक, द्वितीय प्रश्न-पत्र [रसायन विज्ञान]—30 अंक तथा तृतीय प्रश्न-पत्र [जीव विज्ञान]—35 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा।

प्रथम प्रश्न-पत्र—35 अंक

[भौतिक विज्ञान]

(क) बल का आघूर्ण—अदिश एवं सदिश राशियां, सदिश राशियों का योग, बल समान्तर चतुर्भुज नियम, बल, युग्मबल, आघूर्ण का नियम, उत्तोलक, दण्डतुला, गुरुत्वाकेन्द्र, उत्तोलक सम्बन्ध, सरल गणनाएं।

(ख) द्रव्य स्थैतिकीय—द्रव्यमान के नियम, मेटा केन्द्र, उत्प्लावन का नियम, जलयान, पनडुब्बी तथा गुब्बारे में उत्प्लावन के नियम का उपयोग।

(ग) कार्य सामर्थ्य एवं ऊर्जा—कार्य एवं सामर्थ्य का सम्बन्ध, जूल, वाट, किलोवाट—घन्टा, कार्य एवं सामर्थ्य सम्बन्धी सरल गणनाएं, गतिज ऊर्जा एवं स्थितिज ऊर्जा, ऊर्जा मूल स्रोत के रूप सूर्य ऊर्जा के अन्य स्वरूप (द्रव्यमान ऊर्जा सहित), ऊर्जा रूपान्तरण के व्यावहारिक उपयोग, ऊर्जा संरक्षण।

(घ) तरंग गति—तरंग गति की प्रकृति, तरंग के माध्यम से संचरण, तरंग के प्रकार अनुप्रस्थ/आवर्त गति, सरल आवर्त गति की संकल्पना, सरल आवर्त गति का ग्राफीय निरूपण, विस्थापन आयाम आवृत्ति, आवर्तकाल तरंगदैर्ध्य और उनके मात्रक, किसी तरंग के तरंगदैर्ध्य, आवृत्ति तथा आवर्तकाल में सम्बन्ध उपरोक्त पर आधारित सरल आंकिक प्रश्न। तरंग के संचरण में ऊर्जा का स्थानान्तरण। तरंगों की पारस्परिक अनिर्भरता।

(ङ) ऊष्मा—विशिष्ट ऊष्मा—आंकिक प्रश्न, ऊष्मीय प्रसार—रेखीय एवं आयतन प्रसार एवं गुणांक, अवस्था परिवर्तन, गुप्त ऊष्मा अपेक्षित आर्द्रता। दहन इंजन—ऊष्मा का कार्य एवं कार्य को ऊष्मा में बदलने की संकल्पना। ऊष्मा का मात्रक तुल्यांक। जैम्स का प्रयोग वाह्य वहन एवं अन्य वहन इंजन, पेट्रोल इंजन।

(च) प्रकाश—मानव नेत्र की संरचना—नेत्र लेन्स की फोकस दूरी और रेटिना पर प्रतिबिम्ब का बनना, नेत्र दण्ड और शंकु के स्वरूप का संक्षिप्त विवरण, वर्णांधर दृष्टि दोष, निकट दृष्टि और दूरदृष्टि दृष्टि-दोष निवारण रंगभेद।

दूरदर्शी एवं सूक्ष्मदर्शी—सिद्धान्त संरचना, खगोलीय दूरदर्शी की क्रियाविधि और संयुक्त सूक्ष्मदर्शी श्वेत प्रकाश विभिन्न रंग के तरंग दैर्ध्य, वस्तु के रंग।

(छ) विद्युत्—धारा का ऊष्मीय प्रभाव, ऊष्मा विद्युत् धारा, प्रतिरोध और समय में सम्बन्ध, ऊष्मीय प्रभाव पर आधारित विद्युत् उपकरण, मात्रक विद्युत् शक्ति एवं इस पर आधारित आंकिक प्रश्न। विद्युत् धारा का चुम्बकीय प्रभाव। धारावाहिक चालक द्वारा चुम्बकीय क्षेत्र कुण्डलीय और परिनालिका विद्युत् मोटर अनुप्रयोग, विद्युत् चुम्बकीय प्रेरण का प्रारम्भिक ज्ञान, फ्लेमिंग का बायें हाथ का नियम, विद्युत् जनित्र डी0 सी0 एवं ए0 सी0 घरों में इस्तेमाल होने वाली विद्युत् घरेलू वायरिंग, फ्यूज सुरक्षा की युक्ति विद्युत् से खतरे।

(ज) सूर्य ऊर्जा के स्रोत के रूप में—सौर्य ऊर्जा का पृथ्वी द्वारा अवशोषण, प्रकाश संश्लेषण, सौलर कुकर, सोलर सेल/वायु ऊर्जा, विण्डमिल सामुद्रिक तरंग से विद्युत्।

द्वितीय प्रश्न-पत्र—30 अंक

[रसायन विज्ञान]

(क) नाभिकीय ऊर्जा—सौर्य ऊर्जा एवं उसका उपयोग, नाभिकीय विखण्डन और संलयन श्रृंखला अभिक्रिया और उनके उदाहरण, विखण्डन और संलयन के सीमित और असीमित रूप। नाभिकीय रियेक्टर विकिरण के खतरे, ऊर्जा संकट—कारण एवं निराकरण, नाभिक का स्थायित्व तथा रेडियो एक्टिवता की विस्तृत जानकारी। समूह विस्थापन नियम, अर्द्ध आयु, औसत आयु काल। भारत में स्थित विभिन्न नाभिकीय रियेक्टर के सम्बन्ध में जानकारी।

(ख) औद्योगिक रसायन—साबुन, डिटर्जेन्ट, पाउडर, स्याही, क्रीम, वैसलीन, जैम, जेली, बूटपालिश, प्लास्टिक, कृत्रिम रेशे, औषधियां, विस्फोटक पदार्थ का सामान्य ज्ञान तथा बनाने की विधि गुण उपयोग।

(ग) गैसीय नियम—वायल, चार्ल्स, गैस समीकरण, डाल्टन का आंशिक दाब का नियम। ग्राहम का विसरण नियम। सभी से सम्बन्धी आंकिक प्रश्न।

(घ) कार्बनिक रसायन—

(1) कार्बनिक रसायन की परिभाषा और कार्बनिक रसायन का क्षेत्र, कार्बनिक व अकार्बनिक, यौगिक में अन्तर। कार्बन परमाणु की समचतुष्फलीय प्रकृति का प्रारम्भिक ज्ञान। कार्बनिक यौगिक का वर्गीकरण। (ऐलीफेटिक तथा एरोमेटिक) संतृप्त हाईड्रो कार्बन (मीथेन और इथेन) तथा असंतृप्त हाईड्रोकार्बन (ऐथिलीन और एसीटेलीन) बनाने की विधियां गुण-धर्म और उपयोग।

(2) कार्बनिक यौगिक की शुद्धता की जांच।

(3) कार्बन में यौगिक बनाने की विशिष्ट क्षमता।

(4) कार्बनिक यौगिक के नामकरण की वर्तमान पद्धति की सामान्य जानकारी। (केवल एलक तक)।

(5) कार्बनिक यौगिक के तत्वों की पहचान।
(N S, Cl, Br, I)

(ङ) प्रयोगशाला में H_2, O_2, Cl_2, So_2, H_2S, NH_3, HCl एवं N_2 बनाने की विधियाँ तथा भौतिक एवं रासायनिक गुण और उपयोग।

(च) ईंधन—कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, एल0 पी0 जी0 की जानकारी तथा राकेट में ईंधन का उपयोग।

(छ) जल—पेय जल, जल का आयतनीय संगठन, कठोर व मृदु जल, स्थायी व अस्थायी कठोरता। भौतिक व रसायनिक विधियों द्वारा कठोरता को दूर करना। गांव व शहर में पीने हेतु जल का शुद्धीकरण।

(ज) कुछ प्रमुख रसायनिक यौगिकों का परिचय--

नाम--रासायनिक नाम, अणुसूत्र, प्रमुख गुण तथा उपयोग। - धोवन सोडा, खाने वाला सोडा, साधारण नमक, नौसादर, चूना नीलाथोथा, फिटकिरी, सोहागा, खड़िया, ब्लीचिंग पाउडर, सिन्दूर (रेडलीड), शोरा तथा पोटेशियम परमैगनेट। क्रिस्टलीय कापर सल्फेट तथा क्यूप्रस क्लोराईड बनाने की विधियां, गुण धर्म व उपयोग।

(झ) धातु कर्म का परिचय--कापर का धातु कर्म, कापर के मिश्र धातु व उनकी उपयोगिता।

(ञ) तत्वों का वर्गीकरण--मेण्डलीफ की आवर्त सारणी का सामान्य ज्ञान। आधुनिक आवर्त नियम, आवर्त

आधुनिक आवर्त सारणी के आधार पर तत्वों का वर्गीकरण। दीर्घाकार आवर्त सारिणी। निम्न तत्वों का इलेक्ट्रानिक विन्यास तथा आवर्त सारिणी में उनके स्थान की विवेचना--

हाइड्रोजन, कार्बन, आक्सीजन, नाइट्रोजन, फासफोरस, सल्फर तथा क्लोरीन।

तृतीय प्रश्न-पत्र

(जीव विज्ञान) 35 अंक

(क) मानव और उनका पर्यावरण--पर्यावरण के साथ मानव का समन्वय परिचय एवं जीव मण्डल पारिस्थितिक संकट, प्राकृतिक सम्पदाओं का संरक्षण, प्रकृति का संरक्षण राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास जन्तुओं के प्रति प्रेम, उनका संरक्षण तथ इन भावों की जागृति सह-अस्तित्व के सन्दर्भ में। पादप संरक्षण की आवश्यकता, उनकी उपयोगिता तथा जन-जीवन में उनका महत्व, प्रदूषण एवं जन-जीवन पर उनका प्रभाव।

(ख) अनुवांशिकता--[क] अनुवांशिकता की खोज एवं मेण्डल के प्रयोगों पर आधारित मेण्डल के नियमों का प्रारम्भिक ज्ञान, एक संकरक्रास की कार्यान्वयन विधि (विस्तृत व्याख्या की आवश्यकता नहीं है)। मानव आनुवांशिकी का सामान्य ज्ञान।

[ख] जैव विकास के प्रमाण, विकास कैसे हुआ, विकास के सिद्धान्त एवं उनकी तुलना आधुनिक धारणा या नव डार्विनवाद।

(ग) जीव मण्डल--संरचना तथा कार्य, आहार श्रंखला, खाद्य जाल, ऊर्जा का प्रवाह, पदार्थों का पुनः चक्रण

कार्बन चक्र, नाइट्रोजन चक्र, नाइट्रोजन स्थिरीकरण, आक्सीजन चक्र, जारण प्रक्रिया, जल चक्र, खनिज चक्र, विभिन्न चक्रों में ऊर्जा की भूमिका।

(घ) मानव स्वास्थ्य, पोषण एवं जनसंख्या--

भोजन के कार्य पोषक तत्व, संतुलित आहार, कुपोषण सम्बन्धी (व्याधियां एवं उनके उपचार) जनसंख्या तथा परिवार नियोजन।

(ङ) कोशिकीय संरचना--[क] पादप कोशिका की सूक्ष्मदर्शीय संरचना तथा उसके विभिन्न अंगों के कार्य पादप एवं जन्तु कोशिका में अन्तर।

(च) कोशिका विभेदन, जन्तु उतकों का प्रारम्भिक ज्ञान। एपीथिलियमी उतक, पेशी उतक, संयोजी उतक तंत्रिका उतक।

(छ) कृषि प्रणालियां तथा पशुपालन--फसल उत्पादन के कारक, विभिन्न कृषि प्रणालियां, खाद्य उर्वरकों का उपयोग, फसल संरक्षण, संकर बीज, पशुपालन के सिद्धान्त, पशु अभिजनन।

(ज) रुधिर--रुधिर एवं लसिका, रुधिर एवं तरल उतक, संरचना एवं कार्य, रुधिर का थक्का बनना, लसिका तथा लसिका तन्त्र, रुधिर वर्ग, रुधिर बैंक, संचरण, नाड़ी और रुधिर दाब।

(झ) वर्गीकरण--जन्तु एवं पौधे के प्रत्येक संघ के सामान्य लक्षण एवं उदाहरण।

प्रयोगात्मक

[प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा]--

भौतिक विज्ञान--

1--भौतिक तुला का समंजन तथा उपयोग ।

2--सरल लोलक का आवर्तकाल ज्ञात करना (स्टाप क्लाक का उपयोग) ।

3--आर्कमिडीज का सिद्धान्त तथा उत्प्लावन के नियम का सत्यापन (स्प्रिंग तुला का उपयोग) ।

4--विशिष्ट ऊष्माओं का अध्ययन ।

5--बर्फ भाप की गुप्त ऊष्मा ।

6--दण्ड-चुम्बक की बल रेखाओं का अध्ययन ।

7--नाल विद्युत् चुम्बक बनाना ।

8--प्रतिरोधक का धारा वोल्टता लेखा-चित्र ।

9--श्रेणी तथा समान्तर क्रमों में प्रतिरोध (वोल्टमीटर, अमीटर विधि) ।

10--विद्युत् बल्ब द्वारा धारा के ऊष्मीय प्रभाव का अध्ययन ।

रसायन विज्ञान--

(1) प्रयोगशाला में स्याही, बूटपालिश, मोमबत्ती, चाक, डिटर्जेन्ट, जैम तथा जैली का बनाना ।

(2) उपलब्ध क्षेत्रीय उद्योग स्थल का भ्रमण एवं उनमें से किसी एक पर प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करना ।

(3) 1--मीथेन और ईथेन गैस बनाने के उपकरण को व्यवस्थित करना ।
2--प्रयोगशाला में अमोनिया (NH_3) तथा कार्बन डाई आक्साइड (Co_2) गैस बनाना व गुणों की पहचान करना ।

(4) अकार्बनिक लवण का गुणात्मक विश्लेषण--लवण में एक अम्लीय तथा एक क्षारीय मूलक की पहचान करना ।

अम्लीय मूलक--

CO_3—, S—², So_3—², Cl—, Br—, I—, No_3— तथा So_4—²

क्षारीय मूलक--

NH†⁴, Pb††, Cb††, F †††, Al†††, Zn††, Ba†† तथा Mg†²

(5) तत्वों की पहचान--नाइट्रोजन (N), सल्फर (S), क्लोरीन (Cl), ब्रोमीन (Br) तथा आयोडीन (I) ।

जीव विज्ञान

1--तालाब के जल का सूक्ष्मदर्शी अध्ययन--वर्गीकरण के सम्बन्ध में ।

2--नर और मादा मेढक की पहचान करना ।

3--अभिरंजित, ग्लिसरीन आरोपण--शल्की, एपीथीलियम, रेखित तथा अरेखित पेशियाँ ।

4--निम्नांकित जन्तुओं का टिप्पणी सहित संक्षिप्त संग्रहालय, अध्ययन तथा वर्गीकरण--पैरामीशियम, हाइड्रा, एस्केरिस, केंचुआ, तिलचट्टा, बिच्छू, तारामीन, मछली, मेढक, छिपकली, सर्प, कबूतर, चूहा, चमगादड़ और गिलहरी ।

5--निम्नांकित वनस्पतियों का टिप्पणी सहित संक्षिप्त संग्रहालय, अध्ययन तथा वर्गीकरण--यूलोथिक्स स्पाइरोगाइरा, म्यूकर (शैवाल, कवक) मास, फर्न, अनावृतबीजी और आवृतबीजी ।

6--रक्त की स्लाइड बनाना एवं अध्ययन करना ।

7--विभिन्न प्रकार के खाद्य उर्वरकों की पहचान करना ।

8--फल संरक्षण का अध्ययन करना ।

टिप्पणी--विज्ञान विषय हेतु एक प्रयोगात्मक नोट बुक होगी । इस नोट बुक में प्रयोगात्मक कार्य का दैनिक कार्य अंकित किया जायेगा । प्रयोगात्मक कार्य में माडल, चार्ट आदि तैयार करने का कार्य किया जायेगा ।

पाठ्य पुस्तक--

1--विज्ञान भाग-एक (कक्षा 10 के लिए)

2--विज्ञान भाग-दो (कक्षा 10 के लिए)

3--विज्ञान भाग-तीन (कक्षा 10 के लिए)

सामाजिक विज्ञान

(कक्षा 10 के लिये)

अध्ययन के उद्देश्य--

1--समाज के विकास, उसके आधारभूत कारकों, विस्तार तथा विविधता की जानकारी प्राप्त करना तथा उसके भावी रूप के बारे में निष्कर्ष निकालना ।

2--प्राकृतिक पर्यावरण तथा मानव के मध्य अन्तःक्रिया को भारत तथा विश्व के संदर्भ में सामाजिक विकास पर पड़ने वाले उसके प्रभाव को समझना तथा उसके बारे में निष्कर्ष निकालना ।

3--सामाजिक विकास में विभिन्न व्यवस्थाओं, नागरिक, प्रशासनिक तथा आर्थिक आदि के योगदान को समझना तथा उसकी समीक्षा करना ।

4--सामाजिक विकास की परम्पराओं तथा प्रक्रियाओं, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, संस्कृति तकनीकी आदि के इतिहास का परिचय प्राप्त करना तथा भविष्य को दृष्टि में रखकर उसका मूल्यांकन करना ।

5--विश्व का एकात्मक समाज की ओर अग्रसर होने वाला स्वरूप तथा इसमें भारत के योगदान को समझना ।

6--समाज को समसामयिक समस्याओं के बारे में जानकारी करके निर्णय लेने की योग्यता प्राप्त करना ।

7--समाज में अपने अधिकार तथा कर्तव्यों को तथा उसके पारस्परिक सम्बन्धों को समझकर उन पर अमल करना ।

8--सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित विभिन्न कौशलों को विकसित करना तथा उनमें दक्षता प्राप्त करना जैसे--मानचित्र की जानकारी, आंकड़ों का विश्लेषण करना, निष्कर्ष निकालना तथा आलेखों द्वारा प्रदर्शित करना जैसे--ग्राफ, चार्ट आदि ।

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम आगे प्रस्तावित है । इसे निम्नवत् चार प्रमुख अनुभागों में विभक्त किया गया है :

	अंक अधिभार
अनुभाग-एक--ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत (इतिहास)	30
अनुभाग-दो--सामाजिक तथा नागरिक जीवन (नागरिक शास्त्र)	20
अनुभाग-तीन--पर्यावरणीय स्वरूप एवं मानव विकास (भूगोल)	30
अनुभाग-चार--आर्थिक विकास एवं जनजीवन (अर्थशास्त्र)	20

सामाजिक विज्ञान विषय में तीन-तीन घण्टे के 50-50 अंकों के दो प्रश्न-पत्र होंगे । प्रत्येक प्रश्न-पत्र में विस्तृत उत्तरीय, लघु उत्तरीय, अति लघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों द्वारा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का समावेश होगा अतएव प्रत्येक प्रकरण (इकाई) का सम्यक् अध्ययन आवश्यक है ।

प्रत्येक प्रश्न-पत्र में मानचित्र भरने के लिए कम से कम एक प्रश्न होगा । इसके अतिरिक्त प्रश्न-पत्र में ग्राफ, आरेख तथा आंकड़ों के विश्लेषण से सम्बन्धित प्रश्न भी पूछे जायेंगे । दृष्टिहीन छात्रों के लिए मानचित्र के स्थान पर स्थानों/ क्षेत्रों के अंकन के स्थान पर स्थानों/क्षेत्रों से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जायेंगे जिनका उत्तर उन्हें उत्तर-पुस्तिका में देना होगा । पाठ्यक्रम की प्रमुख इकाइयों तथा उनसे सम्बन्धित शिक्षण बलों तथा मूल्यांकन बलों की योजना निम्नवत् होगी :

प्रथम प्रश्न-पत्र--पूर्णांक—50

अनुभाग--एक--ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत (इतिहास) 30 अंक

अध्ययन के उद्देश्य—

मानव विकास और उसकी उपलब्धियों तथा विफलताओं को सजीव एवं प्रेरणादायक के रूप में प्रस्तुत किया जाय । समाज के समाजवादी स्वरूप की स्थापना पर बल देना अपेक्षित है ।

इतिहास द्वारा वर्तमान को समझने के लिए अतीत का पर्याप्त ज्ञान प्रदान किया जाय । उसे समसामयिक जीवन एवं समस्याओं के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पक्षों को समझने के लिए पर्याप्त पृष्ठभूमिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु सक्षम होना चाहिए ।

विषय के शिक्षण-में यथा सम्भव राष्ट्रीय इतिहास को सामाजिक, तथा सांस्कृतिक प्रवृत्तियों पर बल दिया जाय, इसे छात्रों में देश भक्ति की सच्ची भावना विकसित करने में सहायक होना चाहिये, जिनमें निम्नांकित का समावेश हो :--

(क) अतीत एवं वर्तमान-दोनों को समष्टि रूप में देश की सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों की प्रशंसात्मक अनुभूति ।

(ख) अपनी दुर्बलताओं को स्पष्ट रूप में समझने, उनका सामना करने तथा निराकरणहेतु कार्य करने की तत्परता । यह तथ्य छात्रों को विशेष रूप से बताया जाय कि केन्द्रीय शक्ति दुर्बल होने से ही देश में विदेशी आक्रमण सफल हुये ।

(ग) भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता की दिशा में सक्रिय प्रयास ।

(घ) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के संवर्धन की आवश्यकता का अनुभव ।

मानचित्र विषयक प्रश्न भी पूछा जायेगा जिसके लिए मानचित्र दिया जायेगा जिसमें तथ्यों को शुद्ध रूप में अंकित करने पर बल दिया जायेगा ।

पाठ्यक्रम का इकाईवार अंकभार निम्नवत् होगा--

इकाई	अंकभार
1--साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद	3
2--विश्व युद्ध तथा अन्तर्राष्ट्रीय शांति	3
3--भारत में सांस्कृतिक विरासत	4
4--भारत में नव जागरण	5
5--स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष	6
6—स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद नवभारत के निर्माण में अद्यावधि पहल	4
7--मानचित्र कार्य	5
	30

पाठ्यक्रम

इकाई-1--साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद—

(क) साम्राज्यवाद के विकास में सहायक दशायें, एशिया एवं अफ्रीका में साम्राज्यवाद की स्थापना ।
(ख) इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस तथा रूस की क्रांतियों का संक्षिप्त परिचय ।

इकाई-2--विश्व युद्ध तथा अन्तर्राष्ट्रीय शांति—

(क) प्रथम विश्व युद्ध—कारण, परिणाम, लीग आफ नेशन्स ।
(ख) द्वितीय विश्व युद्ध (1939 से 1945 ई० तक)--कारण, परिणाम ।

इकाई–3––भारत की सांस्कृतिक विरासत––

देश के निवासी––प्राचीन काल, मध्य काल, आधुनिक काल में भाषायें, साहित्य, विज्ञान एवं कलाएं ।

इकाई–4––भारत में नव जागरण––

(क) ब्रिटिश शासन का भारत पर प्रभाव––धार्मिक, सामाजिक सुधार के आन्दोलन, ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसाइटी, मुस्लिम सुधार आन्दोलन । नव जागरण का समाज पर प्रभाव ।

इकाई–5––स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष––

(क) 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम––कारण एवं परिणाम ।
(ख) 1857 से 1885 ई० तक राष्ट्रीय चेतना का विकास ।
(ग) 1885 से 1920 ई० तक राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रगति ।
(घ) 1921 से 1947 ई० तक स्वाधीनता संघर्ष एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति ।

इकाई–6––स्वाधीनता प्राप्ति के बाद नव भारत के निर्माण में अद्यावधि पहल––

(क) संविधान निर्माण ।
(ख) देशी रियासतों का विलय ।
(ग) विदेशी उपनिवेशों का अन्त ।
(घ) आर्थिक विकास में पहल ।

इकाई–7––मानचित्र––

भारत के प्रमुख ऐतिहासिक स्थानों (राज्य, साम्राज्य क्षेत्र सहित) का अंकन

[अनुभाग–दो]––सामाजिक एवं नागरिक जीवन (नागरिक शास्त्र) 20 अंक

अध्ययन का उद्देश्य––

(1) विद्यार्थियों में सामूहिक क्रिया–कलापों में प्रभावपरक साझेदारी की प्रवृत्ति का विकास ।
(2) नागरिक और राजनैतिक संस्थाओं की संरचना के स्वरूप और कार्य पद्धति के सम्बन्ध में प्रबुद्ध जागरूकता और जानकारी का विकास करना ।
(3) देश में हो रहे विविध सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक परिवर्तनों और उनसे देश पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति जागरुकता और आलोचनात्मक अवबोधन का विकास करना ।
(4) भारतीय संस्कृति में अन्तस्थ विविधता में एकता को दृष्टिपथ में रखते हुए देश के सभी क्षेत्रों और वर्गों के लोगों की जीवन शैली के प्रति समादर की भावना और राष्ट्रीय चेतना का विकास ।
(5) अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सद्भावना के विकास में भारत के योगदान से अवगत कराना ।

पाठ्यक्रम का इकाई के अनुसार अंकभार निम्नवत् होगा :

इकाई	अंकभार
1––राज्य एवं केन्द्र सरकार	05
2––भारतीय न्याय व्यवस्था	03
3––भारतीय लोकतंत्र	05
4––राष्ट्रीय एकता	05
5––भारतीय विदेश नीति	02
	20

पाठ्यक्रम

इकाई–1––राज्य एवं केन्द्र सरकार––

(क) राज्य सरकार––विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका ।
(ख) केन्द्र सरकार––संसद का संगठन, राष्ट्रपति, केन्द्रीय मंत्री परिषद् का संगठन एवं उनके कार्य ।

इकाई–2––भारतीय न्याय व्यवस्था––

(क) जनपदीय न्याय प्रणाली ।
(ख) उच्च न्यायालय की संरचना, कार्य ।
(ग) सर्वोच्च न्यायालय–संरचना एवं कार्य ।

इकाई–3––भारतीय लोकतन्त्र ––

लोकतन्त्र का अर्थ, प्रकार, जनपद निर्माण, अनुशासित नागरिक एवं विवेकपूर्ण नेतृत्व, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार, निर्वाचन प्रक्रिया । भारतीय लोकतन्त्र में राजनीतिक दलों की भूमिका ।

इकाई–4––राष्ट्रीय एकता––

(क) अनेकता में एकता ।
(ख) सर्व–धर्म–समभाव ।

इकाई–5––भारतीय विदेश नीति––

(क) देश की सीमाएं, सुरक्षा व्यवस्था ।
(ख) भारत और विश्व शान्ति, संयुक्त राष्ट्र संघ, गुट निरपेक्षता, पंचशील ।
(ग) पड़ोसी देशों से सम्बन्ध, दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) ।

द्वितीय प्रश्न–पत्र––50 अंक

अनुभाग–तीन

पर्यावर्णीय स्वरूप एवं मानव विकास (भूगोल) 30 अंक

अध्ययन का उद्देश्य––

(1) प्राकृतिक पर्यावरण तथा मानव कार्यकलापों की अन्तःक्रिया से जनित परिस्थितियों की भौगोलिक जानकारी प्राप्त करना ।

(2) भौगोलिक अध्ययन से सम्बन्धित सूचना एकत्र करना, विश्लेषण करना तथा निष्कर्ष निकालने में सहायक कौशलों का विकास तथा निपुणता प्राप्त करना ।

(3) विश्व के विभिन्न क्षेत्रों म संसाधनों तथा उनके उपयोग की जानकारी प्राप्त करना तथा भविष्य के बारे में निष्कर्ष निकालना ।

(4) विभिन्न संसाधनों तथा प्रादेशिक क्षेत्रों के वर्तमान विकास का अवलोकन करना तथा भविष्य में उनके इष्टतम् विकास की संकल्पना करने का प्रयास करना ।

(5) विभिन्न भौगोलिक घटकों से उभरी भारतीय समस्याओं का अध्ययम करना, उनका विश्लेषण करना तथा विकास पर पड़ने वाले प्रभावों को समझना ।

पाठ्यक्रम का इकाई के अनुसार अंकभार निम्नवत् होगा––

इकाई	अंकभार
1––भारत का पर्यावर्णीय स्वरूप	07
2––प्राकृतिक संसाधन एवं उनका दोहन	07
3––मानवीय संसाधन एवं उनका विकास	06
4––भारत एक विकासशील देश के रूप में	05
5––मानचित्र कार्य	05
	30

पाठ्यक्रम

इकाई–1––भारत का पर्यावर्णीय स्वरूप––

(1) भौतिक स्वरूप––स्थिति, आकार, उच्चावचन, मुख्य भू-आकृतिक, विभाग एवं उनके पारस्परिक अनुपूरकता का प्रकृति ।

(2) जलवायु, वर्षा, मिट्टी, वनस्पति, पशु एवं अन्य प्राणी––उनका आर्थिक महत्व एवं संरण ।

इकाई–2––प्राकृतिक संसाधन एवं उनका दोहन––

(1) भूमि–संसाधन––कृषि–भूमि, वन–भूमि, चारागाह–भूमि––मृदा व उनके प्रकार तथा उपयोग ।

(2) जल संसाधन––वर्षा जल अधोभौमिक जल, नदी, तालाब, समुद्र जल, बाढ़, बाढ़ नियन्त्रण–जल की बचत एवं उपयोग––परिवहन, शक्ति उत्पादन, नदी घाटी परियोजनायें, बहुउद्देशीय योजनायें––दामोदर घाटी, भाखड़ा नांगल, हीरा कुण्ड–बांध, नागार्जुन सागर बांध, तुंगभद्रा, इन्दिरा गांधी नहर परियोजना ।

(3) शक्ति के संसाधन––कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, परमाणु खनिज (वितरण एवं उपयोग)––संसाधनों का संरक्षण ।

(4) खनिज–संसाधन––धात्विक एवं अधात्विक खनिज, लौह, अभ्रक, मैंगनीज, बाक्साइट, तांबा, सोना, अभ्रक (वितरण एवं उपयोग) संरक्षण ।

इकाई–3—मानवीय संसाधन एवं उनका विकास—

(1) जनसंख्या वितरण, वृद्धि का स्वरूप, घनत्व, जनसंख्या एवं मानव विकास।

(2) मानव व्यवसाय—प्राथमिक व्यवसाय—आखेट पशुपालन, मत्स्य पालन, कृषि खनन गौण व्यवसाय—विभिन्न विनिर्माण उद्योग—सूती, पटसन, चीनी, कागज, पेट्रो रसायन, सीमेन्ट, इंजीनियरिंग, लौह इस्पात, रासायनिक उद्योग और सहयोगी व्यवसाय—पारस्परिक मार्ग—परिवहन, संचार, व्यापार एवं अन्य सेवायें।

इकाई–4—भारत एक विकासशील देश के रूप में—

(1) विकसित, अविकसित, विकासशील देश—इनकी विशेषताएं।

(2) विश्व में भारत की भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति।

इकाई–5—मानचित्र कार्य—

भारत का मानचित्र बनाकर उसमें भौगोलिक तथ्यों के अंकन की क्षमता एवं अभ्यास।

अनुभाग—चार

आर्थिक विकास एवं जन-जीवन (अर्थशास्त्र) — 20 अंक

अध्ययन का उद्देश्य—

(1) माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षण का मुख्य उद्देश्य, विद्यार्थियों को भारत की अर्थ व्यवस्था की संरचना तथा उसके ज्ञान एवं विषय की विविध समस्याओं, कठिनाइयों से परिचित कराना।

(2) विद्यार्थियों को इस प्रकार तैयार करना, जिससे कि वह आगे चलकर अर्थशास्त्र के अध्ययन का लाभ उठा सकें।

(3) विद्यार्थियों को इस प्रकार तैयार करना कि आर्थिक वातावरण तथा आपदाओं के वैकल्पिक प्रयोगों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकें।

पाठ्यक्रम का इकाई के अनुसार अंकभार निम्नवत् होगा—

इकाई	अंकभार
1—अर्थ व्यवस्था की समस्यायें	5
2—भारतीय अर्थ व्यवस्था में कृषि का योगदान	5
3—भारतीय अर्थ व्यवस्था में उद्योग का योगदान	5
4—विदेशी व्यापार	3
5—आर्थिक विकास की दिशा	2
	20

पाठ्यक्रम

इकाई–1—अर्थ व्यवस्था की अन्य समस्यायें—

(क) उत्पादन का उपभोक्ता में आदान-प्रदान कैसे हो ?
विनिमय, वस्तु विनिमय, क्रय-विक्रय, बाजार।

(ख) उत्पादन का उनके साधनों में वितरण कैसे हो ?
भूमि, श्रम, पूंजी, संगठन का क्रमशः लगान, मजदूरी, ब्याज व लाभ के परिप्रेक्ष्य में सामान्य परिचय।

(ग) आर्थिक विकास हेतु राजस्व कैसे जुटाया जाय ?
केन्द्रीय राज्य एवं स्थानीय निकायों के आय के स्रोतों अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष कर, व्यय की मदें।

इकाई–2—भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान—

(क) भारतीय अर्थ व्यवस्था की कार्यशील जनसंख्या।

(ख) अर्थव्यवस्था में कृषि का स्थान—कृषक परिवारों के प्रकार, भूमि सुधार, जमींदारी उन्मूलन, जोत चकबन्दी, भू-जोत की अधिकतम सीमा (हदबन्दी), कृषि श्रमिक, कृषि में निविष्टियाँ (Inputs) उत्पादन स्थिति, पिछड़ेपन के कारण सुधार के उपाय, कृषि विकास के कार्यक्रम (उपागम) प्रयुक्त नई तकनीक सहित उपलब्धियां, खाद्य समस्या में योगदान, भारतीय कृषि की भावी सम्भावना।

इकाई–3––भारतीय अर्थ व्यवस्था में उद्योगों का योगदान––

(क) कृषि एवं उद्योगों की पारस्परिक अनुपूरकता ।

(ख) तीव्र एवं सन्तुलित औद्योगिक ढांचे की आवश्यकता–वर्तमान औद्योगिक ढांचा, कुटीर उद्योग, लघु उद्योग, बड़े पैमाने के उद्योग––औद्योगिक उत्पादकता एवं कार्य कुशलता–अकुशलता एवं अल्प उत्पादकता के कारण, औद्योगिक विकास के लिए उठाए गये कदम, उपलब्धियां, औद्योगिक विकास की सम्भावनाएं ।

इकाई–4––विदेशी व्यापार––

अर्थ व्यवस्था में विदेशी व्यापार का महत्व, विदेशी व्यापार की विशेषताएं, विदेशी व्यापार नीति, आयात–निर्यात की मुख्य मदें । आयात–निर्यात की दिशा––

इकाई 5––आर्थिक विकास की दिशा––

(क) आर्थिक विकास में राज्य की भूमिका, राज्य के हस्तक्षेप, उत्पादन एवं वितरण पर राजकीय नियंत्रण औद्योगिक लाइसेंसिंग, सार्वजनिक वितरण प्रणाली ।

(ख) आर्थिक नियोजन––अर्थ, आवश्यकता एवं उद्देश्य, पंचवर्षीय योजनाएं एवं उपलब्धियां ।

* निर्धारित पाठ्य पुस्तक––

(1) सामाजिक विज्ञान भाग–एक (कक्षा 10 के लिए)

(2) सामाजिक विज्ञान भाग–दो (कक्षा 10 के लिए)

(अतिरिक्त विषयों के अन्तर्गत)

भाषाएं

(कक्षा 10 के लिये)

शास्त्रीय भाषा, आधुनिक भारतीय भाषा तथा आधुनिक विदेशी भाषा के पाठ्यक्रम व पुस्तकों की स्थिति वही रहेगी, जो इस विवरण पत्रिका में अनिवार्य भाषाओं के लिए निर्धारित है ।

गृह विज्ञान

(कक्षा 10 के लिये)

(बालकों के लिये तथा उन बालिकाओं के लिये, जिन्होंने इसे अनिवार्य विषय के रूप में नहीं लिया है ।)

पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तकों की स्थिति वही रहेगी, जो इस विवरण पत्रिका में गृह विज्ञान (केवल बालिकाओं के लिये) अनिवार्य विषय के लिये निर्धारित है ।

संगीत (गायन)

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न–पत्र तीन घण्टे का होगा ।

अंक 50

भाग (क)

[शास्त्रीय शब्दावली की परिभाषा एवं व्याख्या]

नाद, नादोत्पत्ति, नाद के प्रकार एवं विशेषताएं । शब्द और वर्णों का गायन, स्वरों का स्पष्ट उच्चारण, तीनों सप्तकों का अभ्यास (मन्द्र, मध्य एवं तार) आवाज के गुणों का उत्कर्ष और उसकी सुरक्षा के लिए स्वास्थ्य और भोजन सम्बन्धी नियम भातखण्डे एवम् विष्णु दिगम्बर स्वर एवम् लिपि पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन, थाटों का वर्गीकरण और थाट से रागों की उत्पत्ति, मुर्की, कण, वर्जित, वक्र, मींड़, सम, खाली एवम् भरी ।

(भाग (ख)

50 अंक

[संगीत का इतिहास एवम् रागों का अध्ययन]

ध्रुवपद, ख्याल, ठुमरी, तराना तथा बड़ा तथा छोटे ख्याल की परिभाषा पाठ्यक्रम के रागों की विशेषता एवम् स्वर विस्तार एवम् अलंकारों के माध्यम से रागों की बढ़त और उसमें भेद । पाठ्यक्रम के बोलों के तालों एवम् दुगुन का ज्ञान एवम् बोलों को लिपिबद्ध करने की योग्यता, स्वर समूहों के छोटे–छोटे टुकड़ों के आधार पर राग को पहिचानने एवम् उनको बढ़त की योग्यता, संगीत सम्बन्धी सामान्य विषयों पर छोटा निबन्ध लिखना, तानसेन एवम् विष्णु दिगम्बर की जीवनी ।

विहाग एवम् भैरवी रागों का विस्तृत अध्ययन । प्रत्येक में एक-एक गीत छात्रों को तैयार करवाना है । उपर्युक्त रागों में कम से कम एक ध्रुपद और ख्याल होना चाहिए । उनमें अलाप तान लिखने एवं गाने की क्षमता होनी चाहिए ।

देश बागेश्री एवम् काफी रागों की साधारण जानकारी होनी चाहिए ।

प्रत्येक राग में एक गीत (सरगम या लक्षण गीत) होना आवश्यक है ।

प्रत्येक राग का आरोह, अवरोह एवम् पकड़ गाना विद्यार्थी को अवश्य आना चाहिए तथा उसको लिखने की क्षमता होनी चाहिए ।

उपर्युक्त गीतों के साथ दादरा, तीन ताल, झपताल, एक ताल एवम् चार ताल नामक तालें प्रयुक्त की चाहिए ।

नोट--उपर्युक्त निर्धारित रागों एवं तालों की आन्तरिक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी तथा आन्तरिक मूल्यांकन किया जायेगा एवं उसमें ग्रेड दिया जायेगा ।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक--

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है । विद्यालयों के प्रधान विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

संगीत (वादन)

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा ।

भाग (क) 50 अंक

शास्त्रीय शब्दों की परिभाषा एवं व्याख्या--

सप्तक (मंद्र, मध्य एवं तार) का विस्तृत अध्ययन, मुर्की कण, विवादी, वर्ग, वर्जित, चक्र मोड़ खसीट, झाला, जोड़, पेशकारा, टुकड़ा, परन, रेला, तिहाई, सम, भातखण्डे एवं विष्णु दिगम्बर संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन, घाटों का वर्गीकरण और उनसे रागों की उत्पत्ति ।

भाग (ख) 50 अंक

(1) वादन पाठ्यक्रम में रागों की विशेषतायें--स्वर विस्तार और अलंकारों के माध्यम से रागों की बढ़त एवं भेद ।

(2) तालों के टुकड़े, परन आदि लिखने की योग्यता एवं सरल स्वर विस्तार एवं तोड़ों के साथ गत को स्वर लिपिबद्ध करके लिखना ।

(3) स्वर समूह के छोटे-छोटे टुकड़ों के आधार पर रागों को पहिचानने और बढ़त करने की योग्यता ।

(4) संगीत सम्बन्धी सामान्य विषयों पर छोटा निबन्ध तानसेन एवं विष्णु दिगम्बर की जीवनी ।

तबला एवं पखावज--

(1) तीन ताल, एक ताल, और चार ताल में से प्रत्येक में एक पेशकारा, 2 कायदा, 2 टुकड़े और 2 तिहाई लिखने बजाने की योग्यता । चार ताल में दो टुकड़े एवं एक परन लिखने और बजाने की योग्यता ।

(2) कहरवा, तीव्रा एवं दीपचंन्दी तालों का साधारण ठेका ।

अन्य वाद--

(1) राग विहाग तथा भैरवी रागों में प्रत्येक में एक मसीतखानी गत तथा एक रजाखानी गत आवश्यक है ।

(2) देश, बागेश्री तथा काफी रागों में कलात्मक विकास के बिना एकगत । इन रागों में आरोह-अवरोह एवं पकड़ लिखने की योग्यता ।

(3) कहरवा, तीन ताल, एक ताल एवं चार ताल में भी परिचित होना चाहिए ।

(4) अपने वाद्य में बजाने वाले वर्ण एवं बोलों को निकालने की विधि ।

(5) प्रचलित वाद्य और उनकी विशेषताओं का ज्ञान ।

नोट--उपर्युक्त निर्धारित रागों एवं तालों की आन्तरिक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी तथा आन्तरिक मूल्यांकन किया जायेगा एवं उसमें ग्रेड दिया जायेगा ।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक--

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है । विद्यालयों के प्रधान विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

वाणिज्य

(कक्षा 10 के लिये)

पाठ्यक्रम

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

(अ) अन्तिम खाते--व्यापार तथा लाभ-हानि खाता एवं आर्थिक चिट्ठा सामान्य समायोजन सहित । बुक, पास बुक एवं रोकड़ बही का बैंक समाधान विवरण-पत्र । चेक, बिल, हुण्डी व प्रतिज्ञा-पत्र सम्बन्धित साधारण लेखे ।

(ब) नक्लीकरण, अनुक्रमिणका सन्देश वाहक प्रणालियां । व्यापारिक कार्यालय में श्रम व समय बचाने वाले यन्त्र जैसे पंच मशीन, समय रिकार्ड मशीन, फोटो स्टेट मशीन, टाइप-राईटर, कैलकुलेटर की साधारण प्रयोग सम्बन्धी जानकारी । देशी व्यापार-थोक व फुटकर व्यापार, थोक व विक्रय विवरण ।

(स) बैंक--जन्म परिभाषा, कार्य एवं महत्व । भारतीय रिजर्व बैंक, स्टेट बैंक, व्यापारिक बैंक, सहकारी बैंक, देशी बैंकर का सामान्य अध्ययन ।

(द) उपयोगिता ह्रास नियम, व्यय व बचत आशय पारस्परिक सम्बन्ध, बचत का सामाजिक महत्व। उत्पत्ति के साधन, आशय, विशेषतायें एवं महत्व ।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक--

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी है । विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

चित्रकला

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा ।

प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभक्त होगा । खण्ड 'क' अनिवार्य होगा । शेष खण्डों में से एक करना होगा ।

खण्ड "क"--अनिवार्य — 60 अंक

प्राकृतिक दृश्य चित्रण--जैसे ऊषाकाल, संध्याकाल, ग्रामीण व पहाड़ी दृश्य का चित्रण, जलरं अथवा पेस्टल रंगों से रंगें । माप 20 सेमी0×15 सेमी0 हो ।

अथवा

आलेखन--चतुर्भुज अथवा वृत्त में केवल एक पूर्ण इकाई द्वारा मौलिक आलेखन बनाएं और उसमें कम से कम तीन रंगों का प्रयोग करें ।

माप--15 सेमी0 से कम न हो ।

अथवा

प्राविधिक--अन्तःस्पर्शी तथा वाह्यस्पर्शी अन्तर्गत एवं परिगत आकृतियों, रेखाओं तथा वृत्तों को स्पर्श करते हुए वृत्त स्पर्श रेखायें । क्षेत्रफल सम्बन्धी साधारण निर्मेय, ज्यामितीय आलेखन साधारण तथा कर्णवत पैमाने ।

नोट--इस भाग में से पांच प्रश्न पूछे जायेंगे तथा कोई तीन प्रश्न करने होंगे ।

खण्ड "ख"--स्मृति चित्रण — 40 अंक

साधारण जीवन में दैनिक उपयोग की वस्तुयें, घरेलू बर्तन जैसे सुराही, बाल्टी, लोटा, अमृतवान, केतली, बोतल, गिलास आदि तथा तरकारी, फल आदि । पेन्सिल द्वारा रेखांकन होगा ।

खण्ड "ग"--भारतीय चित्रकला — 40 अंक

इस खण्ड में चार प्रश्न होंगे जिसमें से दो प्रश्न करना होगा । एक प्रश्न वस्तुनिष्ठ होगा जो अनिवार्य होगा ।

1--चित्रकला का प्राचीन उल्लेख ।

2--चित्रकला की विशेषतायें ।

3--प्रागैतिहासिक काल ।

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक--

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गयी हैं। विद्यालय के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

कृषि

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा।

प्रथम भाग — 50 अंक

1--मृदा विज्ञान--

मृदा जैव पदार्थ, उसके स्रोत, वितरण, संरक्षण और मिट्टी पर प्रभाव, ऊसर, क्षारीय तथा अम्लीय मिट्टी और उनका सुधार, भू-क्षरण, मिट्टी का कटाव, भू-क्षरण से हानियां, कटाव के प्रकार, भू-संरक्षण के सामान्य उपाय।

2--सिंचाई व जल निकास--

(क) जल के स्रोत--कुंआ, नलकूप, बांध, नहरें, तालाब, नदियां आदि।

(ख) सिंचाई की विधियां--अप्लावन, क्यारी, नाली, बेसिन, छिड़काव, बार्डर, ट्रिप सिंचाई आदि।

3--खाद तथा उर्वरक--

(क) अजैव खादें (उर्वरक), उनका वर्गीकरण, महत्व--अमोनियम सल्फट, यूरिया, कैल्शियम, अमोनियम नाइट्रेट, सुपर फास्फेट, पोटैशियम सल्फेट, पोटैशियम क्लोराइड, डाई अमोनियम फास्फेट (डी० ए० पी०)।

(ख) उर्वरकों के प्रयोग की विधियां।

(ग) उर्वरक मिश्रण--विभिन्न फसलों के लिए उर्वरकों की आवश्यकता, उर्वरक मिश्रण बनाने के लिए परिकलन व जानकारी।

4--भू-परिष्करण--

(क) विभिन्न फसलों के लिए भू-परिष्करण की आवश्यकतायें एवं उनका महत्व।

(ख) फसल की सुरक्षा तथा बागवानी के प्रमुख यन्त्र--डस्टर, स्प्रेयर, सिकेटियर, हेजसियर बडिंग तथा ग्राफ्टिंग नाइफ, थ्रेसर तथा ओसाई के यन्त्र।

द्वितीय भाग — 50 अंक

1--निम्न फार्म की फसलों की खेती--

धान, मूंगफली, गेहूं तथा गन्ना।

2--सब्जियों की खेती--

आलू, खरबूजा, फूलगोभी, टमाटर, लौकी, भिण्डी, प्याज।

3--बागवानी--

बाग के लिए भूमि का चुनाव, गृह उद्यान तथा फलोद्यान, प्रदेश की प्रमुख फसलों, जैसे आम, अमरूद, पपीता तथा नीबू की खेती।

4--पशुपालन--

डेरी उद्योग तथा पशु चिकित्सा विज्ञान--

(क) पशुओं की सामान्य देख-रेख तथा प्रबन्ध।

(ख) पशु आहार।

(ग) स्वच्छ दोहन विधि, स्वच्छ एवं सुरक्षित दूध।

(घ) दुग्धोत्पादन सम्बन्धी सामान्य जानकारी।

(ङ) सामान्य पशु रोग--बुखार, मुंहपका-खुरपका, रिन्डरपेस्ट, पेचिस, गलाघोटू के लक्षण तथा उपचार की विधियां।

5--फल रक्षण--फल तथा सब्जियों के परिरक्षण की विधियां, फल व पदार्थों के नष्ट होने के कारण, डिब्बों का जीवाणु नाश तथा डिब्बा बन्दी, फल तथा सब्जियों का निर्जलीकरण।

प्रयोगात्मक

[प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा।]

(1) विभिन्न प्रकार की फसलें --धान, मूंगफली, गेहूं, गन्ना, आलू, फूलगोभी, टमाटर, खरबूजा, लौकी, भिण्डी, और प्याज की बीज शय्या एवं पौधशाला तैयार करना।

(2) खादों, उर्वरकों, खर-पतवारों, फसल सुरक्षा रसायनों एवं मृदा सुधारकों की पहचान एवं प्रयोग।

(3) उर्वरकों के मिश्रण बनाने के लिये परिकलन की सामान्य जानकारी।

(4) छात्रों द्वारा वर्ष भर के प्रायोगिक कार्यों का अभिलेख तैयार किया जायेगा जिसे मूल्यांकनकर्त्ता के समक्ष प्रस्तुत करना होगा।

नोट--(1) प्रयोगात्मक परीक्षा विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगी जिसका आन्तरिक मूल्यांकन किया जायेगा।

(2) आन्तरिक मूल्यांकन निम्नवत् होगा--

(क) 60% या उससे अधिक 'ए' श्रेणी
(ख) 45% या 60% से कम 'बी' श्रेणी
(ग) 45% से कम 'सी' श्रेणी

(3) उक्त प्रयोगात्मक परीक्षा का आन्तरिक मूल्यांकन 50% अंकों में की जायेगी। अंक विभाजन निम्नवत् होगा--

1--बीज शय्या	10 अंक
2--खाद्य/बीज खर-पतवार फसल सुरक्षा साधनों की पहचान	10 अंक
3--विभिन्न प्रकार के कृषि यंत्रों की पहचान एवं उनकी प्रयोग सम्बन्धी जानकारी	10 अंक
4--मौखिक	10 अंक
5--वार्षिक अभिलेख	10 अंक

निर्धारित पाठ्य पुस्तक--

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है। विद्यालयों के प्रधान विषय अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।

सिलाई

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र 3 घन्टे का होगा।

1--कपड़ों की किस्में--कमीज का रेशमी कपड़ा, कमीज का सूती कपड़ा, कमीज का ऊनी कपड़ा।

2--पोशाकों के प्रकार--स्त्री, पुरुष तथा बच्चों की पोशाकों की प्रकार का ज्ञान।

3--कपड़े श्रिंक करने की विधि तथा उसकी उपयोगिता।

4--अच्छे कटर के गुण तथा दोष।

5--मशीन की देखभाल, तेल देने का नियम, पुर्जों की जानकारी।

6--मशीन में आने वाले दोष तथा उन्हें दूर करने के उपाय।

7--पैटर्न कटिंग व उसके लाभ।

8--सिलाई में प्रेसिंग, फोल्डिंग तथा फिनिशिंग का ज्ञान तथा उसके लाभ।

9--रसायनिक वस्त्रों के निर्माण में वातावरण पर होने वाले प्रभाव/स्वास्थ्य से उनका सम्बन्ध और बचाव।

10--सलवार, लेडीज कुर्ता, ब्लाऊज, कलीदार कुर्ता-उपद्दन परिधानों की नाप लिखना, रेखा चित्र बनाना तथा पेपर कटिंग करना।

11--कुन्देदार पैजामा।

12--टेनिस कालर शर्ट।

13--फुल पैन्ट।

14--सिलाई के काम में आने वाले विभिन्न टांकों का ज्ञान।

सिलाई (प्रयोगात्मक)

[प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा]

पेपर कटिंग--सलवार, लेडीज कुर्ता, ब्लाउज, कलीदार कुर्ता, कुन्देदार पैजामा, टेनिस कालर शर्ट, पैन्ट एवं हाफ पैन्ट--सम्बन्धित वस्त्रों के नापों की जानकारी एवं ड्राइंग का अभ्यास ।

प्रयोगात्मक--ब्लाऊज, कुन्देदार पजामा (अलीगढ़), कलीदार कुर्ता ।

सिलाई में प्रयोग होने वाले विभिन्न उपकरणों का ज्ञान ।

प्रेसिंग सामग्री (इक्यूपमेण्ट्स) की जानकारी एवं उपयोगिता ।

प्रयोगात्मक वस्त्रों के सिलाई सम्बन्धी परिधानों को हाथ सिलाइयां काज बटन एवं पूर्ण रूपेण फिनिशिंगों का ज्ञान तथा अभ्यास करना ।

प्रयोगात्मक कार्य में आन्तरिक मूल्यांकन किया जायेगा । इसमें A, B तथा C ग्रेड निर्धारित किये जायेंगे जिसका उल्लेख अंक-पत्र में किया जायेगा ।

60% से 100% ग्रेड 'ए'

45% से 59% ग्रेड 'बी'

44% तक ग्रेड 'सी'

निर्धारित पाठ्य पुस्तक--

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है । विद्यालयों के प्रधान विषय-अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

रंजन कला

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घन्टे का होगा । प्रश्न-पत्र तीन खन्डों में विभक्त होगा जिसमें से दो खन्डों के प्रश्न करने होंगे । खन्ड 'क' अनिवार्य होगा ।

खन्ड-'क' (चित्र संयोजन) 60 अंक

अनिवार्य

परम्परागत अथवा स्वतन्त्र शैली में दिये गये विषयों में से किसी एक विषय पर संयोजन कर चित्र बनाना ।

(क) सामाजिक जीवन ।

(ख) देश भक्ति पर आधारित चित्र जल रंग अथवा पेस्टल रंग से चित्रित किया जाये ।

माप 20 सेमी × 15 सेमी के आयात से कम न हो ।

खण्ड-'ख' (मानव अंग चित्रण) 40 अंक

मानव शरीर के अंगों का चित्रण--(सामने रखे हुये प्लास्टर आफ पेरिस, मिट्टी के माडल, आंख, कान, होंठ, हाथ, पैर, नाक केवल पेन्सिल द्वारा चित्रण करना ।)

खण्ड 'ग'

इस खण्ड में कुल तीन प्रश्न होंगे, जिसमें से दो प्रश्न करना होगा । एक वस्तुनिष्ठ प्रश्न करना होगा :--

1--चित्रकला के छः अंग

2--अनुपात

3--संतुलन

4--प्रभावित

5--सामंजस्य

निर्धारित पाठ्य-पुस्तक--

कोई भी पुस्तक निर्धारित नहीं है । विद्यालयों के प्रधान विषय-अध्यापक के परामर्श से पाठ्य-क्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें ।

कम्प्यूटर

(कक्षा 10 के लिये)

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा ।

आने वाली नई इक्कीसवीं शताब्दी को यदि कम्प्यूटर युग कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी । आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कम्प्यूटर का उपयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है । इसकी कार्य कुशलता एवं दक्षता को ध्यान में रखते हुए उ0 प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद् के छात्र एवं छात्राओं को हाई स्कूल के स्तर पर कम्प्यूटर विज्ञान का ज्ञान होने की बोजरा सूचना एवं प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में नवीन कदम सिद्ध होगी । इसका मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है—

1—छात्र एवं छात्राओं को सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जागरूक करना ।
2—कम्प्यूटर विज्ञान को एक कैरियर की तरह अपनाने के लिए छात्र/छात्राओं को प्रोत्साहित करना ।
3—कम्प्यूटर डेटा को कैसे एकत्रित और सुरक्षित रखता है तथा प्रोसेज करता है, इसका ज्ञान देना ।
4—छात्र/छात्राओं की कम्प्यूटर के प्रमुख भाग तथा उनकी कार्यक्षमता एवं उपयोगिता की जानकारी देना ।
5—मनुष्य की कार्यशैली को कम्प्यूटर की भाषा में लिखना तथा उससे वांछित सूचना प्राप्त करना ।
6—विभिन्न प्रकार के सजीव उदाहरण पर आधारित कम्प्यूटर साफ्टवेयर बनाना ।

भाग—एक

1—कम्प्यूटर और संचार— 20 अंक

- 0 प्राथमिक संचार माडल (सेण्डर, रिसीवर मीडिया एवं प्रोटोकाल)
- 0 संचार के प्रकार
- 0 कम्युनिकेशन : मीडिया—तार (WIRED) बेतार (WIRELESS)
- 0 सिम्प्लेक्स और पूर्ण डुप्लेक्स
- 0 नेटवर्क—लैन और वैन (LAN & WAN)
- 0 इन्टरनेट

2—कम्प्यूटर गणित (डिस्क्रेट मैथमेटिक्स) 20 अंक

- 0 बिट्स निबल्स और बाइट्स वर्ड लेन्थ कैरेक्टर रिप्रेजेन्टेशन
- 0 एस्काई (ASCII) करेक्टर कोड्स
- 0 सिम्पल बाइनरी अंकगणित (जैसे जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग देना)
- 0 कम्प्यूटर लाजिक, बुलिअन आपरेशन्स
- 0 लाजिकल आपरेटर्स—नाट (NOT) एण्ड (AND) आर (OR) नार (NOR) नैन्ड (NAND) और उसकी सत्यता-सारिणी

भाग-दो—एडवान्स्ड प्रोग्रामिंग

3—कन्ट्रोल स्टेटमेन्ट्स का परीक्षण एडवान्स्ड प्रोग्रामिंग 05 अंक

4—लूपिंग-फार-नेक्स्ट कथन, रीड डेटा कथन 10 अंक

5—सब्सक्रिप्टेड वैरीएबल्स 10 अंक

- 0 परिचय
- 0 एकल और द्वि सब्सक्रिप्टेड वैरीएबल्स
- 0 सर्चिंग और सार्टिंग (खोजना और छांटना,

6—फंक्शन्स एन्ड सबरूटीन्स 10 अंक

- 0 लाएब्रेरी फंक्शन्स
- 0 सब रूटीन्स—(GOSUB)

7—स्ट्रिंग मैनोपुलेशन 10 अंक

0—स्ट्रिंग फंक्शन्स (अंक और स्ट्रिंग्स को परस्पर बदलने के लिए निर्देश)

- 0 कनिकैटिनेशन किसी भी शब्द से वांछित अक्षरों को ढूंढ़कर निकालना)

8—बेसिक की फाइलें 15 अंक

- 0 सीक्वैन्शियल फाइल्स का प्रयोग करना

प्रयोगात्मक

कम्प्यूटर प्रयोग के लिए सुझाव

भाग–एक

- 0 कॉमा (COMMA) कन्ट्रोल सेमी कोलन फार–नेक्स्ट कथन, रीड–डेटा का प्रयोग करते हुए प्रोग्राम लिखना।
- 0 कई दिये गये अंकों में से अधिकतम एवं न्यूनतम अंक को ज्ञात करना।
- 0 बबल सार्टिंग, अधिक डेटा में से एक प्रकार का डेटा उपयोग करना।
- 0 सभी छात्रों हेतु एक कक्षा म किसी तीन विषयों में प्राप्त अंकों का औसत निकालना।

सबरुटीन (SUB ROUTINES)—

- 0 सबरुटीन (SUB ROUTINES) मीनू आधारित साधारण कैलकुलेटर का अनुप्रयोग।
- 0 मीनू आधारित साधारण कैलकुलेटर का अनुप्रयोग।
- 0 मीनू आधारित क्षेत्रफल आगणन (आयत, वृत्त एवं वर्ग के आगणन में उपयोगिता)

स्ट्रिंग मेनिपुलेशन—

- 0 स्वरों (VOWELS) की संख्या गिनना।
- 0 स्ट्रिंग्स में एक अक्षर की आवृत्ति ज्ञात करना।
- 0 पालिनड्रोम (PALIN DROME) (एक शब्द या वाक्य जो उल्टा–पुल्टा पढ़ने पर एक समान होता है) जैसे—MADAM, NOON, MAM rte.)

फाइल्स—

- 0 सीक्वेंनशियल फाइल बनाना (To Create)।
- 0 सीक्वेंनशियल फाइल पढ़ना (To Read)।
- 0 विद्यमान सीक्वेंनशियल फाइल में रिकार्ड जोड़ना (To Apend)।

भाग–दो

कम्प्यूटर और संचार—

- 0 प्रिंटिंग को नेटवर्क पर शेयर करना।
- 0 एक नेटवर्क पर फाइल का शेयर एवं स्थानान्तरण करना।

सुझाव—

- 0 खाली समय में छात्रों को अध्यापकगण छात्रों की योग्यतानुसार अधिक प्रयोग दे सकते हैं।

विशेष नोट—

- 0 प्रयोगात्मक परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आन्तरिक होगा। तथा इसमें ग्रेड निम्नवत् दिये जायेंगे—
  'ए' ग्रेड 60% या 60% प्रतिशत से अधिक
  'बी' ग्रेड 45% या 45% से अधिक तथा 60% से कम
  'सी' ग्रेड 33% से अधिक तथा 45% से कम।

सन्दर्भ पुस्तकों की सूची—

विषय से सम्बन्धित पुस्तकें—

1—प्रोग्रामिंग इन बेसिक
2—क्लोपिंग इन बेसिक
3—बिट्स एण्ड बाइट्स (CBSE BOARD)
4—फण्डामेन्टल्स (वी० राजा रमन)
5—कम्प्यूटर लिट्रेसी डांस (सी० बी० एम० प्रकाशन)

सुझाव—

अध्यापक महोदय/महोदया कृपया अपने अनुसार पुस्तकों का चयन कर पुस्तकालय में पुस्तकों के रखने का कष्ट करें।

उपकरणों की सूची

रिसोर्सेज रिक्वायर्ड इन लैब

(कम्प्यूटर की आवश्यकता)

हार्डवेयर रिक्वायरमेन्ट्स—(आवश्यक हार्डवेयर)

1—कम्प्यूटर सिस्टम्स

सेलेरान/पी-III सी० पी० यू० 32, एम० बी० रैम, कलर मानीटर, की-बोर्ड — न 12
हार्डडिस्क 10.2 जी० बी०, 1.44 एम० बी० एफ० डी० डी०, माउस पी०
सी० आई० लैन कार्ड

2--सी0 डी0 रौम ड्राइव आन वन सिस्टम ओनली फार इन्सटालेशन परपज ओनली — 1 नग
3--डाट मेट्रिक्स प्रिन्टर 80 कालम — 1 नग
4--यू0 पी0 एस0 625 वी0 ए0-5 वन यू0 पी0 एस0 फार ईच टू सिस्टम्स — 5 नग
5--हब-1
6--यू0 टी0 पी0 काजविल्त फार नेटवर्किंग-एज पर रिक्वारमेन्ट — 1 नग

सापटवेयर रिक्वायरमेन्ट--(आवश्यक सापटवेयर)

1--विन्डोट 98
2--एम0 एस0 आफिस 97
3--जी0 डब्लू0-बेसिक

Hardware Requirements :

1. Computer Systems.
   Celeron P.II/ CPU. 32 MB RAM, Colour Monitor
   Keyboard. 10.2 GB HDD, 1.44 MB FOD, Mouse, PCI
   Lan Crad.
2. CD Ram Drive on one system only for installation purpose only—1.
3. Dot Matrix Printer 80 Coloumn—1.
4. UPS 625 VA—5 one UPS for esch two systems.
5. Hub—1.
6. UTP Cables for Networking—as per requirement.

Software Requirements -

1. Windows—98.
2. MS Office—97.
3. GW Basic.

नैतिक, शारीरिक, समाजोपयोगी उत्पादक एवं समाज सेवा कार्य

(कक्षा 10 के लिए)

उद्देश्य--

(1) बालकों का सर्वांगीण विकास एवं नैतिक गुणों का उन्नयन।
(2) बालकों के वैयक्तिक, सामाजिक एवं शैक्षिक जीवन में नैतिक भावना का विकास करना।
(3) बालकों में स्वस्थ नेतृत्व उत्तरदायित्व वहन करने की क्षमता, समय पालन, सदाचार, शिष्टाचार विनम्रता, साहस, अनुशासन, आत्म सम्मान, आत्म संयम, समाज सेवा, सभी धर्मों के प्रति आदर एवं सहिष्णुता तथा विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास।
(4) सुदृढ़ शरीर का निर्माण करने हेतु शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं की अभिवृद्धि।
(5) बालकों में श्रम के प्रति आदर एवं आत्मनिर्भर बनने हेतु उत्पादक कार्यों के प्रति अभिरुचि का सम्वर्द्धन करना।
(6) समाज सेवा की भावना का सृजन करना।
(7) स्वास्थ्य के प्रति सतत् जागरूकता तथा क्रीड़ा-शालीनता की भावना का विकास करना।
(8) बालकों का मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सामाजिक एवं संवेदनात्मक विकास करना।

नैतिक शिक्षा

(अ) सैद्धान्तिक विवेचन कार्य—

1—निम्नलिखित महापुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंग—

(क) स्वामी विवेकानन्द
(ख) स्वामी दयानन्द
(ग) लोकमान्य तिलक
(घ) महात्मा गांधी
(ङ) सुभाष चन्द्र बोस
(च) पं0 जवाहर लाल नेहरू
(छ) पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी

2—श्रद्धा, आज्ञा पालन, त्याग, सत्य, प्रेम, सहयोग, निःस्वार्थ सेवा, समाधान, अहिंसा, मातृशक्ति का सम्मान और देश प्रेम पर आधारित लघु कथाएं ।

(ब) प्रायोगिक कार्य—

(1) वृद्धों, विकलांगों, रोगियों, असहायों, एवं निर्धनों की सेवा सुश्रूषा करना ।
(2) साक्षरता अभियान, पर्यावरण संरक्षण आदि में योगदान करना ।

शारीरिक शिक्षा

(1) संतुलित आहार ।
(2) योगासन का महत्व—सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, पद्मासन, पश्चिमोत्तान आसन, सर्वांगासन, धनुरासन, शवासन ।
(3) हाकी, क्रिकेट, फुटबाल, वालीबाल, रिंगबाल हैंण्डबाल, भारोत्तोलन, बास्केटबाल में से एक खेल ।
(4) एथलेटिक्स ।

		मीटर	मीटर	मीटर
स्प्रिन्ट	(अ)	100	200	..
मध्य दौड़	(ब)	400	800	..
लम्बी दौड़	(स)	1500	3000	5000
	(द)	110 मी० मी० हार्डिल		

अथवा

लम्बी कूद, ऊंची कूद, हाफस्टेप एण्ड जम्प तथा पोलवाल्ट में से कोई एक कूद ।

अथवा

गोला, भाला, डिस्कस, हैमर में से कोई एक क्षेपण ।
टिप्पणी—उपर्युक्त ग्रुपों में से कोई एक ग्रुप ।

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

स्थानीय सुविधानुसार निम्नलिखित में से कोई कार्य कराया जाय ।

(1) विद्यालय की कृषि भूमि पर आधारित ऋतु अनुसार फूल-पत्तियों का लगाना एवं सब्जियां बोना ।
(2) विद्यालय में घास का लान तैयार करना ।
(3) गमलों में दीर्घजीवी शोभायुक्त पौधे लगाना ।
(4) विद्यालय की बाउन्ड्री पर हेज लगाना, लतायें लगाना ।
(5) वृक्षारोपण ।
(6) कताई-बुनाई ।
(7) काष्ठ-शिल्प ।
(8) ग्रन्थ-शिल्प ।
(9) चर्म-शिल्प ।
(10) धातु शिल्प ।
(11) धुलाई, रफू, बखिया ।
(12) रंगाई और छपाई ।
(13) सिलाई ।
(14) मूर्ति कला ।
(15) मत्स्य पालन ।
(16) मधु मक्खी पालन ।
(17) मुर्गी पालन ।
(18) साग-सब्जी का उत्पादन ।
(19) फल संरक्षण ।
(20) रेशम तथा टसर का काम ।
(21) सुतली तथा टाट-पट्टी का निर्माण ।

(22) हाथ से कागज बनाना ।
(23) फोटोग्राफी ।
(24) रेडियो मरम्मत ।
(25) घड़ी मरम्मत ।
(26) चाक तथा मोमबत्ती बनाना ।
(27) कालीन एवं दरी का निर्माण ।
(28) फूलों, फलों तथा सब्जियों के पौधे तैयार करना ।
(29) लकड़ी, मिट्टी आदि के खिलौने का निर्माण ।
(30) बेकरी और कन्फेक्शनरी का काम ।
(31) उपर्युक्त की सुविधा न होने पर कोई स्थानीय प्रचलित कार्य ।

उपर्युक्त कार्यों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम

[एक] विद्यालय की कृषि भूमि पर आधारित ऋतु अनुसार फूल-पत्तियों का लगाना एवं सब्जियां बोना--

उद्देश्य--

(1) छात्रों में बोध कराना कि ऋतु फूल-पत्तियों को लगाने तथा सब्जियों को बोने से जहाँ एक ओर आस-पास की वायु शुद्ध होती है, प्रदूषण दूर होता है, वहीं दूसरी ओर ताजी सब्जियां खाने को मिलती हैं, जिससे शरीर के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक विटामिन्स तथा खनिज लवणों की आपूर्ति होती है ।

(2) छात्रों को ऋतु के अनुसार फूल-पत्तियों तथा सब्जियों का चयन कर उन्हें लगाने तथा उनकी खेती करने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) शीतकाल में सोया, मेथी, पालक, फूलगोभी, गांठ-गोभी, पात गोभी, लहसुन, प्याज, कलेन्डुला, डेहलिया, स्टोक्सियन, गुलदाउदी, सूरजमुखी आदि के पौध लगाना ।
(2) ग्रीष्मकाल में कैना कोचिया, पोर्टलाका, बनीनिया आदि के पौध लगाना ।
(3) अक्तूबर-नवम्बर (शरद ऋतु) में गुलाब के पौध लगाना ।
(4) पौधों की सुरक्षा के उपाय करना, बाड़े लगाना ।
(5) समय-समय पर सिंचाई करना आदि ।

(दो) विद्यालय में घास का लान तैयार करना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि मैदान में घास लगाने से विद्यालय की सौन्दर्यीकरण के साथ-साथ भूमि का कटाव नहीं होता, भूमि में फिसलन नहीं होती, लान की हरी-हरी घास नेत्रों की रोशनी के लिए लाभदायक होती है तथा घास के बढ़ने पर उनसे पशुओं के लिए चारा भी उपलब्ध हो सकता है ।

(2) छात्रों में विद्यालय तथा घर के आस-पास की रिक्त भूमि पर घासों का लान तैयार करने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) तैयार मिट्टी के दूब या इसी प्रकार की लान के लिए उपयुक्त अन्य घास के पौधे रोपना तथा पानी देना ।
(2) समय-समय पर सिंचाई करना तथा उर्वरक (यूरिया आदि) डालना ।
(3) घास बड़ी होने पर उसकी समुचित कटाई करते रहना जिससे लान की मखमली सुन्दरता बनी रहे ।
(4) घास को कीटों से नष्ट होना तथा पशुओं से बचाने के लिए सुरक्षा के उपाय करना ।

(तीन) गमलों में दीर्घजीवी, शोभायुक्त पौधे लगाना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि घर के आस-पास भूमि की कमी या अभाव होने पर भी गमलों में दीर्घजीवी, शोभायुक्त पौधे लगाये जा सकते हैं, जिनसे पर्यावरणीय प्रदूषण कम किया जा सकता है ।

(2) छात्रों में सुरुचि एवं सौन्दर्य भावना जागृत करने के लिए गमलों में दीर्घजीवी, शोभायुक्त पौधे लगाने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) गमलों में अनावश्यक रूप से उगने वाले खर-पतवार की सफाई तथा समय-समय पर खुरपी की सहायता से हल्की गुड़ाई ।

(2) गमलों को आवश्यकतानुसार धूप तथा छाया में रखने की जानकारी ।

(3) गमलों को जानवरों से बचाने के उपाय ।

(4) आवश्यकतानुसार पौधे के ऊपर कीटनाशक दवाओं का छिड़काव ।

(चार) विद्यालय की बाउन्ड्री पर हेज लगाना, लतायें लगाना

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि विद्यालय की शोभा इसकी बाउन्ड्री पर हेज तथा लतायें लगाने से बढ़ती है, साथ ही इससे पर्यावरणीय प्रदूषण कम होता है तथा मिट्टी का क्षरण रुकता है ।

(2) छात्रों में विद्यालय (साथ ही घर) की बाउन्ड्री पर हेज अथवा लतायें लगाने का शौक तथा कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) लताओं को लगाने हेतु किसी उपयुक्त तथा मनपसन्द लता का चुनाव कर उसे वर्षा ऋतु में लगाना ।

(2) पशुओं से सुरक्षा के उपाय करना ।

(3) समय-समय पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करना ।

(4) हेज तथा लताओं को समय-समय पर करीने से कटिंग करना ।

(5) आवश्यकतानुसार खाद एवं उर्वरक डालना ।

(पाँच) वृक्षारोपण

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि वृक्ष मानव जाति के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं, इनसे पर्यावरण प्रदूषित होने से बचता है, भूमि का कटाव रुकता है, समय पर उपयुक्त वर्षा होती है, भोज्य पदार्थ, औषधियाँ, इमारती तथा ईंधन की लकड़ियां प्राप्त होती हैं । वृक्ष वास्तविक अर्थ में मानव के सच्चे मित्र एवं रक्षक हैं ।

(2) छात्रों में वृक्षारोपण का शौक तथा कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) जिन वृक्षों के बीज बोये जाते हैं, उन वृक्षों के बीज तैयार कर गड्ढों में वर्षा ऋतु में बोना ।

(2) वृक्षों की सुरक्षा हेतु आवश्यक उपाय करना, जाली अथवा बाड़ लगाना ।

(3) समय-समय पर खर-पतवार निकालना, गुड़ाई-निराई करना तथा सिंचाई करना ।

(4) आवश्यकतानुसार शाखाओं, प्रशाखाओं की कटिंग करना ।

(छः) कताई-बुनाई

उद्देश्य--

(1) छात्रों को सूत, खजूर की पत्ती, नाइलोन का धागा तथा सुतली से बुनाई करने का ज्ञान कराना ।

(2) आसनी बुनना, चटाई बुनना तथा टाट-पट्टी बुनने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) गाँठे लगाने का अभ्यास ।

(2) नटे व इकहरे ताने की पहचान ।

(3) ताने को बाबिन भरना, ताना करना, केथी तथा वयभरी ताना लूम पर चढ़ाना, ताना बीम चढ़ाना आदि ।

(4) खादी बुनावट का अभ्यास ।

(5) सूती सादी चादर, धारीदार तथा चारखानेदार चादरों के बुनने का अभ्यास ।

(6) आसन बुनने का अभ्यास आदि ।

(सात) काष्ठ-शिल्प

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि भव्य इमारतों तथा फर्नीचरों के निर्माण तथा सजावट की वस्तुएं तैयार करने में काष्ठ-शिल्प का ज्ञान नितान्त आवश्यक है ।

(2) इस कला द्वारा छात्रों के साथ नेत्र एवं मस्तिष्क में सामंजस्य स्थापित होता है ।

पाठ्यक्रम

(1) जोड़ की शुद्धता एवं लकड़ी को प्लेनिंग करना ।

(2) कील तथा पेंच का सही ढंग से प्रयोग करना ।

(3) छात्रों को छोटी टेबुल, स्टूल, बेंच तथा लकड़ी की कुर्सियों के निर्माण का अभ्यास ।

(आठ) ग्रन्थ-शिल्प

उद्देश्य—

(1) छात्रों को पुस्तकों एवं अभ्यास पुस्तिकाओं को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने का बोध कराना ।

(2) छात्रों में पुस्तकों को सिलने तथा उनकी जिल्दसाजी का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) लेई, अबरी तथा सुनहरी के अन्य वस्तुओं की जानकारी तथा उन्हें तैयार करने का अभ्यास ।

(2) विभिन्न साइजों एवं आकृतियों के लिफाफे, राइटिंग पैड, फाइलें, अलबम, चित्रों के फ्रेम व केस आदि तैयार करने का अभ्यास ।

(3) हिन्दी व अंग्रेजी अक्षरों को कलात्मक ढंग से लिखने का अभ्यास करना ।

(नौ) चर्म-शिल्प

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि दैनिक जीवन में चर्म से बनी वस्तुएं कितनी उपयोगी हैं ।

(2) छात्रों में चर्म से विभिन्न प्रकार की दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं के निर्माण का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) स्कूल बैग, होल्डाल आदि के किनारों पर चमड़े की पट्टी लगाने का अभ्यास ।

(2) विभिन्न प्रकार के पर्स, चश्मा केश, कंघा केश, चाभी केश आदि बनाने का अभ्यास ।

(दस) धातु-शिल्प

उद्देश्य—

(1) छात्रों को धातु-अधातु में अन्तर तथा धातुओं के महत्व का बोध कराना ।

(2) छात्रों का धातुओं से बनी दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुओं के मामूली टूट-फूट की मरम्मत करने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) रिवेट के द्वारा जोड़ने, रांगे से जोड़ने तथा सोल्म जोड़ का अभ्यास ।

(2) लोहे तथा टीन की चादरों द्वारा सही माप के डिब्बे तथा छोटे बक्से तैयार करने का अभ्यास ।

(3) टिन की चादर से सरल प्रकार के छोटे खिलौने तैयार करने का अभ्यास ।

(ग्यारह) धुलाई, रफू तथा बखिया

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना कि धुलाई, रफू तथा बखिया द्वारा प्रत्येक परिवार में प्रयोग होने वाले वस्त्रों को अधिक समय तक पूर्व चमक-दमक के साथ चलाया जा सकता है तथा इस प्रकार आर्थिक बचत की जा सकती है ।

पाठ्यक्रम

(1) ऊनी, सूती, रेशमी कपड़ों की मरम्मत का अभ्यास।

(2) रफू करने की विधि तथा रफू करते समय सही टांके लगाने का अभ्यास।

(3) माड़ी लगाना, हर प्रकार के कपड़ों पर सही ढंग के ताप का ध्यान रखते हुए लोहा करना तथा फिनिशिंग का अभ्यास।

(बारह) रंगाई तथा छपाई

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि हर प्रकार के वस्त्रों को किस प्रकार रंगाई तथा छपाई कर उन्हें नयनाभिराम तथा आकर्षक बनाया जा सकता है।

(2) छात्रों में सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों की रंगाई-छपाई के कौशल का विकास करना।

पाठ्यक्रम

(1) सूत की बेसिक रंग से रंगाई का अभ्यास।

(2) ऊन और रेशम की अम्लीय रंगों से रंगाई का अभ्यास।

(3) सूती मेजपोश, रूमाल तथा तकिया का गिलाफ, रेपिड फास्ट रंगों से छापा छापने का अभ्यास।

(4) स्टेंसिल ब्रश से छपाई करने का अभ्यास।

(तेरह) सिलाई

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि सिलाई कला के अभ्यास से पर्याप्त धन की बचत की जा सकती है।

(2) छात्रों में सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों की सिलाई के कौशल का विकास करना।

पाठ्यक्रम

(1) सिलाई की मशीन के विभिन्न कल-पुर्जों तथा उनके कार्य की जानकारी।

(2) नाप लेने के प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रणाली का ज्ञान तथा अभ्यास।

(3) विभिन्न प्रकार की पोशाकों के लिए पेपर कटिंग का अभ्यास।

(4) बच्चे, स्त्री तथा पुरुषों के सामान्य प्रयोग की पोशाकों की सही कटिंग करना तथा उनकी सिलाई का अभ्यास (लड़कियों का कुर्त्ता, शलवार, ब्लाउज, पेटीकोट, अन्डरवीयर, कुन्देदार पैंजामा, सादा फुलपैंट, कुर्त्ता, कमीज, बंगला कुर्त्ता, फ्राक, नेकर आदि।

(चौदह) मूर्ति कला

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि मूर्ति कला का जीवन से कितना गहरा सम्बन्ध है, यह विगत स्मृतियों का जीवन रखने का एक मुखर साधन है।

(2) छात्रों में मूर्ति कला के कौशल का विकास करना।

पाठ्यक्रम

(1) अनेक प्रकार की डिजाइन बनाने का अभ्यास।

(2) भट्ठी में बर्तन तथा मूर्तियां पकाने का अभ्यास।

(3) मूर्ति-कला में रंगों की जानकारी तथा उसका सही प्रयोग और कलानुसार सजावट का अभ्यास।

(4) दैनिक जीवन में प्रयोग आने वाले बर्तन--गिलास, कटोरी, प्याल, दीपक, तश्तरी राखदानी, घूपदानी, फूलदान, गमला, फूलों की आकृतियां, फल, सब्जियों के माडल आदि बनाने सुखाने, पकाने तथा रंगने का अभ्यास।

(पन्द्रह) मत्स्य पालन

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना कि मत्स्य पालन से पौष्टिक आहार प्राप्त होता है, मत्स्योत्पादन एक लाभकारी उद्योग है ।
(2) छात्रों को मत्स्य पालन हेतु प्रेरित करना तथा सही विधि से मत्स्य पालन करना सिखाना ।

पाठ्यक्रम

(1) मत्स्य के जीवन वृतान्त की जानकारी तथा टैंक में मत्स्य पालन का अभ्यास ।
(2) भारत में पायी जाने वाली मत्स्य की साधारण किस्मों की जानकारी तथा उनके पालने की विधि की जानकारी एवं अभ्यास ।
(3) तालाब में मत्स्य की खेती का अभ्यास ।

(सोलह) मधुमक्खी पालन

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना कि मधु एकत्र करने के लिये मधुमक्खियों को पाला जा सकता है ।
(2) छात्रों को बोध कराना है कि मधु अनेक दवाइयों में प्रयुक्त होती है तथा अत्यन्त स्वास्थ्य वर्धक भोज्य पदार्थ है ।
(3) छात्रों में मधुमक्खियों को मोन गृह में रखना तथा उनके रख-रखाव और शहद निकालने का कौशल विकसित करना है ।

पाठ्यक्रम

(1) फूलों के मौसम के अनुसार मौनवंशों की इकाई बदलते रहने की जानकारी ।
(2) अधिक ठंड से मौनगृहों की सुरक्षा के उपाय करना ।
(3) अधिक गर्मी से मौनगृहों की सुरक्षा के उपाय करना ।
(4) चीटियों से मौनगृहों की सुरक्षा के उपाय करना ।
(5) मधुमक्खियों को रोगों तथा शत्रुओं से बचाने के उपाय करना ।
(6) मधुमक्खियों के लिये उचित भोजन पानी की जानकारी ।
(7) मौनगृहों से शहद एकत्र करने की विधि की जानकारी ।

(सत्रह) मुर्गी पालन

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना कि प्रोटीन भोजन का एक मुख्य अवयव है । प्रोटीन का सरलता से उपलब्ध होने वाला प्रमुख साधन अण्डा है जिसे मुर्गी पालन से प्राप्त किया जा सकता है ।
(2) छात्रों में मुर्गी के आवास-व्यवस्था, रख-रखाव, रोग तथा उनके उपचार मुर्गी फार्म के हिसाब से रख-रखाव का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(चूजे इन्क्यूबेटर से निकालने के 48 घन्टे बाद फार्म से ले आकर उसे विधिवत् पालना, कीड़े मारने की दवाइयां देना, टीके लगवाना, उचित दाना-पानी तथा प्रकाश की व्यवस्था करना ।
(2) बेकार और बीमार मुर्गियों की पहचान करना तथा उन्हें छांटकर अलग करना ।
(3) दिन में 4 बार एक निश्चित समय पर अण्डे एकत्र करना ।
(4) बाड़े की सफाई, बिछावन की सफाई, पानी के बर्तनों एवं फीडर्स की नियमित सफाई करना ।
(5) मुर्गी फार्म के हिसाब से रख-रखाव की जानकारी प्राप्त करना ।

(अट्ठारह) शाक-सब्जी का उत्पादन)

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना कि हमारे संतुलित आहार में शाक-सब्जी का कितना महत्वपूर्ण स्थान है तथा वे सब प्रकार के विटामिन, खनिज एवं लवणों की आपूर्ति कर हमारे शरीर को स्वस्थ रखते हैं तथा रोगों से लड़ने की क्षमता उत्पन्न करते हैं ।
(2) छात्रों में मौसम से अनुसार शाक-सब्जी को पैदा करने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) शाक-सब्जी में लगने वाले कीड़ों, रोगों की जानकारी तथा उनसे सुरक्षा के उपाय ।
(2) कीटनाशक दवाओं के प्रयोग में बरती जाने वाली सावधानियों की जानकारी तथा अभ्यास ।
(3) खेत से शाक-सब्जी निकालने की सही विधि की जानकारी ।
(4) शाक-सब्जी के सड़ने के कारणों तथा उसे बचाने के उपायों की जानकारी व उनका रख-रखाव ।
(5) शाक-सब्जी के संरक्षण की जानकारी, बोतल-बन्दी तथा डिब्बा बन्दी की जानकारी, उनसे लाभ-हानि ।

(उन्नीस) फल संरक्षण

उद्देश्य--

(1) फलों के नष्ट होने की प्रक्रिया का छात्रों को बोध कराना ।
(2) विभिन्न प्रकार के फलों के संरक्षण का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) टमाटर की सॉस बनाने का अभ्यास ।
(2) कोहड़े का केचअप बनाने का अभ्यास ।
(3) नीबू या मालटा का स्क्वैश बनाने का अभ्यास ।
(4) उपयुक्त तैयार सामग्रियों के डिब्बा बन्दी की जानकारी ।
(5) सावधानियां तथा सुरक्षा के नियमों की जानकारी ।

(बीस) रेशम तथा टसर का काम

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि रेशम के कीड़ों का पालन कर रेशम का धागा प्राप्त किया जा सकता है ।
(2) छात्रों में शहतूत के पौधों का उत्पादन करना, शहतूत के पौधों पर रेशम के कीटों का पालन करना, प्यूपा (कोया) एकत्र कर उनसे रेशम का धागा प्राप्त करने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) शहतूत के पेड़ तथा पत्तियों को शत्रु कीटों से बचाना, शहतूत की रक्षा करना ।
(2) शहतूत के पौधों को समय-समय से खाद्य एवं पानी देना ।
(3) शहतूत की पत्ती तोड़ने की विधियों की जानकारी, उनका तुलनात्मक अध्ययन तथा अभ्यास ।
(4) रेशम कीट की बीमारियों की पहचान तथा उनसे रेशम कीड़ों के बचाव के उपाय करना ।

(इक्कीस) सुतली तथा टाट-पट्टी का निर्माण

उद्देश्य--

(1) छात्रों को बोध कराना कि सुतली तथा टाट-पट्टी कुटीर उद्योग हैं जिससे ग्रामीण अर्थ व्यवस्था सुधारने में सहायता मिल सकती है तथा कम पूंजी में इसे प्रारम्भ किया जा सकता है एवं इसके लिये कच्चा माल सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है ।
(2) छात्रों में सुतली तथा टाट-पट्टी के निर्माण का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) टाट-पट्टी बुनने की मशीन की जानकारी प्राप्त करना तथा उस पर कार्य करने का अभ्यास करना ।
(2) अच्छे किस्म के रस्सी का निर्माण का अभ्यास करना ।
(3) सादी तथा रंगीन टाट-पट्टी के निर्माण का अभ्यास करना तथा अच्छी फिनिशिंग का अभ्यास करना ।

(बाइस) हाथ से कागज बनाना

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना कि आधुनिक युग में ज्ञान के विकास तथा उसे सुरक्षित रखने में कागज का महान योगदान है ।
(2) छात्रों से हाथ से कागज बनाने के कौशल का विकास करना ।

पाठ्यक्रम

(1) कागज सुखाने तथा पालिश करने की विधि की जानकारी तथा उसका अभ्यास ।
(2) ग्लेजिंग करना ।
(3) स्याही सोख कागज तैयार करना ।
(4) बेकार लुग्दी का प्रयोग करना ।

(तेइस) फोटोग्राफी

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना कि विगत स्मृतियों को साकार रूप से सुरक्षित रखने के लिये फोटोग्राफी एक सशक्त माध्यम है ।
(2) छात्रों को फोटो खींचने, उनका डेवलपमेन्ट करने, प्रिंटिंग तथा इनलार्जमेन्ट करने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) निगेटिव की टचिंग तथा कलर करना ।
(2) प्रिंटिंग बाक्स द्वारा कान्टेक्ट प्रिन्ट करना ।
(3) इनलाइजर से इनलार्जमेन्ट बनाना ।
(4) इनलार्जमेन्ट तैयार होने के बाद फोटो को कलर करना और फिनिशिंग करना ।
(5) किसी फोटो से इनलार्जर द्वारा निगेटिव तैयार करना ।
(6) रंगीन फोटोग्राफी की जानकारी तथा अभ्यास ।

सावधानियां—

(1) प्रिंटिंग डेवलपिंग का कार्य डार्क रूम में ही करें ।
(2) लाल प्रकाश में ही प्रिंटिंग डेवलपिंग करें, कार्य समाप्त होने के बाद ही ।

(चौबीस) रेडियो मरम्मत

उद्देश्य—

(1) छात्रों को रेडियो ट्रांजिस्टर, टेपरिकार्ड तथा टू-इन-वन के बारे में बोध कराना ।
(2) रेडियो तथा ट्रान्जिस्टर की असेम्बलिंग एवं रिपेयरिंग का कौशल विकसित करना ।
(3) टेप रिकार्डर तथा टू-इन-वन की मरम्मत करने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) टेप रिकार्डर के दोषों को ढूढ़ने एवं उन्हें सुधारने का अभ्यास ।
(2) टू-इन-वन के दोषों को ढूढ़ने तथा उन्हें सुधारने का अभ्यास ।
(3) रेडियो तथा ट्रांजिस्टर की असेम्बलिंग का अभ्यास ।
(4) बैटरी एलीमिनेटर की जानकारी ।
(5) अपेक्षित सावधानियों तथा सुरक्षा के नियमों की जानकारी (विशेषतः विद्युत् आघात से बचने के लिये सही उपायों तथा सुरक्षा नियमों की जानकारी) ।

(पच्चीस) घड़ी मरम्मत

उद्देश्य—

(1) छात्रों में कम लागत में घड़ियों की मरम्मत तथा रख-रखाव की क्षमता का विकास करना ।
(2) मैकेनिकल तथा एलेक्ट्रिकल प्रकार की कलाई घड़ी, टेबुल घड़ी तथा दिवार घड़ी की मरम्मत, सर्विसिंग और संयोजन (असेम्बली) का कौशल विकसित करना ।
(3) छोटे-छोटे कल-पुर्जों को लेकर किये जाने वाले कार्यों में बरतने योग्य सावधानियों का अभ्यास करना ।

पाठ्यक्रम

(1) विभिन्न प्रकार की घड़ियों को खोलना, सफाई करना, टूटे पुर्जों की मरम्मत करना अथवा उसके स्थान पर उपयुक्त ढंग से नये पुर्जे लगाना तथा टाइम सेटिंग करना, ओवरहालिंग करना ।
(2) घड़ियों के क्रय-विक्रय में अपेक्षित सावधानियों की जानकारी ।
(3) सावधानियां एवं सुरक्षा के नियम ।
(4) घड़ी मरम्मत की कार्यशाला के प्रबन्ध सम्बन्धी जानकारी ।

(छब्बीस) चाक एवं मोमबत्ती बनाना

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना कि कम लागत की पूंजी में चाक एवं मोमबत्ती का लघु कुटीर उद्योग प्रारम्भ किया जा सकता है जिसकी खपत आस-पास के परिवेश में हो सकती है ।
(2) छात्रों में चाक एवं मोमबत्ती बनाने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) जब सांचे के अन्दर मोम जम जाये तो सांचे को पानी के बाहर निकालना तथा ऊपर एवं नीचे का धागा चाकू से काट कर सांचे को खोलना एवं मोमबत्ती बाहर निकालना ।
(2) तैयार मोमबत्ती की पैकिंग कर विक्रय हेतु तैयार करना ।
(3) पैराफीन मोम को कम आंच पर पिघलाना चाहिये । अतः इसका सावधानीपूर्वक अभ्यास करना ।

(सत्ताइस) कालीन तथा दरी का निर्माण

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना कि विभिन्न अवसरों पर बिछाने तथा ड्राइंग रूप को सजाने में कालीन तथा दरी का भारी उपयोग होता है ।
(2) छात्रों में कालीन तथा दरी बुनने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) दरी बुनाई, गणित व विभिन्न प्रकार के डिजाइनों की जानकारी व तद्नुसार बुनाई का अभ्यास ।
(2) कालीन बुनाई की तकनीक की जानकारी व बुनाई का अभ्यास ।
(3) कालीन की धुलाई, कालीन के सीधे और धागों की छंटाई तथा सतह को चिकना बनाने का अभ्यास ।
(4) दरी तथा कालीन बुनने में सावधानियों की जानकारी ।

(अट्ठाइस) फूलों फलों तथा सब्जियों की पौध तैयार करना

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना कि अच्छी प्रजाति के पौधे तैयार कर उनके सही रोपण द्वारा पौधे शीघ्र बढ़ते हैं तथा उनसे उत्पादन भी अधिक होता है ।
(2) छात्रों में मौसम के अनुसार सब्जियों तथा फूलों का चयन कर उनकी पौध तैयार करने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) स्थानीय मांग के अनुसार फूलों फलों तथा सब्जियों की पौध तैयार करना ।
(2) पौध लगाने के लिये भूमि की तैयारी करना, भूमि की चारों ओर फेंसिंग (बाड़) लगाने का कार्य करना तथा सिंचाई की व्यवस्था करना ।
(3) पौध तैयार करने के लिए उपयुक्त खाद तथा उर्वरकों का ज्ञान एवं सही चुनाव का अभ्यास ।
(4) पौध तैयार करने के लिए अच्छे बीजों के चुनाव की जानकारी ।

(उन्तीस) लकड़ी तथा मिट्टी के खिलौनों का निर्माण

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना कि लकड़ी तथा मिट्टी के खिलौने बच्चों के लिए आकर्षण के केन्द्र तथा ड्राइंग रूम सजाने के लिए सुन्दर साधन होते हैं ।
(2) छात्रों में लकड़ी तथा मिट्टी के खिलौने के निर्माण का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) खिलौनों को चिकना बनाने तथा विभिन्न रंगों के प्रयोग की जानकारी तथा अभ्यास ।
(2) ठोस गोलों और पट्टे की विधि से अनेक फल जैसे नारंगी, अनार, सेब, अमरूद, नाशपाती, तरकारियां, टमाटर, मूली, बैंगन व अन्य पशु-पक्षियों के लिये जैसे–हिरन, खरगोश, गाय, बैल, हंस, मोर, तोता, बतख आदि तैयार करने का अभ्यास ।
(3) साधारण फूल, पत्तियों सहित जैसे कमल, सूरजमुखी, डेलिया आदि बनाना ।
(4) मिट्टी के खिलौने के रख-रखाव में अपेक्षित सावधानियां तथा सुरक्षा के उपायों की जानकारी ।

(तीस) बेकरी तथा कन्फेक्शनरी का कार्य

उद्देश्य—

(1) छात्रों को बोध कराना है कि सामान्यतः नाश्ते में प्रयोग किये जाने वाले बिस्कुट तथा केक आदि सरलता से घर में बनाये जा सकते हैं ।
(2) छात्रों में बिस्कुट, केक, पैस्ट्री तथा पावरोटी बनाने का कौशल विकसित करना ।

पाठ्यक्रम

(1) केक बनाने की विभिन्न विधियों का अभ्यास ।
(2) पेस्ट्री बनाने के विभिन्न प्रकारों का अभ्यास ।
(3) विभिन्न प्रकार के मीठे, नमकीन तथा मीठे–नमकीन बिस्कुट तैयार करने की विधियों का अभ्यास ।
(4) पावरोटी, केक, पेस्ट्री तथा बिस्कुट को खराब होने से बचाने की विधियां, सावधानियां बरतने तथा सुरक्षा नियमों के पालन का अभ्यास ।

सामाजिक सेवा

(1) सामुदायिक विकास के कार्य, विद्यालय, भवन एवं परिसर की स्वच्छता एवं सफाई ।
(2) श्रमदान का महत्व एवं अभ्यास (महीने में एक दिन विद्यालय के हित में श्रमदान करना)।
(3) देशाटन (Outing) ।

सामान्य निर्देश

1—विद्यालय का प्रारम्भ सामूहिक प्रार्थना एवं दैनिक प्रतिज्ञा से होना चाहिये ।

2—प्रार्थना–स्थल पर सप्ताह में दो बार प्रधानाचार्य, शिक्षकों, विशेष अतिथियों एवं छात्रों द्वारा नैतिक मूल्यों को जगाने वाले दो मिनट के प्रवचन कराये जायें ।

3—विद्यालय में समय-समय पर अभिनय, लेख, कहानी, सूक्ति, कविता पाठ, अंत्याक्षरी आदि की प्रतियोगितायो महापुरुषों के जन्म-दिनों तथा वार्षिकोत्सव एवं राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन किया जाये ।

4—छात्रों को प्रतिदिन निर्धारित व्यायाम एवं योगदान कराने के लिये प्रेरित किया जाय ।

5—सामूहिक व्यायाम एवं खेलों का आयोजन किया जाय ।

6—समाज सेवा के कार्य के अन्तर्गत विद्यालय प्रदर्शनी का आयोजन, विद्यालय की सफाई, मरम्मत एवं सजावट तथा पुस्तकालय सेवा जैसे रचनात्मक कार्य भी कराये जायें ।

मूल्यांकन—

1—उपर्युक्त पाठ्यक्रम का मूल्यांकन पूर्णतया आन्तरिक होगा ।
2—प्रत्येक छात्र को एक डायरी रखनी होगी जिसमें उनके द्वारा किये कार्य, नैतिक सत्प्रयासों, शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत किये गये अभ्यासों, कृत समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों एवं सामाजिक सेवा के रूप में किये गये प्रयत्नों तथा कार्यों का मासिक विवरण सम्बन्धित अध्यापक द्वारा अंकित होगा तथा प्रत्येक माह के अन्त में यह विवरण मूल्यांकन हेतु कक्षाध्यापक के माध्यम से प्रधानाचार्य के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा ।
3—मूल्यांकन के आधार पर इसमें तीन श्रेणियां ए० बी० सी० प्रदान की जायेगी । जिन छात्रों ने कार्य न पूरा किया हो तो उन्हें तब तक सामान्य परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित नहीं किया जायेगा । जब तक कि निर्धारित कार्य पूरा न कर लें । जो छात्र उपर्युक्त तीनों श्रेणियों में से किसी भी श्रेणी के योग्य नहीं पाये जायेंगे उनकी विवरण पुस्तिका (डायरी) में तदनुसार प्रविष्टि कर दी जायेगी तथा ऐसा छात्र मुख्य परीक्षा में बैठने के लिये अर्ह न होगा ।

पाठ्य पुस्तक—

कोई भी पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं की गई है । विद्यालयों के प्रधान सम्बन्धित विषय के अध्यापक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुरूप उपर्युक्त पठन सामग्री का चयन कर लें ।

पूर्व व्यावसायिक ट्रेड के पाठ्यक्रम

(1) ट्रेड--टेक्सटाइल डिजाइन

उद्देश्य--

1—छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
2—छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
3--छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
4- छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
5—छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।
6—छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

रोजगार के अवसर--

टेक्सटाइल डिजाइन ट्रेड से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं--

(क) वेतनभोगी रोजगार--

(1) टेक्सटाइल इण्डस्ट्रीज में निम्न पदों पर रोजगार प्राप्त हो सकता है—
[क] सहायक रंगाई मास्टर ।
[ख] सहायक छपाई मास्टर ।
(2) छोटे कारखानों में--छपाई रंगाई के सहायक कार्यकर्ता के रूप में ।

(ख) स्वरोजगार के रूप में--

(1) घरेलू व्यवसाय के रूप में छपाई कार्य, रंगाई कार्य करके माल को स्वयं बेच सकता है या वह उद्योगों में सप्लाई कर सकता है ।
(2) ग्राहकों की आवश्यकतानुसार आर्डर लेकर कार्य पूरा करके अपनी आय प्राप्त कर सकता है ।

पाठ्यक्रम के स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों का प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी बाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई—1—

(क) रंगाई व छपाई करने से पहले धागे व कपड़ों को योग्य बनाने हेतु शुद्धिकरण करना ।
(ख) ब्लीचिंग (उबालना), विरंजन (ब्लीचिंग) सूती धागे या कपड़ों पर डायरेक्ट रंग, नेप्थाल रंग का प्रयोग करना ।
(ग) ऊनी, रेशमी कपड़ों पर ऐसिड रंगों का प्रयोग ।

इकाई--2-

(क) सूती कपड़ों पर डायरेक्ट रंग से छपाई--ठप्पा या स्क्रीन द्वारा ।
(ख) सूती कपड़ों पर पिगमेन्ट रंग से छपाई--ठप्पा या स्क्रीन द्वारा ।
(ग) ब्रुश पेंटिंग तथा टाई एण्ड डाई ।

इकाई—3--

(क) प्रिंटिंग, ड्राइंग के पश्चात् कपड़े की फिनिशिंग ।
(ख) कपड़े पर निम्न दाग, धब्बों को छुड़ाने की विधि--
[1] ग्रीस ।
[2] तेल ।
[3] आइस्क्रीम/चाकलेट ।
[4] चाय और काफी ।
[5] शू-पालिस ।
[6] स्याही ।
[7] जंग ।
[8] हल्दी ।
[9] अंडा ।
[10] खून ।

प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(1) टाई एण्ड डाई विधि का प्रयोग—घरेलू आवश्यक वस्त्रों पर ।
उदाहरण—कुशन कवर तथा दुपट्टा ।
(2) ब्रुश या हैण्ड पेंटिंग—मेज पोश, टेबिल मैट ।
(3) धब्बे छुड़ाना—ग्रीस, तेल, आइसक्रीम/चाकलेट, चाय/काफी ।
शू-पालिश, स्याही, जंग, हल्दी, अण्डा, खून ।
(4) तैयार किये गये कपड़ों का फिनिशिंग करना ।
(5) स्प्रे प्रिंटिंग द्वारा 30×30 सेमी0 का 4 नमूना बनाना ।
(6) स्टेन्सिल स्क्रीन विधि द्वारा टेबल मैट बनाना ।

(क) लघु प्रयोग—

1—रेशों की परीक्षा ।
2—कलफ लगाना ।
3—आयरन करना ।
4—धब्बे छुड़ाना ।
5—छपाई के लिये रंग का पेस्ट तैयार करना ।
6—रंग का संयोजन द्वारा रंगाई करना ।
उदाहरण स्वरूप—लाल, पीला द्वारा नारंगी रंग तैयार करना

(ख) दीर्घ प्रयोग—

1—उबालना ।
2—विरंजना ।
3—नेप्थाल की रंगाई ।
4—स्क्रीन से छपाई ।
5—स्टेन्सिल से कढ़ाई ।
6—ठप्पे की छपाई ।
7—टाई एण्ड डाई ।
8—स्प्रे प्रिंटिंग ।
9—ब्रुश प्रिंटिंग ।
10—डाइरेक्ट रंगाई ।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक
1	2	3	4
1	वस्त्र विज्ञान के मूल सिद्धान्त	जी0 पी0 शेरी	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।
2	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान (तृतीय संस्करण)	प्रो0 प्रमिला वर्मा	यूनिवर्सल बुक डिपो, लखनऊ ।
3	हाउस होल्ड टेक्सटाइल	दुर्गादत्त	बुक कम्पनी, नई दिल्ली ।
4	टेक्सटाइल केयर एण्ड डिजाइन	एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, एक्सप्लेनर, इन्स्ट्रक्शनल मेटेरियल फार क्लासेज, IX–X दिल्ली	एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली ।

(2) ट्रेड—पुस्तकालय विज्ञान

उद्देश्य—

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधा पूर्वक पुस्तकालय विज्ञान ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि उत्पन्न करना।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव उत्पन्न करना।

(6) छात्रों को पुस्तकालय विज्ञान ट्रेड की प्रारम्भिक जानकारी से अवगत करना।

रोजगार के अवसर--

(1) वेतन भोगी रोजगार के अवसर--

[क] ग्रामीण, कम्युनिटी सेन्टर, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, पंचायत तथा अन्य लघु-स्तरीय पुस्तकालयों में रोजगार के अवसर।

[ख] विभिन्न श्रेणी के पुस्तकालयों में पुस्तक-प्रदाता अनरेटर पुस्तक संरक्षण सहायता तथा बाइंडर के के रूप में रोजगार के अवसर।

(2) स्वरोजगार के अवसर--

[क] पुस्तकालय की अध्ययन सामग्रियों की जिल्दबन्दी का व्यवसाय।

[ख] पुस्तकालय उपकरण एवं उपस्कर का निर्माण का व्यवसाय।

[ग] पुस्तकालय एवं उसकी अध्ययन-सामग्रियों की सुरक्षा एवं संरक्षण का व्यवसाय।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

1--संग्रह-सत्यापन, आवश्यकता एवं विधियाँ--

(क) पुस्तकालय वर्गीकरण की परिभाषा, उद्देश्य, महत्व, पुस्तकालय वर्गीकरण की विभिन्न पद्धतियों का संक्षिप्त ज्ञान, ग्रन्थ-वर्गीकरण, क्रमिक संख्या (वर्गांक+ग्रंथांक) ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति का प्रारम्भिक ज्ञान।

(ख) सूची की परिभाषा, उद्देश्य, महत्व, भौतिक स्वरूप, आन्तरिक स्वरूप, सूची संलेख-मुख्य, अतिरिक्त एवं अन्त: निर्देशीय सलेख की ए0 ए0 सी0 आर0-2 के अनुसार संरचना।

3--(क) भौतिक ग्रन्थ विज्ञान (फिजिकल बिब्लियोग्राफी) पुस्तक निर्माण प्रक्रिया--कागज के प्रकार, नाप, भार, नाम, उपयोग, व्यापारिक केन्द्र (मुद्रण सामग्री)।

(ख) जिल्दबन्दी--जिल्दबन्दी के प्रकार, जिल्दबन्दी में उपयोगी सामग्री, पृष्ठ मोड़ना, सिलाई के प्रकार (जिल्दबन्दी, टेप डोरा तथा सादी सिलाई), आवरण चढ़ाना तथा सज्जा।

4--पुस्तकालय एवं पुस्तकों की सुरक्षा एवं संरक्षा--कीटाणुनाशक दवाओं का ज्ञान एवं उनका प्रयोग, अन्य सुरक्षात्मक विधियों का ज्ञान एवं संरक्षण के विविध कार्यक्रम।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(1) लघु प्रयोग :

पुस्तकालयों के निम्नलिखित उपकरणों का प्रारूप तैयार करना :

बुक-प्लेट, बुक-लेबल, तिथि-पत्रों, पुस्तक-पत्रक, पुस्तक-पाकेट, पुस्तकालय-पत्रक, सूची-फलक, सूची-निर्देश-पत्रक, तिथि निर्देश, बुक सपोर्टर।

(2) दीर्घ प्रयोग :

(क) पुस्तकालय के निम्नलिखित उपस्करों एवं उपकरणों का प्रारूप (डिजाइन तैयार करना)--
परिग्रहण-पंजिका, समाचार-पत्र तथा पत्रिका-पंजिका, निगम-पंजिका, कैटलाग, कैबिनेट चार्जिंग ट्रे डिस्प्ले रैक, एटलस स्टैण्ड, शब्दकोष स्टैण्ड।
पुस्तकों की मरम्मत, जिल्दबन्दी एवं सादी सिलाई द्वारा जिल्दबन्दी करना।

(ख) वर्गीकरण एवं सूचीकरण प्रायोगिक का मूल्यांकन, सत्रीय कार्य के अन्तर्गत (आगे उल्लिखित) क्रम संख्या 4 एवं 5 पर आधारित कार्य करना।

(1) सत्रीय कार्य--

छात्र कक्षा 10 में निम्नलिखित कार्य करेंगे और उनका अभिलेख तैयार कर सत्रीय कार्य के मूल्यांकन हेतु सुरक्षित रखेंगे--

1--पचास पुस्तकों की परिग्रहण पंजिका में प्रविष्टि।

2--पांच पुस्तकों का उपयोग हेतु सुनियोजन।

3—पत्र-पत्रिका पंजिका में पाँच समाचार-पत्र तथा दस पत्रिकाओं की प्रविष्टि ।

4—सौ पुस्तकों का ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति से तीन अंकों तक वर्गांक बनाना ।

5—पचीस पुस्तकों के मुख्य, अतिरिक्त एवं अन्तर्देशीय संलेख को पत्रक स्वरूप सूचीकरण ए० ए० सी० आर० 2 के अनुसार बनाना ।

(2) व्यावहारिक अध्ययन—

1—छात्र द्वारा किन्हीं दो पुस्तकालयों की कार्य-प्रणाली का ज्ञान प्राप्त कर दस पृष्ठों की आख्या प्रस्तुत करना ।

2—किसी जिल्दसाज की दुकान पर भौतिक ग्रन्थ विज्ञान एवं जिल्दबंदी का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना व किये गये कार्य का विवरण प्रस्तुत करना ।

3—ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति के तृतीय सारांश में प्रयुक्त पदों के हिन्दी समानार्थी शब्दों का ज्ञान ।

निर्धारित पुस्तकें—

कोई भी पुस्तक निर्धारित एवं संस्तुत नहीं की गई है । विद्यालयों के सम्बन्धित विषय के अध्यापक पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तकों का चयन कर लें ।

(3) ट्रेड—पाकशास्त्र (कुकरी)

उद्देश्य—

1—भोजन से प्राप्त होने वाले पोषक तत्वों का ज्ञान कराना ।

2—भिन्न भोज्य-सामग्रियों की प्रकृति तथा रासायनिक संगठन के आधार पर भोजन पकाने की विधियों से अवगत कराना ।

3—व्यावसायिक रूप से विक्रय योग्य भोजन बनाने की क्षमता उत्पन्न करना ।

4—भिन्न प्रदेशों से विशिष्ट व्यंजनों की जानकारी ।

5—विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाने की विधियों के आदान-प्रदान द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत करना ।

6—खाद्य-सामग्रियों एवं उत्पादों में संदूषण के कारणों से अवगत कराना ।

7—व्यावसायिक अभिरुचि को बढ़ाना ।

8—समाज में भोजन की आदतों एवं पोषण स्तर में वृद्धि लाना अर्थात् पोषण अल्पता के कारण होने वाले रोगों में कमी लाना ।

9—छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।

10—छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।

रोजगार के अवसर—

(क) वेतनभोगी—

1—किसी होटल में नौकरी की जा सकती है ।

2—खान-पान उद्योग के अन्य स्वरूपों जैसे अस्पताल, छात्रावास, फैक्ट्री एवं परिवहन कैटरिंग संस्थान में नौकरी की जा सकती है ।

(ख) स्वरोजगार—

1—भोजनालय स्थापित किया जा सकता है ।

2—होटल (राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे जहां वाहन खड़ा करने व उसके रख-रखाव, व्यक्तियों के रहने एवं भोजन की व्यवस्था हो) स्थापित किया जा सकता है ।

3—पाक शास्त्र के प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित कर उनका संचालन किया जा सकता है ।

4—पाक शास्त्र से सम्बन्धित उपकरणों, संयन्त्रों की विक्रय का एक जानकारी केन्द्र स्थापित किया जा सकता है ।

पाठ्यक्रम के स्वरूप एवं मूल्यांकन—

ट्रेड में 50 अंक की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं की जायेगी ।

इकाई 1--विभिन्न खाद्य उत्पादों का संक्षिप्त ज्ञान--

1--बेसिक सॉस, 2--स्टाक, 3--सूप, 4--गार्निश, 5--खाद्य उत्पादों की संरचना, 6--सलाद एवं सलाद ड्रेसिंग, 7--सैण्डविच, 8--क्षुधावर्धक पदार्थ ।

2--रसोई के विभिन्न उपकरण, देख-रेख एवं प्रयोग में सावधानियां ।

इकाई 2--मेनू प्लानिंग--

(1) प्रतिदिन हेतु तथा विभिन्न अवसरों जैसे विवाह समारोह ।

(2) विभिन्न आय वर्ग एवं अवस्थाओं के लिए जैसे शिशु, विद्यार्थी, वयस्क, वृद्ध, गर्भावस्था, रोगी ।

(3) बचे हुए खाद्य उत्पादों को नया रूप देकर पुनः प्रयोग करना ।

(4) खाद्य सामग्रियों के माप का ज्ञान, जैसे शुष्क खाद्य सामग्रियों, द्रव खाद्य सामग्रियों के लिए ।

(5) विभिन्न पेय--चाय, काफी, कोको, दूध का पौष्टिक मूल्य एवं महत्व ।

इकाई 3--

1--पोषण--भोजन की आवश्यकता एवं महत्व, भोजन के विभिन्न पोषक तत्वों का संक्षिप्त परिचय, उनके प्राप्ति स्रोत, कार्य, कमी से उत्पन्न होने वाले रोग ।

2--विभिन्न बीमारियों में भोजन--जैसे मधुमेह (डाइबिटीज), हृदय सम्बन्धी रोग (हार्ट डिजीज), अतिसार (डायरिया), रक्त चाप (ब्लड प्रेशर) एवं पाचन सम्बन्धी अन्य विकार ।

3--हाइड्रोजन का अभिप्राय एवं किचन में महत्व--

(i) व्यक्तिगत स्वच्छता, भोजन का रख-रखाव, पकाने के दौरान एवं पश्चात् (भण्डारण) ।

(ii) भोजन के खराब होने के कारणों एवं उनके नियन्त्रण का संक्षिप्त ज्ञान ।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(1) भारतीय व्यंजन (खाद्य उत्पाद)--

1--चावल--वेजिटेबल पुलाव, प्लेन फ्राइड राइस, कोकोनट मली राइस, बिरयानी :

2--रोटी--मिस्सी रोटी, भरवा पराठा, नान, कचौड़ी ।

3--दाल--दाल मक्खनी, सूखी, मसाला दाल ।

4--सब्जी--वेजिटेबल कोफ्ता, वेजिटेबल कोरमा, भरवां शिमला मिर्च या टमाटर, पनीर पसीदाद, सूखी4 सब्जी ।

5--मांस--कोरमा, शामी कबाब, रोगनजोश, मटर कीमा, मटर चिकन ।

6--रायता--बूंदी, खीरा, टमाटर, आलू ।

7--सलाद--सलाद काटना व सजाना ।

8--मीठा--गुलाब जामुन, रसगुल्ले, बर्फी, फीरनी ।

9--स्नैक्स--समोसा, कटलेट्स, वेजिटेबल रोट्स, वेजिटेबल कबाब ।

10--पेय पदार्थ--चाय, काफी, कोल्ड काफी, लस्सी ।

11--अन्डा--एग करी, आमलेट, स्क्रैम्बल्ड एग, पोच एग ।

(2) पाश्चात्य व्यंजन--

1--सूप--क्रीम आफ टोमैटो सूप, धुली मसूर की दाल का सूप, मिक्सड वेजिटेबल सूप ।

2--वेजिटेबल--बेक्ड वेजिटेबल, बेक्ड पोटैटो, सॉटे पीज, क्रीम्ड कैरट्स ।

3--मीट एवं मछली--आइरिश स्टू, बेक्ड फिश फिंगर्स ।

4--चायनीज--चाऊमीन, चायनीज फ्राइड राइस ।

5--पुडिंग्स--ब्रेड बटर पुडिंग, करेमल कस्टर्ड फ्रूट क्रीम ।

(3) प्रान्तीय--

उत्तर भारतीय--छोले भटूरे, फिश फ्राई, ढोकला ।

दक्षिण भारतीय--इडली, डोसा, साम्भर, नारियल चटनी ।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम एवं पता
1	भारतीय एवं पाश्चात्य पाक-शास्त्र के सिद्धान्त एवं व्यंजन विधियाँ	सुश्री अनुपम चौहान	हिन्दी प्रचारक संस्थान, पो० बा० नं० 106, पिशाच-मोचन, वाराणसी ।
2	आहार एवं पोषण विज्ञान	श्रीमती ऊषा टण्डन	स्वास्तिक प्रकाशन एवं पुस्तक विक्रेता, अस्पताल मार्ग, आगरा ।

(4) ट्रेड—छाया चित्रण (फोटोग्राफी)

उद्देश्य—

छाया चित्रण मात्र एक ललित कला ही नहीं है, अपितु एक स्वतन्त्र व्यवसाय के रूप में तेजी से उभरा है । व्यक्ति चित्रण के साथ-साथ यह जर्नलिज्म का एक महत्वपूर्ण अंग है इसका उपयोग वैज्ञानिक अनुसंधानों, तकनीकी क्रियाओं को स्पष्ट करने एवं अध्ययन करने में नया शिक्षण कार्य के अपेक्षाकृत सुगम बनाने एवं प्रभावकारी बनाने में हो रहा है । छाया चित्रण का अध्ययन न केवल व्यक्तिगत विकास एवं सौन्दर्यबोध को प्रखर करने में सशक्त है, अपितु उपार्जन क्षमता भी प्रदान करेगा ।

छाया चित्रण के प्रारम्भिक अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इसके ज्ञान को निम्नलिखित अध्यायों में निरूपित किया गया है—

(1) स्वरोजगार ।

(2) छाया-चित्रण का परिचय, नया संक्षिप्त इतिहास, व्यावसायिक उपयोगिता एवं आधारभूत सम्बन्धित विषयों (फण्डामेन्टल सबजेक्ट्स) का आवश्यक ज्ञान ।

(3) छाया-चित्रण सम्बन्धी उपकरणों का ज्ञान एवं प्रकाश संवेदित (फोटो सेन्सिटिव), रासायनिक, यौगिकों के उपयोग एवं चित्रण कुशलता सम्बन्धी जानकारी ।

(4) बाक्स कैमरा एवं उनके उपयोग की विस्तृत जानकारी, इसमें छाया-चित्रण के लिए कैमरे में बिम्ब उद्भासित (एक्सपोज) करना तथा रसायनों के उपयोग से फिल्म पर बने बिम्ब से संवेदनशील कागज पर प्रतिबिम्ब निरूपण प्रणाली सम्मिलित है ।

(5) छाया-चित्रण सम्बन्धी सहायक उपकरण, प्रकाश के विभिन्न स्रोत तथा चित्र का सुरुचिपूर्ण ज्यामितिक प्रारूप निर्धारण (कम्पोजीशन) करने की जानकारी ।

(6) छाया चित्रण के विभिन्न क्षेत्रों में से दो विशिष्ट क्षेत्रों (1) व्यक्ति चित्र (पोर्ट्रेट) तथा प्राकृतिक दृश्यावली अंकन (लैण्डस्केप) की अपेक्षाकृत विस्तृत जानकारी ।

कार्य के अवसर—

(1) स्वरोजगार—

1—फ्रीलान्स फोटो जर्नलिज्म (स्वैच्छिक फोटो पत्रकारिता)

2—कला भवन स्वामित्व

(2) वेतनभोगी रोजगार—

1—छाया चित्रकार के पद पर—

—शोध संस्थानों में,

—औद्योगिक संस्थानों में,

—मुद्रणालयों में,

—संग्रहालयों में, कला भवनों आदि में,

—शिक्षा संस्थानों में,

—समाचार (दैनिक एवं पाक्षिक) पत्र-पत्रिकाओं आदि में ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन—

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

1—फोटोग्राफिक रसायन—फिल्म प्रोसेसिंग, डेवलपर स्टाप बाथ, फिक्सर या हाइपो तथा हार्डेनर, उनके गुण एवं कार्य/प्रोसेसिंग की विभिन्न विधियां। डेवलपर का कार्य एवं उसमें प्रयुक्त विभिन्न रसायन। सार्वभौम एवं फाइनग्रेन डेवलपर। अंडर और ओवर डेवलपमेन्ट।

2—प्रकाश के विभिन्न स्रोत—सूर्य का प्रकाश, सूर्य की विभिन्न स्थितियों में प्रकाश तीव्रता : कृत्रिम प्रकाश विभिन्न प्रकार के फोटो फ्लड स्पाट लाइट तथा इलेक्ट्रानिक फ्लेश। फोटोग्राफिक फिल्टर एवं उनके उपयोग। विभिन्न प्रकाश दशाओं में विभिन्न शटर स्पीड तथा अपरचर में सही उद्भासन का अनुमान। एक्सपोजर मीटर रचना एवं कार्य।

3—डार्क रूम—तलपट चित्र (लेआउट) प्रयुक्त उपकरण और उनके प्रयोग। इनलार्जर—संरचना तथा, उपयोग की विधियां। निगेटिव से फोटो कागज पर बड़ा प्रूफ प्रिन्ट बनाना। इनलार्जिंग की विभिन्न तकनीकें, बर्निंग डाजिंग, साफ्ट फोकस आदि। कार्ड्स बनाना : पोर्ट्रेट—अर्थ पोर्ट्रेट खींचने की विभिन्न विधियां, एक, दो तथा अधिक लैम्पों के प्रकाश का उपयोग, बाउन्स लाइट का प्रयोग, टेबुल टाप फोटोग्राफी करना। कम्पोजीशन। रिडक्शन तथा इन्टेन्सिफिकेशन, अर्थ प्रयुक्त रसायन एवं विधियां।

कान्ट्रैक्ट प्रिंटिंग। उपयुक्त कागज का चुनाव। निगेटिव में दोष रिटचिंग।

प्रयोगात्मक-क्रियाकलाप

प्रयोगात्मक लघु—

1—कैमरे (बाक्स) की संरचना का अध्ययन कीजिये एवं चित्र खींचिये (सभी भागों का नाम लिखिये)।

2—कैमरे (बाक्स) का संचालन सीखना।

3—कैमरे के साथ उपयोग होने वाले फ्लैश, एक्सपोजर, मीटर ट्राइपाड स्टैण्ड इत्यादि का अध्ययन।

4—किसी निगेटिव का कन्टेक्ट प्रिंट बनाना।

5—किसी निगेटिव का एन्लार्जमेन्ट बनाना।

6—किसी प्रिंट की ट्रिमिंग तथा ग्लेजिंग तथा पेंटिंग करना।

7—पीले फिल्टर का प्रयोग कर फोटो लेना।

8—बनने के बाद प्रिंट के defect त्रुटियों (defect) का अध्ययन तथा साधारण त्रुटियों को दूर करना।

प्रयोगात्मक दीर्घ—

1—कैमरे के शटर स्पीड एवं एपरचर का उद्भासन (एक्सपोजर) समय पर प्रभाव का अध्ययन फोटो खींचकर करना।

2—फोटो खींच कर या रेफ्लेक्स कैमरे द्वारा (poster) का फोकस की गहनता depth तथा Sharpness पर प्रकाश का अध्ययन।

3—एनलार्जर की रचना एवं संचालन का अध्ययन करना, सही उद्भासन समय निकालना एवं ओवर/अण्डर एक्सपोजर का अध्ययन करना।

4—निगेटिव के ग्रेड का अध्ययन तथा प्रिन्ट के लिये विभिन्न पेपर ग्रेड के प्रभाव का अध्ययन।

5—उद्भासन समय पर फिल्म की गति के प्रभाव का अध्ययन।

6—चित्र के कम्पोजीशन का अध्ययन करना।

7—बच्चे, महिला एवं वृद्ध के पोर्ट्रेट खींचना।

8—लैण्डस्केप फोटो खींचना।

9—डार्क रूम के साज सामान तथा लेआउट (Lay-out) का अध्ययन करना।

10—डेवलपमेन्ट टाइप का चित्र पर प्रभाव एवं ओवर/अन्डर डेवलपमेन्ट का अध्ययन।

11—बाक्स कैमरे द्वारा कम से कम एक कवर फोटो लेना तथा अध्ययन करना।

12—किसी विस्तार प्रोजेक्ट (Project) करना, जैसे—पोर्ट्रेट, लैंडस्केप।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम एवं पता
1	2	3	4
1	डायमन्ड कम्पलीट फोटोग्राफी	श्रीकृष्ण श्रीवास्तव	डायमण्ड पाकेट बुक्स, दिल्ली । वितरक--विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
2	फोटोग्राफी सहज पाठ	अशोक डे	इण्डियन विक्टोरियल पब्लिशर्स, कलकत्ता । वितरक--विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
3	ट्रिक फोटोग्राफी एण्ड कलर प्रोसेसिंग	ए0 एच0 हाशमी	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ ।
4	प्रैक्टिकल फोटोग्राफी	ए0 एच0 हाशमी	तदेव
5	गुड फोटोग्राफी	कोडक	तदेव
6	फोटोग्राफी स्पोर्ट्स	,,	तदेव
7	मोवी मेकर एच0 बी0	,,	तदेव
8	दी होम वीडियो पिक्चर	,,	तदेव
9	फोकल गाइड टू वेडिंग	,,	तदेव
10	फोकल गाइड मोवी मेकिंग	,,	तदेव
11	दी फोकल गाइड टू साइड	,,	तदेव
12	दी फोकल गाइड टू एक्शन फोटोग्राफी	,,	तदेव
13	दी पाकेट गाइड टू फोटोग्राफी चिल्ड्रेन	,,	तदेव
14	गाइड टू परफेक्ट पिक्चर	,,	तदेव
15	दे आफ प्रैक्टिकल फोटोग्राफी	,,	तदेव

(5) ट्रेड--बैंकिंग एवं कम्फेक्शनरी

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

रोजगार के अवसर--

बेकरी एवं कन्फेक्शनरी व्यवसाय में शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं---

(क) वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में--

1--बेकरी उद्योग में नौकरी ।

2--होटल/मेस में नौकरी ।

3--कच्चे पदार्थों के भण्डारण में प्रभारी के रूप में ।

(ख) स्वरोजगार--

1--कुटीर उद्योग में नौकरी ।
2--कच्चे माल क्रय-विक्रय का धन्धा चलाया जा सकता है ।
3--बिक्री कार्य में ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई-1--

(क) केक बनाने की विधियों के नाम,
(ख) बटर स्पंज; स्पंज केक (चिकनाई रहित) बनाने की विधि का विस्तृत ज्ञान,
(ग) अच्छे केक के गुण,
(घ) बाजार का ज्ञान एवं लाभ-हानि की गणना का ज्ञान ।

इकाई-2--

(क) बिस्कुट व कुकीज की सामग्री,
(ख) बिस्कुट व कुकीज में अन्तर,
(ग) बिस्कुट व कुकीज के प्रकार--ड्राप कुकीज, रोल्ड बिस्कुट,
(घ) बिस्कुट व कुकीज का भण्डारण ।

इकाई-3--

विभिन्न प्रकार की पेस्ट्रियों के नाम--
(क) शार्टक्रस्ट पेस्ट्री, पफ पेस्ट्री का विस्तृत ज्ञान ।
(ख) इन विधियों से बनने वाले पदार्थ का नाम--जैम टार्टस, एपिल पाई ।

वेजीटेबिल पैंट्रीज, क्रीम रोल, खारा बिस्कुट, चीनी से बनने वाले कन्फेक्शनरी पदार्थ--सुगर बाल व टाफ बनाने की विस्तृत विधि--

(क) पोषक तत्वों के नाम--प्रोटीन, कार्बोज, वसा, विटामिन्स खनिज लवण, जल ।
(ख) पोषक तत्वों के प्राप्ति के स्रोत, कमी से होने वाले रोग ।
(ग) बेकरी उद्योग की स्वच्छता ।
(घ) व्यक्तिगत स्वच्छता ।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

लघु प्रयोग--

1--कोकोनट कुकीज
2--कैश्यूनेट कुकीज
3--कैश्यूनट बिस्कुट
4--जीरा बिस्कुट
5--वाटर स्पंज केक
6--स्वीस रोल
7--डेकोरेटिव पेस्ट्री
8--रायल आयसिंग, क्रीम आइसिंग
9--गम-पेस्ट
10--मिल्क टाफी

दीर्घ प्रयोग--

1--ब्रेड, स्ट्रेट, डी विधि से
2--फ्रूट बन्स
3--स्वीट बन्स
4--ब्रेड रोल
5--फ्रूट केक
6--वेजीटेबिल पैंट्रीज

7—हाटक्रास बन्स
8—पाइन एपिल पेस्ट्री
9—बर्थ डे केक (विथ आइसिंग)

संस्तुत पुस्तकें

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम	मूल्य
1	2	3	4	5
				रु0
1	अप-टू-डेट कन्फेक्शनरी इण्डस्ट्रीज	..	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	30.00
2	दी सुगम बुक आफ बेकिंग	..	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	20.00
3	बेकिंग तथा कन्फेक्शनरी सिद्धान्त एवं विधियाँ	सुश्री अतिउत्तमा चौहान	हिन्दी प्रचारक संस्थान, सी 21/30, पिशाच-मोचन, वाराणसी-221010, पो0 बा0-1106, पिशाचमोचन, वाराणसी	50.00
4	किचन गाइड	..	यूनिवर्सल बुक सेलर, लखनऊ	70.00
5	बेकिंग	बी0 एस0 अग्निहोत्री	कृषि साहित्य प्रकाशन, मरही, लखनऊ	50.00
6	बेकिंग तथा कन्फेक्शनरी	राम किशोर अग्रवाल	भारत प्रकाशन मन्दिर, मेरठ 142, विजय नगर, वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ	85.00

(6) ट्रेड—मधुमक्खी पालन

उद्देश्य—

(1) मधुमक्खी पालन औद्योगिकीकरण की जानकारी प्राप्त कर बढ़ती हुई बेरोजगारी को दूर करना एवं बेरोजगारी दूर करने के लिए अन्य राष्ट्रीय योजनाओं को छात्रों को समझाना।

(2) शुद्ध मधु-मोम उत्पादन की मात्रा की वृद्धि करना तथा बिक्री करके प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना तथा बच्चों को उद्यमिता प्रदान कर उद्यमी बनाना।

(3) बच्चों, बीमार एवं कमजोर व्यक्तियों के लिए उपयोगी वस्तु (मधु), औषधि एवं पौष्टिक उत्पादन करके आय में वृद्धि करना।

(4) ग्रामीण अंचल के निर्धनों के लिए आय का साधन स्रोत।

(5) कम पूंजी लगाकर मधुमक्खी पालन कर शहद के रूप में फूलों के रस को एकत्रित करना।

(6) मधुमक्खी पालन उद्योग में दक्षता, निपुणता प्राप्त कर जीविकोपार्जन के लिए उत्तम बनाना।

(7) मधुमक्खी पालन उद्योग के लिए मौन गृह, छोटे उपकरणों का ज्ञान प्राप्त करना।

(8) मधुमक्खी पालन द्वारा किसानों एवं बागवानों की फसलों, फलों का उत्पादन 20% से 30% तक वृद्धि करने का ज्ञान प्राप्त कराना।

(9) मोम-पराग, रायल जेली, मौन विष प्रोपेलिस का ज्ञान, उपयोग की जानकारी प्राप्त करना।

रोजगार के अवसर :

(क) वेतनभोगी--

1--मधुमक्खी पालक सहायक

2--मौन पालक प्रदर्शक

3--सहायक मौन पालक

4--सहायक काष्ठ कला प्रशिक्षक या शिक्षक

5--सहायक मधु विकास निरीक्षक

6--मधुमक्खी पालक शिक्षक या प्रशिक्षक

7--मधु विकास निरीक्षक

8--शोध सहायक (मधुमक्खी पालन)

(ख) स्वरोजगार :

1--मधु मोम उत्पादक

2--मोमी छत्ताधार उत्पादक

3--मौन गृह एवं उपकरण निर्माण कर्त्ता एवं विक्रेता

4--पराग, रायल, जेली, मोम विष उत्पादक

5--मौन वंश प्रजनन करके विक्रय करना

6--शहद, मोम, रायल जेली से औषधि निर्माण करना

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी बाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई--1

आधुनिक मधुमक्खी पालन की अनिवार्यतायें। मौसम के अनुसार कृषि औद्योगिक, प्राकृतिक (जंगली) एवं सामान्य मौनचरी (फलों) का अध्ययन, मधुमक्खियों का पर परागण में योगदान--मधुमक्खी परिवार (मौनवंश) की पैकिंग तथा विशेष फूलों का लाभ लेने हेतु इनका माइग्रेशन।

इकाई--2

मौन की बीमारियों, जैसे अष्टपदी (एकरीन) नौसीमा, पेचिस, अमेरिकन, यूरोपियन फाउल बड, सक बड इत्यादि की पहचान, सुरक्षा के उपाय एवं उपचार।

मौनों के शत्रुओं जैसे, मोमी पतिंगा, बरें, चींटें, पक्षी (बी-इंटर किंगफिशर), डुंगर-फ्लाई की पहचान, सुरक्षा के उपाय एवं रोकथाम।

इकाई--3

मधुमक्खी पालन के उपकरण--विभिन्न प्रकार के मौन-गृह, मोमी, छत्ताधार, मुहरक्षक जाली, दस्ताना, रानी अवरोधक जाली, धूवांकर स्मूकिलयल, मौन वाहक पिंजड़ा, क्वीन केज, ड्रोन टेप इत्यादि की उपयोगिता।

मधु की किस्में, इसमें पाये जाने वाले तत्व, उपयोगिता, अधिक शहद उत्पादन के सिद्धांत, मोम, पराग, रायल-जेली एवं मौन विष (बी-वेनम) की उपयोगिता, मधु मोम का परिष्करण (प्रोसेसिंग), मधु का आई0 एस0 आई0 मार्क (एगमार्क) के द्वारा प्रमाणित कर शहद को पैकिंग एवं विपणन करना।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(क) दीर्घ प्रयोग--

1--विभिन्न मधुमक्खी की जातियों की पहचान कराना और अभ्यास पुस्तिका पर उनका चित्र बनाना।

2--मौन के जीवन-चक्र (अण्डा, लार्वा, प्यूपा एवं वयस्क) की पहचान कराना।

3--मधुमक्खी के बाह्य शरीर का चित्र बनाना और उसके प्रत्येक अंगों की प्रयोगात्मक कार्य कराना।

4--मौन परिवार में प्रत्येक सदस्य (कमेरी, नर और रानी) की पहचान कराना।

5--भारतीय एवं इटलियन मौन गृह निर्माण के सिद्धान्त (मौनान्तर) आकार को बताना।

6—मधु निष्कासन यन्त्र का चित्र बनवाना तथा शहद निकालने की विधि का प्रयोगात्मक कार्य कराना ।

7—मौसमवार फूलों का सर्वे कराना तथा इसकी पर–परागण क्रियाओं में मौनों के योगदान को बताना एवं पुष्प संग्रह कराना ।

(क) लघु प्रयोग—

1—रानी, कमेरी एवं नर के छत्तों की पहचान कराना ।

2—तलपट, शिशु खंड, मधु खंड, डमी, इनर कवर, ऊपर ढक्कन, फ्रेम की पहचान कराना ।

3—मधुमक्खी के शत्रु बर्रे, मोमी पतिंगा, छिपकली, चींटे, हानिकारक पक्षियों की पहचान कराना ।

4—क्वीन केज, न्यूक्लियस, मौन वाहक पिंजड़ा, हाइवटूल, मुहरक्षक जाली, दस्ताने प्यालिय, क्वीन गेट इत्यादि उपकरणों की पहचान कराना ।

5—विभिन्न प्रकार के शहद जैसे सरसों यूकिलप्टस, शहजन, नीबू प्रजाति, सूरजमुखी, बेर, लीची, नीम एवं मिश्रित फलों की शहद की पहचान कराना ।

पुस्तकों की सूची

1—प्रारम्भिक मौन पालन	ले0 योगेश्वर सिंह
2— प्राइमरी लेशन आफ बी कीपिंग	„
3—बी कीपिंग आफ इण्डिया	डा0 सरदार सिंह
4—सफल मौन पालन	श्री बच्ची सिंह राव
5—रोचक मौन पालन	„
9—मौन पालन प्रश्नोत्तरी	„
7—मधुमक्खी की मनोहारी संसार	डा0 विष्ट (आई0 सी0 आई0 प्रकाशन)
8—रोगों के अचूक दवा शहद	डा0 हीरा लाल

(7) ट्रेड—पौधशाला

उद्देश्य—

(1) छात्रों के उद्यमिता के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी कराना

(2) पौधशाला व्यवसाय की प्राविधिक जानकारी कराना ।

(3) उन्नत किस्म के अधिकाधिक पौधे तैयार करना ।

(4) कम पूंजी से अधिक उत्पादन करना तथा अधिक लाभ प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होना ।

(5) पौधशाला व्यवसाय में दक्षता प्राप्त करना तथा साथ ही साथ 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त व्यवसाय के चयन में सहायक होना ।

(6) भूमि सुधार तथा पर्यावरण संरक्षण में सहयोग प्रदान करना ।

(7) श्रम के प्रति आस्था उत्पन्न करना ।

(8) आत्म–निर्भर बनाना ।

(9) एक कुशल नागरिक के रूप में राष्ट्र निर्माण में सहायक होना ।

(10) विद्यालय में एक सुसज्जित उद्यान का निर्माण ।

रोजगार के अवसर—

पौधशाला व्यवसाय की शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त निम्नांकित रोजगार के अवसर मिल सकते हैं—

(क) वेतनभोगी :

1—माली का कार्य करना ।

2—पौधशाला प्रभारी का कार्य करना ।

3—पौधशाला में दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी का अवसर प्राप्त करना ।

(ख) स्वरोजगार :

1--अपनी पौधशाला तैयार करना ।
2--बीजोत्पादन तथा बीज व्यवसाय अपनाना ।
3--पौधशाला उद्योग सम्बन्धी, यन्त्रों, उपकरणों, उर्वरकों तथा कीटनाशकों के क्रय-विक्रय की दुकान चलाना ।
4--थोक एवं फुटकर पौध आपूर्ति कार्य करना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों का प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई-1--

0 पौध-प्रवर्द्धन--परिभाषा, महत्व एवं वर्गीकरण ।
0 लैंगिक प्रवर्द्धन--परिभाषा, लाभ-हानि, बीज प्राप्ति एवं चुनाव, बीज परीक्षण, अंकुरण क्षमता, बीजोपचार एवं बीज की बोआई ।
0 अलैंगिक (वानस्पतिक प्रजनन)--परिभाषा लाभ-हानि । अलैंगिक विभिन्न विधियां--कलम, गूटी, कलिकायन, भेंट कलम, अलगाव (सेपरेशन), टुकड़ीकरण (डिवीजन) का ज्ञान ।
0 वृद्धि नियामक (ग्रोथरेगुलेटर)--महत्व एवं प्रयोग विधि की जानकारी ।

इकाई-2 -

0 पौध विपणन--परिभाषा तथा पौध विपणन की विधियों का अध्ययन ।
0 पौध निकालने में सावधानियां ।
0 पौधबन्दी (पैकिंग) तथा परिवहन में अपनाई जाने वाली सावधानियों का ज्ञान ।
0 पौधशाला को लोकप्रियता बढ़ाने के सम्बन्ध में जानकारी ।

इकाई-3--

0 पौधशाला के पंजीकरण के प्रसंग में जानकारी :
0 ऋण प्रदान करने वाली संस्थाओं का ज्ञान ।
0 पौधशाला की योजना बनाना ।
0 ऋतुवार लगाये जाने वाले पौधों की सूची तैयार करना ।
0 पौधशाला में उगाये जाने वाले पौधों के सम्बन्ध में-मिट्टी, खाद, प्रजातियां, बीजदर, पौध तैयार होने का समय, पौधरोपण, पौध सुरक्षा के उपाय के सन्दर्भ में जानकारी ।
0 पौधशाला सम्बन्धी विभिन्न अभिलेखों की जानकारी ।
0 पौधशाला का आय-व्यय तैयार करना ।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(अ) लघु प्रयोग--

1--गमला मापन ।
2--गमला भरना ।
3--बीजों की पहचान ।
4--बीजों की शुद्धता की जांच ।
5--उपकरणों का पहचान ।
6--पौधों (सब्जी, फलदार, फूल शोभाकार तथा छायादार) एवं वानिकी पौधों की पहचान ।
7--खाद एवं उर्वरकों की पहचान ।
8--मिट्टी की पहचान ।

(ब) दीर्घ प्रयोग--

1--आदर्श नमूना बरसदी का रेखांकन ।
2--बीज शैय्या बनाना ।
3--ऋतुवार बीज शैय्या बनाना ।
4--ऋतुवार गमला मिश्रण तैयार करना ।
5--तना कलम तैयार करना ।
6--गूटी लगाना ।
7--कलिकायन से पौधे तैयार करना ।
8--भेंट कलम से पौधे तैयार करना ।

9--पौध रोपण।
10--गमले एवं क्यारी से पौधे निकालना ।
11--पौधबन्दी (पैकिंग) करना ।
12--पौधशाला भ्रमण ।
13--अभिलेख तथा आय-व्यय तैयार करना ।

पुस्तक की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक
1	2	3	4
1	भारत में फलों की खेती	डा० एम० एल० लाबानिया	सिंघल बुक डिपो, बड़ौत, मेरठ ।
2	सब्जियों एवं पुष्प उत्पादन	डा० के० एन० दुबे	भारती भण्डार, बड़ौत मेरठ ।
3	पौधशाला प्रौद्योगिकी	डा० ओमपाल सिंह	अलंकार पुस्तक भवन, बड़ौत, मेरठ ।
4	पौधशाला व्यवसाय	श्री कोठारी एवं श्री ए० बी० श्रीवास्तव	रंजना प्रकाशन मन्दिर, आगरा ।
5	नर्सरी मैनुअल	डा० गौरीशंकर	इलाहाबाद ।
6	फल विज्ञान	डा० रामनाथ सिंह	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ।
7	उद्यान विज्ञान	श्री गंगा महेश मिश्र	रामनारायण लाल, इलाहाबाद

(8) ट्रेड-आटो मोबाइल

उद्देश्य--

1--छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
2--छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
3--छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
4--छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
5--छात्रों को कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।
6--छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

रोजगार के अवसर--

आटोमोबाइल व्यवसाय से शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं--

(क) वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में ।
1--आटो मैकेनिक के रूप में ।
2--सेल्समैन के रूप में ।

(ख) स्वरोजगार के रूप में ।
1--अपना रिपेयर वर्कशाप एवं गैराज का संचालन ।
2--शो रूम स्थापित करना ।
3--स्पेयर पार्ट्स के विक्रेता के रूप में ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन :

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई-1--(क) मोपेड अथवा स्कूटर एवं कार की बनावट, पुर्जों के नाम, उनके कार्य । स्कूटर की सर्विसिंग एवं ओवर-हालिंग, स्कूटर मोपेड में दोषों को ढूढ़ना तथा मरम्मत करना । मरम्मत के लिए आवश्यक औजार एवं उपकरण की जानकारी । सर्विस वर्कशाप की स्थापना, ले आउट के चरण, उपकरण एवं साज-सज्जा की सूची एवं लागत ।

(ख) स्नेहन--स्नेहन से लाभ, इंजन एवं अन्य भागों में स्नेहन करने की विधि, स्नेहन की विशेषताएं, विशिष्टियां, ट्रेड नाम एवं उपयोग ।

इकाई--2--स्कूटर/मोपेड स्टार्ट करना एवं चलाना--स्टार्ट करने में सहायक उपस्कर, सुरक्षा नियम एवं ट्रैफिक नियमों की जानकारी ।

इकाई--3--इंजीनियरिंग ड्राइंग--आटोमोबाइल औजारों के रेखाचित्र ।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(क) लघु प्रोग (प्रायोगिक) (कोई दस प्रयोग)

1 से 2--स्कूटर मोपेड का अध्ययन ।

3 से 6--अन्तर्दहन इंजिन के माडल का अध्ययन (डीजल पेट्रोल) तथा आरेखन ।

7 से 10--कार के चेचिस, स्टीरिंग, बाडी, शक्ति संचारण, विद्युत एवं प्रकाश व्यवस्था, ब्रेक व्यवस्था का अध्ययन करना तथा उनके रेखाचित्र बनाना ।

11--कार के स्टीरिंग प्रणाली का अध्ययन ।

12--शाक एब्जारबर का अध्ययन ।

13--स्कूटर में तार विन्यास एवं प्रकाश व्यवस्था का अध्ययन ।

14--गियर बाक्स का अध्ययन ।

15--कारबूरेटर का अध्ययन ।

(ख) दीर्घ प्रयोग--

1--पंचर जोड़ बनाना, हवा भरना तथा हवा के दबाव को मापना ।

2--स्कूटर की धुलाई, सर्विसिंग करना ।

3--स्कूटर चलाने का अभ्यास ।

4--स्कूटर में दोष ढूंढना एवं मरम्मत करना ।

5--बाजार से सामग्री क्रय करने का अभ्यास तथा शो-रूम का अध्ययन ।

6--लोहे के टुकड़ों को नाप में काटना, उन्हें रेत कर साइज में करना ।

संस्तुत पुस्तकें

(1) आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	..	कृष्ण नन्द शर्मा
(2) आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	..	सी० बी० गुप्ता
(3) आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	..	धनपत राय एण्ड शुक्ला
(4) बेसिक आटोमोबाइल	..	सी० पी० बक्स

(9) ट्रेड--धुलाई-रंगाई

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।

(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

रोजगार के अवसर--

(ख) वेतनभोगी रोजगार--

(1) रंगाई-धुलाई की दुकानों में सहायक कर्मचारी के पद पर कार्य कर सकता है ।

(2) रंगाई के कारखाने में रंगाई मास्टर के पद पर कार्य कर सकता है ।

(3) सरकारी संस्थाओं में वस्त्र सफाई विभाग में कार्य प्राप्त कर सकता है ।

(ख) स्वरोजगार--

(1) ड्राई क्लीनिंग की दुकान खोलने में सहायक हो सकता है ।
(2) डाइंग (रंगाई) की दुकान खोलने में सहायक हो सकता है ।
(3) चरक की दुकान या उद्योग लगाने में सहायक हो सकता है ।
(4) कम लागत में इस्तरी करने, साड़ी लगाने की दुकान खोल कर कार्य कर सकता है ।
(5) रंगाई-छपाई का छोटा सा रोजगार कर सकता है ।

पाठ्य का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इनकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई-1--

(1) कपड़ों में रंगों तथा रंग योजना का महत्व तथा ताल-मेल का अध्ययन करना ।
(2) रंगों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव एवं रासायनिक प्रभाव ।
(3) पक्के एवं कच्चे रंगों का अध्ययन
(4) सूती, ऊनी, रेशमी कपड़ों की रंगाई का अध्ययन ।
(5) संश्लेषित कपड़ों के रंग और रंगने की तकनीक ।

इकाई-2--

(1) विभिन्न प्रकार के रंगों का अध्ययन करना--

[1] प्राकृतिक रंग
[2] एसिड रंग
[3] वेट रंग
[4] नेप्थाल रंग
[5] माडर्न्ट रंग
[6] खनिज रंग
[7] रिऐक्टिव रंग (प्रोशियन)
[8] प्रारम्भिक रंग और डायरेक्ट रंग

(2) रंगाई-धुलाई में शेड कार्ड बनाना--

इकाई-3--

(1) विभिन्न प्रकार के कपड़ों की गीली धुलाई की तकनीक--

[1] सूती
[2] ऊनी
[3] रेशमी
[4] कृत्रिम

(2) सूखी धुलाई--उपकरण, तकनीक और वस्त्रों को तैयार करना (विभिन्न प्रकार के कपड़ों के लिये)

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(1) विभिन्न वस्तुओं का संग्रह एवं पहचानना (देख कर व जलाकर) :

(क) वनस्पति तन्तु ।
(ख) पशु से प्राप्त होने वाले तन्तु ।
(ग) खनिज तन्तु ।
(घ) कृत्रिम तन्तु ।

(2) विभिन्न धागों का संग्रह--साधारण प्लाई ।

(3) विभिन्न प्रकार के वस्त्रों और शेड कार्ड को संग्रहीत करके फाइल बनाना।

(4) विभिन्न प्रकार के कपड़ों को रंगना (15' × 25") (सूती, रेशमी, ऊनी, कृत्रिम कपड़े धोना, सुखाना, प्रेस व तह लगाना) ।

(5) नील लगाना कलफ लगाना।

(6) दाग छुड़ाना--

[1] चाय

[2] काफी

[3] हल्दी

[4] जंक

[5] रक्त

[6] मशीन का तेल

[7] स्याही

[8] अण्डा

[9] पान

[10] ग्रीस

(7) धागे को रंगना--सूती, ऊनी ।

(8) डायरेक्ट रंगों के विभिन्न रंगों के मिश्रण द्वारा डिजाइन बनाना--6 नमूने (15"×15") (टाई ऐण्ड डाई प्रिंटिंग द्वारा) ।

(9) नेप्थाल रंगों के द्वारा एक नमूना तैयार करना (15"×15") ।

(10) फेडिंग परीक्षण (सूती, ऊनी, रेशमी, रेयान) (4"×4") ।

(11) सूखी धुलाई--शाल, स्वेटर, रेशमी, फैन्सी कपड़े ।

(12) टेक्सचर के द्वारा रंगाई (6 नमूने) (12"×12") ।

(13) पुराने कपड़े को पुनः रंगकर ब्लाक प्रिंटिंग द्वारा आकर्षित बनाना ।

(14) गीली धुलाई--सूती; ऊनी, रेशमी, कृत्रिम ।

(क) लघु प्रयोग--

(1) डायरेक्ट रंगों द्वारा रंगाई (एक रंग में) ।

(2) कपड़ों की पहचान (छूकर व देखकर) ।

(3) साधारण व प्लाई धागों की पहचान ।

(4) जलाकर कपड़ों का परीक्षण ।

(5) फेडिंग परीक्षण 3/4 घण्टा ।

(6) तह लगाना ।

(7) इस्तरी करना ।

(8) माड़ी लगाना ।

(9) ब्लाक प्रिंटिंग (एक नमूना) ।

(10) टेक्सचर तैयार करना (दो नमूना) ।

(ख) दीर्घ प्रयोग--

(1) नेप्थाल रंगों द्वारा रंगाई ।

(2) सूती कपड़ों को रंगना ।

(3) ऊनी कपड़ों को रंगना ।

(4) रेशमी कपड़ों को रंगना ।

(5) धागों को रंगना--सूती, ऊनी ।

(6) नील लगाना ।

(7) कलफ लगाना ।

(8) चरक लगाना ।

(9) सूखी धुलाई ।

(10) गीली-धुलाई--सूती, ऊनी, रेशमी, कृत्रिम कपड़े ।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	नाम	लेखक	प्रकाशक
1	2	3	4
1	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	डा० प्रमिला वर्मा	प्रकाशक, बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना विश्व-विद्यालय प्रकाशन ।
2	वस्त्र विज्ञान एवं धुलाई कार्य	श्री आनन्द वर्मा	रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, वितरक- विश्वविद्यालय प्रकाशन ।
3	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	श्रीमती लोकेश्वरी शर्मा	स्वास्तिक प्रकाशन, अस्पताल मार्ग, आगरा-3 ।
4	वस्त्र धुलाई विज्ञान	..	युनिवर्सल सेलर, हजरतगंज, लखनऊ ।
5	दी केमिकल टेक्नालाजी आफ टेक्सटाइल फाइबर्स	श्री आर० आर० चक्रवर्ती	कंक्सटन प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली--55

(10) ट्रेड—परिधान रचना एवंसज्जा

सामान्य उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता के गुणों का विकास करना ।
(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपर्युक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
(5) छात्रों को कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।
(6) छात्रों को ट्रेड के प्रारम्भिक कार्यों की जानकारी देना ।

विशिष्ट उद्देश्य--

(1) परिधान रचना एवं सज्जा ट्रेड के द्वारा बच्चों में सिलाई विषय से सम्बन्धित जागरूकता उत्पन्न करना ।
(2) भविष्य में प्रचलित फैशन के अनुसार विभिन्न डिजाइनों के वस्त्रों के निर्माण के कौशल का विकास करना ।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी रोजगार--

[अ] अपने विषय से सम्बन्धित प्रशिक्षण केन्द्रों पर प्रशिक्षण देना ।
[ब] किसी रेडीमेड गारमेन्ट फैक्ट्री में वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में कार्य करना ।

(ख) स्वरोजगार--

[अ] सिलाई का कार्य घर पर ही करके बचत करना ।
[ब] बाजार में दुकानों से आर्डर लेकर वस्त्र तैयार करके आय प्राप्त करना ।
[स] सिलाई शिक्षा से सम्बन्धित स्कूल चलाना ।
[द] विद्यालयों से यूनीफार्म को तैयार करने का आर्डर लेना ।
[ह] सिलाई के उपकरणों की मरम्मत से सम्बन्धित केन्द्र खोलना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों को सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी बाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई 1--

(क) नाप लेते समय ध्यान देने योग्य बातें--नाप लेने के तरीके--

[अ] चेस्ट सिस्टम ।
[ब] डायरेक्ट सिस्टम ।

सामान्य व्यक्तियों की नापें, असामान्य व्यक्तियों की नापें (तोंदिल व्यक्ति, झुका कंधा, ऊंचा कंधा, कूबड़दार व्यक्ति)।

(ख) सिलाई की मशीन की सामान्य जानकारी--

[अ] मशीन के पुर्जों का ज्ञान।
[ब] मशीन के पुर्जे खोलकर उनकी सफाई का ज्ञान।
[स] मशीन की साधारण खराबियों को दूर करने की योग्यता।

(ग) सिलाई के विभिन्न टांके--कच्चा, बखिया, तुरपन, पीको, काज, इण्टरलाक।

इकाई 2--

(क) वस्त्रों का चुनाव--आयु, मौसम, शव, विशेष अवसरों तथा सामान्य अवसरों पर पहनने वाले वस्त्रों का चुनाव।

(ख) वस्त्रों की विशेषता के अनुसार विभिन्न प्रकार की पोशाकों के लिए उनका चयन करना।

(ग) कपड़ा काटने के पूर्व ड्राफ्टिंग पेपर कटिंग तथा बंटने तैयार करने से लाभ, विभिन्न प्रकार के वस्त्रों (जैसे शाटन, मखमल, नायलान, ऊनी) को काटने, सिलते समय सावधानियां।

इकाई 3--

(क) सिलाई कार्य में उपयोग में आने वाली वस्तुओं की जानकारी--

(अ) फैंचो, इंची टेप, गुनिया, मिल्टन चाक, मार्किंग व्हील, अंगुस्ताना, कटिंग मेज, प्रेस, विविध प्रकार की सुईयां, धागे, फ्रेम।

(ब) सिलाई क्रिया में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का ज्ञान--

अर्ज, अस्तर, ड्राफ्टिंग, औरेब, चाक, गिदरो, हाला, पंचिंग, तावीज, बमफ्राक, जिग-जैग, फ्रिल, डॉट डबल पाईपिंग।

(स) कढ़ाई के टांकों का ज्ञान--लेजो, डेजो, रनिंग स्टिच, स्टेमस्टिच, चेन स्टिच, क्रास स्टिच, साटन स्टिच, शैडो वर्क पंच वर्क, काज स्टिच, शैड वर्क।

(द) सिलाई कार्य में रचना फिटिंग, प्रेसिंग, फिनिशिंग तथा फोल्डिंग का महत्व।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

लघु प्रयोग--

1--विभिन्न प्रकार के सिलाई के टांका--कच्चा टांका, बखिया, तुरपन, पीको, काज, टांका।

2--कढ़ाई के टांके--लेजो, डेजी, रनिंग स्टिच, स्टेम स्टिच, चेन स्टिच, क्रास स्टिच, काज स्टिच, शैडो वर्क साटन स्टिच, पैड वर्क, शैड वर्क।

3--उपरोक्त कढ़ाई के टांकों से छः रूमाल बनाना।

4--रफू करना।

6--पैबन्द लगाना।

6--कलोट--काटना, सिलना।

7--बिब--काटना, सिलना।

8--चड्डी--काटना, सिलना।

9--झबला--काटना, सिलना।

10--मशीन के पुर्जों को खोलना, सफाई करना तथा मशीन में तेल डालना।

दीर्घ प्रयोग--

1--बेबी शमीज।

2--पैजामा (एक मीटर कपड़े का)।

3--बेबी फ्राक।

4--गर्ल्स फ्राक।

5--पेटीकोट।

6--हैंगिंग बैग।

नोट--उपरोक्त वस्त्रों की ड्राफ्टिंग, कटिंग, सिलना तथा उनको सज्जा करना तथा रूमाल, पैबन्द, रफू को बनाकर रिकार्ड फाइल में रखना।

मौखिक प्रश्नोत्तर--लघु तथा दीर्घ प्रयोगों से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक व प्रकाशक	मूल्य
1	2	3	4
			रु0
1	परिधान रचना एवं सज्जा	श्रीमती चरन दासी, स्वास्तिक प्रकाशन, आगरा	13.50
2	गृह विज्ञान का सामान्य ज्ञान	श्रीमती स्वराज्य लता सिंह, स्वास्तिक प्रकाशन, आगरा	35.00
3	परिधान रचना एवं सज्जा	श्रीमती अनामिका सक्सेना, भारत प्रकाशन मन्दिर, मेरठ	18.00
4	आधुनिक सिलाई एवं कढ़ाई विज्ञान	श्री एम0 ए0 खान, पुस्तक प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद	15.00
5	अनमोल सिलाई कला परिचय	श्री असगर अली, गर्ग प्रकाशन, इलाहाबाद	18.00
6	रेपिडक्स टेलरिंग कोर्स	श्रीमती आशा रानी बोहरा	68.00

(11) ट्रेड--खाद्य संरक्षण

उद्देश्य

1--छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
2--छात्रों को आगे चल कर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
3--छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
4--छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
5--छात्रों को कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।
6--छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।
7--अधिक उपज से उगाने के बाद बचे हुए फल और सब्जियों का संरक्षण करना ।
8--खाद्य संरक्षण द्वारा पौष्टिक भोजन की कमी को पूरा करना ।
9--बिना मौसम में भी संरक्षित खाद्य पदार्थों को उपलब्ध कराना ।

रोजगार के अवसर :

1--खाद्य संरक्षण सम्बन्धी इकाई में रोजगार मिल सकता है ।
2--खाद्य संरक्षण में दक्षता अर्जित कर छात्र अपना निजी व्यवसाय चला सकता है ।
3--अचार, मुरब्बा, मांस आदि विभिन्न प्रकार के संरक्षित खाद्य पदार्थ तैयार कर डिब्बाबन्दी कर बाजार में आपूर्ति कर सकता है ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन :

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई--1

(1) स्थायी तथा अस्थायी संरक्षण की विधियां ।
(2) जैम, जेली, मार्मलेड बनाने की विधि ।
(3) पेक्टिन परीक्षण
(4) फलों के रस, टमाटर रस, स्क्वैश, शर्बत आदि का संरक्षण ।
(5) मुरब्बा एवं कैण्डी ।

(6) अचार तथा सिरका का सामान्य ज्ञान ।

(7) टमाटर से विभिन्न पदार्थ ।

(8) खाद्य पदार्थों के आवागमन से प्रयोग होने वाली पैकेजिंग सम्बन्धी जानकारी ।

इकाई--2

(1) फल एवं तरकारियों की डिब्बाबन्दी का सामान्य ज्ञान ।

(2) खाद्य रंग कृत्रिम एवं प्राकृतिक रंग का सामान्य परिचय ।

(3) शीत, शीतोष्ण एवं उष्ण जलवायु में उगाये जाने वाले फल एवं तरकारियों का सामान्य परिचय ।

(4) विभिन्न खाद्य पदार्थों, फल, तरकारियों, मांस, मछली, छोला, पुलाव के संरक्षण का साधारण परिचय ।

(5) खाद्य संरक्षण में बचे अवशेष निरर्थक भागों का उपयोग ।

(6) सुरक्षित खाद्य पदार्थों की पौष्टिकता का महत्व ।

(7) संरक्षण हेतु विभिन्न प्रकार की पैकेजिंग वस्तुओं का उपयोग ।

(8) मसाला उद्योग का सूक्ष्म परिचय ।

इकाई--3

(1) दालें, अनाज, तिलहन वाली फसलों का सामान्य ज्ञान एवं संरक्षण ।

(2) मांस, मछली, मुर्गी अण्डा आदि पदार्थों के विषय, परिचय एवं संरक्षण का प्रारम्भिक ज्ञान ।

(3) बड़ी, पापड़ चिप्स बनाने एवं संरक्षण के उपाय ।

(4) केक, पेस्ट्री, बिस्कुट, नान-खटाई बनाने की साधारण विधियां ।

(5) तैयार खाद्य पदार्थों का अल्पकालिक संरक्षण ।

(6) आटा, मैदा, सूजी, दलिया की पहचान तथा उत्पादों के लिये उपयुक्त गुणवत्ता ।

(7) सोयाबीन से निर्मित पदार्थों का सूक्ष्म परिचय ।

(8) दूध से निर्मित पदार्थ-खोया, पनीर का सामान्य परिचय ।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(क) दीर्घ प्रयोग :

1--जैम बनाना

2--मुरब्बा बनाना

3--अचार बनाना

4--शर्बत बनाना

5--प्यूरो एवं टमाटर सास बनाना

6--मटर, गाजर, अमचुर सुखाने की विधियां

7--कृत्रिम सिरका

8--फलों के रस एवं गूदे का संरक्षण

9--दलिया, चिप्स, पापड़, बड़ी बनाना एवं संरक्षण

10--पनीर निर्माण

(ख) लघु प्रयोग :

1--हिफरेक्ट्रोमोटर का उपयोग

2--निकल्स हाइड्रोमीटर का उपयोग

3--सूक्ष्मदर्शी यंत्र के विभिन्न भागों का परिचय

4--पी० एच० पेपर का महत्व एवं उपयोग

5--पेक्टिन परीक्षण

6--विभिन्न खाद्य पदार्थों की पहचान

7--आसमेसिस साधारण प्रयोग

8--खाद्य संरक्षण में उपयोग होने वाले तापमापो का उपयोग, प्रेशर कुकर का ज्ञान ।

संस्तुत पुस्तकें--

		रु9
(1) फल एवं सब्जी संरक्षण	ले0 डा0 गिरधारी लाल डा0 सिद्धाप्पा एवं गिरधारी लाल टंडन	45.00
(2) फल संरक्षण	एस0 एम0 भाटी	30.00
(3) फल संरक्षण (प्रयोगात्मक)	बी0 एम0 अग्निहोत्री	15.00
(4) फल संरक्षण विज्ञान	बी0 एम0 अग्निहोत्री	25.00
(5) फल परिरक्षण सिद्धान्त एवं विधियां	डा0 श्याम सुन्दर श्रीवास्तव	100.00
(6) आहार एवं पोषण विज्ञान	विमला वर्मा	50.00

(12) ट्रेड- एकाउन्टेंसी एवं अंकेक्षण

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
(2) छात्रों को स्वरोजगार करने हेतु मानसिक रूप से तैयार करना ।
(3) 10+2 स्तर पर ट्रेड चयन करने हेतु छात्रों की सहायता करना ।
(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
(5) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।
(6) वेतनभोगी रोजगार सहायक रोकड़िया, कनिष्ठ लेखाकार, कनिष्ठ लिपिक, कार्यालय सहायक के रूप में छात्रों को तैयार करना ।

रोजगार के आधार--

(क) वेतनभोगी रोजगार तथा सहायता रोकड़िया, कनिष्ठ लेखाकार, कनिष्ठ लिपिक, कार्यालय सहायक आदि के रूप में ।

(ख) स्वरोजगार--जैसे छोटे स्तर के व्यापार के हिसाब का रख-रखाव करने के रूप में ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप ।

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई--1

(1) लागत लेखांकन--परिभाषा, महत्व तथा पद्धतियां ।
(2) लागत के मूल तत्व--सामग्री, श्रम एवं उपरिव्यय का सामान्य ज्ञान ।
(3) लागत विवरण एवं निविदा तैयार करना ।

इकाई--2

अन्तिम खाते तैयार करना, साधारण समायोजनाओं सहित व्यापार लाभ हानि तथा चिट्ठा बनाना, संयुक्त स्कन्ध कम्पनी परिभाषा, लक्षण एवं भेद ।

इकाई--3

(ए) अंकेक्षण--परिभाषा, महत्व, उद्देश्य ।
(डी0) अंकेक्षण गुण एवं योग्यतायें ।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(अ) लघु प्रयोग--

(1) नकद रसीद ।
(2) डेबिट नोट एवं क्रेडिट नोट ।
(3) चेक, पे-इन-स्लिप ।
(4) टेलीग्राम मनी आर्डर फार्म ।
(5) आर0 आर0 ट्रेजरी चालान फार्म ।
(6) कैलकुलेटर्स, रेडीरेकनर्स ।
(7) डेटिंग मशीन ।
(8) नम्बरिंग मशीन ।
(9) स्टेपलर्स पंचिंग मशीन ।

(ब) बड़े प्रयोग--

(1) छात्रों को वाउचर प्रदान किए जाय एवं उन्हें तैयार कराया जाय ।

(2) क्रय-पुस्तक तैयार करना ।

(3) विक्रय-पुस्तक तैयार करना ।

(4) बीजक एवं विक्रय-विवरण बनाना ।

(5) खुदरा रोकड़ पुस्तक बनाना ।

(6) रोकड़ पुस्तक तैयार करना ।

(7) स्टाक रजिस्टर तैयार करना ।

(8) पत्र प्राप्ति पुस्तक एवं पत्र प्रेषण पुस्तक तैयार करना ।

संदर्भित पुस्तकें--

1--हाई स्कूल बहीखाता एवं व्यापार प्रणाली	लेखक--श्री विजय पाल सिंह
2--अनुपम प्रारम्भिक बहीखाता एवं व्यापार प्रणाली	लेखक--श्री जगन्नाथ वर्मा
3--पूर्व व्यावसायिक वाणिज्यिक ट्रेड	लेखक--श्री राम प्रकाश अवस्थी
4--पूर्व व्यावसायिक वाणिज्यिक ट्रेड प्रयोगात्मक	लेखक--श्री राम प्रकाश अवस्थी
5--लागत लेखांकन	लेखक--डा0 लक्ष्मण स्वरूप

(13) ट्रेड--आशुलिपि तथा टंकण

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।

(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।

(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।

(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।

(5) छात्रों को कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी रोजगार--वकील अथवा व्यापारी के यहाँ कार्य करना ।

(ख) स्वरोजगार--अपनी टंकण मशीन लेकर तहसील, कचहरी आदि में बैठकर आवेदन एवं प्रत्यावेदन का डिक्टेशन लेकर टंकण कर उपलब्ध कराना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई--1

व्यावसायिक संगठन अर्थ एवं प्रकार एकाकी व्यापार, साझेदारी एवं संयुक्त स्कन्ध (परिभाषा लक्षण एवं भेद) ।

इकाई--2

आशुलिपि वर्णमाला का प्रारम्भिक ज्ञान, चित्र एवं संकेतों के माध्यम से रेखाओं का ज्ञान, स्वर एवं संकेत स्वरों का ज्ञान, व्यंजनों को मिलाना तथा आशुलिपि में अवतरणों एव पत्रों का श्रुत लेख और उनका हिन्दी रूपान्तर ।

इकाई--3

आधुनिक युग में टंकण का व्यावसायिक महत्व मशीन एवं उसमें प्रयुक्त होने वाले विभिन्न कल पुर्जे एवं उनके प्रयोग तथा अवतरणों, पत्रों एवं साधारण तालिकाओं को टंकित करना ।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(क) लघु प्रयोग--

(1) शब्द चिन्ह ।
(2) जुट शब्द ।
(3) रेखाक्षरों के स्थान ।
(4) चित्र एवं संकेतों के माध्यम से रेखाक्षरों का ज्ञान ।
(5) टाइप करने की प्रणालियां ।
(6) मशीन में कागज लगाने, ठीक करने व कागज निकालने का ढंग ।
(7) हासिया निश्चित करना ।
(8) मशीन पर बैठने की स्थिति ।

(ख) दीर्घ प्रयोग--

(1) श्याम पट्ट पर लिखित लेखों का पढ़ना ।
(2) पत्रों का आशुलिपि में लेखन तथा हिन्दी रूपान्तर ।
(3) आशुलिपि से दीर्घ लिपि में लिखना तथा टाइप करना ।
(4) आशुलिपि नोटों के अनुवादित होने के बाद उन पर चिन्ह लगाना ।
(5) कुंजी पटल का ज्ञान ।
(6) पोस्ट कार्डों पर पतों का टंकण ।
(7) टाइप मशीन की प्रतिलिपि लेना ।
(8) प्रार्थना-पत्र अथवा पत्रों को टाइप करना ।

संबर्भ पुस्तकें--

1--अनुपम टाईपिंग मास्टर--श्रीमती ऊषा गुप्ता ।
2--उपकार व्यावहारिक टंकण कला--श्री ओंकार नाथ वर्मा ।
3--हिन्दी संकेत लिपि (ऋषि प्रणाली)-श्री ऋषिलाल अग्रवाल ।
4--पिटमैन अंग्रेजी संकेत लिपि--पिटमैन ।
5--पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड--श्री राम प्रकाश अवस्थी ।
6--पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड (प्रयोगात्मक)--श्री राम प्रकाश अवस्थी ।
7--अनुपम प्रारम्भिक बही खाता एवं व्यापार प्रणाली--श्री जगन्नाथ वर्मा ।
8--आशुलिपि एवं टंकण--श्री गोपाल दत्त विष्ट ।

(14) ट्रेड--बैंकिंग

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
(3) छात्रों को 10+2 स्तर का सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
(5) छात्रों की कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ,
(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।
(7) व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कराना ।
(8) बैंकिंग कार्य प्रणाली के प्रारम्भिक ज्ञान की जानकारी छात्रों को उपलब्ध कराना ।

जगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी--

1--विद्यालयों में संचयिका का लेखा रखने की जानकारी देना ।
2--अपने व्यवसाय की बैंकिंग कार्य प्रणाली की जानकारी देना ।
3--सहायक रोकड़िया ।
4--गोंद सहायक ।

(ख) स्वरोजगार--

1--लघु व्यावसायिक संस्थानों का हिसाब तैयार करना ।
2--अभिकर्ता के रूप में कार्य कराना ।
3--डाक घर के एजेन्ट के रूप में कार्य करना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन :

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा, परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई–1––व्यावसायिक संगठन, अर्थ एवं प्राक्रुप, एकाकी व्यवसाय, साझेदारी एवं संयुक्त स्कन्ध कम्पनी, परिभाषा, लक्षण एवं भेद ।

इकाई–2––अन्तिम खातेदार तैयार करना, साधारण समायोजनाएं सहित व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा बनाना ।

इकाई–3––विभिन्न प्रकार के बैंक-देशी बैंक, साहूकार, महाजन एवं चिट फंड, व्यापारिक बैंक, रिजर्व बैंक आफ इण्डिया, स्टेट बैंक आफ इण्डिया, सहकारी बैंक, भूमि विकास बैंक ।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

लघु प्रयोग––

1––चेक लिखना, निर्गम करना एवं निर्गमन, रजिस्टर में लेखा करना ।
2––चेकों का पृष्ठांकन एवं रेखांकन करना, चेकों को वैधता की जांच करना ।
3––पे-इन-स्लिप तथा आहरण-पत्र का प्रयोग ।
4––चेक लिखने वाली मशीन का प्रयोग ।
5––रेडी रेकनर का प्रयोग ।
6––कैलकुलेटर का प्रयोग ।
7––वोटिंग मशीन एवं नम्बरिंग मशीन का प्रयोग ।
8––पंचिंग मशीन एवं स्टेपलर का प्रयोग ।

दीर्घ प्रयोग––

1––बैंक में खाता खोलने के विभिन्न प्रपत्रों को भरना ।
2––बैंक लेजर खातों एवं पास बुक में लेखा करना ।
3––ब्याज की गणना एवं उनका लेखा करना ।
4––बैंक ड्राफ्ट, एम0 टी0 टी0 पे-आर्डर तैयार करना ।
5––ऋण सम्बन्धी आवश्यक प्रपत्रों को भरना ।
6––साप्ताहिक विवरण, रिटर्न तैयार करना एवं प्रधान कार्यालय को प्रेषित करना ।
7––बीजक एवं विक्रय विवरण तैयार करना ।
8––रेजगारी छांटने वाली मशीन का प्रयोग ।

सन्दर्भ पुस्तकें––

1––पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड––श्री राम प्रकाश अवस्थी
2––पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड (प्रयोगात्मक)––श्री राम प्रकाश अवस्थी
3––हाई स्कूल मुद्रा बैंकिंग एवं अर्थ शास्त्र––श्री एम0 पी0 गुप्ता
4––अधिकोषण तत्व––श्री डी0 डी0 निगम

(15) ट्रेड––टंकण

उद्देश्य––

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
(2) छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
(5) छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।
(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

रोजगार के अवसर––

(क) वेतनभोगी रोजगार––वकील अथवा व्यापारी के यहाँ टाइप करना ।
(ख) स्वरोजगार––अपनी टंकण मशीन लेकर तहसील, कचेहरी आदि में बैठकर आवेदन एवं प्रत्यावेदन का डिक्टेशन लेकर टंकण कर उपलब्ध कराना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन :

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई-1--

व्यावसायिक संगठन--अर्थ, उद्देश्य, महत्व एवं प्रारूप । एकाकी व्यापारी, साझेदारी एवं कम्पनी परिभाषा, लक्षण, भेद ।

इकाई-2--

अंग्रेजी टंकण--आधुनिक युग में अंग्रेजी टंकण का महत्व, टंकण मशीन तथा उसमें प्रयुक्त होने वाले विभिन्न कल-पुर्जों तथा उनका प्रयोग, पैराग्राफ, पत्रों तथा टेबुल का टंकण ।

इकाई-3--

आधुनिक युग में हिन्दी टंकण का व्यावसायिक महत्व, टंकण मशीन एवं उसमें प्रयुक्त होने वाले विभिन्न कल-पुर्जे एवं उनके प्रयोग/अवतरणों, पत्रों तथा साधारण सारणी का टंकण ।

प्रयोगात्मक क्रिया-कलाप

(क) लघु प्रयोग--

(1) टंकण कल पर बैठने की स्थिति ।
(2) टंकण करने की प्रणालियाँ ।
(3) टंकण मशीन में कागज लगाने एवं बाहर निकालने की विधि ।
(4) हाशिया निश्चित करना ।
(5) ऐसे संकेतों का टंकण जो कुंजी पटल में नहीं दिये गये हैं ।
(6) तथा पैराग्राफ बनाना ।
(7) स्पेशल बार का प्रयोग ।
(8) "शिफ्ट" का एवं "शिफ्ट को लाक" का प्रयोग ।
(9) छोटे पत्रों व लघु अवतरणों का टंकण ।

(ख) दीर्घ प्रयोग--

(1) कुंजी पटल का ज्ञान ।
(2) प्रार्थना-पत्र एवं पत्रों का टंकण करना ।
(3) पोस्टकार्ड पर पते टाइप करना ।
(4) टाइप मशीन से प्रतियाँ लेना ।
(5) प्रूफ रीडिंग में प्रयुक्त होने वाले चिन्ह ।
(6) रिबन का बदलना ।
(7) कठिन शब्दों का टंकण ।
(8) टाइप मशीन की सफाई एवं तेल देना ।
(9) बड़े अवतरणों एवं साधारण सारिणियों का टंकण करना ।

सन्दर्भ पुस्तकें

(1) अनुपम टाइपिंग मास्टर	..	श्रीमती ऊषा गुप्ता
(2) उपकार व्यावहारिक टंकण कला	..	श्री ओंकार नाथ वर्मा
(3) पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड	..	श्री राम प्रकाश अवस्थी
(4) पूर्व व्यावसायिक वाणिज्य ट्रेड (प्रयोगात्मक)	..	श्री राम प्रकाश अवस्थी
(5) अनुपम प्रारम्भिक बहीखाता तथा व्यापार प्रणाली	..	श्री जगन्नाथ वर्मा

(16) ट्रेड--फल संरक्षण

उद्देश्य--

(1) छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना ।
(2) छात्रों को आगे चल कर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
(3) छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधानुसार उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
(4) छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
(5) [illegible] के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।

(6) छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

(7) फल उत्पादन बढ़ाना तथा खाने के बाद बचे हुये फल और सब्जियों का संरक्षण करना ।

(8) फलोत्पादक औद्योगीकरण द्वारा देश की बढ़ती हुई बेरोजगारी को दूर करना ।

(9) बिना मौसम में संरक्षित फल पदार्थों की उपलब्ध कराना ।

रोजगार के अवसर--

(1) फल संरक्षण सम्बन्धी इकाइयों में रोजगार मिलने की सम्भावना ।

(2) फल संरक्षण उद्योग में स्वरोजगार या अपना निजी व्यावसाय चलाना या डिब्बाबन्दी कर बाजार में आपूर्ति करना ।

(3) संरक्षित पदार्थों की दुकान या गोदाम खोल सकता हूँ जिसमें संरक्षित खाद्य पदार्थों को सही ढंग से रख-रखाव कर उन्हें नष्ट होने से बचाव कर रोजगार चला सकता ह ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन :

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई-1--

(1) प्रमुख फल एवं सब्जियों को धूप में सुखाना और डीहाईड्रेशन यन्त्र में सुखाना ।

(2) शक्कर द्वारा संरक्षण--जैम, जेली, मुरब्बा, कैण्डी और कृतिम शरबत (गुलाब, केवड़ा, खस और आम का पना) आलू के शीत भण्डारण का परिचयात्मक विवरण ।

इकाई-2--

(1) टमाटर से निर्मित पदार्थ--रस (जूस), केचप, सांस और चटनी ।

(2) किण्वीकरण (फार्मन्टेशन), सिरका और अचार बनाना (नमक की संरक्षण क्षमता का उपयोग, विदेशी विधि तथा साल्ट क्योरिंग का परिचय) ।

(3) अचार, पदार्थ, पेय एवं मुरब्बा उद्योग की सम्भावनायें ।

इकाई-3--

फल संरक्षण, प्रशिक्षण, सूचना तथा वित्तीय सहायता प्रदान करने वाली सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थायें फल संरक्षण इकाई स्थापित करने की प्रक्रिया एवं स्वरूप, आवश्यक कार्यवाही । अपने जनपद में अधिक मात्रा में उपजाये जाने वाले फल एवं सब्जियों की जानकारी तथा उनकी उपलब्धता तथा इनसे संरक्षित किये जाने वाले पदार्थों के बनाने की जानकारी ।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

(क) लघु प्रयोग--

(1) ब्रिक्स हाइड्रोमीटर से लिनोमीटर, हैंड से कैरोमीटर (रिफरैक्टोमीटर), थर्मामीटर का परिचय एवं उपयोग विधि ।

(2) तरल पदार्थों का लिटमस पर की सहायता से पी0 एच0 ज्ञात करना :

(3) सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) से परिचय, उनके विभिन्न पार्टसस्प्रिट द्वारा पेक्टिन टेस्ट ।

(4) स्प्रिट द्वारा पेक्टिन टेस्ट ।

(5) सीलिंग के लिये प्रयोग की जाने वाली मशीन ।

(6) कन्टेनर्स (बोतल, जार, अमृतवान, कारव्यास) को धोना और जीवाणुरहित (स्टारलाइट) करना ।

(ख) दीर्घ प्रयोग--

(1) जैम-विभिन्न ऋतुओं में पैदा होने वाले फलों से जैम बनाना ।

(2) मुरब्बा बनाना--आंवला, बेल, पेठा, करौंदा, पपीता, गाजर ।

(3) अदरक, पेठा, नीबू, प्रजाति के फलों के छिलकों से कैण्डी बनाना ।

(4) टमाटर, कैचप, सास, सूप बनाना ।

(5) फलों से चटनी बनाना ।

(6) विभिन्न ऋतुओं में उपलब्ध फल एवं सब्जियों (आम, नीबू, कटहल, अदरक, करौंदा, प्याज, खीरा आदि) से अचार बनाना ।

(7) कृत्रिम सिरका बनाना

(8) कृत्रिम शरबत (खस, गुलाब, केवड़ा, आदि) बनाना ।

(9) स्कवैश बनाना ।

(10) अमरूद से जैम, टाफी बनाना ।

संस्तुत पुस्तकें

			रु0
1--फल एवं सब्जी संरक्षण	..	डा0 गिरधारी लाल डा0 सिद्धप्पा	45.00
2--फल संरक्षण	..	श्री एस0 एन0 भाटी	30.00
3--फल संरक्षण (प्रयोगात्मक)	..	श्री बी0 एन0 अग्निहोत्री	15.0
4--फल संरक्षण विज्ञान	..	श्री बी0 एन0 अग्निहोत्री	25.00
5--फल परिरक्षण सिद्धान्त और विधियां	..	डा0 श्याम सुन्दर श्रीवास्तव	100.00
6--फल तथा सब्जी परिरक्षण प्रौद्योगिकी	..	श्री एस0 लदाशिव नायर एवं डा0 हरिश चन्द्र शर्मा	100.00
7--फ्रूट एवं वेजीटेबिल	..	डा0 संजीव कुमार	150.00

(17) ट्रेड--फसल सुरक्षा

उद्देश्य--

(1) फसल सुरक्षा व्यवसाय की सामान्य जानकारी करना ।

(2) फसल सुरक्षा सेवा अपना कर फसलों को होने वाली हानि से इन्हें बचाना ।

(3) फसल सुरक्षा सेवा द्वारा प्रति वर्ष हजारों टन खाद्यान्न को नष्ट करने से बचाना ।

(4) फसल सुरक्षा व्यवसाय में दक्षता प्राप्त कर इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाना ।

(5) श्रम के प्रति आस्था उत्पन्न करना तथा आत्मनिर्भर बनाना ।

(6) कुशल नागरिक निर्माण में योगदान देना ।

(7) फसल सुरक्षा सेवा सम्बन्धी यन्त्रों एवं उपकरणों आदि का समुचित ज्ञान प्राप्त कर अपने निजी जीवन में उपयोग करना ।

(8) फसल सुरक्षा सेवा व्यवस्था का विद्यालय में सफल प्रदर्शन करना ।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी रोजगार--

[1] सरकारी, सहकारी विभागों में फसल सुरक्षा सहायक का कार्य करने का अवसर प्राप्त करना ।

[2] फसल सुरक्षा की उत्पादन तथा वितरण इकाईयों में रोजगार प्राप्त करना ।

(ख) स्वरोजगार--

1--फसल सुरक्षा सम्बन्धी रसायनों तथा यंत्रों-उपकरणों की आपूर्ति करने सम्बन्धी व्यवसाय को अपनाना ।

2--फसल सुरक्षा के यंत्रों, उपकरणों तथा रसायनों की दुकान चलाना ।

3--फसल सुरक्षा के यंत्रों, उपकरणों को किराये पर चलाना ।

4--सहकारी समितियां बनाकर फसल सुरक्षा के क्षेत्र में लघु उद्योग धन्धे चलाना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों का प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जावेगी ।

इकाई-1--

(1) फसल सुरक्षा के उपकरणों--स्प्रेयर और डस्टर की सामान्य जानकारी, इनके रख-रखाव का ज्ञान ।

(2) कवकनाशी, कीटनाशी, खरपतवार नाशी रसायनों की सामान्य जानकारी ।

इकाई–2—

(1) दीमक, चिड़िया, चूहों, घोंघा, बन्दर, लोमड़ी, खरगोश एवं अन्य जगली जानवरों के कारण फसलों की क्षति का सामान्य ज्ञान तथा उनके रोकथाम की जानकारी ।

(2) टिड्डो द्वारा फसलों पर होने वाली क्षति का सामान्य ज्ञान एवं रोकने के उपाय का सामान्य ज्ञान ।

इकाई–3—

(1) अनाज भण्डारण में कीटों तथा जन्तुओं द्वारा होने वाली क्षति का ज्ञान ।

(2) भण्डारण के कीटों के वर्गीकरण की जानकारी ।

(3) निम्नांकित कीटों का जीवन–चक्र एवं उनके नियंत्रण के उपाय का ज्ञान—

1—राइस वीविल ।

2—धान का भाव ।

3—दालों की बीविल ।

4—अनाज का घुन ।

प्रयोगात्मक क्रिया–कलाप

(क) दीर्घ प्रयोग—

(1) कीट संकलन एवं उनके जीवन–चक्र का रेखांकन करना ।

(2) इम्लसन मिश्रण बनाना ।

(3) पेस्टन तैयार करना तथा उनके प्रयोग विधि का प्रदर्शन ।

(4) रसायन का घोल तैयार करना, उनका प्रयोग तथा उनमे अपनायी जाने वाली सावधानियों की क्रियात्मक समझ ।

(5) फसलों पर पाउडर का छिड़काव करना ।

(6) भण्डार गृह में रसायनों का प्रयोग करना ।

(7) उपकरणों को खोलने एवं बांधने की समझ ।

(8) रसायन एवं उपकरण के प्राप्ति केन्द्रों की जानकारी एवं उन स्थानों का पर्यवेक्षण तथा उनका विवरण तैयार करना ।

(ख) लघु प्रयोग—

(1) विभिन्न खर–पतवारों की पहचान ।

(2) विभिन्न पादप रोगों की पहचान ।

(3) विभिन्न पादप कीटों की पहचान ।

(4) फसल सुरक्षा उपकरणों की पहचान ।

(5) कवकनाशी रासायनों की पहचान ।

(6) कीटनाशी रसायनों की पहचान ।

(7) खर–पतवारनाशी रसायनों की पहचान ।

(8) भण्डारण में प्रयोग होने वाले रसायनों की पहचान ।

(9) भण्डारण के कीटों की पहचान ।

(10) भण्डारण में हानि पहुंचाने वाले जन्तुओं की पहचान करना ।

संस्तुत पुस्तकें—

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक का नाम एवं पता	मूल्य
1	2	3	4	5
1	फसल सुरक्षा	डा० धर्मराज सिंह	ग्राम विकास प्रकाशन, कमिश्नर कम्पाउन्ड कालोनी, इलाहाबाद	रु० 16.00

1	2	3	4	5
				रु0
2	सब्जी की खेती	वर्शना नन्द	ग्राम विकास प्रकाशन, कमिश्नर कम्पाउण्ड कालोनी, इलाहाबाद	16.00
3	फलों की खेती	डा0 राम कृपाल पाठक	ग्राम विकास प्रकाशन, कमिश्नर कम्पाउण्ड कालोनी, इलाहाबाद	25.00
4	नया कृषि कीट विज्ञान	बी0 ए0 डेविड एवं एम0 एच0 डेविड	सेण्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद	12 00
5	पादप रोग नियन्त्रण	डा0 उपाध्याय एवं माथुर	कुवका पब्लिशिंग हाऊस, बड़ौत, मेरठ	22.50
6	खर-पतवार नियन्त्रण	प्रो0 ओम प्रकाश	कुवका पब्लिशिंग हाऊस, बड़ौत, मेरठ	
7	फसलों के रोगों की रोकथाम	डा0 संयम लाल	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व-विद्यालय, पंतनगर, नैनीताल	20 00
8	फसलों के रोग	डा0 मुखोपाध्याय एवं डा0 सिंह	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व-विद्यालय, पन्तनगर, नैनीताल	50.00
9	फसलों के हानिकारक कीट	डा0 बिन्दा प्रसाद खरे	प्रकाशक निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व-विद्यालय, पन्तनगर, नैनीताल	22 00
10	खर-पतवार नियन्त्रण	डा0 विष्णु मोहन मान	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व-विद्यालय, पन्तनगर, नैनीताल	25.00
11	पादप रक्षा कीट नियंत्रण	डा0 उपाध्याय एवं माथुर	कुवका पब्लिशिंग हाऊस, बड़ौत, मेरठ	22.50
12	प्लाण्ट प्रोटेक्शन	डा0 उपाध्याय एवं माथुर	कुवकापब्लिशिंग हाऊस, बड़ौत, मेरठ	30.00
13	सचित्र कृषि विज्ञान	श्री श्याम प्रसाद शर्मा	भारत भारती प्रकाशन, मेरठ	20.00
14	कृषि विज्ञान	श्री गंगा महेश मिश्र	राम नारायन लाल, इलाहाबाद	20.00

(18) ट्रेड---मुद्रण

उद्देश्य---

1--छात्रों में उद्यमिता-गुणों का विकास करना ।
2--छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना ।
3--छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना ।
4---छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना ।
5---छात्रों में कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना ।
6---छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी देना ।

रोजगार के अवसर--

(क) वेतनभोगी रोजगार
(ख) स्वरोजगार

} सरकारी तथा निजी मुद्रण उद्यमों में कुशल कामगार के पद का कार्य कर सकते हैं--उदाहरण के लिए कम्पोजीटर, मुद्रण मशीन चालक, प्रूफ रीडर, बुक-बाइण्डर, छोटी इकाई के रूप में निजी उद्योग भी लगा सकते हैं।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर, आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई-एक

(अ) मुद्रणालय की विभिन्न सामग्रियां--

कागज बनाने की विभिन्न सामग्रियां, कागज बनाने की विधियां, विभिन्न प्रकार के कागज तथा मापें, मुद्रण स्याहियां, बोर्ड (दफ्ती), बाईंडिंग कपड़ा, बाईंडिंग चमड़ा, रेक्सीन, चिपकाने वाले (एडेसिव) पदार्थ, फर्मा कसने की सामग्रियां।

(ब) विभिन्न मुद्रण सतह--

टाइप कम्पोजिंग सतह, ब्लाक (चित्रों) की सतह, लाइनों तथा मोनो आफसेट प्लेट, ग्रेव्योर मुद्रण प्लेट (सिलण्डर), स्क्रीन मुद्रण की सतह, रबर मुद्रण प्लेट।

इकाई-दो

(अ) मुद्रण विधियां--

मुद्रण का अर्थ, मुद्रण का आविष्कार, विभिन्न मुद्रण विधियां (लेटर प्रेस), समतल मुद्रण (प्लेनोग्राफी), अवतल मुद्रण (ग्रव्योर प्रिंटिंग), सिल्क स्क्रीन मुद्रण, फ्लेक्सोग्राफी मुद्रण।

(ब) विभिन्न मुद्रण कार्य--

मुद्रण पूर्व तैयारी (प्रिमेकरेडी), मुद्रण तैयारी (मेकरेडी), छोटे-छोटे (जाबिंग) मुद्रण कार्य पुस्तकीय मुद्रण, कई रंगों में मुद्रण, इतवार-पत्र, पत्रिकाओं की मुद्रण विधियां।

इकाई--तीन

(अ) जिल्दबन्दी (बुक बाइंडिंग)--

जिल्दबन्दी का अर्थ, विभिन्न प्रकार की जिल्दबन्दी, विभिन्न प्रक्रियायें, कागजों को बराबर करना और गिनती करना।

(ब) अन्य सम्बन्धित कार्य--

दफ्ती (बोर्ड) से डिब्बा बनाना, लिफाफा बनाना, छिद्रण (परफोरेशन) कार्य, संख्याकरण (नम्बरिंग) कार्य, आइलेट लगाना, कटिंग तथा क्रीजिंग, रेखण (रूलिंग) कार्य।

प्रयोगात्मक क्रियात्मक

लघु प्रयोगात्मक अभ्यास--

1--अक्षर संयोजन विभाग की साज-सज्जा तथा उपकरणों का परिचय।
2--मुद्रणालय में सुरक्षा (सेफ्टी) उपाय।
3--मुद्रण तथा बाईंडिंग विभाग की मशीनों और उपकरणों का परिचय।
4--टाइप केसले आउट याद करना एवं कम्पोजिंग स्टिक में माप बांधना
5--प्रूफ उठाना तथा टाइप मैटर में लगी स्याही की सफाई करना।
6--मुद्रणालय की सभी मशीनों तथा उपकरणों में स्नेहन (लुब्रीकेटिंग) तेल या ग्रीस देना और सफाई करना।
7--मुद्रित तथा अमुद्रित कागजों को बराबर करके और गिनती करना।
8--पुरानी पुस्तकों की मरम्मत करना।

दीर्घ प्रयोगात्मक अभ्यास--

1--लेटर हेड तथा विजिटिंग कार्ड आदि छोटे जाब कार्यों को कम्पोजिंग करना तथा प्रूफ उठाकर उसे पढ़ना और संशोधन करना ।
2--विभिन्न मशीनों के लिए एक या दो पृष्ठ का फर्मा कराना ।
3--मुद्रण मशीन का तैयारी, मुद्रण मशीन पर फर्मा चढ़ाना, फर्मा की तैयारी तथा लगातार मुद्रण कार्य करना ।
4--मुद्रण मशीन पर एक या दो रंग की छपाई करने का अभ्यास ।
5--स्थानीय किसी एक या अधिक मुद्रणालयों में छात्रों को ले जाकर निरीक्षण कराना और छात्रों द्वारा एक अध्ययन रिपोर्ट तैयार करना जो 300 शब्दों से अधिक न हो ।
6--बाईंडिंग करने के लिए मुद्रित अथवा अमुद्रित कागजों को मोड़ना, सिसिल उठाना, सिलाई करना ।
7--पुस्तकों पर कागज के कवर तथा दफ्तो के कवर लगाने का अभ्यास ।
8--सिल्क स्क्रीन मुद्रण की तैयारी तथा मुद्रण का अभ्यास करना ।

पुस्तकें--

हिन्दी पुस्तकें--

1--अक्षर मुद्रण शास्त्र	चन्द्र शेखर मिश्र
2--संयोजन शास्त्र	,, ,,
3--आफसेट मुद्रण शास्त्र	,, ,,
4--मुद्रण परिकरण भाग-1	के0 सी0 राजपूत
5--मुद्रण परिकरण भाग-2	,, ,,
6--आधुनिक ग्रन्थ शिल्प	चन्द्र शेखर मिश्र
7--मुद्रण स्याहियां तथा कागज	,, ,,
8--मुद्रण प्रौद्योगिकी सामग्री	एम0 एन0 सिंह बड़
9--ब्लाक मेकर्स गाइड	एस0 अग्रवाल

(19) ट्रेड--रेडियो एवं टेलीविजन

उद्देश्य--

1--वर्तमान समय में रेडियो एवं टेलीविजन की बढ़ती हुई मांग तथा इस विषय को जानकारी रखने वाले व्यक्तियों की मांग को देखते हुए यह आवश्यक है कि हाई स्कूल स्तर से बच्चों में इस विषय में रुचि उत्पन्न करना ।
2--10+2 में रेडियो तथा टी0 वी0 पहले से चल रहा है, इसके लिए हाई स्कूल स्तर से बच्चों को तैयार करना तथा इण्टरमीडिएट में एडमिशन के समय वरीयता ।
3--छात्र बाहर तथा गांव में व्यवसाय का उचित अवसर प्राप्त कर सकते हैं ।

रोजगार के अवसर--

1--रेडियो तथा टी0 वी0 इन्डस्ट्री में पी0 सी0 बी0 पर एसेम्बलिंग का कार्य प्राप्त कर सकते हैं ।
2--विभिन्न टी0 वी0 सर्विस सेन्टर में एज टी0 वी0 टेक्नीशियन का अवसर प्राप्त कर सकते हैं ।
3--किसी बड़ी इकाई के साथ लघु उद्योग स्थापित करना ।
4--स्वयं की दुकान प्रारम्भ कर सकना ।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों का सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर, इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा । परिषद् द्वारा इसकी वाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी ।

इकाई-1--

(क) परमाणु संरचना, इलेक्ट्रानिक सिद्धान्त, विद्युत के प्रकार, प्रतिरोध, धारित्र, इन्डक्टर तथा प्रतिरोध को कलर कोडिंग ।
(ख) इलेक्ट्रान उत्सर्जन, अर्द्ध चालक, अर्द्ध चालक डायोड, ट्रान्जिस्टर के विषय में जानकारी, उसके चिन्ह तथा प्रकार ।

इकाई-2--

ट्रांजिस्टर अभिग्राही (रिसीवर) के विषय में सामान्य जानकारी, ट्रांजिस्टर अभिग्राही के सामान्यों तथा उनका विवरण ।

इकाई–3–=

कैथोड किरण, ट्यूब टी० वी० अभिग्राही का बेसिक सिद्धान्त तथा उपयोग आने वाले विभिन्न नियंत्रकों (कन्ट्रोल्स) के विषय में सामान्य जानकारी एवं टी० वी० के सुधारने के लिए प्रयोग में आने वाले विभिन्न यन्त्रों के विषय में जानकारी ।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

लघु प्रयोग––

(1) कलर कोड की सहायता से प्रतिरोधों का मान पढ़ना तथा प्रतिरोधों की वाटेज को जानना ।

(2) विभिन्न प्रकार के प्रतिरोधों को पहचानना, समान्तर तथा श्रेणी क्रम में जोड़ना तथा उनका मान ज्ञात करना ।

(3) विभिन्न प्रकार के धारित्रों को पहचानना तथा श्रेणी व समान्तर क्रम में जोड़ना तथा उनका मान ज्ञात करना ।

(4) विभिन्न प्रकार के डायडों तथा ट्रान्जिस्टरों को पहचानना ।

(5) मल्टीमीटर की सहायता से वोल्टेज, धारा व प्रतिरोध मापना ।

(6) मल्टीमीटर की सहायता से डायोड तथा ट्रान्जिस्टरों का परीक्षण करना ।

(7) इलेक्ट्रानिक्स में प्रयोग होने वाले विभिन्न यन्त्रों की जानकारी ।

(8) पी० सी० बी० (पी० सी० बी०) पर सोल्डरर करने की विधि तथा सावधानियाँ ।

दीर्घ प्रयोग––

(1) साधारण प्रकार की बैटरी एलीमिनेटर निर्माण (असेम्बल) करना ।

(2) विभिन्न निर्गत वोल्टेजों के लिए बैटरी एलिमिनेटर का निर्माण करना ।

(3) स्थिर वोल्टेज के लिए बैटरी एलिमिनेटर का निर्माण करना ।

(4) ट्रांजिस्टरों की सहायता से प्रवर्धक (एम्प्लीफायर) का निर्माण करना ।

(5) ट्रांजिस्टरों की सहायता से ध्वनि परिपथ (म्युजिकल सर्किट) का निर्माण करना ।

(6) ट्रांजिस्टर अभिग्राही के विभिन्न भागों की वोल्टेज ज्ञात करना ।

(7) ट्रांजिस्टर अभिग्राही के सामान्य दोषों को ज्ञात करना तथा उनका निवारण करना ।

(8) टेलीविजन के विभिन्न भागों की वोल्टेज ज्ञात करना ।

संस्तुत पुस्तकें––

1––बेसिक इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग	..	लेखक––पी० ए० जाखड़ तथा तबसा रथ जाखड़
2––इलेक्ट्रानिक थ्रू प्रैक्टिकल्स	..	लेखक––पी० एस० जाखड़
3––प्रारम्भिक इलेक्ट्रानिकी	..	लेखक––कुमार एवं त्यागी
4––इलेक्ट्रानिक्स	..	लेखक––महेन्द्र भारद्वाज
5––टेलीविजन	..	लेखक––जीन एण्ड राबर्ट
6––बेसिक शाप प्रैक्टिकल इलेक्ट्रिक इन्जीनियरिंग	..	लेखक––अनवानीहुग

(20) ट्रेड--बुनाई तकनीक

उद्देश्य--

1--छात्रों में उद्यमिता गुणों का विकास करना।

--छात्रों को आगे चलकर स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।

--छात्रों को 10+2 स्तर पर सुविधापूर्वक उपयुक्त ट्रेड का चयन करने में सहायता करना।

4--छात्रों में व्यवसाय के प्रति रुचि पैदा करना।

5--छात्रों को कार्य संस्कृति के प्रति आदर का भाव पैदा करना।

6--छात्रों को ट्रेड की प्रारम्भिक बातों की जानकारी।

विशिष्ट उद्देश्य--

1--विभिन्न प्रकार की बुनाई डिजाइनों को बनाकर हथकरघा उद्योग को उपलब्ध कराना।

--विभिन्न प्रकार की बुनाई डिजाइन के द्वारा कोनर डिजाइन बनाना।

3--इस उद्योग में विद्यार्थी को बपती के ऊपर रेशे द्वारा कोनर डिजाइन तैयार करना/सिखाना।

4--बुनाई तकनीकी की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् बुनाई से सम्बन्धित लघु उद्योग स्थापित कर सकता है।

रोजगार के अवसर--

बुनाई के तकनीक ट्रेड से शिक्षा प्राप्त करनें के पश्चात् निम्न रोजगार के अवसर मिल सकते हैं--

(क) वेतन भोगी रोजगार--

1--खादी ग्रामोद्योग में यू0 पी0 हैण्डलूम में रोजगार के अवसर।

2--छोटे कारखानों में बुनाई के सहायक कार्यकर्ता के रूप में।

3--बुनाई अध्यापकों के लिए प्रशिक्षित शिक्षण की उपलब्धि।

(ख) स्वरोजगार--

1--छोटे बुनाई उद्योग स्थापित करना।

2--सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त करके उद्योग चलाना।

3--न्यूनतम पूंजी में उद्योग का कार्य प्रारम्भ करके जीवन-यापन करना।

4--अपने साथ में पूरे परिवार को कार्य लगाकर कार्य करके जीवन-यापन करना।

पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं मूल्यांकन--

ट्रेड में 50 अंकों की सैद्धान्तिक (लिखित) तथा 50 अंकों की प्रयोगात्मक के आधार पर इसमें विद्यालय स्तर पर आन्तरिक मूल्यांकन होगा। परिषद् द्वारा इसकी बाह्य परीक्षा नहीं ली जायेगी।

इकाई-1--

(क) वर्गांकित कागज (ग्राफ पेपर) पर निम्न डिजाइन ड्राफ्ट प्लेन प्लान सहित बनाना।

(ख) सादी या प्लेन बुनावट वार्परिब, वेफ्टरिब, मैटरिब।

(ग) सादी बुनावट सजाने की विधियाँ, लम्बाई में धारी चौड़ाई में धारी, छोटी-छोटी त्रुटियाँ, चारखाने दार, लम्बाई चौडाई के साथ धारीदार डिजाइन बनाना। ट्वील, साधारण ट्वील, प्वाइंटेड ट्वील, डायमेन्ट।

इकाई–2––

(क) सूत का अंक निकालना, बेट सूत का अंक निकालना ।

(ख) कंघी का अंक निकालना, हील्ड का अंक निकालना ।

(ग) रीव या कंघी का अंक निकालना ।

इकाई–3––

(क) रंगों का अध्ययन, प्रकार, अष्टवाल वृत्त रंग ।

(ख) रंगों की संग ।

(ग) डिजाइन एवं आलेखन कला के प्रकार ।

प्रयोगात्मक क्रियाकलाप

लघु प्रयोग :

1––सूत की लच्छियों को सुलझाना ।

2––चरखी के ऊपर सूत को चढ़ाकर चरखे की सहायता से तागों को बाबिन भरना ।

3––भरी हुई बाबिनों को टटूर में लगाना ।

4––ताने की तागों को डिजाइन के अनुसार क्रम में भरना और कंघी में भरना ।

5––ताने एवं बाने की बाबिन भरना ।

6––लीज राड को ताने में लगाना ।

7––शटल में धागे एवं बाबिन लगाना ।

8––चरखे को चलाना ।

9––तकली से सूत कातना ।

10––सूत की लच्छियों को अंटी पर चढ़ाना ।

दीर्घ प्रयोग :

1––टटूर से ताने के तागे निकालना ।

2––क्रम से बाबिनों को लगाना ।

3––हैंक या विनियों से तागे निकालना ।

4––ड्रम मशीन पर ताने जुटटी बांधना ।

5––ताने के बेलन में ताने के धागे लपेटना ।

6––ताने के बेलन को करघे पर फिट करना ।

7––डिजाइन के अनुसार ड्राफ्टिंग करना ।

8––आई के कंघी में पिराना या धागे निकालना ।

9––ताने के धागों की जुटटी बांधना ।

10––करघे पर बुनाई करना ।

पुस्तकों की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम	मूल्य
1	2	3	4	5
				रु0
1	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	डा0 प्रमिला वर्मा	विश्वविद्यालय प्रकाशक, चौक, वाराणसी	55.00
2	वस्त्र विज्ञान एवं परिधान	,,	यूनिवर्सल बुकसेलर, लखनऊ	55.00
3	बुनाई पुस्तक	श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव	नवीन पुस्तक भण्डार, बारागंज, इलाहाबाद	8.00
4	हाउस होल्ड टेक्सटाइल	श्री दुर्गा दत्त	बुक कम्पनी, नई दिल्ली	75.00
5	भारतीय कशीदा कारी	श्रीमती शिन्दे एवं कु0 पण्डित	प्रकाशन निदेशालय, गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, नैनीताल	27 00